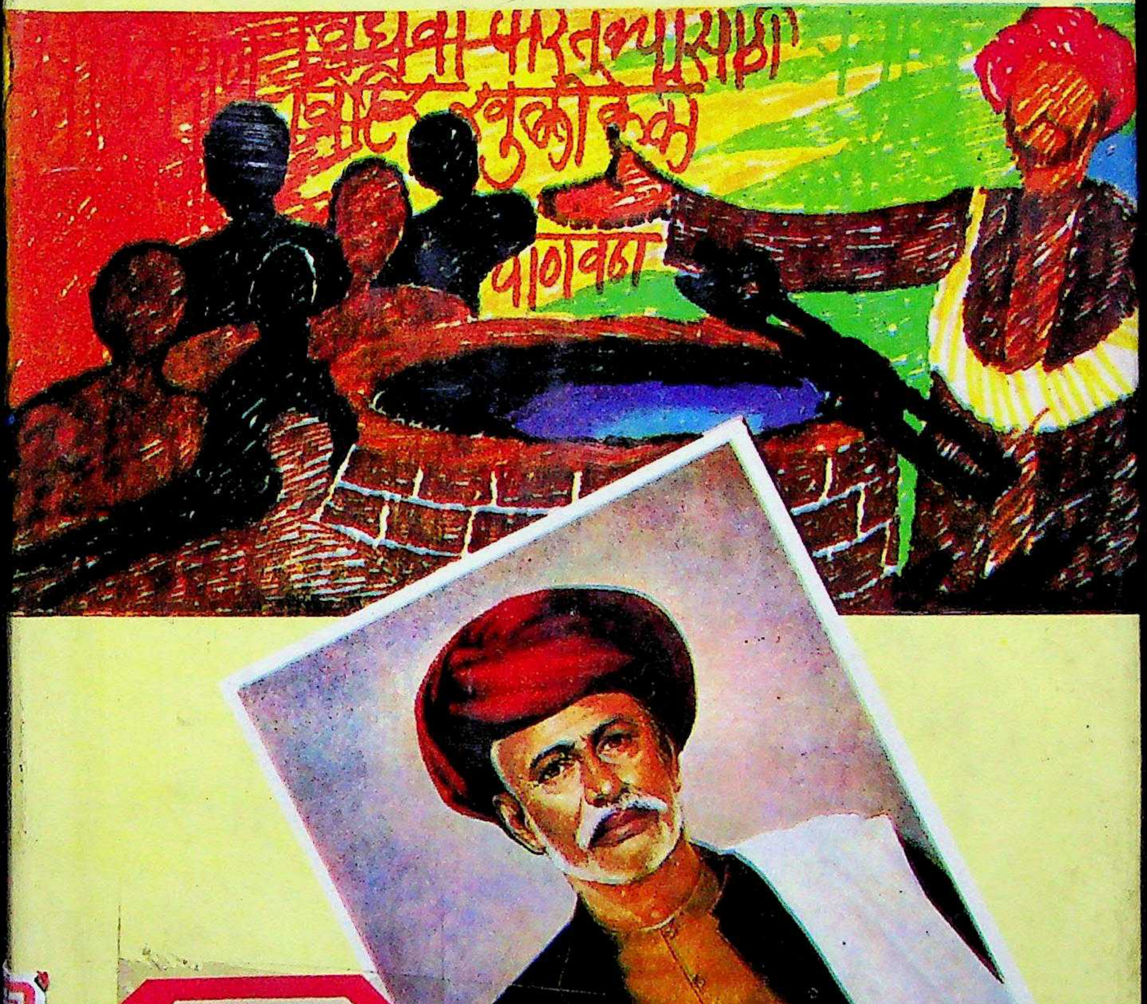
महात्मा जोतिबा फुले रचनावली



सम्पादक

एल. जी. मेश्राम 'विमलकीर्ति'



यह किताब जोतिबा फुले (जोतिराव गोविन्दराव फुले : 1827-1890) की सम्पूर्ण रचनाओं का संग्रह है। सन 1855 से सन 1890 तक उन्होंने जितने ग्रन्थों की रचना की, सभी को इसमें संगृहीत किया गया है। उनकी पहली किताब 'तृतीय रत्न' (नाटक) सन 1855 में और अन्तिम 'सार्वजनिक सत्यधर्म' सन 1891 में उनके परिनिर्वाण के बाद प्रकाशित हुई थी।

जोतिराव फुले की कर्मभूमि महाराष्ट्र रही है। उन्होंने अपनी सारी रचनाएँ जनसाधारण की बोली मराठी में लिखीं। उनका कार्य और रचनाएँ अपने समय में भी विवादास्पद रहीं और आज भी हैं। लेकिन उनका लेखन हर पीढ़ी में सामाजिक क्रान्ति की चेतना जगाता रहेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।

उनकी यह रचनावली उनके कार्य और चिन्तन का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

महात्मा जोतिबा फुले रचनावली : 1

महात्मा
जोतिबा फुले रचनावली

1

अनुवाद एवं सम्पादन

डॉ. एल. जी. मेश्राम 'विमलकीर्ति'

राधाकृष्ण

ISBN 81-7119-181-9

महात्मा जोतिबा फुले रचनावली : 1

पहला संस्करण : 1994
संशोधित संस्करण : 1996

मूल्य : 300.00 रुपये
पूरा सेट : 600.00 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
त्रिवेणी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MAHATMA JOTIBA PHOOLE RACHANAVALI : 1
Edited by Dr. L. G. Meshram 'Vimalkirti'

आमुख

जोतिराव गोविंदराव फुले—जिन्हें लोग आदर से 'महात्मा फुले' या 'महात्मा जोतिबा फुले' कहकर पुकारते हैं—के दर्शन, कार्य और विचारधारा का आजादी से पहले और बाद के प्रारम्भिक दशकों में जितना अध्ययन और मूल्यांकन होना चाहिए था, उतना नहीं हो सका। और यह सब अनजाने में हुआ, ऐसी बात नहीं है, बल्कि जान-बूझकर उनके कार्य और विचार-दर्शन को नजर-अंदाज किया जाता रहा और आज भी यही स्थिति बनी हुई है। हमारे देश में सदियों से यह होता चला आ रहा है कि जो लोग परम्परागत समाज-व्यवस्था को बदलने या उसमें आमूलाग्र परिवर्तन की बात करते हैं, और एक नई समाज-व्यवस्था की स्थापना का सपना देखते हैं, उनको हमेशा उपेक्षित किया गया है। लेकिन जब ऐसी स्थिति आ जाती है कि उनको बहुत दिनों तक काल के अँधेरे में नहीं रखा जा सकता, तो उन्हें किसी अवतार की तरह सामान्यजनों के सामने रखने का प्रयास किया जाता है। यह बात बुद्ध के साथ हुई, कबीर और रैदास के साथ हुई और यही बात जोतिबा फुले के साथ भी हुई है। यही बात डॉ० बाबा साहब आम्बेडकर के साथ भी हुई है। यथास्थितिवादी, प्रतिक्रियावादी लोग आज इन्हें अवतार के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।

हमारे देश ने जोतिबा फुले की परिनिर्वाण शताब्दी (1890-1990) और डॉ० बाबासाहब आम्बेडकर की जन्मशताब्दी (1891-1990) बड़े आदर और सम्मान के साथ मनाई, लेकिन जोतिबा फुले का सम्पूर्ण साहित्य आज भी हमारे देश के प्रायः सभी भाषा-भाषी पाठकों के लिए उपलब्ध नहीं हो सका। मराठी पाठकों को भी उनका सम्पूर्ण साहित्य 'सम्पूर्ण फुले' शीर्षक से सन् 1969 में उपलब्ध करायागया। अर्थात् उनके परिनिर्वाण के अठहत्तर साल बाद सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध हुआ, किन्तु अन्य भारतीय भाषाओं में यह साहित्य आज भी अनूदित नहीं हुआ है। कुछ लोगों ने जोतिबा फुले के साहित्य को अन्य भारतीय भाषाओं में ले जाने का प्रयास किया अवश्य, लेकिन उनके प्रयास पूरी तरह सफल नहीं हुए। इसका एक कारण यही है कि व्यवस्थावादी, प्रतिक्रियावादी वर्ग यह नहीं चाहता कि फुले-

साहित्य सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो ।

जोतिबा फुले के जीवन-दर्शन और कार्य पर कई भारतीय भाषाओं में लिखा गया है, लिखा जा रहा है, उन किताबों को लोग पढ़ रहे हैं। वामपंथी और गैर-वामपंथी दोनों तरह के लोग आज अपने-अपने ढंग से उन पर सोच रहे हैं। इसी प्रकार सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से पिछड़े और दलित, उत्पीड़ित तबकों में भी आज जोतिबा फुले के कार्य, दर्शन, विचार-प्रणाली आदि को समझ लेने की भारी जिज्ञासा है।

इस संदर्भ में यदि हम आधुनिक भारतीय भाषाओं की ओर देखें तो हिन्दी भाषा का भूगोल सबसे बड़ा और विशाल है। हर तरह की राजनीति का भी यह केन्द्र बना हुआ है। यहाँ कई तरह की प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं और जो भी यहाँ घटता है, उसका प्रभाव अन्य भारतीय भाषाई प्रदेशों पर भी पड़ता है। इसलिए महात्मा फुले की रचनाएँ आधुनिक भारत की सबसे महत्वपूर्ण और सबसे विशाल भूक्षेत्र में फैली हिंदी भाषा में बहुत पहले ही उपलब्ध हो जानी चाहिए थीं। फिर भी, हर्ष का विषय है कि अब यह कार्य पूरा हो गया है।

जोतिबा फुले आधुनिक भारत में क्रांतिकारी समाज-परिवर्तन के आंदोलन के मूल प्रवर्तक हैं, यह बात सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उनके साहित्य को पढ़ने से ही इस बात का पता चल जाता है कि उन्होंने किस तरह हिंदू समाज के शूद्रादि-अतिशूद्रों (दलित और पिछड़े वर्ग के लोगों) की समस्या को उजागर करने की कोशिश की है। उन्होंने किसानों के सवालों को उठाया। गाँव-देहातों में गाँव के मुखिया, जमींदार, साहूकार, कुलकर्णी, ब्राह्मण, बनिया, और पटवारी आदि लोग किसानों के अज्ञान का लाभ उठाकर किस प्रकार उनका शोषण करते हैं, इस बात का विश्लेषण जितनी गहराई से फुले-साहित्य में मिलता है, उतना उनके समकालीन किसी भी समाजसुधारक के साहित्य में नहीं मिलता। उन्होंने नारी की गुलामी के सवालों को उठाया। वे पण्डा-पुरोहित वर्ग को धार्मिक शोषक वर्ग की संज्ञा देते हैं और बताते हैं कि शूद्रादि-अतिशूद्र तथा नारी वर्ग हिंदू धर्म के धार्मिक गुलाम हैं। जोतिबा फुले की राय में यह सारे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक सवाल हिंदू समाज-व्यवस्था, हिंदू धर्म, पुरोहित वर्ग के कारण पैदा हुए हैं, इसलिए वे इसी व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करते हैं।

उन्नीसवीं सदी में भारत में अंग्रेजों की नई शिक्षा-प्रणाली की वजह से जो नया शिक्षित वर्ग पैदा हुआ, उनमें से कुछ लोगों का ध्यान भारतीय समाज की कुरीतियों की ओर गया। उन्होंने उन कुरीतियों को समाज से दूर करने के लिए समाज-सुधार, धार्मिक सुधार का काम हाथ में लिया। उन्होंने अपने समाज की अमानवीय कुप्रथाओं के खिलाफ, धार्मिक सड़न के खिलाफ जागृति लाने की

कोशिश की। इस काल को भारतीय नवजागरण का प्रारम्भिक काल माना जाता है। इस नवजागरण-आंदोलन का सूत्रपात बंगाल में सन् 1828 में राजा राममोहन राय द्वारा 'ब्रह्म समाज' की स्थापना से हुआ। इसी के आस-पास महाराष्ट्र में भी समाज-सुधार आंदोलन शुरू हुआ, जिसमें जांभेकर, दारोबा पाण्डुरंग, लोकहितवादी, भण्डारकर, न्या-रानडे, आगरकर आदि का बड़ा योगदान है। पंजाब और उत्तरी भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज का आंदोलन चलाया, लेकिन उनका सोच जोतिराव फुले की तरह बुनियादी समाज परिवर्तनकारी नहीं था। वे व्यवस्था-परिवर्तन नहीं चाहते थे, बल्कि हिंदू धर्म और समाज में कुछ सुधार की बात करते थे। उनके सोच और कार्य की कई मर्यादाएँ थीं। राजा राममोहन राय भी अपने को सतीप्रथा आदि पारिवारिक सवालों से आगे नहीं ले जा सके। उनका समाज-सुधार का आंदोलन सामान्य-जनों, किसानों, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों (शूद्रादि-अतिशूद्रों) की मुक्ति का आन्दोलन कभी नहीं बन पाया। वह केवल शहरी लोगों, खासतौर पर उच्चवर्णीय लोगों तक ही सीमित रहा।

लेकिन जब हम जोतिबा फुले के बारे में सोचते हैं, तो हमें उनका कार्य और उनकी चिंतन-धारा इन सबसे अलग दिखायी देती है। उन्होंने अपने कार्य और चिंतन की शुरुआत ही धर्मसंस्था की आलोचना से शुरू की और फिर इसके खिलाफ व्यापक जनजागरण-अभियान चलाया।

जोतिबा फुले की सबसे पहली रचना 'तृतीय रत्न' नाटक है, जो सन् 1855 में लिखा गया। उसके बाद सन् 1891 तक वे लगातार लिखते रहे। पँवाड़ा : छत्रपति शिवाजी भोसले का (जून 1869), पँवाड़ा : शिक्षाविभाग के ब्राह्मण अध्यापक का (जून 1869), ब्राह्मणों की चालाकी (1869), गुलामगीरी (1873), हण्टर शिक्षा आयोग के सामने निवेदन पेश (19 अक्तूबर, 1882), किसान का कोड़ा (18 जुलाई 1883), ग्रामजोशी के सम्बन्ध में (29 मार्च 1886), सत्यशोधक समाज के लिए मंगलगाथा और पूजाविधि (जून 1887), सार्वजनिक सत्यधर्म (1891), अखण्डादि काव्यरचना आदि रचनाएँ फुलेकालीन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षिक स्थिति को अच्छी तरह समझ लेने के लिए पर्याप्त हैं। यही नहीं, उन्होंने अपने विचारों को समाज के आम आदमी तक पहुँचाने के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने जो भी लिखा, उसको स्वयं छपवाकर प्रकाशित किया। सन् 1873 में प्रकाशित 'गुलामगीरी' को उन्होंने यूनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) के उन लोगों को समर्पित किया है, जिन्होंने वहाँ के काले लोगों को गोरों की दासता से मुक्त कराने के काम को आगे बढ़ाया था। जोतिबा फुले ने शूद्रादि-अतिशूद्रों की गुलामी की तुलना काले, हब्शी गुलामों से की

है और यूनाइटेड स्टेट्स में उनकी गुलामी के विरुद्ध संघर्ष करनेवालों का समर्थन किया है।

जोतिबा फुले की एक विशेषता यह थी कि जनहित की बात को वे जनभाषा में ही बोलना, लिखना ज्यादा पसंद करते थे। उनकी सभी रचनाओं की भाषा जनबोली मराठी है। लेकिन जहाँ उन्हें लगा कि अपनी बात अंग्रेज शासकों तक भी पहुँचनी है, वहाँ उन्होंने अंग्रेजी का भी इस्तेमाल किया है।

जोतिबा फुले शूद्र, अतिशूद्र (अछूत) और नारी समाज की शिक्षा के अधिकार का समर्थन करते हैं। उन्होंने स्वयं पूना में अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के सहयोग से नारी तथा शूद्रादि-अतिशूद्रों के लिए स्कूल शुरू किया था। भारत में शूद्रादि-अतिशूद्रों के लिए यह पहला स्कूल था और सावित्रीबाई फुले भारत की पहली स्त्री शिक्षिका थीं।

ब्राह्मणवादी उत्पीड़न पर रचित महाकाव्य 'ब्राह्मणों की चालाकी' के अलावा जोतिबा फुले की एक और महत्वपूर्ण किताब 'सार्वजनिक सत्यधर्म' पुस्तक है, जो सन् 1891 में उनके परिनिर्वाण के बाद उनके दत्तकपुत्र यशवन्त फुले ने प्रकाशित की थी। इस किताब के आवरण पृष्ठ की शुरुआत ही 'सत्यमेव जयते' से की गई है। उनकी दृष्टि में धर्म वह है, जो समाज के हित में है, समाज के कल्याण के लिए है। जो धर्म समाज के हित में नहीं है, वह धर्म सत्य नहीं है। मतलब सत्य को वे समाजहित की कसौटी पर परखते हैं।

जोतिबा फुले ने निबंध, संवाद, पत्र, वैचारिक लेखन के अलावा काव्य-रचना भी की है, और उनकी काव्य-रचना भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितना उनका अन्य साहित्य। काव्य के द्वारा भी उन्होंने समाज की कुरीतियों पर करारा प्रहार किया है, धर्मांधता पर प्रहार किया है। उन्होंने कहा है कि नारी और पुरुषों में किसी भी प्रकार का भेदभाव किये बिना सबको समान शिक्षा का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे साफ शब्दों में कहते हैं कि जो वेदों की प्रशंसा करते हैं, उनको बुद्धिहीन पशुओं में भेज देना चाहिए।

इस तरह जोतिबा फुले का सम्पूर्ण साहित्य मानव-समाज को एक नयी प्रेरणा देनेवाला साहित्य है, जातिवादी भारतीय समाज में समानता, भाईचारा, न्याय और स्वतंत्रता की नई चेतना जगानेवाला साहित्य है।

प्रसन्नता का विषय है कि मानवीय गरिमा के पक्ष में निरंतर संघर्ष करने वाले उस महान क्रांतिचेता की समग्र रचनाएँ दो खंडों में हिंदी पाठकों तक पहुँच रही हैं। हिंदी जगत में इनका निश्चय ही स्वागत होगा, ऐसा विश्वास है।

नागपुर
29 जुलाई, 1993

—विमलकीर्ति

अनुक्रमणिका

तृतीय रत्न

नाटक

[माली कुनबी के घर में उनका बच्चा अपनी माँ की कोख में जैसे-तैसे गर्भ को धारण कर ही रहा होता है कि एकाएक ब्राह्मण जोशी अपनी सवारी ले आता है और वह बड़े-बड़े आश्वासन देकर उस स्त्री को किस तरह भिखारी बना देता है, इसके संबंध में मैं यहाँ लिखने का प्रयास करूँगा।]

[**स्थान :** ब्राह्मण जोशी उस गर्भवती स्त्री का पति घर में नहीं, ऐसा सुनहरा मौका देखकर तिथि, दिन, नक्षत्र, योग और करण का उच्चारण करते हुए उसके दरवाजे के सामने खड़ा हो जाता है।

इसी दरमियान घर की वह स्त्री मंत्रों का उच्चारण सुनते ही कुछ सूखी भिक्षा हाथ में लेकर बरामदे पर आ जाती है।]

जोशी : **(मामूली भिक्षा देखकर अप्रसन्न होते हुए)** बहन, मेरे जैसे ब्राह्मण के लिए भिक्षा लेकर आनेवाली क्या तुम्हीं हो?

स्त्री : क्यों, महाराज? क्या हुआ? क्या यह भिक्षा नहीं है? मैं गरीब-निर्धन हूँ। मेरे पति को पूरे माह में केवल चार रुपए मिलते हैं।

जोशी : बहन, यह भिक्षा नहीं है, ऐसा कौन कहेगा? लेकिन इस भिक्षा से मेरा पेट कैसे भरेगा? और फिर तेरे कल्याण की मैं कामना कैसे करूँगा?

स्त्री : (खिन्न होकर) जाइए पंडितजी, ब्राह्मणों का चीमड़पन बड़ा ही खतरनाक! हम लोगों को आपके पेट की चिता कब तक करनी चाहिए! आप लोगों को कुछ न कुछ काम तो करना ही चाहिए।

जोशी : **(रोजगार-धंधा लगाना यह हमारे माथे पर ही लिखा हुआ है, इसमें तू क्या नया बताने जा रही है, मन-ही-मन में कहते हुए)** तेरी बात सही है, किंतु तेरी पड़ोसिन की तरह तेरा कुछ भी नुकसान नहीं हुआ है न! मैं तेरे को बाद में भी बोलने नहीं दूंगा, ठीक?

स्त्री : **(कुछ सोचते हुए)** उस बहन का बेटा अपने नसीब से मरा है।

जोशी : क्या कहा, वह नसीब से मरा है?

स्त्री : नसीब से नहीं तो और किससे मरा है ? आपको ढेर सारी भिक्षा नहीं दी, इसलिए मर गया ?

जोशी : मामूली भी क्यों न हो, लेकिन वह हमारे समाधान के लायक तो होनी ही चाहिए !

स्त्री : उसने आपके समाधान के लायक दिया होता तो क्या आप उसके बेटे को बचा देते ?

जोशी : क्या इसमें भी संदेह है ? यदि उसने मेरा समाधान किया होता तो मैं उस बच्चे की सारी अल-बलाओं को दूर कर दिया होता और क्या वह अब तक पुत्रवती नहीं हुई होती ?

विदूषक : (सभी लोगों की ओर हाथ दिखाते हुए) जोशी हमारे बच्चों को क्यों मरने देते हैं, यह बात तुम उनसे ही पूछो।

स्त्री : उसके बच्चे पर कौन-सी बला थी, इसके बारे में मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है, आप ही क्यों नहीं बताते ?

जोशी : क्या तुमको ग्रहों की बला मालूम नहीं ? बहन, महादेव जैसे भगवान को भी डर के मारे पानी में डुबकी लगाकर छुपना पड़ा था। उनकी लपट-झपट से कौन बचा है !

विदूषक : (सभी लोगों की ओर हाथ दिखाते हुए) महादेव सचमुच ही भोले हैं। इसलिए उन्होंने जोशी की बात सुनी और ग्रहों से डर गए।

स्त्री : (डरते हुए) तो क्या वे मुझपर बला डालना चाहते हैं ?

जोशी : तेरे को तो नहीं, किंतु तेरे होनेवाले बेटे के मूल पर वे नजर रखे हुए हैं। मैं कह नहीं सकता, वे उसका अंत कैसे करेंगे !

विदूषक : यदि जोशी लोगों को मौत से बचा सकते हैं, तो अंग्रेज सरकार को सारी दवाएँ, इलाज एक ओर रख देना चाहिए, सारे अस्पताल बंद कर देने चाहिए और वह सारा काम जोशी को सौंप देना चाहिए या नहीं ?

स्त्री : (बहुत घबराए हुए, हाथ की भिक्षा खड़े-खड़े सूप में डालकर, हाथ जोड़कर बड़े दयनीय स्वर में कहती है) महाराज, इसके लिए कुछ इलाज हो तो बताइए।

जोशी : अरी, तू मूर्ख है। उसका इलाज क्या तेरे से होगा ? तेरे पति को तो मात्र चार रुपए मिलते हैं।

विदूषक : यदि जोशी भविष्य जानते हैं और बताते हैं तो फव्वारे पर छलाँग लगाकर मरे हुए पेशवा के बारे में उन्होंने उनके सभी सरदारों को पहले क्यों नहीं बताया ? उस वक्त जोशी का ज्ञान क्या बंगाल में चला गया था ?

स्त्री : (**पति कहाँ से लाकर देगा, यह मन-ही-मन सोचते हुए**) आप ठीक कह रहे हैं महाराज ! कृपा करके आप मुझे यह बताइएं कि कितना खर्च पड़ेगा ?

जोशी : ठीक है, ठीक है। आज मुझे जाने दे। फिर कभी इसके बारे में देख लेंगे। मेरी भिक्षा का समय बीतता जा रहा है।

स्त्री : (**बड़े आग्रह से**) ऐसा मत कीजिए, महाराज ! मैं आपको आपकी भिक्षा हो सके, इतना अनाज दे रही हूँ।

जोशी : तू तो अनाज दे देगी, बात सही है, लेकिन उसे पिसाना, जलावन के अलावा सब्जी-भाजी, घी चाहिए कि नहीं ? तेरे सिर्फ अनाज के दाने लेकर क्या मैं घुंघनी बना करके खाऊँगा ?

स्त्री : (**गिड़गिड़ाते हुए**) महाराज, इसमें जो कुछ लगता है, वह सब मैं देती हूँ; लेकिन मेरे होनेवाले बच्चे के ग्रह कैसे दूर होंगे, इसके लिए आप मुझे कुछ उपाय बताइए ! आपके मुझपर बड़े एहसान होंगे, महाराज !

जोशी : तुम कुनबियों की औरतें क्या जैसा बोलेंगी, वैसा कर पाएँगी ? अरी, तेरा घरवाला आ गया तो तू अपने घर में जाकर बैठ जाएगी, फिर यहाँ मेरा कुछ भी क्यों न हो।

स्त्री : महाराज, ऐसा कैसे होगा ? क्योंकि मेरा घरवाला हमेशा कहता रहता है कि 'वर्णानाम ब्राह्मण गुरु, ब्राह्मणों को देने से कुछ कम नहीं होता। लेकिन मेरी नौकरी ही बहुत मामूली दर्जे की है, क्या कर सकता हूँ ? यदि ईश्वर मेरे मालिक के मन में दया उत्पन्न कर दे और मेरी तनख्वाह बढ़वा दे तो मैं निश्चित रूप से ब्राह्मण को जो लगे, वही दूंगा।' (**इधर जोशी मन-ही-मन हँसकर होंठ चाट रहा है**) आप उनका किसी भी तरह का डर मत रखिए। लेकिन दरिद्रता की वजह से शायद (**घर के अंदर**) मेरे से कुछ शिकवा-शिकायत करना हो तो करेंगे। महाराज, मैं घर में जाकर आती हूँ। आप जरा रुकिए (**यह कहकर वह जाने लगती है**)

विदूषक : जोशी की फुसलाने की गोली तीर की तरह असर कर गई, है न सही ?

जोशी : बहन, नहीं-नहीं, अब मुझे जाने दे। बहुत हो गई तेरी बातें।

स्त्री : **(घर के भीतर जल्दबाजी में जाते हुए कहती है)** महाराज, मैं आपका ही काम करने जा रही हूँ।

[कुछ ही पल में वह स्त्री करीबन एक आढ़ बाजरा एक टोकनी में डालकर ले आती है और कहती है :]

जोशी बाबा, यह अनाज लीजिए। अब तो पूरा हो गया न ?

जोशी : **(गुस्से से)** हम तेरे घरवाले की तरह हथौड़ा लेकर लोहा पिटते हैं क्या ? वाह ! वाह ! अच्छी ढोंगी है तू ! हम सिर्फ रोटी खाकर कैसे जिएँगे ? इस तरह तो हम तीन दिन भी जिंदा नहीं रह सकते। हम ब्राह्मणों को कम-से-कम एक बार भात चाहिए कि नहीं ?

विदूषक : यारो ! जहाँ मुट्ठीभर अनाज मिलने की संभावना नहीं थी, वहाँ से जोशी किस चतुराई से चावल भी ले लेते हैं !

स्त्री : महाराज, इतने नाराज मत होइए। मैं उसके लिए भी कुछ अलग से व्यवस्था किए देती हूँ।

जोशी : **(मुस्कराते हुए)** अच्छा, ऐसी बात है ! बहन, तू समझदार है **(यह कहकर कमर से सूंघनी की डिब्बी निकालकर, मूंछ पर हाथ घुमाते हुए बड़े प्रसन्नचित्त भाव से नाक में सूंघनी ठूंस रहा है।)**

स्त्री : **(इतने में औरत साड़ी की मुर्री से चवन्नी निकालकर जोशी को देते हुए कहती है)** यह लीजिए महाराज, आपके दाल-चावल के लिए।

जोशी : रुक जा। मुझे सूंघनी तो डालने दे। बहन, तेरी हमेशा काम की जल्दबाजी रहती है।

विदूषक : जोशी को पहले बड़ी देर हो रही थी, और अब रुकने के लिए कह रहे हैं, क्योंकि पंडित की थैली भर गई है।

स्त्री : महाराज, अब तो आपका समाधान हो गया न ?

जोशी : **(गरदन हिलाकर)** हुआ है, लेकिन अब यहाँ बैठ मत, जल्दी से एक पैसा और छोटी-सी सुपारी ले आ और मेरे पास के इस पंचांग पर रख दे। फिर मैं तेरे होनेवाले बच्चे पर ग्रहों की आनेवाली बला को दूर करने का उपाय बताता हूँ।

[उस स्त्री के पास फिलहाल पैसा नहीं है, इसलिए पड़ोसिन से उधार लेकर, साड़ी की मुर्री से एक सुपारी निकालकर जोशी के सामने रख देती है और बड़ी विनम्रता से उसके पाँव छूती है, और कुछ हटकर माथे पर हाथ रखकर बड़ी उदास मुद्रा में बैठ जाती है।]

स्त्री : अब बताइए महाराज !

जोशी : बहन, तेरा राशि का नाम क्या है ?

स्त्री : मेरा नाम ? मेरा नाम जोगाई है।

[जोशी ने राशिचक्र अपने सामने रखा। कुछ समय तक दोनों हाथ के अंगूठे को अन्य उँगलियों के जोड़ पर घुमाकर मन-ही-मन बोलता रहा। कुछ देर बाद होंठ दबा करके, उस औरत के मुँह की ओर बार-बार देखने का दिखावा करते हुए बोला :]

जोशी : बहन, तेरे नाम की मकर राशि है। मकर राशि का शनि तेरे बच्चे को सताए बगैर नहीं रहेगा, यह तू निश्चित रूप से जान ले। इसके लिए इलाज है। तू फिलहाल नियमित रूप से आज से ही हर शनिवार को पंचमुखी मारुति पर रूई के फूलों की या पत्तों की ही क्यों न हो, माला करके, अर्पित करते रहना। इससे तेरे मन को कुछ समाधान मिलेगा, और दूसरी बात यह कि यदि तू मारुति से यह कबूल करेगी कि 'हे भगवान, मेरे होनेवाले बच्चे पर ग्रहों की बला टले, इसलिए तू फिलहाल उनको रोक दे। मैं इसके लिए तेरे नाम से तेईस ब्राह्मणों को आनेवाले श्रावण माह में घी-रोटी का भोजन कराऊँगी।' तभी तो तेरे बच्चे को कोई पीड़ा नहीं होगी।

विदूषक : ग्रहों की पीड़ा एकदम झूठ बात है, यह तो जोशी के कहने से ही सिद्ध हुआ है। सच बात तो यह है कि जोशी और जोगाई इन दोनों की एक ही राशि है। शनि ग्रह जोगाई को रोटी खिलाने के लिए कहता है और जोशी को उसकी रोटी खाने के लिए। दूसरी बात मुझे यह भी दिखाई देती है कि ब्राह्मणों ने अपने मन से ग्रहों को पैदा किया है। इसलिए वे अपने जोशी बाप को कैसे पीड़ा देंगे ? सही में ग्रहों को अपने बाप को पीड़ा, कष्ट नहीं देना चाहिए, ऐसा ही मुझे भी लगता है। लेकिन ब्राह्मण ठहरे ग्रहों के भी बाप। उन्होंने दूसरों को अपने बेटों की तरह···

स्त्री : महाराज, श्रावण महीना और कितने दिन हैं ?

जोशी : आज से सोलह दिनों बाद शुरू होगा।

स्त्री : यह तो अब करीब ही है। मेरा घरवाला घर में आने के बाद मैं उसको सारी बातें बताकर इसके बारे में व्यवस्था करूँगी।

जोशी : बहन, अब मैं चलता हूँ। सचमुच में तू इसका इंतजाम कर ले। इसको टालना मत। तेरा कल्याण हो, इसीलिए मैंने तुझे यह रास्ता बताया है।

स्त्री : जाइए, लेकिन पुनः आप इधर कब अपने चरणों की धूल ले आएँगे, कृपया इसके बारे में पहले मुझे बताते जाइए।

जोशी : अब मेरा इधर आना कैसे होगा ? मेरे पीछे बहुत सारे काम पड़े हैं।

स्त्री : तो फिर आप रहते कहाँ हैं, यह तो बताते जाइए !

जोशी : पुराने गंज में कसाई की गली में जैराम जोशी का मकान पूछने पर कोई भी मेरा मकान बता देगा; क्योंकि मैं उनके पड़ोस में थोड़ा-सा आगे उत्तर की तरफ रहता हूँ।

विदूषक : क्या बात है ! जोशी और कसाई एक गली में ! क्या भेड़ों को ग्रहों के पिंडों से मुक्त कराने के लिए रहते हो ?

स्त्री : इस समय अब आप जाइए। मैं दो-तीन दिनों में आपको बुलावा भेजूँगी, तब आप कृपया अवश्य आइएगा।

[जोशी घर की ओर चल पड़ा।
जोगाई ने जल्दी से खाना पकाया और दहलीज पर पति का इंतजार करते हुए बैठ गई। कुछ देर बाद उसका पति आया। उसने उसको भोजन परोसा और स्वयं अपने लिए भी भोजन परोस लिया। फिर बोली :]

स्त्री : अजी, ग्रहों की पीड़ा क्या सही बात है ?

पुरुष : अरी, सही नहीं तो क्या गलत है ? ब्राह्मण लोग हमेशा से ग्रहों को सताते आए हैं, इसलिए वे हम लोगों को ईसाई पादरियों की तरह बताते फ़िरते हैं, तो उनका बताना झूठ है, ऐसा तेरे को लगता है ?

विदूषक : कुनबी को अपनी औरत से भी ज्यादा ज्ञान न होना शिक्षा का अभाव नहीं है तो क्या है ?

स्त्री : झूठ नहीं लगता, इसलिए तो तुमसे पूछा, क्योंकि आज सुबह कसाई गली के जोशी पंडित आए थे और अपने होनेवाले बच्चे के बारे में

प्रतिकूल बातें बता के गए हैं।

पुरुष : प्रतिकूल बातें ? क्या कहा उन्होंने, मुझे भी तो बताओ !

स्त्री : **(उदासी-भरे स्वर में)** तुमको गुस्सा तो नहीं आएगा, क्योंकि उन्होंने खर्चा तो कुछ भी नहीं बताया।

पुरुष : वैसे कितना खर्च आएगा ?

स्त्री : खर्च तो कुछ नहीं, बहुत कम है, लेकिन तुम मंजूरी दे देते हो, तो समझो, हो गया काम।

पुरुष : मंजूर न करें तो क्या करें ? अरी, हम लोग इतना सारा कुछ करते हैं, फिर उसका फल ही क्या है ? यदि बच्चे के काम नहीं आया तो फिर किस काम के ?

विदूषक : देखिए, कुनबियों में कितनी अज्ञानता है ! ये लोग तो जोशी की ढोंगी बातों को भी नहीं समझ पाते। उसकी ढोंगी बातें भी इनको उपदेश की तरह ही लगती है। इनकी तकदीर ही फूटी हुई है, तो कौन क्या करेगा ?

स्त्री : बताती हूँ, बताती हूँ **(इस तरह दो-चार बार गरदन हिलाते हुए कहती हैं)** पंडित ने कहा कि मेरी मकर राशि का जो शनि है, वह हमारे होनेवाले बच्चे को सता रहा है, इसलिए हम लोगों को हनुमान के नाम से तेईस ब्राह्मणों को घी-रोटी का भोजन खिलाना चाहिए।

पुरुष : ठीक है; लेकिन इसके बारे में तेरा क्या विचार है ?

स्त्री : मैं औरत की जात ! मुझे इतनी अकल कहाँ है ? तुम जैसा कहोगे वैसा ही करूँगी, क्योंकि उसके लिए पैसा नहीं चाहिए क्या ? यहाँ मुँह की बातों से तो काम नहीं चलेगा।

पुरुष : तू जो कह रही है, वह सही है; लेकिन इस पर कितना खर्च आएगा, यह तो बताओ !

स्त्री : ऐसे तुम क्यों अनजान की तरह पूछते हो ? हम लोग किसी त्यौहार पर रोटियाँ बनाकर क्या नहीं खाते ?

पुरुष : अरी, तू समझती नहीं कि हम लोग केवल भेली के पानी के साथ रोटियाँ क्यों खाते हैं ? लेकिन उनको तो खटाई की तरह पेट भर के घी खाने को चाहिए कि नहीं ? अब उनको कितना घी चाहिए, यह क्या तू और मैं बता सकते हैं ? फिर बता, नादान तू है या मैं ?

स्त्री : **(बहुत शर्मिंदा होते हुए)** ठीक है, तो मैं जोशी पंडित से पूछकर आती हूँ।

पुरुष : क्या तेरे को उनका मकान मालूम है ? मालूम हो तो बता, मैं स्वयं जाकर पूछ करके आता हूँ। तू गर्भवती औरत, धूप में कहाँ जाएगी !

[इतने में जोशी दरवाजे के सामने आकर खड़ा हो जाता है। उसके घरवाली के नाम से पुकारते ही घरवाली और उसका पति बहुत खुश हो जाते हैं और दौड़ते हुए दोनों बाहर जोशी के पास आते हैं।]

स्त्री : (ठोढ़ी मामूली ऊपर करके आँखें घुमाते हुए) क्यों पंडितजी, इतने घबराए हुए क्यों हैं ?

जोशी : बहन, मेरी सूंघनी की डिबिया पता नहीं कहाँ गिर गई। तुम्हारे घर में रह गई होगी, समझकर मैं उसको खोजते हुए यहाँ आया हूँ।

पुरुष : महाराज, आपकी डिबिया कितने कीमत की थी ?

जोशी : बाबा, तेरे को क्या बताऊँ ! वह किसी तुम जैसे यजमान ने ही मुझे धर्मबुद्धि से दी थी। उसकी कीमत क्या थी, भला मैं यह कैसे बता पाऊँगा ? लेकिन बंबई में उसकी कीमत चार आना होनी चाहिए, ऐसा मेरा अंदाजा है।

पुरुष : यह लीजिए महाराज, मेरे पास चार आने हैं। किंतु आप निराश मत होइए !

[जोशी ने सोचा, शायद इसकी औरत ने पिछली चवन्नी के बारें में इसको सब कुछ बता दिया है, इसलिए कुनबी को मेरी चालाकी समझ में आ गई है और अब वह केवल मेरा दिल टटोलना चाहता है। इस तरह सोचते हुए, कुछ चौंकते हुए कहता है :]

जोशी : नहीं, नहीं ! मुझे तुम्हारी चवन्नी नहीं चाहिए। मुझे तुम्हारे जैसे गरीबों को इस तरह कष्ट नहीं देना चाहिए। लेकिन क्या करें ? यदि तुम्हारे घर में नहीं आया होता तो मुझ जैसे ब्राह्मण का इतना बड़ा नुकसान नहीं होता।

पुरुष : यह सब जानते हुए ही महाराज, आपको चवन्नी दे रहा हूँ। इसकें बारे में आप कुछ गलत बातें मन में मत लाइए। मैं अपनी खुशी से आपको दे रहा हूँ।

जोशी : बहुत अच्छी बात है। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

[यह कहकर जोशी ने देखते ही देखते कुनबी के हाथ की चवन्नी को बाधावाले की तरह गायब कर दिया।]

विदूषक : जोशी ने डिबिया के बहाने कितनी सफाई से कुनबी की

चवन्नी को हड़प लिया, यह बात आप लोगों के ध्यान में आई है कि नहीं ?

स्त्री : महाराज, आप थोड़ा शांत हो जाइए। आपने पिछली बार ब्राह्मण-भोजन के बारे में जो बताया था, उस पर कितना खर्च आएगा, कृपया मेरे पति को यह बता दीजिए। आपके बताए अनुसार हम उस पर अमल करेंगे।

जोशी : बहुत अच्छा, मुझे कोई एतराज नहीं। तुम्हें बताना हमारा कर्तव्य है—करना, न करना तुम्हारा काम। बताकर हमारा काम पूरा हो जाएगा।

विदूषक : देखो भाई, जोशी का काम कितना आसान है ! मुंह से बता दिया, बस हो गया। फिर सारा बिना काम के मिल जाता है।

पुरुष : पहले जो बताया था, वही बताइए महाराज।

जोशी : करीब-करीब पाँच रुपए का खर्च पूजा के लिए आएगा, ऐसा मुझे लगता है। और फिर आगे जितनी शक्कर डालोगे, वैसा मीठा होगा। आगे आपकी भक्ति पर निर्भर करता है।

विदूषक : जोशी ने पाँच रुपए का खर्च कुनबी के माथे पर चिपका दिया, फिर भी कहता है कि आगे भक्ति पर निर्भर है। पता नहीं पंडित का इरादा क्या है ?

पुरुष : अच्छा महाराज, मैं किसी-न-किसी तरह एक-दो दिन में पाँच रुपए की व्यवस्था करके आपको लाकर दे देता हूँ। फिर आगे आप उसका ब्राह्मण-भोजन खिलाइए या जैसा आपको उचित लगे, वैसा कीजिए।

जोशी : तू पगला तो नहीं ? जैसा आपको लगे, वैसा करो, तेरे इस कहने का मतलब क्या है ? यह क्या है, मुझे बता दे ?

स्त्री : महाराज, इनके कहने का आप बुरा मत मानिए। हम कितना भी करें, तब भी आखिर कुनबी की जान। हमारा काम है हल जोतना। आप जैसे महानुभावों से किस तरह बात करनी चाहिए, हमें क्या मालूम ?

विदूषक : इस हल चलानेवाले की औरत को क्या पता है ! यदि कुनबी ने हल चलाते-चलाते शिक्षा पाई होती तो शायद जोशी कब का ही कहीं से कहीं दुम दबाकर भाग गया होता। लेकिन इस बहन के ऐसे बोलने

से ही दोनों हाथों से (भूदेव की तरह) पेट भरके पूजा करने में कोई कसर नहीं छोड़ता है।

जोशी इसमें अब कुछ भी कम नहीं है। तूने जो यह कहा, वह सब सही है। लेकिन बहन, यदि शायद ये पाँच रुपए पर्याप्त नहीं हुए तो क्या मुझे अपने घर के बर्तन बेच करके तेरे ब्राह्मणों को खिलाना चाहिए ?

विदूषक : कुनबियों के बर्तन जब तक हैं, तब तक भला ब्राह्मण कैसे अपने घर के बर्तन बेच सकता है !

पुरुष : महाराज, मैंने गलत कह दिया है, ऐसा क्यों कहते हैं ? लेकिन इस भोजन के लिए करीबन कितने रुपए का खर्च आएगा, यह मुझे साफ-साफ बता दीजिए, क्योंकि दो बार कर्जपत्र लिखवाने से लिखनेवाले को फिजूल में दुगुना पैसा देना पड़ेगा।

जोशी : अच्छा बाबा ! चला जा, दस रुपए कर्ज लेकर आ। मतलब, इसमें ब्राह्मणों को जप करने के लिए भी कह दूँगा। फिर सारी परेशानी एकदम खलास।

विदूषक : जोशी के हिसाब से कुनबी का कुछ भी क्यों न हो, अपना पेट भरना चाहिए, बस !

पुरुष : ऐसे ही समझा-बुझा करके बताइए महाराज ! यदि हम ना कहें तो फिर हमारे कान ऐंठिए। अभी आप जाइए। आप दोबारा अमावस्या के दिन आइए।

जोशी : तुमने मुझे अपना अच्छा नौकर बना लिया है ! अभी जाइए, कल आइए—बस, ऐसे ही चक्कर काटते रहना है मुझे ?

स्त्री : महाराज, इस तरह आने-जाने की चिंता आप मत कीजिए। मैं आपको और कुछ दे दूँगी। मैं आपका उपकार नहीं रखूँगी।

[स्त्री के यह कहते ही जोशी ने तो अपने घर का रास्ता पकड़ लिया, लेकिन इन नासमझ बातों को सुनकर उसके पति की कमर ही टूट गई। उसने मन-ही-मन में सोचा कि साहूकार के बगैर भला उसे कौन कर्ज देगा और उस कर्ज को वह कब तक लौटा पाएगा ? क्योंकि उसे कुल चार ही रुपए तो मिलते हैं। यह बच्चा नहीं, यह तो उसके लिए संकट बनता जा रहा है।]

स्त्री : क्यों जी, इतने नाराज क्यों हुए ? कहीं तुम्हारे मन में जोशी के बारे में कुछ संदेह तो नहीं ? उसकी मेहनत के बदले उसको कुछ देना नहीं चाहिए, इसके बारे में तो सोच नहीं रहे थे ?

पुरुष : मन में आने से क्या फायदा ? उसकी मेहनत का उसको दिए बगैर यह सारा होगा कैसे ? लेकिन अब मुझे कर्ज किससे लाना चाहिए, यही बात मैं सोच रहा था।

स्त्री : तुम क्यों चिंता करते हो ! जाओ, बाबजी साहूकार के काले खेत में रहता है। उसके पास से दस रुपए सवाई के भाव से ले आओ। साढ़े बारह का कर्जपत्र लिख दो। मतलब, हम धीरे-धीरे चुकता कर देंगे, फिर क्या बचता है ?

विदूषक : लेकिन ऐसी औरतों को यह क्यों समझ में नहीं आ रहा है कि ये साहूकार लोग किसी-न-किसी दिन उनके घर को बर्बाद करके रहेंगे ? कैसा है यह देव भोलापन ! कैसी है यह मूर्खता की बीमारी !!

[फिर चार-पाँच दिन में ही जोगाई का पति साहूकार को अपना खेत लिखवाकर ब्याज पर कर्ज ले आया और अपनी पत्नी के साथ जोशी को बुलाने के लिए उसकेमकान को खोजते हुए उसके यहाँ पहुँच गया। जोशी को कर्जपत्र दिखाते हुए कहता है :]

पुरुष : अब जल्दी कीजिए महाराज !

जोशी : जल्दी तो करनी ही चाहिए, लेकिन मन से जप करनेवाला ब्राह्मण, जो मेरे विश्वास का हो, उसको खोजना पड़ेगा।

स्त्री : महाराज, आप ही जप का भी काम कर लीजिए !

जोशी : मैं अकेला किस-किस काम को करूँ, यह भी एक बहुत बड़ी परेशानी है।

विदूषक : अरे, जप करना कौन-सी मेहनत का काम है, क्या यह विचार भी करने का काम है ?

स्त्री : महाराज, आपको जैसा उचित लगे वैसा कीजिए। हमें कोई एतराज नहीं है। आपके हाथों भगवान को प्राप्त हो जाए, बस, हो गया।

जोशी : इसलिए मैं इस पर सोच रहा हूँ। बात छोटी है, किसी से बोलना मत। मुझे जरा सोचने का मौका दो।

[यह कहकर जोशी मन में सोचता है कि यह काम दाम्या से ही करवाना चाहिए, क्योंकि उसमें कुत्ते की तरह बीच-बीच में

भौंकने की आदत है। इसलिए इस कुनबी को समझाने के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है। यह तय कर लेने के बाद कहता है :]

जोशी : सुनो, मेरा छोटा भाई है दामू। वही इस काम को मन से करेगा, ऐसा मुझे लगता है।

स्त्री : आपका दामू भाई आया, तो फिर बहुत ही अच्छा होगा।

जोशी : तो अब सुनो, किस-किस प्रकार का अनाज, कितना-कितना सामान लाना चाहिए, यह सब तुमको बताए देता हूँ। इसलिए तुम दोनों शांति से सुन करके अपने ध्यान में रख लो।

[करीबन चार रुपए खर्च करने के लिए बताकर कहता है :]

घी हम ले आएंगे; क्योंकि कैसा घी लेना चाहिए, इसका तुमको ज्ञान नहीं है।

[उनके जाने के बाद दामू से सवाल करते हुए पूछता है :]

जोशी : क्यों रे दामू, तू कल जप करने का काम करेगा ?

दामू : जप कौन करवा रहा है ?

जोशी : एक कुनवी है।

दामू : कितने दिन तक करवाने वाला है ?

जोशी : वह सारा मेरे हाथ में है। मैं जैसा कहूँगा, वैसा ही वह करेगा, बेटा !

दामू : तो फिर आठ दिन तक लगातार जप करने की तरकीब सोचिए, क्योंकि मेरी धोतियाँ फटी हुई हैं। मैं नई धोतियाँ खरीद लूंगा। लेकिन दादा, तुम उससे नई धोतियाँ मत मँगवाना। तुम उससे रुपए दिलवा देना। मैं अपनी पसंद से खरीद लूँगा।

विदूषक : किंतु दामू को अपने मन के दूसरे ही इरादों को पूरा करना था। वह कहाँ की धोती खरीदता है, यह इस जोशी को क्या मालूम !

जोशी : हाँ, ठीक।

[यह कहते हुए जोशी तुरंत उस कुनबी के घर को चल पड़ता है। लेकिन उस समय तक जोगाई ने अपने पति को सामान खरीदने के लिए बाजार भेज दिया था। वह अकेली ही घर में थी। इसलिए उसके पति को घर लौटने तक जोशी को कुछ समय तक वहीं रुकना पड़ता है। कुनबी के घर लौट आने पर :]

जोशी : बाबा, एक बात का इंतजाम होना बहुत जरूरी है। वह यह कि जप का काम तो अपने दामू ने ही कबूल कर लिया है। मैंने तुम्हारी गरीबी के बारे में उसको सब कुछ बता दिया है; लेकिन उसका यह कहना है

कि तुम लोगों ने जो इंतजाम किया है, वह तो बहुत ही अच्छा है, लेकिन एक दिन के जप से शनि ग्रह को शांत करना बड़ा मुश्किल है।

विदूषक : दामू ने जप का काम एक जोड़ी धोती पर स्वीकार किया। इस बड़े आदमी ने कुनबी पर उपकार ही किया होगा, मान लीजिए !

पुरुष : तो कितने दिन का जप होना चाहिए ?

जोशी : कम-से-कम ग्यारह दिन तो चाहिए ही। ऐसा मुझे भी लगता है।

पुरुष : मैं ना नहीं कहना चाहता; लेकिन इन सारी बातों के लिए जो रुपया है, इससे तो हो जाएगा न ?

जोशी : फिर क्या कर सकते हैं ! तेरे लिए उतने ही पैसों में जैसे-तैसे भी काम करना ही पड़ेगा क्योंकि जितनी चादर हो, उतना ही पाँव फैलाना चाहिए। मैंने उसको एक जोड़ी धोती देने की बात कबूल की है।

विदूषक : जोशी के बोलने की इस मितव्ययता में आपको कुछ धूर्तता नजर आती है कि नहीं ?

स्त्री : (खुशी में ताली बजाते हुए) तो बताइए महाराज, आपका निश्चय कब पूरा होगा ?

जोशी : तो फिर ग्यारह दिन के लिए उसको जप करने के लिए कह दूँ ?

पुरुष : हाँ, हाँ; बिलकुल। इस दस रुपए में जो कर सकते हैं, कीजिए। आप मुख्तियार हैं। हमसे पूछने के लिए भी मत आइए।

जोशी : हाँ, ठीक है। अब मैं चलता हूँ। लेकिन तुम गेहूँ-चावल को साफ करके रखना। गेहूँ को अच्छी तरह बारीक पिसवाकर रखना।

[यह कहकर जोशी चला जाता है।

कुछ दिन के बाद जोगाई के पति ने अपने मालिक दुकानदार को चार दिन की छुट्टी के बारे में खबर भिजवा दी और ब्राह्मण-भोजन का दिन आने से पहले ही सारी तैयारी पूरी कर ली।

ब्राह्मण-भोजन के एक दिन पहले जोशी उनके घर आता है। दरवाजे पर खड़े होकर कमर पर हाथ रखते हुए बड़े ठाठ में कहता है :]

जोशी : क्यों बाबा, क्या हुआ ? सारा इंतजाम है न ?

पुरुष : **(दोनों हाथ जोड़ते हुए)** महाराज, हमारी ओर से सारा इंतजाम है, लेकिन आपके जप का क्या हुआ ?

जोशी : पगले, तेरे को आज तक यह बात कैसे मालूम नहीं ! अरे, आज दस दिन हुए हैं, पंचमुखी मारुति के सामने दामू हर दिन जप कर रहा है। वाह ! अच्छा काम है तेरा ?

विदूषक : दामू ने **(दस दिन तक कुनबियों को कैसे डुबाना चाहिए)** इसके अलावा पहले दूसरा कोई जप किया होगा, ऐसा आपको लगता है ?

पुरुष : यदि ऐसा है तो बहुत ही अच्छा हुआ है; लेकिन हमको यदि बताया होता तो हम उनके पाँव छूने के लिए वहाँ अवश्य जाते।

जोशी : अब ये सारी बातें कल होंगी। क्यों घबराता है ? अब यह सारा सामान तू आज शाम तक हमारे घर पर लाकर डाल दे, फिर मैं सब कुछ अपने ही घर पर धीरे-धीरे बनवा लूँगा; क्योंकि एक तो तेरा घर बहुत छोटा है, दूसरी बात तेरे घर पर बर्तन भी कम हैं।

[ऐसा कहकर जोशी घर लौट आता है।]

विदूषक : बचा-खुचा सामान कुनबी के हाथ में जाने के बजाय, अपने हाथ में आ जाए, इसलिए कुनबी को फालतू बातों में उलझाए रखने की बात उसने अपने घर में ही पहले तय नहीं की होगी, यह कैसे माना जा सकता है ?

[इधर जोशी के बताने के मुताबिक जोगाई के पति ने सारा सामान सिर पर लादकर जोशी के घर पहुँचाना शुरू कर दिया। उधर जोशी और उसकी पत्नी में यह संभाषण होता है :]

जोशी : अरी, तेरे को कुछ मालूम भी है ?

ब्राह्मण-स्त्री : क्या कहते हो ? जब तक आप नहीं बताएँगे तब तक मुझे कैसे मालूम होगा ?

जोशी : अरी, अपनी जोगाई का घरवाला कल तेईस ब्राह्मणों को भोजन खिला रहा है।

ब्राह्मण-स्त्री : अच्छा, अच्छा, तो ब्राह्मण बुलाने का काम किसके जिम्मे है ?

जोशी : यह काम मेरे जिम्मे है। मैं ही उसमें मख्तियार हूँ। मैं जिसको

चाहूँगा, उसको न्यौता दूंगा।

ब्राह्मण-स्त्री : तो मेरे सगे और चचेरे भाई—इन सभी को बुलाना आपके लिए ठीक रहेगा। दूसरी बात यह कि आप जब उस काम में कर्ताधर्ता हैं तो उनको दक्षिणा भी उचित दिलवा दीजिएगा।

जोशी : तुम्हारा कहना ठीक है। ऐसे समय यदि हम अपने रिश्तेदारों के काम नहीं आएंगे तो फिर कब आएँगे? मैं इन्हीं लोगों को बुलानेवाला हूँ। मैंने तुमसे इसलिए पहले पूछा, क्योंकि मैं तुम्हारी राय जानना चाहता था।

विदूषक : ऐसे मौके पर ही जोशी को अपने संबंधियों के काम आना चाहिए; क्योंकि इसी को कहते हैं—लूट का गेहूं और बाप का श्राद्ध!

ब्राह्मण-स्त्री : (बल खाते हुए कहती है) देखा ना मर्दों की जात? मेरी राय क्या है, यह तो तुम्हें जानना था, क्या तुम्हें अपने साले की चिंता नहीं है?

विदूषक : बहन, जाति पुरुषों की सही, लेकिन एक जाति ब्राह्मणों की भी है। तुम्हें मालूम नहीं, इसलिए तुम अपने समाज की विधवा स्त्रियों से इस जाति के बारे में जरा पूछना। ब्राह्मणों की जाति का सही रहस्य क्या है, वे पूरा सही-सही खोलकर बता देंगी!

[इसी समय जोगाई का पति सामान का बोझा सिर पर ढोकर दरवाजे के सामने आकर खड़ा हो जाता है और जोशी को 'महाराज, जरा बोझ उतारने में मदद कीजिए' कहकर बुलाता है।]

जोशी : अरे, मैंने अभी स्नान किया है। दूसरे किसी रास्ते चलते आदमी को बुला ले तो वही तेरे को उतारने में मदद करेगा।

ब्राह्मण-स्त्री : **(धीरे से आँखें मिचकाते हुए)** आप पर पागलपन तो सवार नहीं हुआ? राह चलते किसी आदमी को इस पर दया आएगी और वह बोझा उतारने में मदद करेगा, यह आप क्यों चिंता करते हैं? आप पूजापाठ करके भोजन के लिए तैयार रहिए।

विदूषक : राह चलते लोगों को कुनबी पर दया आवे और उसकी मेहनत की रोटी खानेवाली इस बहन को उस पर दया न आवे,

इसका मतलब तो आप जानते ही हैं न ?

पुरुष : महाराज, आप उतारते हैं या नहीं ? नहीं, तो मैं इस बोझ को खड़े-खड़े फेंक दूंगा, क्योंकि मेरी गरदन टूट रही है। मेरे सिर को मोच पड़ गई है। अब मैं आपके अछूतेपन की सोच को क्या कहूँ ?

विदूषक : ईसाइयों के शास्त्रों में लिखा है कि 'तुम लोग बोझ से लदे हुए हो।' वह यहाँ सत्य हो रहा है कि नहीं ?

ब्राह्मण-स्त्री : **(गुस्से में)** अरे, बेकार की बातें मत करो। मैं उतारती हूँ, लेकिन जरा सँभलकर। सारा भार मुझ पर ही मत डाल देना।

पुरुष : नहीं, बहनजी ! आप थोड़ी-सी सहायता कीजिए। टोकरे का झुकाव सँभालिए तो मैं ही उतार लेता हूँ। आपको कोई कष्ट नहीं होने दूंगा।

[बोझ उतरने के बाद]

जोशी : **(दूर से ही)** अरे, जरा बैठ जा ! थोड़ा आराम कर ले। क्या तेरे को बड़ा बोझ हो गया था ?

पुरुष : चलता ही है महाराज ! यह तो हमारे कर्म का भोग है। शरीर में जब तक जान है, भोगना तो पड़ेगा ही।

विदूषक : सत्य, सत्य, एकदम सत्य ! कुनबी के जन्म को ब्राह्मण-ग्रहों का भोग तो लगा ही है।

जोशी : ठीक है। अरे, तेरी पहचान के किसी ब्राह्मण को क्या कल हमारे घर भोजन के लिए बुलाना है ?

[वह बहुत खुश हो जाता है। जवाब देने के लिए कुछ कहना ही चाहता है कि इतने में जोशी की पत्नी उसके बोलने के पहले ही बीच में मुंह मारकर जोशी से कहती है :]

ब्राह्मण-स्त्री : आप पागल तो नहीं हो गए ?

जोशी : पागल का मतलब ? तुमने मुझे ऐसा क्यों कहा ?

ब्राह्मण-स्त्री : क्यों जी, आपने यदि इसकी पहचान के ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया तो यह ब्राह्मण-भोजन होगा या मेहमानी, मुझे साफ-साफ बता दीजिए।

जोशी : **(इसने अपने भाई के लिए ही ऐसा कहा है, ऐसा मन-ही-मन में**

सोचते हुए) वाह ! ऐसे मौके पर अच्छी बात तुम्हारे ध्यान में आती है।

विदूषक : देखिए ! ब्राह्मणी ने अपने भाई के लिए अपने पति को समझाने का कैसा तरीका खोज निकाला है !

पुरुष : महाराज, बहनजी ने तो आपको फटकार दिया है। अब तो मैं भी आपके घर खाना नहीं खाऊँगा।

जोशी : नहीं बेटे, ऐसा क्यों कहता है ! ब्राह्मणों को भोजन खिलाने के बाद जो कुछ बच जाता है उसे प्रसाद के रूप में देना होता है।

विदूषक : ब्राह्मणों को घी-रोटी की भरमार और जिसका माल, उसको बच जाने पर प्रसाद के रूप में। वाह ! जोशी ने तो यहाँ बहुत···कर दिखाया।

पुरुष : ठीक है महाराज, आपकी जैसी इच्छा हो।

जोशी : अब तू चला जा और जलाव लकड़ियाँ भी दो-तीन या जितनी भी शेष हो, वह सारी शाम तक यहाँ लाकर रख दे। अब मैं खाना खाने के बाद भवानी पेठ में जाकर ब्राह्मण को बताए देता हूँ। नहीं तो वे किसी दूसरे का निमंत्रण स्वीकार कर लेंगे।

पुरुष : ठीक है। जरा जल्दी कीजिए महाराज !

[कहकर टोकरा सिर पर औंधा डालकर वह सीधे रास्ते से जाने के लिए निकला। इतने में जोशी हाथ में रेशमी वस्त्र का पल्लू पकड़े हुए बड़े घबड़ाए चेहरे से दौड़ते हुए बाहर कुनबी की पीठ से लगकर खड़ा हो जाता है।]

जोशी : अरे बेटे, तू ऐसा कर, जब तू दूसरा बोझ लेकर आएगा तब बचे हुए सारे रुपए भी अपने साथ सँभालते हुए ले आना। फिर मैं आज ही जप करनेवाले ब्राह्मण के लिए जोड़ा धोती ले आऊंगा। कल समय मिलेगा या नहीं। पिछली बार ही दामू ने मुझसे पैसे देने के लिए कहा था कि वह अपने पसंद की धोती स्वयं ही खरीद लेगा। मेरा क्या है, यदि पैसा चाहता है तो पैसा ले या फिर धोती ले ले। मेरी ओर से कोई रुकावट नहीं। वैसे उसने दो-तीन बार मेरे से पैसा माँगा था।

विदूषक : जोशी कहता है कि दामू ने उससे दो-तीन बार पैसे माँगे हैं, क्या इस बात पर कोई भरोसा करेगा ?

पुरुष : ठीक है (**कहकर चल पड़ता है**)।

ब्राह्मण-स्त्री : (**जोशी को खाना परोसते समय**) क्यों जी, उस कुनबी की पहचान के ब्राह्मणों को नहीं बुलाना चाहिए, क्या मेरी यह तरकीब ठीक नहीं ?

विदूषक : ब्राह्मणी की तरकीब को यहाँ यदि पाखंडी कहा जाए तो क्या आपको कोई एतराज होगा ?

जोशी : वाह ! आखिर तुम औरत किसकी हो ? ब्राह्मण घर में पैदा होकर इस तरह की तरकीब नहीं सोची तो फिर क्या हुआ ! सारा जन्म ही व्यर्थ हो गया, समझ लो ।

ब्राह्मण-स्त्री : क्यों जी, आप भवानी पेठ में कब जाएँगे, कृपया यह मुझे बता दीजिए, क्योंकि बहुत दिन हो गए हैं, माँ से मेरी मुलाकात नहीं हुई है। इसलिए आप बता दीजिए कि कल किसी न किसी तरह वह मुझसे मिल ले। यदि आप भोजन करने के तुरंत बाद ही जाएँगे तो वह मिल जाएगी, नहीं तो पुराण सुनने के लिए चली जाएगी।

जोशी : ठीक है, मैं खाना खाते ही चला जाऊँगा, लेकिन जब तक वह धोती के पैसे लेकर नहीं आता है, तब तक मुझे रुकना पड़ेगा कि नहीं ? क्योंकि वह मुझे बड़ा गपोड़िया दिखता है।

विदूषक : साहूकार भी कर्ज देकर सुविधा से किस्त के हिसाब से पैसा वसूल करते हैं, लेकिन जोशी जैसे लोग यमराज की तरह पीछा करके बड़ी बेसब्री से लेते हैं कि नहीं ?

ब्राह्मण-स्त्री : आप ऐसा कीजिए। मैं बताती हूँ। किसी दर्जी के पास चले जाइए और उससे दो दिन की सहूलियत से कुनबी को दिखाने के लिए धोती का एक जोड़ा ले आइए। जब वह रुपया लेकर आएगा तब मैं उसको यह बता दूँगी कि 'तू सारा रुपया मुझे दे दे। मैं इन रुपयों को किसी के हाथ जोशी पंडे को भिजवा देती हूँ; क्योंकि उन्होंने तुम्हारा बहुत इंतजार किया। उनको तो कल के लिए ब्राह्मणों को बताने की बहुत जल्दी थी।' यह कहकर मैं उससे रुपए लेकर अपने

पास रख लूंगी ! फिर आप दामू दाजीबा को दें या खुद अपने पास रख लें।

विदूषक : बाप रे बाप ! केवल पेट के लिए कितने धूर्त होते हैं ये लोग !

जोशी : तुम्हारी तरकीब तो बहुत अच्छी है, लेकिन उसमें से कुछ भी कम मत करना।

ब्राह्मण-स्त्री : वाह ! आखिर मैं पत्नी किसकी हूँ ? ऐसा कैसे होगा ? मैं तो आपके साथ हूँ। मैं उससे पहले ही पैसा ले लूंगी, फिर उसके सिर से बोझा उतारूँगी। इसके बारे में आप चिंता मत कीजिए।

विदूषक : कुनबी के पास से पहले पैसे लेकर फिर उसके बोझे उतारेगी। वाह ! कितनी दयावान समझना चाहिए इसको ?

जोशी : अच्छी बात है। तुम्हारी होशियारी का तो कहना ही क्या ! अब इसके लिए मुझे बिलकुल चिंता नहीं है। तुम अपना काम स्वयं कर ही लोगी।

ब्राह्मण-स्त्री : क्यों जी, यह कुनबी क्या घर का धनवान है ? यदि हो तो इसी तरह से और भी दो-तीन भोजन करवाइए न !

जोशी : तुम जो कह रही हो, वैसा कुछ भी नहीं है। यदि यह आदमी धनवान होता तो मैं उससे कहकर पाँच बार ब्राह्मण-भोजन करवाने की नींव रख दी होती और फिर उसके घर में मुझे पाँच बार हरि-विजय पढ़ते रहने की आवश्यकता ही क्या थी ! फिर भी, जब उसका कर्जा चुकता हो जाएगा, तो इसके लिए कुछ सोचा जा सकता है। लेकिन तुम उसको यह बता देना कि आज रात वह हमारे ही घर में सोने के लिए आ जाए, क्योंकि कल सुबह के समय बर्तन माँजने के लिए हमने किसी मजदूर को नहीं बुलाया है। और उसको यह भी बता देना कि हमने नौकर को बुलाया होता, लेकिन इस सारे काम के लिए दस रुपए पर्याप्त होते हैं या नहीं, यही हमारी चिंता है।

विदूषक : ऐ मेरे सभी माली कुनबी भाइयो ! तुम लोग इस संवाद को ध्यान से पढ़ोगे या सुनोगे तो निश्चित रूप से तुम लोग इस बात को अनुभव करोगे कि एक बार अपने घर पर डाका पड़ा, तब भी चल जाएगा, लेकिन इस ब्राह्मण जोशी पर भरोसा करने की बात

अपने सपने में भी नहीं सोचनी चाहिए।

ब्राह्मण-स्त्री : आपको तो बहुत सारे कारण देने आते हैं !

विदूषक : कारण देने के लिए भी तो बहुत सारी मेहनत करनी पड़ती है। क्या करेंगे बेचारे ! कम-से-कम जीभ तो हिलानी चाहिए !

जोशी : फिर करें भी क्या ? हम ब्राह्मणों का ऐसे किए बगैर गुजारा कैसे होगा ?

विदूषक : भाइयो, जरा रोजगार-धंधा कीजिए, तो इस दुनिया में तुम्हारा गुजारा (मातंग-महारों से कमीनापन किए बगैर) बहुत ही अच्छी तरह से होगा। अब इन तमाम कुकर्मों को छोड़ दो; क्योंकि मेरे हिसाब से आगे तुम्हारी स्थिति अच्छी नहीं होगी।

[इतने में जोशी का भोजन समाप्त हुआ। हाथ-मुँह धोकर और वस्त्र बदन पर ओढ़कर, पीतांबर को कील पर टाँगकर, डरते-डरते धोती पहनकर, चलते-चलते ही कुरता बदन में डालकर सास के घर पर पहुँचा। 'कल भोजन की व्यवस्था उनके घर ही होगी और उन लोगों को हर हालत में उनके यहाँ पहुँचना है', यह कहकर वह वहाँ से कपड़ागंज के लिए चल पड़ा। वहाँ से उसने एक धोती का जोड़ा उधारी में खरीदा और बाकी संबंधियों से मिलने में उसने रात के दस बजा दिए। घर में आकर पत्नी से पैसे के बारे में पूछा। कुनबी भी सोने के लिए चला आया देखकर, उसकी तारीफ की और बिस्तर पर जाकर आराम से सो गया।

दूसरे दिन करीबन दस बजे तक सगे-संबंधियों के साथ मिलकर कुनबी से काम लेता रहा, बाद में जोशी ने उसको कहा कि 'अब तू घर चला जा। अच्छी तरह स्नान कर लेना और अपनी पत्नी को लेकर एक बजे तक यहाँ चले आना। मतलब तब तक मैं सभी ब्राह्मणों को भोजन करवा दूँगा और उनको मारुति के मंदिर में दक्षिणा देने के लिए ले जाऊँगा, फिर वहीं पर तेरे को उनसे आशीर्वाद दिलवाऊँगा।' यह कहने के बाद वह कुनबी को बड़े खुश होकर देखता है।]

[कुनबी घर आया और अपनी औरत को बताने लगा कि अब सारा काम हो गया है। अपन दोनों एक बजे के करीब मंदिर में जाकर आशीर्वाद लेंगे, और फिर बस, हो गया।]

स्त्री : अब मेरा जी घबरा रहा है।

पुरुष : घबराएगा नहीं तो और क्या होगा ?

[इतने में बारह बजे की सायरन की आवाज सुनाई पड़ती है। बड़ी जल्दबाजी में करीबन साढ़े बारह बजे दोनों जोशी के घर पहुँचते हैं। देखते हैं कि ज़ोशी ब्राह्मण-भोजन की तैयारी कर रहे हैं। बाहर दहलीज के नीचे थोड़ी-सी छाँव थी। वहाँ पर शांति से करीबन तीन बजे तक दोनों गिड़-गिड़ाती नजरों से देखते हुए इंतजार में बैठे रहते हैं। कुछ देर बाद सारे लोगों के साथ जोशी भी भोजन करके उठते हैं, फिर पान-सुपारी खाकर कुछ समय तक आराम करने के बाद, घर के भीतर से एक पत्तल पर इन दोनों के लिए कुछ पका हुआ भोजन ले आते हैं।

जोशी : यह प्रसाद है। उधर परली ओर जाकर शांति से बैठ जाओ और आराम से ग्रहण करो।

[यह कहते हुए दूर से ही उसके पल्लू में पत्तल डाल देते हैं।]

पुरुष : (गर्दन हिलाते हुए) सही है महाराज, हमारा नसीब ही है कि हमको प्रसाद मिला है।

[यह कहकर वह सारा भोजन दोनों एक ओर बैठकर चाटते हुए खा लेते हैं और पेट-भर पानी पीकर शिथिल होकर दहलीज के नीचे छाँव में जाकर बैठ जाते हैं।]

विदूषक : (कुनबी की ओर उन्मुख होते हुए) अरे, तू इसे नसीब समझ मान ले कि जोशी ने तेरी औरत के पास से मुट्ठी-भर भिक्षा की जगह एक आढ़ अनाज, चवन्नी, एक सिक्का और सुपारी तथा तेरे पास से डिबिया के बहाने एक चवन्नी—यह सारा तुम दोनों के पास से लूट करके ले गया—और दूसरी बात, उस जोशी के पीछे लगकर, धनवान दुकानदार से चार दिन की रोजी गँवाकर, अपनी आठ आना रोजी को छोड़कर, औरत को जमानतदार और स्वयं को कर्जदार बनाकर दस रुपए के लिए साढ़े बारह रुपए का क़र्ज अपने सिर पर अंधे की तरह ढो रहा है और चार दिनों तक रात-

दिन गुलाम की तरह ब्राह्मण-भोजन की तैयारी में लगा रहा ! लेकिन तुझे कुछ नहीं मिला—और जोशी पंडे का नसीब देखो कि उसने बिना मेहनत किए तेरे से भोजन का खर्च करवाकर, अपने दामू भाई को मुफ्त में तेरे पास से धोती का जोड़ा दिलवाकर, अपने सभी परिवारजन तथा रिश्तेदारों को साथ में लेकर तेरे से पहले ही भोजन खाकर शांत हुआ। कल की बात है, उसने तेरे सिर के बोझ उतारने में भी आनाकानी की, फिर भी बेशर्म आदमी की तरह तू सारा सामान उसके घर पर पहुँचाता रहा। आज दस बजे तक उसके घर पर बर्तन माँजता रहा। फिर जोशी के ही कहने पर तू अपनी गर्भवती औरत के साथ एक बजने से पहले ही जाकर, साढ़े चार बजे तक तपती दोपहरी में अपनी पत्नी को साथ में लेकर बैठा रहा। आखिर में जोशी ने थोड़ा भोजन तेरे पल्लू में दूर से ही डाल दिया और दूर बैठकर खाने के लिए कहा। इससे तू ही सोच, तेरे नसीब की तरह इस धरती पर और किसी का नसीब भी है या नहीं ? नहीं ! तेरे जैसा पगला, ब्राह्मणों की बातों में आकर (ऐसे खिस्तवादी अंग्रेजों के राज में) फँसनेवाला मुझे सारे हिंदुस्थान में ही नहीं, सारी धरती पर कोई नहीं दिखाई दे रहा है ! **(बाद में ब्राह्मण ज्ञान प्रकाश के मुंह के पास हाथ ले जाकर कहता है :)** क्यों, भाई ! तेरी जाति के ब्राह्मण लोग अब तेरी आँखों के सामने क्या ऐसा ही करते हैं ? यदि यह सच है तो छपा करके प्रसिद्ध कर ! क्यों हिचकिचाता है ?

[उधर करीबन साढ़े चार बजे सभी ब्राह्मणों ने मंदिर की ओर जाने की तैयारी कर ली और बाहर बैठे हुए कुनबी और उसकी पत्नी को मंदिर ले जाकर, उन सभी ब्राह्मणों ने बहुत जोर-जोर से चिल्लाते हुए आशीर्वाद देना शुरू किया। इतने में मंदिर के एक ओर खड़े पादरी साहब अज्ञानी कुनबी को उपदेश देने लगे। उस समय इन सभी ब्राह्मणों ने कुनबी के मन पर पादरी के उपदेश का प्रभाव न पड़े, इसके लिए किस तरह की भीड़ जमाई, इसकी ओर भी हमें थोड़ा ध्यान देना चाहिए।]

पादरी : ये कुनबी भाई, भगवान कितने हैं, इसके बारे में तुमको कुछ मालूम भी है ?

पुरुष : हाँ, मालूम है। तुम्हारी तरह बगैर ईश्वर के थोड़े ही हैं।

पादरी : (आश्चर्य से) हम बगैर ईश्वर के! मतलब? ये भैया, हम बगैर ईश्वर के कैसे हैं, जरा बताना।

पुरुष : तुम्हारे मम्मा देवी के मंदिर में क्या अन्य किसी देवता की मूर्ति है? देखिए, हमारा भगवान कैसे आँखों से भी देखा जा सकता है!

[कहकर पंचमुख्या मारुति की ओर उँगली उठा करके दिखाता है।]

विदूषक : देखिए, पादरी साहब! आप भी देखिए। ब्राह्मणों ने कुनबियों को अज्ञानी बना करके रखा है। इसलिए इसे भगवान और पत्थर में क्या फर्क है, यह भी समझ में नहीं आ रहा है!

पादरी : चौधरीजी, तुम्हारी समझ के अनुसार यह भगवान है, यह बात सही है, लेकिन यदि मैं तुमसे भगवान के बारे में पूछूं तो गुस्सा तो नहीं करोगे?

पुरुष : वाह! बताने में कौन-सा एतराज है? तुम पूछो, मैं बताऊँगा।

पादरी : चौधरीजी, तुम्हारा यह मारुति या बजरंगबली भगवान किस चीज का बनाया गया है?

पुरुष : इस बात में कैसी नाराजी! हमारा बजरंगबली भगवान पत्थर से बनाया गया है।

पादरी : बिलकुल सही। अच्छा, इस पत्थर को कहाँ से लाया गया होगा?

पुरुष : मुझे लगता है, ख़दान से लाया गया होगा।

पादरी : बहुत अच्छा; लेकिन जिस खदान से इस पत्थर को लाया गया होगा, उस खदान में क्या यह अकेला ही पत्थर था?

विदूषक : पागल की तरह क्यों पूछ रहे हो? सड़क पर जो गिट्टी बना करके डालते हैं, वह इसी पत्थर की है। और वही गिट्टी हम सभी के चलने से पुनः मिट्टी हो जाती है! सच है न?

पुरुष उसको तो खदान ही कहा गया है। उसमें यूंही अकेला एक पत्थर था, ऐसा कौन कहेगा? वहाँ तो इतना बड़ा पत्थर है कि उस पत्थर से बनाया गया यह बजरंगबली का पत्थर, इसको त्रिप्पड़ कहने में भी शर्म आती है।

पादरी : बहुत अच्छा! किंतु जिस पत्थर से इस पत्थर को काट करके लाया

गया है, वह पत्थर कितना बड़ा होगा, इसके बारे में तुम कुछ अंदाज करके बता सकते हो ?

पुरुष : साहबजी, यह तो मेरी अक्ल के बस की बात नहीं है, क्योंकि वह पत्थर कितना बड़ा था, यह तो मैं बता नहीं सकता।

पादरी : अच्छी बात है। लेकिन वह पत्थर कहाँ होना चाहिए, यह तो तुम बता सकते हो कि नहीं ?

पुरुष : यह मैं बता सकता हूँ। वह पत्थर जमीन में है।

पादरी : अच्छी बात है। यदि वह पत्थर जमीन में है, तो फिर वह जमीन के अंदर है या जमीन उसके अंदर है, तुम जरा यह बताओ।

पुरुष : पत्थर ! पत्थर जमीन के अंदर है, यह तो कोई भी पाँच साल का बच्चा बता सकता है ! फिर इस बात को मैं बताऊँ, इसमें नयापन क्या है ? और दूसरी बात यह कि उस पत्थर का बोझ उसने बगैर शिकायत के बर्दाश्त किया है। धरती पत्थर की माँ है, यदि यह कहूँ तो गलत नहीं होगा।

पादरी : अच्छी बात। अब यह बताओ कि यह धरती क्या अपने-आप पैदा हुई या दूसरे किसी ने इसको पैदा किया होगा ?

पुरुष : **(गरदन थोड़ी-सी नीचे करके आँखें बंद करते हुए, मन की आँखें विशाल संसार की ओर दौड़ाता है, फिर लंबी साँस लेते हुए)** साहब, उसको बनानेवाला कोई-न-कोई अवश्य होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है।

पादरी : शाबाश रे बाबा ! शाबाश ! **(कहते हुए ऊपर मुँह करके बड़ी शांति से कहता है)** हे हमारे आसमान के प्रभु ! तू ही हम सबको, दुनिया को पैदा करनेवाला है, तेरी शक्ति और महिमा अपार है। तू धन्य है। इसीलिए हम लोगों को पूरी श्रद्धा के साथ तेरी सेवा करनी चाहिए। भगवान, तू सचमुच दयालु होकर माली, कुनबी लोगों की नजरों में बस रहा है, इसलिए उनका उत्थान-काल करीब लाना चाहता है। **(फिर कुनबी की ओर मुँह करते हुए कहता है :)** चौधरीजी, अब आप ही मुझे बताइए कि हम लोगों को धरती की या उसको पैदा करनेवाले की पूजा करनी चाहिए कि नहीं ?

पुरुष : उसी की ! उसी की मन से पूजा करनी चाहिए, क्योंकि वही आदि है। सारा कुछ सोचने के बाद मेरा भी यही मत हो गया है।

विदूषक : पादरी साहब, आप अपना उपदेश जारी रखिए। आप इसकी चिंता मत कीजिए वरना बकवास करनेवाले ब्राह्मण यदि

इसके पास पहुँच गए तो व इस कुनबी के मन में भलती-सलती बातों के बीज बोकर आपके बारे में नफरत की भावना पैदा करने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे, इसका अनुभव आपको भी होना चाहिए। मैं ही आपको बताऊँ, यह कोई जरूरी नहीं है।

पादरी : कुनबी भाई, आपका विचार जस का तस तो आपके मन में है ही। मुझे कुछ अलग से आपसे पूछना है। अगर पूछने की इजाजत हो तो पूछूँ?

पुरुष : पादरीजी, अब आप जो पूछना चाहें पूछ सकते हैं, लेकिन अपने जग-निर्माता भगवान के बारे में पूछिए; क्योंकि इस समय मुझे उसकी बातों के बगैर कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा।

पादरी : (बजरंगबली की ओर उँगली दिखाते हुए) कुनबी भाई, क्या वही भगवान है, जो नजरों के सामने है, आँखों से दिखाई देनेवाला है? इसलिए उसकी मन से पूजा करनी चाहिए?

पुरुष : (पंचमुख्या बजरंगबली को देखते हुए बड़े गुस्से से कहता है:) साहबजी, आप कुछ भी समझिए, मेरा तो यह मन बन चुका है कि यह पत्थर तो पूजने के काबिल है ही नहीं, अब तो उसको तोड़ करके, उसके टुकड़े-टुकड़े करके, मिट्टी में मिला करके उसके अस्तित्व को ही नष्ट कर देना चाहिए, ताकि मेरे जैसे अन्य भोले-भाले लोग ब्राह्मणों के बहकावे में आकर, भगवान के नाम पर जाल में फँसकर, कर्जदार न हो सकें। जब तक इस स्वाँग को नष्ट नहीं किया जाएगा, तब तक, सही में जो भगवान है, उसको हमारे जैसे लोग पहचान ही नहीं पाएँगे।

विदूषक : अब यहाँ ब्राह्मण और पादरी दोनों के उपदेशों में कितना अंतर है, इसके बारे में विचार करना आप सभी पर छोड़ देता हूँ।

पादरी (डरते हुए) कुनबी भाई, इसको इस समय मत तोड़ो, क्योंकि तुम्हारे जैसे समझदार लोग, तुम्हारी तरह सोचनेवाले लोग बहुत ही कम हैं। इसलिए बाकी के सारे अज्ञानी लोग तुम पर फरियाद करेंगे। तुम्हें सरकार के पास पकड़कर ले जाएँगे, और सरकार भी तुमको दोषी समझकर सजा देगी।

विदूषक : पादरी साहबजी, आप इतना क्यों घबराते हैं? ये कुनबी

लोग भला बजरंगबली को तोड़नेवाले हैं? अजी, इसके घर में जाते ही कोई अनोखा ब्राह्मण आकर हमेशा की तरह कहेगा कि अरे, पादरी का धर्म झूठा है, बस हो गया! और यह भी उस ब्राह्मण के उपदेश को सुनकर उसी की तरह आपकी और आपके धर्म की आलोचना करेगा। वे लोग इसको धर्म के बारे में विचार करने का समय ही कब देते हैं! दूसरी बात यह है कि ये विचारहीन लोग हैं। शूद्रों को ब्राह्मणों की आज्ञा का पालन करना ही चाहिए, उसको लाँघना नहीं चाहिए, बहुत दिन से ब्राह्मणों ने अपनी कलम और सत्ता के बल पर कुनबी मालियों के मन में ठूँस दिया है। यदि मेरी बात झूठ लगती हो तो मनु तथा परशुराम की ओर देखिए। आपको पूरा यकीन हो जाएगा।

पुरुष : साहबजी, मैं आपको क्या बताऊँ! इस बजरंगबली के नाम पर चिल्लानेवाले ब्राह्मणों ने मुझे फँसा करके इतना बर्बाद कर दिया है कि यदि मैं ये सारी बातें आरंभ से आपको बताने लग पड़ूँ तो काफी समय लग जाएगा और आप भी मेरी बर्बादी की बात सुनकर कह देंगे कि इस ब्राह्मण को भी सजा मिलनी चाहिए, फिर बजरंगबली को तो तोड़ने की बात दूर ही रहेगी।

[एक मुसलमान भी ये सारी बातें खड़े-खड़े सुन रहा था। उसने अपना हाथ आगे करते हुए कहा :]

मुसलमान : क्यूँ पादरी साहेब, पिच्छले दिनों में हमारे बादशहाओं ने हिंदू के बड़ बूतों कू फोड़ डाले सो अच्छा किया; ये सब लोग उन्हीं के नाम से ताने मार-मारकर रोते हैं; यें बड़ा आबसोस (अफसोस)।

पादरी : टुमकुं मालूम नहीं मेरे साहाब, टुमारे बादशहाओं ने बूतों कू फोड़ डाले, सो अच्छा किया, यह सच है, लेकिन उन्होंने हमारी मजहब की तरह तकरीर कर-करके उन्हीं के हाथों से तुड़वाया नहीं।

पुरुष : साहबजी, वह भाई क्या कहते हैं?

पादरी : ये कह रहे हैं कि तुम्हारे सोरटी सोमनाथ की मूर्ति इनके एक बादशाह ने जो तोड़ा, उस बादशाह ने यह अच्छा किया। लेकिन मैंने उसको ऐसा जवाब दिया कि तुम लोगों ने हम लोगों की तरह हिंदुओं को जगा करके उस मूर्ति को नहीं तोड़ा है, इसलिए सारे हिंदू तुम्हारे बादशाह के नाम से आज भी कुड़बुड़ा रहे हैं।

पुरुष : भाई साहब, आप हम लोगों के बीच में मत बोलिए। साहबजी को मेरे साथ थोड़ी बात करने दीजिए क्योंकि आप जो कह रहे

हैं उसमें और साहबजी जो कह रहे हैं उसमें सब कुछ सही होना चाहिए, ऐसा मुझे आज लग रहा है।

मुसलमान : पादरी साहेब, पटेल को आपसे बात करने में बहुत खुशी हो रही है। चलने दीजिए, मैं भी खड़े-खड़े सुनता हूँ।

पादरी : उन्होंने काहे को तुमको बजरंगबली के नाम पर गुमराह किया, क्योंकि वे लोग भी तुम लोगों की तरह आज भी अज्ञानी ही हैं, और उनके पुरखे जिस तरह से तुम्हारे पुरखों से व्यवहार कर रहे थे, उसी तरह वे भी तुम लोगों से कर रहे हैं, इसलिए (आज के ब्राह्मणों के कहने के अनुसार) उन्हें जिम्मेदार नहीं मानना चाहिए।

पुरुष : ऐसा बोलने लगें तो उनकी जबान को कौन ताला लगाएगा, साहब जी ? क्योंकि उनका यह कहना है कि बाप से मिला हुआ इनाम बेटों को मजे से खाना चाहिए, लेकिन सरकारी लगान बेटों को नहीं देना चाहिए। मतलब उन्हें अपने पुरखों के अनुसार हमारी मेहनत की रोटियाँ आराम से खानी चाहिए। लेकिन उन रोटियों का दाम हम माली-कुनबियों को लेना हो तो हमें क्या उनके पुरखों को खोजता रहना चाहिए ? क्या मजाक है !!!

विदूषक : गोद का छोड़कर पेट की आशा किसे करनी चाहिए, भाइयो !

पादरी : कुनबी भाई, इतने नाराज मत हो, थोड़ा शांत रहिए। मुझसे कम बोलो। क्या तुम पढ़ सकते हो ?

[उधर सारे ब्राह्मण आशीर्वाद देते हुए एक-दूसरे की ओर आँखों-आँखों में ही इशारा करने लगे।]

पुरुष : साहबजी, मुझे गुस्सा आने से फायदा क्या है ? मैं उन पंडों का क्या बिगाड़ सकता हूँ ? लेकिन मुझे पढ़ना नहीं आता।

पादरी : क्यों ? तुम्हें पढ़ना क्यों नहीं आता ?

पुरुष : साहबजी, जब मैं छोटा था, तब मेरा बाप एक गाँव में रहता था। उसने उस समय मुझे स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा था; लेकिन स्कूल में ब्राह्मण पंडित मुझे बहुत मारता था, इसलिए मेरी माँ ने मेरा नाम स्कूल से कटवाकर ढोर चराने के लिए भेज दिया।

विदूषक : **(सरकार की ओर मुह घमाते हुए कहता है)** कुनबी ने अब तक जो कुछ कहा, वह सारा सही है। हाँ, ऐसा ही होता है।

पादरी : ब्राह्मण पंडित तुमको ही इतना क्यों मारते थे ? क्या दूसरे लड़कों को नहीं मारते थे ? तुम शायद ऊधमी रहे होगे।

पुरुष : शायद, मैं ऊधमी हो सकता हूँ, लेकिन सारे कुनबी-मालियों के बच्चे क्या मेरे ही जैसे थे ? वहाँ तो सभी कुनबियों ने अपने बच्चों को घर में रख लिया था। अब आप कहेंगे कि सारे कुनबी-माली अनपढ़ हैं। उनको कहाँ पढ़ने-लिखने में आनंद ! इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को घर में ही रख दिया होगा।

पादरी : हाँ, (**ब्राह्मण लोगों के बताने के मुताबिक**) मेरा भी यही मानना है।

पुरुष : साहबजी ! जब तहसीलदार आदि ब्राह्मण कर्मचारियों का तुम अंग्रेज लोगों की तरह शिक्षा पाने से रुतबा बढ़ गया, बड़ी-बड़ी प्रतिष्ठा पानेवाले लोगों को जब हम अपनी आँखों से देखते हैं, तब हमारे मन में पढ़ने की भावना क्या जागती नहीं होगी ? नहीं-नहीं, हमेशा हमारे मन में यह आता है कि हमको भी विद्वान होकर तहसीलदार तो होना ही चाहिए. लेकिन यहाँ के ब्राह्मण पंडितजी के षड्यंत्र को आप क्या जानेंगे ?

विदूषक : साहबजी, कुनबी ने अभी-अभी जो कहा है, उस पर आप पादरियों को भी सोचना चाहिए।

पादरी : तुम जो कह रहे हो, वह सब सच है, लेकिन अब वैसा कुछ नहीं है; क्योंकि अभी-अभी कृपालु कॅण्डी साहब ने कई नए अध्यापकों को तैयार करके गाँव-गाँव में भेजना शुरू कर दिया है।

पुरुष : साहबजी, आप अपनी ही खिल्ली उड़ा रहे हैं, ऐसा लगता है। अरे भाई, आपके कॅण्डी साहब ने हाथी के बराबर अध्यापक तैयार करके गाँव-गाँव में पढ़ाने के लिए भेजा है, यह तो मुझे भी मालूम है; लेकिन इससे फायदा क्या है ? उस गाँव के सभी ब्राह्मण क्या चुप रहेंगे ? कुनबी-मालियों को अपने बच्चों को स्कूल में नहीं भेजना चाहिए, इसलिए अंदर-ही-अंदर उनको उपदेश करके या कुलकर्णीपन का डर बताकर उनके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के रास्ते के पत्थर नहीं बन जाएँगे ?

पादरी : छीः-छीः ! कुनबी भाई, यह तो केवल आप नफ़रत-बुद्धि से कह रहे हैं; क्योंकि अब तो सारे ब्राह्मण लोग हमारे मुँह पर कहते रहते हैं कि तुम सभी लोगों को शिक्षा पानी चाहिए।

विदूषक : पादरी साहब, आप कुछ दिन पीड़ा बर्दाश्त कीजिए। फिर सभी कुनबी-मालियों की ठीक इसी प्रकार की शिकायतों की चिल्लाहट सरकार के चरणों में आएगी, क्योंकि अब उन्हें कुछ-कुछ समझ में आने लगा है, फिर भी वे अंदर-ही-अंदर ब्राह्मणों से घबरा रहे हैं।

पुरुष : यदि सभी ब्राह्मण हमारी शिक्षा के संबंध में 'मुंह देखी' चिंता करते हैं और आपके कहने के अनुसार, साहब लोगों के पीछे गाँव-गाँव में जाकर इस तरह का व्यवहार करते हैं, तो क्या इस बात का आपको पूरा भरोसा है?

विदूषक : क्यों, पादरी साहब, आप अंग्रेजों ने उनको अपना ज्ञान पढ़ाया, फिर भी आप लोगों के हाथ के नीचे अंग्रेजी पढ़े-लिखे ब्राह्मण यह कहते हैं कि नहीं कि 'कुछ न कुछ तो भेद होना ही चाहिए?'

पादरी : अब वे हम लोगों से एक बात कहते हैं और आप लोगों से अलग व्यवहार करते हैं, तो इसके लिए हम क्या कर सकते हैं?

विदूषक : साहबजी, इसी तरह सीधी बात कहिए। केवल कुछ सुलझे हुए ब्राह्मणों की बातों पर भरोसा रखकर उनकी नीति पर मत चलिए।

पुरुष : अब मैं ही आपको यह सब कुछ कैसे बताऊँ?

पादरी : बताइए, आप ही क्यों नहीं बताते? क्योंकि कोई किसी से कम नहीं।

पुरुष : मुझे ऐसा लगता है कि सरकारी बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन के द्वारा एक ऐसा कानून बना लेना चाहिए कि हर देहात के गाँव में माली-कुनबियों के मोहल्लों का अंदाज करके निश्चित संख्या में उनके बच्चे स्कूल में आने चाहिए। यदि गाँव के लोग उतने बच्चे स्कूल में दाखिल नहीं करें, तो वहाँ के स्कूल को बंद कर देना चाहिए। फिर देखिए, यही ब्राह्मण लोग, हम माली-कुनबियों को उपदेश करने लग जाएँगे कि भाई रे, अपने बच्चों को स्कूल में अवश्य भेजो। आखिर में यह भी कहने लगेंगे कि ये माली-कुनबी भाइयो! पिछले शास्त्रों में यह जो कुछ लिखा गया है कि शूद्रों को नहीं पढ़ना चाहिए, वह सब झूठ है।

विदूषक : साहबजी, ऐसा नहीं कहेंगे तो क्या करेंगे ? क्योंकि, यदि कुनबी-माली अपने बच्चों को पढ़ाने नहीं भेजेंगे तो ब्राह्मणों के बच्चों को भी शिक्षा नहीं मिलेगी और कुछ दिनों के बाद माली-कुनबियों के बच्चों की कतार में उनके बच्चे भी जा बैठेंगे। इसी को कहते हैं खरी-खरी सुनाना। लेकिन साहब, क्या इन सभी कुनबियों के कहने पर सरकार ध्यान देगी ? यदि ध्यान दिया गया तो आगे कुनबियों की भलाई होगी, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

पादरी : चौधरीजी, यदि सभी कुनबी-माली अपने बच्चों को घर में ही रखने लगें तो क्या वह स्कूल बंद हो जाएगा ?

पुरुष : बंद क्यों होगा ? वहाँ ब्राह्मणों के जो लड़के होंगे, वे पढ़ेंगे।

विदूषक : ऐसा कैसे होगा ! अपनी जाति के बच्चों को प्यार से पढ़ाने की बजाय उन्हें कोई थोड़े ही मारता है।

[उधर ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद कहने के बाद, जोशी हाथ में आचमनी का कटोरा लिए जोगाई के पति के पीछे जाकर खड़ा हो जाता है, फिर कहता है :]

जोशी : क्यों रे बाबा, घर चल रहा है क्या ?

पादरी : पंडितजी, इसको मेरे साथ बात करने दीजिए।

विदूषक : लेकिन जोशी को यह क्या मालूम कि पादरी इतनी देर मेहनत करके कुनबी को तोते की तरह पढ़ाया ही नहीं है, बल्कि उसको जोशी का अध्यापक होने योग्य भी बना दिया है।

पादरी : अरे बाबा, हम तो अज्ञानी लोगों के साथ ही बात करने के लिए आए हैं और हमारे रक्षणकर्ता की भी यही आज्ञा है।

विदूषक : धन्य ! धन्य है तुम्हारा उद्धार करनेवाला कि जिसने इन सभी माली-कुनबियों को अंग्रेजी सरकार की सहायता से इस भव-बंधन से छुड़ाने के लिए (ब्राह्मणों की नजरें चुकाकर) लगातार प्रयास जारी रखा है।

जोशी : कहिए, आने दीजिए आप अपने येशू ख्रिस्त को। (**कुनबी की ओर मुँह करते हुए**) चला जा, बावा, भ्रष्ट हो जाएगा ! इनका उपदेश सुन परवाह मत कर। फिर कई गाँव लूटने के लिए मिलेंगे इनको। (**वहीं एक ओर चिल्लाते हुए वह खड़ा रहा।**)

विदूषक :-इस जोशी को यह क्या मालूम कि येशू ख्रिस्त उसके चार मुँह वाले ब्रह्मदेव को भी कुछ दिनों बाद भ्रष्ट करने में (शुद्ध करने में) कभी कोई कसर बाकी नहीं रखेगा।

पादरी : कुनबी भाई, ब्राह्मणों के लड़के पढ़ते रहे और तुम्हारे लोगों के ही लड़के स्कूल से क्यों निकल गए ?

पुरुष : (**जोशी के मुँह की ओर देखकर कुछ डरा हुआ-सा**) साहबजी, अब मैं क्या कहूँ ? आप क्यों नहीं स्वयं समझ जाते ?

विदूषक : कुनबी-मालियों का यही तो पागलपन है कि सरकार को या साहब लोगों को जब तक वे अपना सारा दुःख स्वयं नहीं बताएँगे तब तक उनको यह सब कैसे मालूम होगा ?

पादरी : कुनबी भाई इस ब्राह्मण से मत डरिए। बताइए, जो भी सच हो, वह बताइए। फिर मैं ज्ञानोदय में बगैर किसी के डर के छाप करके लोगों के सामने रख दूँगा।

विदूषक : मेरी एक भविष्यवाणी को भी ध्यान में रख लीजिए। कुछ दिनों बाद स्वयं कुनबी भी ज्ञानोदय को महत्त्व नहीं देंगे।

जोशी : (**धीरे से, कोई सुने नहीं, इसीलिए जोगाई की ओर मुंह करके**) जोगाई, तेरा पति पागल तो नहीं है ? अब जब तेरा घरवाला साहब लोगों की बराबरी करने लगेगा, तो फिर घर के जूठे बर्तनों को कौन साफ करेगा ?

विदूषक : वाह ! वाह रे अंग्रेज लोगो, उनकी बला को भगवान दूर करे जो हमेशा कुनबी-मालियों को अपनी बराबरी में देखना चाहते हैं, और एक यह ब्राह्मण है, जो उनको बर्तन साफ करने-वाला बनाना चाहता है !

जोगाई : **(कुनबी की औरत)** महाराज, आपको सारे काम की बड़ी जल्द-बाजी होती है ! ठहरिए, साहब को देखिए, कैसे आप ब्राह्मणों से भी **(भगवान के संबंध में)** अच्छी बातें कहता है। जरा मुझे भी उन बातों को सुनने दीजिए।

विदूषक : सही बातें सभी को अच्छी लगती हैं, यह तो एकदम स्वयं-सिद्ध है।

जोशी : कुनबी की जाति तो सचमुच में पागल है **(उसी तरह दाँत चबाते हुए वहीं खड़ा रहा।)**

विदूषक : कुनबी की जाति पागल है, यह सही है। इसीलिए तो उन्होंने ब्राह्मणों की बातों को इतने दिनों तक अंधे की तरह सुना है !

[जोशी आगे कुछ बोलना चाहता है, इतने में]

पादरी : खामोश, खामोश ! ब्राह्मण पंडे, गड़बड़ मत कीजिए। कुनबी भाई को ब्राह्मणों के बच्चों के कारनामे बताने से मत रोकिए। **(कहकर कुनबी के सिर पर बड़े विनोद से हाथ की छड़ी की नोंक रखकर)** बोलो बाबा, बोलो ! घबराओ नहीं !

पुरुष : **(धीरे-धीरे)** साहबजी, वे बच्चे उनकी जाति के लोगों के थे, इसलिए हम लोगों को जितना मारते थे, उतना उनको नहीं मारते थे। और दूसरी बात यह कि उनमें से कोई लड़का स्कूल छोड़कर घर में रह जाता तो उस गाँव की सारी ब्राह्मण-औरतें भी उसको स्कूल में जाने के लिए इतना घेर लेती थीं कि उसका खाना-पीना हराम हो जाता।

पादरी : अच्छा ! लेकिन तुम कुनबी-मालियों का कोई लड़का स्कूल छोड़कर घर में रहने पर तुम्हारे माँ-बाप क्या करते थे ? क्या उन्होंने तुमको कभी समझाया नहीं ?

जोशी : वाह ! साहब जी, वाह !! अबकी बार तो बहुत ही अच्छी बात आपने पूछी है **(कहकर कुनबी की ओर मुँह करके कहता है)** अब बताओ पादरी साहब को कि तुम्हारे बुजुर्गों ने तुमको स्कूल में पुनः जाने के लिए क्यों नहीं समझाया ? इसका कारण बताओ।

पुरुष : जोशी पंडे, आपको गुस्सा तो नहीं आएगा ?

जोशी : बोलो, बोलो। हमारा गुस्सा चूल्हे में जाए। अब भी क्या हमारी

पेशवाही है कि जिसके डर से तुम हमारा कहना मानने के लिए बाध्य होगे और आज तुम हमारे मनु के कानून को भी स्वीकार न करो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

विदूषक : **(सभी लोगों की ओर हाथ जोड़ते हुए)** मनु ने अपने सारे कानून क्या कुनबी-मालियों की सलाह से बनाए होंगे ?

पुरुष : तुम ब्राह्मण लोग हमारे माँ-बाप को क्या बार-बार इस तरह से नहीं बताते थे कि अरे, तुमको पढ़ने-लिखने का अधिकार, वह कौन है तुम्हारा मनु या फनु, उसके ही कानून के अनुसार नहीं है ! फिर वे क्या करते ? तुम्हारे मनु के कानून को कूड़ा-कर्कट के ढेर में डालकर अपने बच्चों को स्कूल में भेजने की हिम्मत क्या वे लोग कर पाते ? क्योंकि तुमने उनको पढ़ने-लिखने का मौका ही नहीं दिया। वे लोग केवल अंधे की तरह तुम्हारी बातों को सुनते रहे। लेकिन अब इस हिंदुस्थान में अंग्रेज सरकार की कृपा से हमारे कुछ माली-कुनबी ऐसे हो गए हैं (और भगवान ने चाहा तो एक दिन महार-मातंग भी हो जाएँगे) कि वे तुम्हारे मनु या फनु के कानून को कूड़ा-कर्कट के ढेर में डालने की परवाह नहीं करते; बल्कि वे एकाएक ऐसा करिश्मा कर दिखाएँगे कि तुम्हारे मनु के जितने भी कानून हैं, वे सारे-के-सारे सूँघनी की पुड़िया बाँधने के लिए बेच करके उससे कौड़ियाँ खरीदकर अंधे-लंगड़ों की धर्मशाला में भिजवा देंगे।

विदूषक : (अपने-आपसे) मुझे ऐसा लगता है कि सूँघनी की पुड़िया के काम में लाए गए तो बाद में उन पुड़ियों को खोलने के बाद वहाँ के श्लोक पर किसी की नजर गई तो वह पढ़ेगा कि नहीं ? इसलिए और कोई तरकीब खोजनी चाहिए। मतलब, कुनबी-मालियों का कल्याण भी होगा और ब्राह्मण भी अपना कुमार्ग छोड़कर अच्छे काम में लग जाएँगे।

जोशी : अच्छी बात, यदि तुम लोगों को स्कूल में दाखिल करके ज्ञान हो जाने से हमारा अधिकार समाप्त होता है तो फिर तुम्हारे पिता ने पंडितों द्वारा पिटाई करने के बाद भी तुम्हें स्कूल में कैसे भेजा ?

पुरुष : क्या यह बात तुमको मालूम नहीं ? जब स्कूल का सुपरिंटेंडेंट या

कोई बड़ा साहब स्कूल में आकर ताकीद करता था कि सभी जाति के बच्चों को स्कूल में लेना ही चाहिए, तब पंडित, कुलकर्णी लोग केवल सरकार को बताने के लिए कुनबियों के बच्चों को भेड़ों की तरह दाखिल कर लेते थे और साहब का दौरा आने तक उनको स्कूल में बिठा करके रखा जाता था। दूसरी बात यह कि तुम्हारी बराबरी का एक भी आदमी इस समय हमारे लोगों में पढ़-लिखकर होशियार हुआ है? यदि हुआ हो तो चलिए मेरे साथ, मेरे बचपन के गाँव में और दिखाइए।

जोशी : फिर यह बात साहब को क्यों मालूम नहीं?

पुरुष : उनको कौन मालूम होगा और उनको कौन बताएगा? ऐसी किसमें हिम्मत थी?

जोशी : तुम्हारे पिता नहीं थे?

पुरुष : हमारे पिता थे, यह बात सच है; लेकिन चौधरी को भला कुलकर्णी और ब्राह्मण की गलतियाँ बताने की हिम्मत होती है?

[फिर नीचे का होंठ दाँतों तले दबाकर मन-ही-मन में कहता हुआ कि भगवान कभी ऐसा करेगा कि हमारे लोग तुम ब्राह्मणों की गलतियाँ बिना संकोच सरकार को जाकर बताएँगे।]

विदूषक : (कुनबी की ओर मुँह करके) बाबा, घबड़ाना नहीं। तुम सभी माली-कुनबियों को, महार-मातंगों को भी ब्राह्मणों से घबड़ाना बिलकुल नहीं चाहिए और इसीलिए भगवान ने अंग्रेजों को तुम्हारे देश में लाया है। वे ही तुम्हारे सारे जुल्मों को तोड़ डालेंगे।

जोशी : इसमें तेरा कोई दोष नहीं, यह तो कलियुग की महिमा है। इसलिए तुम लोगों ने हम ब्राह्मणों की धूर्तता का भंडाफोड़ करना शुरू कर दिया है।

विदूषक : (सभी लोगों की ओर हाथ दिखाते हुए) इस राज में शिक्षा के दरवाजे सभी जाति के लोगों के लिए खुले होने के बावजूद उनकी मक्कारी का इस कलियुग में भंडाफोड़ न हो, यही उनकी कोशिश होती है।

पुरुष : साहबजी, आपने सुना है कि नहीं? मैंने यह जो कहा है, वह क्या

गलत है ? चाहते हैं तो चलिए, हम सभी लोग गाँव-गाँव जाएँगे और गाँव के ब्राह्मणों को खबर किए बगैर पूछकर देखेंगे। फिर तो पता चल ही जाएगा कि जोशी पंडा झूठा या मैं ? और दूसरी बात यह कि इतने काल तक तो उनका मनु नंगा नाच कर रहा था, और अब वे कहते हैं कि यह कलियुग या फलियुग की बात है। यदि अब मैं सोच करके बोलने लगूँ तो उनके मनु के जैसे कलियुग की लत मैं निकाल नहीं सकता ? लेकिन फिर कभी समय मिला तो आगे इसके बारे में बात करके मैं ही उसकी जाँच-पड़ताल करूँगा क्योंकि अब सोचने के बाद मुझे पता चला है कि उनकी सारी बातें झूठी हैं।

जोशी : अरे, तेरे को किसने झूठा कहा है ? मैंने तो यही कहा कि हमारे ब्राह्मण लोग ही धूर्त हैं। लेकिन बाबा, ऐसी बात मत करो, ये साहब लोग यहाँ कितने दिन रहेंगे ! आखिर तुम लोगों का हम लोगों से ही वास्ता है; क्योंकि मुसलिमों की तरह यहं अंग्रेजी राज आज नहीं तो कल, कभी न कभी जाएगा ही और यहाँ पुनः पेशवाही आएगी। अरे ब्राह्मण लोग पहले से ही अट्ठारह वर्णों के गुरु होने की वजह से तुम शूद्रों को हम लोगों को प्रणाम करना चाहिए। इसी में ईश्वर की प्राप्ति है।

विदूषक : (सभी लोगों की ओर हाथ दिखाते हुए) ब्राह्मणों ने शूद्र-अतिशूद्र जातियों पर जो शिक्षाबंदी लगाई थी, उसको समाप्त करके, उनको शिक्षा का मौका प्रदान करके, होशियार बनाने के लिए भगवान ने इस देश में अंग्रेजों को भेजा है। शूद्र-अतिशूद्र पढ़कर होशियार होने पर वे लोग अंग्रेजों का एहसान नहीं भूलेंगे और फिर वे लोग पेशवाही से भी सौ गुना अंग्रेजी राज को पसंद करेंगे। लेकिन आगे यदि मुगलों की तरह अंग्रेज लोग इस देश की प्रजा का उत्पीड़न करेंगे तो शिक्षा पाकर होशियार हुए शूद्र-अतिशूद्र लोग पहले के जमाने में हुए जवाँमर्द शिवाजी की तरह अपने शूद्रादि-अतिशूद्रों के राज की स्थापना करेंगे और अमेरिका के लोगों की तरह अपनी सत्ता खुद चलाएँगे; लेकिन ब्राह्मण-पंडों की वह दुष्ट और भ्रष्ट पेशवाही को अब आगे इस देश में कभी भी आने नहीं देंगे, यह बात जोशी पंडों को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए, और सच बात तो यह है कि जिस ईश्वर का साक्षात्कार इन ब्राह्मण पंडों को नहीं हुआ, उसका वे शूद्रों को कहाँ से करवाएँगे ?

पुरुष : ये पंडत, इस अंग्रेजी राज के सामने अब तुम्हारी वह जुल्मी पेशवाही कभी भी टिक नहीं सकेगी। उस पेशवाही में शूद्रों पर, उससे भी भयंकर अतिशूद्रों पर, जो मातंग-महार हैं, उनपर जो जुल्म-ज्यादतियाँ हुईं, उसकी तो याद भी अभी बर्दाश्त नहीं होती। इस अंग्रेजी राज में हमारे लोगों को शिक्षा पाने पर अच्छी तरह समझ में आ गया है। अब वे लोग अपने आगे तुम्हारे ब्राह्मण-पंडों की एक भी बात चलने नहीं देंगे।

पादरी : हमारे इस कुनबी भाई ने कुछ भी गलत नहीं कहा है। इनको अब भगवान की कृपा से जो सत्य है, वह मालूम हुआ है। अब इन्होंने बगैर किसी से घबड़ाए इस सत्य को कह दिखाया है। स्वाभाविक रूप से इनके मुँह से निकले हुए सत्य बोल सुनने के बाद ऐसा अनुमान निकलता है कि भगवान कुछ दिनों के बाद सबसे पहले शूद्र-अतिशूद्रों को ज्ञानी बनाकर तुम ब्राह्मणों द्वारा लिखे गए शास्त्रों को झूठा सिद्ध कर देंगे, और तुम्हारे बहकावे में आकर पत्थर की मूर्ति से घबड़ाकर वे आज जिस प्रकार उसकी पूजा करते हैं, वे सभी लोग मूर्ति का पूजा करना छोड़ देंगे, और सत्य तथा जाग्रत भगवान, वह मैं ही हूँ, यह पहचानने के लिए उन्हें लगाएँगे तथा अपनी आज्ञा के अनुसार उन्हें चलाएँगे। लेकिन आप जो कह रहे हैं कि ब्राह्मणों को प्रणाम करना चाहिए, तो फिर उन्हें भगवान को प्रणाम करना चाहिए कि नहीं ?

जोशी : ब्राह्मणों को प्रणाम करने में ही सब कुछ आ जाता है।

विदूषक : (सभी लोगों की ओर हाथ करते हुए) ज्ञानोदयकर्ता हमेशा ब्राह्मणों को प्रणाम करते थे। उन्हें अब इन अज्ञानी कुनबी-मालियों और महार-मातंगों के प्रणाम की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, यही मुझे सभी ब्राह्मणों-पंडों को सूचित करना है और आगे ये जोशी-पंडे किस तरह से कुनबी-मालियों के शादी-ब्याह में घोटाला करते हैं, डाका डालते हैं, इसके बारे में जहाँ भी मुझे शादी-ब्याह में जाने का मौका मिलेगा, वहाँ मैं उन ब्राह्मणों के मुंह पर कहने के लिए परवाह नहीं करूँगा।

[यह कहकर सभी लोगों को सलाम आलफी (आलेकुम) करके विदूषक जाने लगा।]

पादरी : (कुनबी की ओर मुँह करके) बाबा, जहाँ ब्राह्मण लोग भगवान की

बराबरी करने लगे, वहाँ उनके अज्ञान को दूर करने की मेरी बड़ी इच्छा थी। लेकिन अब शाम भी हो गई है, इसलिए मैं जा रहा हूँ; लेकिन तुम्हें जब भी समय मिले तो मेरे बंगले पर चले आना। फिर मैं तुम्हें यह सही ढंग से समझा दूँगा कि उन्होंने किस तरह तुम लोगों के भगवान बनकर तुम्हें फँसाया है। वे लोग नकली और धूर्त हैं, यह तो मुझे उनके बोलने से ही पता चला है।

[यह कहकर पादरी ने टोप अपने सिर पर रखा और चलते बना।]

[इतने में कुनबी अपनी पत्नी से हड़बड़ी में कहते हुए :]

पुरुष : मैं जोशी का हिसाब करने के लिए दुकान पर जा रहा हूँ और तू घर जाकर जल्दी से सब्जी-रोटी बना करके रख ले। दोपहर को वहाँ के खाने से मेरा पेट भरा-वरा नहीं।

[इतना बोलने के बाद वह चला जाता है। थोड़ी देर के बाद कुनबी अपने घर आता है :]

पुरुष : अरी, जोशी ब्राह्मण का हिसाब चुकता करके आया हूँ। तेरी रोटियाँ तैयार हुई कि नहीं?

स्त्री : हाँ। (परोसी हुई थाली पति के सामने रखकर) ये लीजिए और खाना खाइए!

पुरुष : अरी, तू अपने लिए भी थाली लगा ले; आज हम दोनों साथ में खाना खाएँगे।

स्त्री : पहले आप अपना समाधान कर लीजिए।

पुरुष : अरी, आज तू भी अपना भोजन जल्दी कर ले! आज जिस तरह उस दयालु पादरी साहबजी के उपदेशों से, भगवान और धर्म के नाम पर, ब्राह्मण पंडित-पुरोहित लोग चालाकी और कपट से हम जैसे सभी अज्ञानी माली-कुनबी आदि शूद्रजातियों को किस प्रकार से लूटते हैं, इसका पर्दाफाश हुआ है, उसी प्रकार आज हमको शिक्षा का महत्त्व भी समझ में आया है। इसलिए आज हम लोग अपना भोजन जल्दी से समाप्त करके अपने घर के सामने वाले जोतीराव गोविंदराव फुले के मकान में पढ़ने के लिए जाएँगे। उनकी श्रीमती सावित्रीबाई फुले ने सयानी महिलाओं के लिए रात की पाठशाला शुरू की है, उसमें तू आज से जाना शुरू कर दे और मैं जोतीराव फुले की सयाने पुरुषों के लिए रात की पाठशाला में आज से ही जाना शुरू कर देता हूँ। इन दोनों पाठशालाओं में ये दोनों लोग सभी को मुफ्त शिक्षा देते हैं। इससे पहले

इस पाठशाला में आने के लिए इन दोनों ने हमको कई बार आग्रह किया था, लेकिन हम लोग वहाँ नहीं गए। यह हमारी सबसे बड़ी भूल थी।

स्त्री : (भोजन के लिए बैठकर) बहुत ही अच्छी बात बताई है तुमने। चलो, हम दोनों आज से ही जोतीबा फुले की रात्रि-पाठशाला में जाएँगे और पढ़ना-लिखना सीखेंगे। इसी से ही हम लोगों को सारी संसार की बातें समझ में आएँगी।

[बाद में स्त्री और उसका पति दोनों भोजन कर लेने के बाद अपने-अपने हाथ में पाटी और कलम लेकर जोतीबा फूले की रात्रि-पाठशाला में, जो खास तौर पर सयाने पुरुषों और स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार करने के लिए चलाई जाती है, जाने के लिए निकलते हैं।]

पँवाड़ा
छत्रपति शिवाजी राजा भोसले का

।। अभंग ।।

अति महाप्रतापी क्षत्रियों का पुत्र ।
यवनों का कालकल्प त्रेतायुग में ।।1।।
स्वभाव से शूर जंग में लड़ाई ।
जूझता रहा बेहिसाब देश के लिए ।।2।।
परशुराम टकराया महाबली ।
इक्कीस बार लगातार ।।3।।
ऐसे महावीर को कहते महाअरि ।
धाक से थर्राते द्विजपुत्र ।।4।।
छपरी छुओ मत जब पराजित हुए हो ।
कहो महार, मातंग उसे ।।5।।
डरपोक बदला लेता पराजित शत्रुओं का ।
पूत कृतघ्नी साँप जैसा ।।6।।
चिरजीवी है लाओ न्योता देकर ।
देखो परखकर जोतिबा के सामने ।।7।।

प्रस्तावना

शिवाजी के संबंध में यह पँवाड़ा अर्थात् वीरगाथा लिखी गई है। इस पँवाड़े के आठ हिस्से किए गए हैं। हर एक भाग में विषयांतर न हो, इसलिए सभी भाग एक जैसे नहीं किए गए। यह पंवाड़ा प्राचीन यवनों और मेसर्स ग्रांड्फ, मरी आदि अंग्रेज लोगों के अधिकांश लिखित प्रमाणों के आधार पर लिखा गया है। इस पँवाड़े को लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि कुनबी, माली, महार, मातंग आदि जिन क्षत्रियों को पाताल में ढकेल दिया गया था, अर्थात् मटियामेट कर दिया गया था, उनके काम आए। मैंने यहाँ बड़े-बड़े, लंबे-चौड़े संस्कृत शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया है, लेकिन जहाँ मेरा बस नहीं चला, वहाँ मैंने निर्वहन के लिए साधारण शब्दों का इस्तेमाल किया है। मैंने यहाँ यह भी प्रयास किया है कि कुनबियों को समझ में आने योग्य सरल भाषा होनी चाहिए और उनको पसंद आए उसी तर्ज में इसकी रचना की है। जगत्कर्ता भगवान सारी दुनिया का संचालन करनेवाला और वही सभी का ज्ञानदाता भी है। उसी को हम शूद्रों पर दया आई और उसने अपने परमप्रिय अंग्रेज संतान को राजा बनाकर हम क्षत्रियों को ब्रह्मराक्षसों के क्रूर पंजों से खींचकर बाहर लाने के लिए हिंदुस्थान में भेजा है। ये दयालु अंग्रेज लोग हम उत्पीड़ित अज्ञानी लोगों को जब से सही ज्ञान पढ़ाने लगे, तभी से ब्राह्मणों द्वारा रचे गए मतलबी रहस्य से स्वतंत्र होने का विचार हमारे मन में बार-बार आ रहा है। मैं ब्राह्मणों के रहस्य के बारे में कुछ बातें यहाँ दे रहा हूँ; वह इस प्रकार है :

इस दुनिया के तमाम देशों के इतिहास को एक-दूसरे से मिला करके देखा जाए तो केवल इस हिंदुस्थान में ही यह देखने को मिलेगा कि ब्राह्मण नाम की एक जाति ने अपने-आपको बड़े अहंकार से उच्चतम घोषित कर दिया है। उन्होंने कुनबी, प्रभू (कायस्थ), माली, मातंग और महार आदि जाति के लोगों को अपने सनातन शत्रुओं की तरह नफरत की निगाहों से देखा है। लेकिन उनको इतना नीच समझने की क्या वजह होनी चाहिए, यह बात मेरे मन में बार-बार

उठ रही थी। इसके समाधान के लिए मैंने अन्य भाषाओं के ग्रंथों का अध्ययन किया है। उसी प्रकार ब्राह्मणों का शूद्रों के साथ जो व्यवहार होता है उससे यह सिद्ध होता है कि ब्राह्मणों का इस देश से कुछ भी संबंध नहीं है। फिर भी उन्होंने केवल स्वार्थ की वजह से इस देश पर एकाएक लगातार हमले किए और जिस-जिस समय जो-जो लोग यहाँ हमलों की चपेट में आए, उनको बंदी बनाया गया और ब्रह्मराजा ने उन सभी को अपना गुलाम बना दिया। फिर ये गुलाम लोग हमेशा-हमेशा के लिए ब्राह्मणों की गुलामी में रहें, इसलिए पुनः उसी ब्रह्मा ने सत्ता की मदमस्ती में कानून बनवाया और उन पर कई किताबें (स्मृतियाँ) लिखवाई। उसने गुलामों में कई भेद कर दिए। फिर कुछ दिनों के बाद उसने उचित समय देखा और उसको 'भेद' कहने की बजाय 'वेद' कहना शुरू कर दिया होगा। फिर ब्रह्मराजा के मरने के तुरंत बाद शेष क्षत्रियों ने ब्राह्मणों के हाथ लगे अपने भाइयों को उनकी गुलामी से मुक्त कराने के लिए परशुराम से इक्कीस बार इतनी ज़िद से लड़े कि अंत में उनको महाअरि करार कर दिया गया, और उसी शब्द का बाद में अपभ्रंश हो गया 'महार'। उन महाअरि क्षत्रियों से लड़ते-लड़ते परशुराम के इतने लोग मारे गए कि ब्राह्मणों से भी ज्यादा ब्राह्मण विधवाओं की संख्या बढ़ गई। फिर उनके सामने यह समस्या खड़ी हो गई कि इन विधवा औरतों की देखभाल कैसे की जाए? फिर अंत में उन्होंने अपनी विधवा औरतों के पुनर्विवाह पर पूरी तरह से रोक लगा दी, तब मामूली खतरा महसूस हुआ। बाद में उन्होंने गुलाम बनाए गए और महाअरि क्षत्रियों से बेहिसाब नफरत करना शुरू कर दिया। उन्होंने इनको पढ़ने-लिखने से मना कर दिया और 'दूसरे को न छुओ और न छूने दो' का रिवाज शुरू कर दिया। फिर मनु जैसे और भी क्रूर राजाओं ने बदले की भावना से प्रेरित होकर मनचाहे प्रकार से, जिसमें केवल ब्राह्मणों का हित हो, ऐसी नई-नई धाराएँ उन ग्रंथों में घुसेड़ने का काम घर के भीतर-ही-भीतर किया है। फिर कुछ काल गुजर जाने के बाद इन गुलाम क्षत्रियों में ऐसी गलत धारणाएँ पैदा की गई कि इन तमाम ग्रंथों की रचना ईश्वर ने की है। उन्होंने अपनी धार्मिकता का बड़ा दिखावा करके उन गुलाम लोगों के मन में गलत-सलत बातें बार-बार ठूँसने की शुरुआत की; लेकिन वे लोग इतना ही करके शांत नहीं हुए। उन्होंने अंत में अपनी बची-खुची नफरत की भावना को भी इस्तेमाल किया है। उन्होंने साँप की कल्पना की, उस पर बिछौना लगवाया, फिर उस पर सच्चिदानंद नारायण की मूर्ति पीठ के बल लिटा दिया और उसकी नाभि से मूलिका का सिरा बाहर निकालकर उसके दूसरे सिरे पर कमल का फूल फुलवाया। फिर उस कमल पर चार मुँहवाले ब्रह्मा को रख दिया गया। फिर इस बात का गलत प्रचार किया गया कि यह ईश्वर का पुत्र है, सृष्टि-रचयिता है और उसी ने यह सारे भेद पैदा किए हैं। और इस तरह की अनगिनत गलत-सलत बातें प्रचारित की गईं कि

ईश्वर के पुत्र के सामने किसी की क्या चल सकती है? गुलाम क्षत्रियों को धीरे-धीरे यह सब पढ़ाया गया कि सारी बातें ईश्वर द्वारा बनाई गई हैं। उनके दिलो-दिमाग इसी तरह से बनाए गए। सभी लोग यह जानते हैं कि इन क्षत्रियों को धर्म के नाम पर किस तरह आदमी से हैवान बना दिया गया। इसके बाद उन्होंने जन की शर्म तो नहीं ही सही, अपने मन की साधारण से साधारण लज्जा का भी ध्यान नहीं रखा। उन्होंने इस बात को भी प्रचारित किया कि शूद्र ब्रह्मा के पाँव से पैदा हुए हैं। इस बात को उन्होंने अपने ग्रंथों में पूरी तरह ठूँस-ठूँस करके भर रखा है। मैं यह नहीं कह सकता कि शूद्र-पुत्र पाँव से पैदा हुए हैं। यह साधारण आश्चर्य की बात है। जन्म देना स्त्रियों का धर्म है, लेकिन शुद्ध ब्रह्म-पुरुष के पाँव से बच्चा पैदा करने से, इस दुनिया में चारों ओर जो सृष्टि-क्रम चलता आ रहा है, वह टूट जाता है। उसी तरह चलने का काम पाँव करते हैं। उस पाँव से शूद्र-पुत्र पैदा किया गया और उसी प्रकार ब्रह्मा के मुँह से ब्राह्मण को पैदा किया गया। यदि यह बात सत्य है तो ब्रह्मा के मुँह से दूसरे लोग उत्पत्ति से संबंधित व्यवहार करते थे, इस बात को उसके शिष्यों को भी स्वीकार करना चाहिए। इस बात से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि उन्होंने चार घर की चार लड़कियों को मिलाकर घर के भीतर-ही-भीतर फुदकने का खेल खेला है। खैर, इसके बारे में ज्यादा गहराई में जाकर इलाज करके बेइज्जत करते रहने की बजाय उनको दया के योग्य समझकर सारी बातें समझदार पढ़नेवालों पर छोड़ देता हूँ। यह छोटा-सा प्रयास जानकार लोगों को अच्छा लगा तो और भी इस तरह के पँवाड़े उन लोगों पर भी लिखे जाएंगे जो लोग आर्य ब्राह्मणों द्वारा मटियामेट कर दिए जाने के पहले क्षत्रियों में महासुमा (महिषासुर) जैसे महावीर हो गए। और ये पँवाड़े बड़े उत्साह के साथ पेश किए जाएँगे।

यह पंवाड़ा लिखते समय मेरे बचपन के मित्र भंडारकर ने दूसरे लोगों की तरह टालमटूल करने की बजाय उन्होंने मुझे इस काम के लिएं हमेशा ही हिम्मत दी है। मेरी कल्पनाएँ सही ढंग से जुड़ती रहें इसलिए उन्होंने मुझे बार-बार मदद भी की है। इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। उसी तरह रेव्ह० बाबा पदमनजी और गंगाधर शास्त्री इन दोनों ने भाषा के शुद्धिकरण के लिए मदद की है, मैं उनका भी आभारी हूँ।

—जोतीराव गोविंदराव फुले

शिवाजी का पँवाड़ा

कुलकानि-भूषण गीत गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ।।
लँगोटबंद को दे जनेऊ पोषिता कुनबियों का ।
काल था वह यवनों का ।।
शिवाजी का पिता शाहाजी पुत्र मालोजी का ।
था वह ठाट जहाँगीरी का ।।
पंद्रह सौ उनचासवाँ साल फलित हुआ ।
जुन्नर में वह उदित हुआ ।।
शिवनेरी किले में बाल शिवाजी का जन्म हुआ ।
जिजी बहन को रतन-लाभ हुआ ।।
हाथ-पाँव के नाखून उँगलियाँ सफेद पियाज रंग लाया ।
जिसने कमलों को भी लजाया ।।
ऊपर-नीचे टेढ़ी-मेढ़ी गाँठें गोले बाँधे ।
जैसे स्फटिक-प्रभ सांधे ।।
सान कटीला सिंह जैसी छाती मांस दुगना हो गया ।
नाम शिवाजी शोभा दिया ।।
राजहंसी ऊँची गरदन माथे पर मंजू तुर्रा डुले ।
जैसे कि फनापर डोले ।।
एक सरीखे सफेद दाँत चमकने लगे ।
जैसे मोती माला में लगे ।।
लाल रंग नाजुक होंठों पे हँसि झलके ।
वैसे ही तोतली बोली छलके ।।
सीधी सरल नाक विशाल आँखों में खिल गई ।
उदासी मृग-बनों में चली गई ।।

आँखें तेज बानि भौंह कमान फैलाया।
जिसने चंद्रमा को भी शरमाया।।
सुंदर विशाल तालू जुल्फें झूलने लगीं।
घुँघराले बाल घनेरे हो गये।।
लंबी बाँहें पाँव से भी हाथ फैले हुए।
लक्षण गद्दी के दिखलाए।।
जड़ाऊ कड़ी आदि सभी गहने बनवाए।
छोटे बालक को पहनाए।।
किंकिणी टोपरा मोतियों से सजवाए।
जैसें कलाबत्तू के झुमके बनवाए।।
छोटे घुँघरू पैरा बिरड़ी बंद लगवाए।
दाग लार के लहरेदार लगवाए।।
हाथ-पाँव के अंगूठे चूसे मुँह में खेले।
पाँव में घुँघरू झुन-झुन बोले।।
हिलावे लगातार हाथ-पाँव आकाश की रौनक बढ़ाई।
खेल से आँखें हट गईं।।
यह कैसा खिलौना मुझे अच्छा नहीं लगा।
संकेत होनहार का मिलने लगा।।
विलाप करके रोने लगा सभी घबरा गए।
झूला झुलाने लगे।।
धन्य जिजामाता जिसने झूला झुलाया।
गाता हूँ गीत जो उसने कर दिखलाया।।

।। तर्ज ।।

झूला झुलाए, गीत गाए।
चले ये लोरा जाए, दौलताबाद देख आए।।
मूल बाबा का ध्यान, कीर्ति खुशी से गाए।
सरदारों में अमीरजादा, साथ में जाधवराव।।
मुखिया थे गाँव-गाँव, बेटों पर बड़ा प्यार।।
बडे विठोजी का नाम लो, सान मालोजी उसका भाई।।
दीपा दीदी उसको देंगे, छंद योग्य गीत गाएँगे।।

।। तर्ज ।।

मालोजी राजा । तेरा ही दादा ।।
यवनी कांज । बनाई फौज ।।
चढ़ाई ध्वजा । मारे मजा ।।
समय पर अबुझ । पाता सब कुछ ।।
व्यवहारी पक्का । जाधवों को धक्का ।।
शेशाप्पा नायक । रखवाला एक ।।
धन का ढेर । बेपरवाह् हेरफेर ।।
मंदिर बाँधते । तालाब बिधँसते ।।
विलक्षण बुद्धि । गुणों का निधि ।।
लिखा विधि । लोगों को शिक्षा दी ।।
ठीक निशाना लगाता । जैसे शिकारी ।।
भविष्य वक्ता भला । सब कुछ जान गया ।।
कह कर गया । गद्दी का अधिकार दे गया ।।
विकल्प नहीं जानकर सेवक हुआ यवनों का ।
सिपाही था अभिमानी ।।
झूठी तकदीर कौन मिटाए मर्जी भगवान् की ।
पँवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ।।
कुलकानि-भूषण पंवाड़ा गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ।।

बड़े भाई संभाजी ने लाड़ लड़ाया ।
छोटे के साथ मौज मनाया ।।
दोनों तल्लीन हो तालीम पाई ।
कुश्ती लड़ना सीखा ।।
चाव से खम ठोंकते कुश्ती चतुराई से खेलते ।
हुनर हाथ के लड़ाते ।।
बारह बरस की उम्र आई नहीं, मन आया ।
घोड़ी पर सवार होने गया ।।
अजीब घुड़सवार भाला फेंकना सीखे ।
गोली निशान पर दागे ।।
कन्या वीर जाधव की जिसने भारत पढ़वाया ।
पुत्र को सब कुछ सुनवाया ।।

कम उम्र होते हुए भी शिकार करने लगे।
माँ को अचंभे में डाल गये ।।
रोज पति की चिता पहाड़ दुख-दर्दों का बना।
घर की मर्यादा पराई ने न जाना ।।
छाती का किला बनाकर सारा उसमें समा लिया।
लुभावने चेहरे ने फँसवाया ।।
चतुर शिवाजी ने माँ के दुख-दर्दों को जान लिया।
पिता को मन से त्याग दिया ।।
पुत्र की आँखें चंचल, माँ को डर समाया।
कल्याण उपदेश दिलवाया ।।
मन में पति-भक्ति पुत्र को बाग में ले गई।
पेड़ की छाँव में बिठाया ।।
पुरखो का स्मरण करके उस पर नजरसानी।
आँखों से बरसा पानी ।।
इस क्षेत्र के धनी किस-किसने डुबोया।
कहता हूँ फिरस्ती कैसे बनवाया ।।
क्षेत्रवासी इसलिए नाम क्षत्रिय अपनाया।
क्षेत्र में सुख पाया ।।
परदेशी हमलावर हिमालय में आए।
ये छुप-छुपकर रहे ।।
पीछे दुश्मनों का घेरा जंगल में कितने भूखे मरे।
गौमांस भूंजकर खिलाए ।।
पत्ती-फल-फूल खाते ताड़ की छाल पहनते।
जंगल-पार करके आए।
कलम का परहेज सिपाही को सेनापति बनाए।
मुखिया ब्रह्मा को बनाए।
बेफिक्र क्षत्रिय थे सीधे दुश्मन पहुँचे।
बंदी सभी को बनाए।
सारे देश पर हमला गुलाम उनको बनाए।
दिमाग से क्षुद्र कहलाये ।।
मुखिया ब्रह्मा राजा हुआ जिसने कानून बनाया।
फिर मानव में भेद किया ।।
ब्रह्मा के मरने पर परशुराम का अहंकार जाग उठा।
शेष सभी क्षत्रियों को लथेड़ा ।।

महार-मातंग हुए कितने सभी बेदखल किए।
ब्राह्मण चिरंजीवी हुए ॥
देश निःक्षत्र होने से यवनों को लाभ मिला।
उन्होंने सभी को सताया ॥
शूद्र कहते ही सीने पर चोट पड़ी।
आज कहने का अवसर आया ॥
गीत गाती हूँ सुन मेरे बच्चे, तेरे ननिहाल में सीखा।
बातें नहीं, मन लगाया ॥

॥ तर्ज ॥

क्षेत्र क्षत्रियों का घर, तेरे पुरखे महावीर।
अकाल नहीं उनके घर, आने-जाने वालों का सत्कार ॥
चोटीदार पर्वत, पेड़ों पर हर तरह की लता।
दर्रा-ढाल से जल बहता, खड़खड़ आवाज निरंतर ॥
पेड़ों को फूलों का बोझ, सुगंध बहाती हवा।
पंछी गाते सोलह स्वर, मधुर वाणी मनोहर।
नदी-नाले-सरोवर, शोभता कमलों का फूलना।
जमीन जैसे काली मखमल, खेल की उपज बेहिसाब ॥
हमला करते हमलावर, दिया क्षत्रियों को मार।
दास बनाया निरंतर, ब्रह्मा ने पाया समाधान ॥
लोभी मर गए यहाँ बहुत, विधवा हुई घर-घर।
इलाज नहीं लाचार, नारी गुलाम घर के अंदर ॥
दूसरा हुआ अक्खड़, परशुराम अत्यंत निडर।
मार उसका असह्य, किया क्षत्रियों का संहार ॥
क्षत्रियों को किया जर्जर, डर से काँपते थरथर।
पीड़ा उनकी बेमिसाल, सहारा नहीं, असहाय ॥
कई किए सीमा पार, बाकी रह गए मातंग-महार।
निःक्षत्र होने पर, यवन आए यहाँ पर ॥
आए सिंधु नदी पर, हमले किए बार-बार।
गाता हूँ तड़क-भड़क जरा समझिए अर्थ का सार।

।। तर्ज ।।

काबुल को छोड़ा । नदियों को पार किया ।।
रखता था दाढ़ी । हिंदुओं का दमन किया ।।
ब्राह्मणों को बौंड़ी । मन को मरोड़ी ।।
शिवलिंग फोड़ा । मंदिर तोड़ा ।।
मूर्तियाँ फोड़ीं । गुफाओं को छेड़ा ।।
गौमांस खाते । सुअरों को बिखराते ।।
देशों को रौंदा । जेजूरी पर झंडा ।।
भौंरों को उड़ाते । सीधा करते ।।
मूर्ति उखाड़ते । काबुल भेजते ।।
पेड़ों को कटवाते । खेड़ों को लुटवाते ।।
किलों को घेरते । सीढ़ी से चढ़वाते ।।
हिंदू को पीटते । धर्म को दोषते ।।
राजा को बेड़ी । खाल उधेड़ी ।।
सिर कटवाते । श्मशान भिजवाते ।।
देवल तुड़वाते । महल बँधवाते ।।
उड़ाते घोड़ी । मन की गाँठि ।।
अकड़ बड़ी । ताज़ी खड़ी ।।
बुरका हटाते । स्त्री को सताते ।।
गानों में रँगते । थैलियाँ लुटवाते ।।
माताबोध मन में जगा नफरत हुई यवनों से ।
निश्चय किया फिर लड़ने का उनसे ।।
तान्हाजी मालुसरे बाजी फसलकर का ।
प्यार था पेशजी क्षत्रिय का ।।
दोस्तों को साथ रखा फौज इकट्ठा की सभी लड़ैतों की ।
कमी नहीं थी हथियारों की ।।
बड़ी चतुराई से जीत लिया किला तोरण का ।
फहराया झंडा हिंदुओं का ।।
राजगढ़ नया बनाया ऊँचे पहाड़ों का ।
डर गया मन में बीजापुर का ।।
दूसरा डर गया मरा इरादा नहीं था पहले का ।
दादोजी कोंडदेव जी का ।
मछली जल में खेले गुरु कौन है उसका ।

पँवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ।।
कुलकानि-भूषण गीत गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ।। 2 ।।

जहाँगीरी का पैसा सारा लगाता खर्च को ।
नौकर रखता लोगों को ।।
झाँसा देकर जीत लिया चाड़ण किले को ।
मुखिया बनाया फिर्डोजी को ।।
कुछ लोगों को ही साथ लिए छापा मारा सूबे को ।
देखो, कैदी बनाया मामा को ।।
सूबा और अधिकार में कर लिया तीन सौ घोड़ों को ।
कमाल कर दिखाया रात को ।।
मुसलिमों को रिश्वत देते लिया कोंडाना किले को ।
सिंहगढ़ नाम दिया उसको ।।
पुरंदर जाते जैसे भले आदमी न्याय पाने को ।
देखो, कैदी बनाया सभी को ।।
गाँव इनाम देकर सभी को रखता सेवा को ।
पीड़ा नहीं दी किसी को ।।
राह में डाका डालकर लूटता था खजिनों को ।
इकट्ठा करता था राजगढ़ को ।।
तिकोना मुकाबला करता राजमा की लोहगढ़ी को ।
बाकी चार किलों को ।।
मावलाओं को भेजता था कोंकण के गाँवों को लूटने को ।
चुनता था धूर्त दगाबाजों को ।।
सम्मान कैदियों को देकर भेजता वीजापुर को ।
मुसलिम कसाई सुबेदार को ।।
मुसलिमों से बहुत परेशानी वीजापुर को ।
निमंत्रण दिया गया छल-कपट को ।।
करनाट में पत्र भेजा बाजी घोरपड़े को ।
कैदी बनाओ तुम शहाजी को ।।
भोजन का बहाना किया ले गये भोसले को ।
छलनीति से कैद किया उसको ।।
शहाजी कैदी सीधे लाए वीजापुर को ।
खुशी हुई तब यवनों को ।।

मजबूत कोठरी में बंद करके रखा उसको ।
मामूली छेद रखा हवा को ।।
शहाजी को पीड़ा दी पता चला शिवाजी को ।
सुनकर घबराया खबर को ।।
पिता-प्रेम मन में जगा लगा शरण जाने को ।
पूछा अपनी नारी को ।।
सुंदर नाम सईबाई कहती पति को ।
गहरा सबक सिखाओ दुश्मनों को ।।
औरत का कहना सही जान लिखा पत्र को ।
भेजा दिल्ली के मोगलों को ।।
सेवक हुआ तुम्हारा कहो आता हूँ सेवा करने को ।
छुड़ाओ मेरे पिता को ।।
मुगल थैली पहुँची सीधी मुसलमान को ।
रोक रखा किले पर उसको ।।
बाजी शामराज क्यों शरमाया जाति बताने को ।
पकड़ना चाहता था शिवाजी को ।।
नीच समझो नाक नहीं दिखावे किसी को ।
कठनाई हुई खबर को ।।
इरादा सफल नहीं हुआ अंत में घबराया जान को ।
भाग निकला महाड़ को ।।
शहाजी का बाजी अंत में लेगा इनाम को ।
यह पाजी गँवा बैठा जाति को ।।
करनाट में आज्ञा हुई शहाजी को ।
यवन घबराया शेर को ।।
चार साल बीत गए छुआ नहीं कबजी को ।
पिता-प्रेमी पुत्र को ।।
चंद्रराव मोरे को लथेड़ा पाया जावड़ी को ।
दूसरे वासोठे किले को ।।
प्रतापगढ़ बनाया पेशवा किया एक को ।
नए चुने गए पदों को ।।
अपना बकाया गिनते भेजते पत्र तगादे को ।
चतुराई दिखाने मुगलों को ।।
रात में जाकर अचानक लूटते जुन्नर को ।
भेजते साथी लूट को ।।

नाजायज रास्ते से धीरे-धीरे पहुँचा नगर को।
लूटता हाथी-घोड़ों को ।।
ऊँचे वस्त्र, कीमती रत्न, जवाहर कमी नहीं पैसों की।
सेवक रखते घुड़सवार ।।
सागर किनारे किले लेते रखते जहाजों को।
सेवक रखते पठान को ।।
सिद्दी पेशवा नाकामी पर दोष देता लेता कामयाबी को।
निराशा मिलती शिवाजी को ।।
अबझलखान/ शूर पठान आया वाई को।
लाया था बड़ी फौज़ को ।।
हाथी बारह हजार घोड़ा उनकी खिदमत को।
कमी नहीं गोला-बारूद को ।।
वादा किया मनचाहे इनाम का मुहर्रिर को।
फुसलाया लोभी ब्राह्मण को ।।
गोपीनाथ छुपकर और धोखा देता पठान को।
भूला नहीं इशारे को ।।
माता की चरणों पर माथा रखता छुपाता हत्यारे को।
आया सही इरादे को ।।
करीब आते ही शिवाजी जैसे डर गया शेर को।
रोक दिया अपनी रफ्तार को ।।
गोपीनाथ सूचित करता भोले यवनों को।
हड़बड़ाया तुम्हारे फौजियों को ।।
उस अधम की सुनकर हटा दिया सिपाही को।
लगा मिलने शिवाजी को ।।
बाहर से मिलने का भाव पेट पर मारा शेरपंजे को।
डरा दिया पठान को ।।
पेट का जख्म सही किया वार शिवाजी को।
दबोचते एक-दूसरे को ।।
चतुराई की खंजर से मारा दुश्मन को।
पठान ने गँवाया जान को ।।
स्वामिभक्ति दौड़ आई जब खबर मिली सिपाही को।
तैयार हुआ लड़ने को ।।
उसकी सीधी तलवार शिवाजी बचाता अपने को।
तान्हाजी दौड़ा लिए हथियार को ।।

दांतों से दाढ़ी को चबाता काटता करता परेशान उसको।
घबड़ा दिया दोनों को ।।
नाम सय्यद भाई प्रसन्न चमक भरता इतिहास को ।
लथेड़ता प्राणदान को ।।
तान्हाजी को झाँसा देता मारता हाथ शिवाजी को।
खोजता प्रेतों में स्वामी को ।।
दोनों से लड़ते-लड़ते कटवा दिया अपने को।
गया जन्नत स्वर्ग को ।।
छापा मारा हत्यारे बंदी बाकी सारी फौज को।
पठान पुत्र निज की औरत को ।।
चार हजार घोड़े लूट कम नहीं पैसों को ।
दूसरे सरंजाम को ।।
गहने, कपड़े देते सभी कैदी जख्मियों को।
भिजवा देते वीजापुर को ।।
बात का पक्का शिवाजी देता वेहिसाब इनामों को।
गद्दार गोपीनाथ को ।।
नाचते-गाते सभी गये प्रतापगढ़ को।
तुलना नहीं उनकी खुशियों को ।।

॥ तर्ज ॥

शिवाजी का घोष जयनाम का झंडा लहराया।
क्षत्रियों का मेला मावलाओं की आवाज बुलंद करवाया ।।
माता चरणों पर शीश नवा गर्व नहीं छदाम का ।
आशीर्वाद लिया माता का ।।
प्यार पाया चहेता था जिजा का।
पँवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ।।
कुलकानि-भूषण पँवाड़ा गाता हूँ भोसले का।
छत्रपति शिवाजी का ।।3।।

युद्ध किया रांगणी विशालगड़ में जित लिया पन्हाड़ा को।
फिर वसूलने लगे खिराज को ।।
हिम्मती जमाना आदेश हुआ वीजापुर को।
स्थापित हुआ कोल्हापुर को ।।

सवार तीन हजार लिया कुछ सिपाहियों को।
आया सीधा पन्हालगढ़ को ।।
खदेड़ता शिवाजी भगाया कृष्णा पार को।
बेहद परेशान किया उसको ।।
खिराज लेता गया पहुँचा वीजापुर को।
लौट आया फिर किले को ।।
राजापुर दामोल लूटा भरा खनिज को।
शह-मात दी बीजापुर को ।।
सिद्दी जोहरा ने फिर मुकर्रर की बड़ी फौज को।
सावंत सिद्दी थे सहायता को ।।
नियंत्रण करते शिवाजी थे पन्हाला को।
करते फिर इकट्ठा बेगमा.. को ।।
बार-बार छापा मारते लूटते पड़ोसी इलाकों को।
किया मुहताज दाने को ।।
परेशान हो बौखलाकर घेर लेता शिवाजी को।
बंद कर दिया किले में फौज को ।।
चार माह बीते शिवाजी घबड़ाया घेरे को।
तरकीब बनाई निकलने को ।।
कोंकण में सिद्दी पिटता रघुनाथ को।
परेशानी हुई रैयत को ।।
फासलकर बाजीराव ने कुर्बानी दी वाड़ी को।
दुख हुआ फिर शिवाजी को ।।
सिद्दी जोहरा संदेश से बाँध लेता वचनों को।
खुशी से गया मिलने को ।।
समय निकालकर गया-महत्त्व था समय को।
अधूरा छोड़ दिया समझौते को ।।
सिद्दी को चाटुकारी में सिर नीचा करना पड़ा उसको।
गया धोखा देकर किले को ।।
सीधा पेट का संतोष खुशी से जाना सोने को।
ढिलाई हुई अमल को ।।
शिवाजी भाग गया पीछे धकेला रात को।
फँसाया मुसलमान को ।।
सिद्दी सुबह बहलाने लगा हवा में मन को।
सवार दल भेज दिया उसकी खोज को ।।

चढ़ रहा था घाटी शिवाजी पकड़ा उसको।
बंदूकें लगाईं सीने को।।
बाजी प्रभु मुखिया किया रखा मावड़या को।
अकेला गया मावड़ा प्रांत को।।
स्वस्वामी को मौका दिया बाजी पछाड़ा दुश्मन को
हराया लगातार मोगलों को।।
दो प्रहर लड़ा रास्ता छोड़ा नहीं दुश्मन को।
गर्व उसकी जाति को।।
विशाल मोगल फौज आ पहुँची मदद को।
उबल पड़ा बाजी युद्ध को।।
आधे लोग बच गये कदम नहीं पड़े पीछे को।
चूमा प्रभु ने धरती को।।
तब शिवाजी सुख से पहुँचा ध्यान सूचना को।
मन में यही चिंता थी उनको।।
अनुमति साथी सुनकर सुखी समझता अपने को।
छोड़ चला गया धरती को।।
सय्यद पीछे हटता हक देता बाजीराव को।
देखकर स्वामिभक्ति को।।
वीजापुर में मुसलमान तैयार था लड़नें को।
बन-ठनकर आया लड़ने को।।
कराड़ को छावनी लगाई जीता कई किले को।
आश्रित किया डकैतों को।।
दलवी से लड़कर लिया शृंगारपुर को।
खत्म किया लुटेरों को।।
जनप्रियता के लिए किया गुरु रामदास को।
राजगढ़ में स्थापित किया देवी को।
मीठा भोज दिया इनाम सभी को।
फिर भराया दरबार को।।
तानसेनी अच्छे गवैये बुलाए गाने को।
कमी नहीं थी ताल सूरों को।।

॥ तर्ज ॥

[महात्मा फुले का मूल हिंदी पद्य जो उन्होंने रचा था]

जिधर उधर मुसलमानी । बिस्मिल्लाही हिमानी ॥
सच्चा हरामी शैतान आया । औरंगजेब नाम लिया ॥
छोटे भाइकू हूल दिया । बड़े भाई की जान लिया ॥
छोटेकूबी कैद किया । लोक उसके फितालिया ॥
मँझला भाई भगा दिया । आराकान में मारा गया ॥
सगे बापकू कैद किया । हुकूमत सारी छीन लिया ॥
भाई बंदकू इजा दिया । रैयत सब्र नाराज किया ॥
मार देके जेर किया । खाया-पिया रंग उड़ाया ॥
आपण होके बेलगामी । शिवाजीकू कहे गुलामी ॥
आपण होके ऐशआरामी । शिवाजीकू कहे हरामी ॥
बेर हुआ करो सलामी । हिंदवाणी गाव नामी ॥

॥ तर्ज ॥

आदि-अन्त । सबका कारण ॥
जातिमरण । करता पोषण ॥
वही तारण । वही मारण ।
सभी जपना । करो छानना ॥
सदा पालन । ठीक करो चलन ॥
भूत देखना । मन में धारन करना ॥
नाम रखना । जग जीवन ॥
सम होना । करो खोजन ॥
सार होना । बंध तोड़ना ॥
सरनौबती डंका हुकुम पालेकर का ।
लो सलाम साहिर का ॥
खुशियों के उत्सव देख तड़फड़ाता सावंत वाडी का ।
पँवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ॥
कुलकानि-भूषण गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ॥4॥

सावंत पत्र लिखता भेजता वीजापुर को ।
पीछे फौज कुमक को ॥

बाजी घोरपड़ा बल्लोड़खान आते सहायता को।
शिवाजी लगते तैयारी को ।।
तेजी से गया छापा मारा मुधोड़ को।
सुला दिया बाजी घोरपड़े को ।।
भाईबंदों को मारा बाकी सिपाहियों को ।
लिया बाप के बदले को ।।
सावंत को उसकी जगह दिखा दी रखा सेवा को।
धमकी देता पोर्तुगिजों की उनको ।
नए किले बाँधे दुरुस्त किया सभी को ।
बनाया नये जहाज को ।।
जल सेनापति किया डर पोर्तुगिजों का जिसको ।
उचित था ओहदा भण्डारी को ।।
वीजापुर का वजीर छुपकर लिखता शिवाजी को।
एकता में मजबूर किया दोनों को ।।
व्यंकोजी पुत्र को लिया शहाजी आया मिलने को ।
शिवाजी ने छुआ चरणों को ।।
शहाजी के सद्‌गुणों को गाने का समय नहीं हमको ।
फिर भी कुछ गाएँगे समाप्ति को ।।
खुशियों के उत्सव हुए उपमा लज्जित करे मन को ।
स्वयं शर्म लगे स्वर्ग को ।।
विलक्षण चीज लेकर गया वीजापुर को ।
भेंट फिर दे यवनों को ।।
पराक्रमी शिवाजी सँभालता पौन लाख को ।
प्रसन्न था यवनी स्नेह को ।।
वीजापुर का स्नेह था लड़ता मोगलों को ।
लिया अधिकांश किले को ।।
सभी प्रांतों में लूट मुहिम त्रस्त किया सभा को ।
घबड़ाया सभी को ।।
संताप से मोगल नियुक्त किया शाहिस्तेखान को ।
जल्दबाजी की जीतने पूना को ।।
चाकन को जाकर डराया फिर्डोजी को ।
मुफ्त चाहता किले को ।।
दो माह तक लड़ा लेकर सारी फौज को ।
खान खाता अपने ही मन को ।।

आखिर बारूद लगाकर उड़ाया एक बुर्ज को।
राह बनाई भीतर घुसने को।।
बार-बार हमले भीड़ चाहती थी घुसने को।
शाहिस्ता पठान था हिम्मत को।।
पीछे हटते सभी कोई न माने हुक्म को।
डर था भीतर के मर्दों को।।
लगातार पिटते हुए हटाते पठान को।
खान टूटा हिम्मत को।।
सुबह संतोष से खाली किए किले को।
लौटा दिये मुसलमान को।।
फिर्डोजी को मिलते खुशी हुई यवनों को।
दिया सम्मान छोड़ा सभी को।।
शिवाजी को मिलते ही सम्मान दिया उसको।
बढ़ाया बड़े ओहदे को।।
फिर्डोजी का नाम लेते ही खुशी होती मन को।
खानदानी सेवा को।।
यशवंतसिंह आया लेकर बड़ी फौज को।
मदद की शाहिस्तेखान को।।
सरनौबत लूटता पड़ोसी नगरी इलाकों को।
जलाकर खाक किया उसको।।
पीछे लगकर मोगल मारता उसके सवारों को।
घाव किया नेटाजी को।।
राजगढ़ छोड़कर रहा सिंहगढ़ को।
जब देखा मोगल फौज को।।
जिजाबाई का खानदानी घर था पूना को।
खान रहता वहीं बस्ती को।।
मराठों को थानाबंदी गांव में घुसने को।
लेकिन डरता शिवाजी को।।
शादी के बाराती घुसे पाया प्रवेश पूना को।
मावड़े पचीस थे सहायता को।।
अटारी पर जाकर तोड़ा एक खिड़की को।
खबर मिली सभी स्त्रियों को।।
शाहिस्ता को खबर लगी रस्सा लगाया कठघरे को।
उतरा नीचे जाने को।।

शिवाजी ने तुरन्त पकड़ा चोट किया उसको।
काट दिया एक उँगली को ॥
बीवी-बच्चों को छोड़ भागा पीठ दिखाई दुश्मन को।
कायर ने बचाया जान को ॥
अपनों को सहायता देना दोष सिपाहगरी को।
उपमा नहीं हिजड़े को ॥
सभी लोगों को और मरवाया खानपुत्र को।
लौट गया सिंहगढ़ को ॥
अकड़ से मोगल चारों ओर घुमाए तलवार को।
दिखाता डर शिवाजी को ॥
नजदीक आया हुक्म दिया बौछार को।
दुश्मन भागा डरकर मार को ॥
कर्नाटक में तबादला भेजा शाहिस्तेखान को।
मुखिया नियुक्त किया घमंडी को ॥
राजापुरी गया शिवाजी ने इकट्ठा किया फौज को।
दिखाता डर पोर्तुगिजों को ॥
सारी तैयारी की निकला नासिक तीर्थ को।
झाँसा दिया कैसे सभी को ॥
बीच रात में लेता साथ कुछ सवारों को।
जा पहुँचा सूरत को ॥
मनचाहे छह दिन लूटा शहर को।
सुखी किया फिर किले को ॥
बेदनूर से पत्र आया दिया पढ़ने को।
खुद बैठते सुनने को ॥
सिपाही के बच्चे शहाजी गया शिकार को।
किया पीछा पकड़ा हिरन को ॥
घोड़े को ठोकर लगी चूमना पड़ा जमीन को।
शहाजी खो बैठा प्राण को ॥
पति मर गए खबर मिली जिजी को।
फिर सीमा नहीं दुक्ख को ॥
धरती काँपती बैठे रो-रोकर गाती गुणों को।
आगे रखती शिवाजी को ॥

।। तर्ज ।।

बहुत सुंदर बहुत निराला ।
जैसे हो चित्रित पुतला ।।
सौतन पर छोड़ा बाल ।
दाग लगाया कुनबा कुल ।।
सौतन को जैसे-तैसे टाला ।
फरियाद किया पति खुला ।।
सही दोस्ती के परदे में क्यों काटती गला ।
पीछे पड़ गई शब्द-कोकिला ।।
मूर्ख दुर्बल रहना अकेला ।
काफी सूख गया चिंता में भला ।।
हुआ शहाजी था उत्सव मेला ।
देखकर सारे शोक मन में भूला ।।
बातूनी लेते जयमाला ।
जाते मंदिर दिखाते रीत बनते चेला ।
ठाठ चमक-दमक नाटकशाला ।
जैसे निर्मल वैसे कोमल ।।
असली चुड़ैल को घेरा डाला ।
जहरी चुंबन में देते गरला ।।
हुआ संसार में गहरा घोटाला ।
उकताना करते चढ़ती त्योरी कपाल ।।
मन में डर पिता के कुल ।
भाग निकला गया ननिहाल ।।
सीने पर रखा शिला ।
नहीं पसंद सौत का मेला ।।

।। तर्ज ।।

कमान पर । लगाया तीर ।।
नजरों का खंजीर । मारा कसकर ।।
सौदागर । प्रेम का व्यापार ।।
लगाया गंभीर । सुनाता सार ।।
सिपाही शूर । पुराना नौकर ।।

मोडक धीर। रखता नगर।।
अमदानगर। वीजापुरकर।।
मंत्री मुरार। लेता विचार।।
समयानुसार। देता उत्तर।।
धूर्त चतुर। लड़ा भरमार।।
सीना करार। करता फुतूर।।
गुरुगंभीर। लगाया नीर।।
था लायक। पुंड नायक।।
स्वामी सेवक। सच्चा भाविक।।
सिंहगढ़ पर गया निश्चय किया क्रिया का।।
अमल किया धर्म-पुत्र का।।
रायगढ़ में जाता रहता शोक मनाता पिता का।।
दुश्मन था आलस का।।
दुख में सुख रखवाला था राज्य का।।
पँवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का।।
कुलकानि-भूषण पँवाड़ा गाता हूँ भोसले का।।
छत्रपति शिवाजी का।।5।।

पूरी तैयारी की राजपद जोड़ा नाम को।
सिक्का शुरू राजमुद्रा को।।
अमदानगरी सजाकर लूटा बाजार को।
पड़ोसी औरंगाबाद को।।
वीजापुर की फौज करती कड़ी मेहनत को।
जीत लिया कोंकण पट्टी को।।
सतर्क शिवाजी राजा आया लेकर फौज को।
परखकर लेता सभी को।।
भूमि पर फौज लड़ती पड़ोस के मारता जहाजों को।
दरारा पहुँचता मक्का को।।
माल्वण लेकर गया अचानक फौज को।
पुकारा करता मोगल को।।
जहाज पर चढ़ाया फौज गया गोवा को।
लूटा बारशिलोर को।।
तेजी जाकर गोकर्णी लिया दर्शन को।
लूटा मोगल पेठों को।।

पगडंडी से फौज को भेजा और लूट को।
आदेश जाओ रायगढ़ को ।।
स्वयं खास हमला आदेश लूटा जहाज को।
निकला अपने मुल्क जाने को ।।
गहरी हवा चली घबराया नहीं तूफ़ान को।
आखिर पहुँचे किनारे को ।।
औरंगजेब ने भेजा राजा जयसिंह को।
दूसरे दिलेरखान को ।।
तैयार रखा मोगल अमीर आकर पूना को।
घेरा विशेष रूप से किले को ।।
हकदार शिवाजी ने साथ लिया बैठे मसलहत को।
समझ नहीं आ रहा था किसी को ।।
बाजी प्रभु घबराया नहीं दिलेरखान को।
छोड़ा नहीं हिम्मत को ।।
हेटकरी मावड़े सिपाही थे मदद करने को।
सँभाला पुरंदर को ।।
चतुराई से लड़े उलझाया मोगल फौज को।
फुरसत दिया शिवाजी को ।।
बहुत दिन बीते जल उठा हुई ईर्ष्या खान को।
टूट पड़ा किले मचान को ।।
मीनार के नीचे गया लगा सुरंग गिराने को।
खोजने लगा कई तरकीबों को ।।
हेटकरी मावड़े जाते छापा मारने को।
परेशान किया बहुत मोगल को ।।
मोगल ने मेहनत की, इरादा था पाया सफलता को।
कब्जे में किया मचान को ।।
विजयी भोसले लगे निर्भय लूट को।
भूल गए सावधानी को ।।
हेटकरी का ठाट चुनकर मारते लुटेरों को।
मोगल हट गए प्रयास को ।।
बाजी मावड़े इकट्ठा करता साथ लेता खंडेराव को।
लपककर मारता मोगलों को ।।
मोगल भागे पीठ दिखाई मावड़े को।
मर्द कैसे डर गए चूहे को ।।

गरमाया दिलेरखान जमाया फौज को।
धीरज देने लगा पठान को ॥
पुनः सारी तैयारी की दुबारा हमले को।
जाकर टूट पड़ा मावड़े को ॥
बाज़ी मारता पठान हारे हिम्मत को।
देखा हटते मर्दों को ॥
पराक्रम बाजी का देखा खान चोट पड़ी मन को।
लगाया तीर कमान को ॥
निशाना तीर मारे खास बाजी प्रभु को।
गिराया धरती पर गब्रू को ॥
सय्यद बाजी ताज़ीम देते लेते बाँहों को।
स्वर्ग में अनुभव करते आनंद को ॥
बाजी स्वर्ग पहुँचा हटना पड़ा मावड़े को।
छोड़ दिए बालेकिले को ॥
मोगल चढ़ करते पुन. लेते मचान को।
धमकाते मावड़े को ॥
हेटकरी दागते गोली फिर से हटाते दुश्मन को।
भगाते ईशान्य कोने को ॥
वज्रगढ़ को एक ओर से लगाया सीढ़ी को।
ऊपर चढ़ाते तोपों को ॥
चढ़ा मोगल दागे गोले बालेकिले को।
तबाही मचा दिया चारों ओर को ॥
हेटकरी मावड़े डरे नहीं उस तूफानी हमले को।
मोगल घबड़ाया बरसात को ॥
मोगल सोचता शिवाजी लेते मदद को।
लिया यवनी इलाकों को ॥
कुलद्रोही औरंगजेब रचता षड्यंत्र को।
भेजता थैली शिवाजी को।
शिवाजी से वादा करने ले जाता दिल्ली को।
नजरबंदी किया उसको ॥
वापस लौटाया सभी मावड़े घुड़सवारों को।
रखा पास में पुत्र को ॥
दरबानों के घर जाता, देता नजर करता रत्नों को।
बाँधा स्नेह का बंध सभी को ॥

दर्द का बहाना करता, पैसा लुटाता हकीमों को।
औरंगजेब का गुल देखो॥
आराम करके देता दानधर्म को।
देता खाना फकीरों को॥
बड़ी पिटारी रोट भरता भेजता मसीद को।
जैसे छोड़ चला हो दुनिया को॥
दानशील बना मात दी हातिमताई को।
भूलता नहीं था कार्य को॥
औरंगजेब को भूल पड़ी देखकर स्वभाव को।
भूल गया उचित ज़ब्ती को॥
निराश कैदी हुआ शिवाजी कल्पना मोगल को।
मस्ती सवार थी उसको।
पिता-पुत्र सोते बदला रोट की पिटारी को।
सारा सुपुर्द किया सेवकों को॥
जल्दी करते सेवक ले जाते पिटारों को।
करामत की रात को॥
दिल्ली से बाहर गए खुला किए शिवाजी को।
सफल बनाया तरकीब को॥
मोगल सुबह हड़बड़ाया दांतों में दबाता होंठों को।
पीछे लगा दिया मजमें को॥

॥ तर्ज ॥

औरंगजेब को हैरान किया। बेटा साथ घोड़े पर चढ़ गया॥
बीच में ही बेटे को रख दिया। स्वयं गोसाईं बन गया॥
रात का दिन किया। रायगढ़ को पहुंच गया॥
माता के चरणों को पाया। धीरे से दुश्मन खोज लिया॥
दोस्ती मोगल से किया। सभी पर धाक जमाया॥

।। तर्ज ।।

हैदराबाद के। वीजापुर के ।।
घबराते थरथर । देते कर भरमार ।।
भरती कचहरी । करती बात खरी ।।
कानून बनाते । फौज सँभालते ।।
शिवाजी का इरादा देख सतर्क हुआ गोवा का ।
पहरा बढ़ा दिया किले का ।।
चारों ओर से घेरा परेशान किया सिद्दी जंजिरा का ।।
पंवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ।
कुलकानि-भूषण पँवाड़ा गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ।।6।।

शिवाजी तो परामर्श देते मित्र तान्हाजी को ।
सलाह दी छापा मारने को ।।
तान्हाजी ने साथ लिया छोटे भाई को ।
मावड़े की हजार फौज को ।।
सुनसान रात पैदल आ पहुँचा सिंहगढ़ को ।
बाँध करके रस्सा सीढ़ी को ।।
रस्से की सीढ़ी बाँध करके सिपाही कमर को ।
धीरे से ऊपर चढ़ा दिया उसको ।।
मामूली आहट पाई सचेत उदेभान को ।
किया आमादा लोगों को ।।
तान्हाजी उस पर गिरा साथ लिए कुछ लोगों को ।
डराया पहरेदार को ।।
जंग में तान्हाजी मरा मावड़े भागे चारों ओर को ।
सूर्याजी आ पहुँचा ताज्जुब सभी को ।।
धीरज मोडक को देता वापस ले जाता सभी को ।
चुकाता भाई के बदले को ।।
उदेभान ने मारा बाकी के राजपूतों को ।
जीत लिया सिंहगढ़ को ।।
किला हाथ लगा बलि चढ़ना पड़ा तान्हाजी को ।
हुआ दुक्ख शिवाजी को ।।
सिंहगढ़ का मुखिया किए छोटे सूर्याजी को ।
सोने का कड़ा मावड़े को ।।

पुरंदर देवी लेती बाकी किले को।
पीड़ा जंजीरों की सिट्टी को ॥
सूरत पुनः लूटा बेदखल किया मोगल को।
हैरान किया मोगल को ॥
कैद किया शिवाजी ने बाकी फौज को।
उसमें कई स्त्रियों को ॥
सुंदर नारियों को वापस भेजा नहीं भुला पाया उसको।
लज्जित किया औरंगजेब को ॥
सरनौबत वीर को भेजा खानदेश को।
शुरू किया चौथाई को ॥
तुरंत मोगल ने भेजा मोहबतखान को।
दिया बड़ी फौज को ॥
कुंदापट्टा लिया घेरा साल्हेर किले को।
ऊधम मचाया दक्षिण को ॥
गूजर कूद पड़ा बढ़ने नहीं दिया दुश्मन को।
मोरोबा पठान साथ देने को ॥
लड़ते भागता दिखाता डरा मोगल को।
जैसे सही में बाद होना था उसको ॥
मोगल गर्व से इतराया जब भागते देखा मराठों को।
आलस ने काहिल किया उसको ॥
गूजर मौका देखा वापस लौटा कुर्बानी को।
बरबाद कर दिया मोगलों को ॥
रणभूमि पर मारे बाईस अमीरजादों को।
अनगिनत सिपाहियों को ॥
छोटे-बड़े कैदी बाकी सभी आहतों को।
भेजा रायगढ़ को ॥
गहरा आघात किया पीटा मोगल घेरे को।
खदेडा औरंगाबाद को ॥
शिवाजी रोज की खबर लेते रायगढ़ को।
गोड़बोले देते ममता को ॥
समान औषध-पानी देते सभी को।
दूजा नहीं समझा दुश्मन को ॥
जख्म सूखते ही फैसला दिया सभी को।
बचे रखा सेवा को ॥

शिवाजी की कीर्ति डंका बजा चारों ओर को ।
शिवाजी राजा भाया सभी को ।।
मोगल यवनी सिपाही छोड़ते सेवा को ।
मौजूदगी देते शिवाजी को ।।
पोर्तुगीज को धमकाते चाहते खिराज को ।
बंदरगाह में घेर लिया किले को ।।
अंग्रेज भी घबराया सँभाला बंबई किले को ।
बनिया-धर्म का सहारा उसको ।।
दिल्ली को वापस ले गए सुलतान माजून को ।
पराये मोहबतखान को ।।
दोनों के बदले लाया खानजहान को ।
दक्षिण का मुखिया बनाया उसको ।।
मोगल को चकमा देकर लूटा इलाकों को ।
जा पहुँचा गोवलकुंड को ।।
बड़ी खिराज लेता धाक में रखता निजाम को ।
सुख से पहुँचा फिर रायगढ़ को ।।
मोगल के इलाके में भेजता सवार लूटने को ।
लूटा हुबली शहर को ।।
सागर किनारे के गाँव लूटता लेता जहाजों को ।
किया सुखी देसाई को ।।
परली सतारा किले लिया पांडवगढ़ को ।
और भी चार किले को ।।

।। तर्ज ।।

आदेश वीजापुर में दिया गया । कई फौजियों को छोड़ा गया ।।
शिवाजी को परेशान किया जाए । उसके इलाके लिए जाएँ ।।
शिवा ने गूजर को छोड़ दिया । अब्दुल करीम को बंदी किया ।।
अनाज को मुहताज किया । दुश्मन को परेशान किया ।।
गिड़गिड़ाना सीख गया । सेनापति को गुमराह किया ।।
वीजापुर चला गया । गुस्सा शिवाजी को आया ।।
गुस्से में पत्र लिखा गया । निषेध प्रतापराव का किया ।।
गूजर मन में शरमाया । वऱ्हाड़ में चला गया ।।

॥ तर्ज ॥

अब्दुल्ला ने । बैग्म आदम ने ॥
फौज को लिया । निकल आया ॥
राव प्रताप । हुआ संताप ॥
उतावला आया । चालाकी से पकड़ पाया ॥
स्वयं दौड़ा जोश में । लड़ा होश में ॥
खुद पर ही वार किया । वहीं मर गया ।'
प्रतापराव भागे । फौज का हौसला खो गया ।
पीछा मराठों का किया ॥
तोप-गोले पेट में छुपे पन्हाड़ा का भिड़ गए ।
दुश्मन की शरण नहीं गए ॥
अचानक हंसाजी मोहिते मदद को आया ।
शत्रु पर हमला किया ॥
गूजर दल पीछे लौटा मारता यवनों को ।
भगाया वीजापुर को ॥
शिवाजी ने हंसाजी को सरनौबत किया ।
बड़ा अधिकार दिया ॥
हंबिरराव पद जोड़ा उसके नाम को ।
मन में खुशी हुई शिवाजी को ॥
पीछे न भूल सका सेनापति के गुणों कों ।
पाला सारे परिवार को ॥
प्रतापराव-कन्या बहू अपनी बनाया उसको ।
ब्याही किया गूजर को ॥
काशी निवासी गंगाभट्ट पाखंड रचाता धर्म का ।
खेल किया मदारी का ॥
लुटेरा शिवाजी लूटा डर अपनी फौज का ।
खर्च नहीं बारूद-गोले का ॥
बहुरूपिया स्वांग तौलदान सोना लेने का ।
पंवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ॥
कुलकानि-भूषण पंवाड़ा गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ॥ 7 ॥

दयानतदार सेवक चुनते मुल्क लूटने को ।

शिवाजी गया कोंकण को ।।
छोटे-बड़े टीले लेते बाँधते नए किले को ।
इकट्ठा किया फौज को ।।
गोवलकुंड जाते पीछे ले जाते तोपों को ।
कैसे फुसलाया निजाम को ।।
करनाटक गया मिला सौतेले भाई को ।
हिस्सा माँगता व्यंकोजी को ।।
लोभी व्यंकोजी न दे तैयार हुआ झगड़े को ।
उम्मीद से बाँधा पगड़ी को ।।
भाई का रिश्ता जानकर लगा गर्व से ज़िद करने को ।
गुस्सा दिखाया गया छावनी को ।।
शिवाजी को गुस्सा आया दिखाया बड़प्पन को ।
कैदी नहीं किया भाई को ।।
तंजोर छुड़ा लिया सारे मुल्क को ।
पकड़ लिया कान को ।।
दासीपुत्र संताजी भाई था शिवाजी को ।
करनाटक में मुखिया किया उसको ।।
हंबीरराव सेनापति दिया मदद देने को ।
लौट आया मुल्क को ।।
लौटतें में लड़कर लिया बिलरि किले को ।
वहाँ रखा सुमंत को ।।
शिवाजी के पीछे व्यंकोजी गया छापा मारने को ।
पाया उसने असफलता को ।।
परेशान हुआ व्यंकोजी दिया बाकी हिस्से को ।
शिवाजी गया रायगढ़ को ।।
बीजापुर की मदद के लिए ले जाता राजा शिवाजी को ।
मोगल ने छोड़ दिया मुल्क को ।।
प्रदेशों में धिंगाना धूल में मिलाया देश को ।
छोड़ा नहीं पीर को ।।
राह में पकड़ा राजा शिवाजी को ।
बहुत डराया उसको ।।
झपट गया शिवाजी पीछे हटाया मोगल को ।
झटपट आगे निकला चलने को ।।
झटपट फौज ने अड़ाया राजा शिवाजी को ।

कुछ सबक सिखाया उसको ।
अँधेरी रात में धीरे से खोजा पगडंडी को ।
धूल दिखने नहीं दी दुश्मन को ।।
फौज भी पहुँची तेजी से किले को ।
हैरान किया आलसी मोगल को ।।
वीजापुर का विनती करता भेजता थैली को ।
आश्रय माँगता शिवाजी को ।।
हंबीरराव सहायता भेजता वीजापुर को ।
साथ लेता फौज को ।।
नौ हजार मोगलों को पराजित किया ।
जिन्होंने रोकने का दुस्साहस किया ।।
वीजापुर जाकर परेशान किया मोगलों को ।
किया महँगा अनाज को ।।
दुश्मन की पीड़ा देखी त्रस्त हो घेरा हटाया ।
मोगल डर से भाग गया ।।
दिल्लीवाला वापिस बुलाता दिलेरखान को ।
भेजा शहाँजान को ।।
बड़े तरीके से शिवाजी सिखा रहे थे पुत्र को ।
लगाया सही राह को ।।
समझौता करके शिवाजी ले जाते वीजापुर को ।
यवन लेते मसलहत को ।।
शिवाजी का अकेलापन अच्छा नहीं लगा भाई को ।
मन में हड़बड़ हुई व्यंकोजी को ।।
निराश होकर त्याग दिया सारे कामों को ।
मन चाहता संन्यासी होने को ।।
शिवाजी ने पत्र लिखा भाई व्यंकोजी को ।
महत्त्व था उस पत्र को ।।
वीरपुत्र कहते हो क्यों चाहते गोसाई होने को ।
क्यों हिरा डरता है कसौटी को ।।
अपने पिता का प्रभाव कैसे जल्दी धूमिल हो गया ।
बगैर धूमिलता के काट दिया ।।
छोटा भाई मेरे लाडले सहायता करने को ।
जाहिर किया नाराजी को ।।
बोध लो मुझसे लग जाओ प्रजापालन को ।
त्यागो पाखंडी बातों को ।।

मन को सँभालो अच्छे काम में लगाओ फौज को।
सँभालो अपनी इज्जत को ॥
कीर्ति तुम्हारी सुन सकूँ चिंता मेरे मन को।
नित जपता इसी जप को ॥
कमी हो तुम बताओ मेरे लोगों को।
छोड़ो मन की गाँठ को ॥
सुबोध का पत्र सुनकर होश में आया।
व्यंकोजी काम को जुट गया ॥
शिवाजी को रायगढ़ में घुटने का रोग हो गया।
रोग ने बेहद परेशान किया ॥
उसी वजह नष्ट ज्वर बहुत बढ़ गया।
शिवाजी दुख सहता ही गया ॥
यवनों से लड़ते नहीं घबड़ाया।
शिवाजी रोग से डर गया ॥
लगातार सात दिन सहा ज्वर-दाह को।
बेचैनी न छू सकी उसको ॥
सातवें दिन शिवाजी लगा तैयारी को।
अकेला आगे किया अपने को ॥
काल का इरादा नाकाम किया स्वयं गया स्वर्ग को।
खुशी हुई यवनों को ॥
कुलकानि हिम्मत हारे शोक करने लगे।
रोकर गुणों को गाने लगे ॥

॥ तर्ज ॥

महाराज बोले हमसे। हमने तो कुछ नहीं किया तुमसे ॥
मावड़े साथी साथ देने को। सिपाही किया अनाथों को ॥
सहते रहे कड़ी धूप को। घबराए नहीं तूफान-बारिश को ॥
जंगल-पहाड़ों छान लिया। यवनों को परेशान किया ॥
देश को बहुत लूट लिया। अपनी जाति को ही बढ़ाया ॥
अद्‌भुत बुद्धि लड़ाया। आश्चर्य धरती पर कर दिखाया ॥
रखा काफी दौलत को। सँभाल के खर्च किया उसको ॥
हिस्सा देने सिपाही को। धन का लोभ नहीं तुमको ॥
चतुराई सावधानी को। त्याग दिया पहले आलस को ॥

छोटे-बड़े व्यक्ति को । नहीं भूले किसी को ।।
राजा क्षत्रियों में पहला । दूसरा नहीं है अकेला ।।
कमी नहीं षड्यंत्रों को । धीरे से अपने कर लेता लोगों को ।।
चतुराई से बचाना जान को । कभी न डरता मुसीबतों को ।।
चोर पकड़ते लेते किले को । और सारे इलाकों को ।।
पहले लड़ते दगाबाजों से । फिर लड़ते दुश्मनों से ।।
युद्ध में नहीं भूल पाया । प्रजा को प्यार बांटता गया ।।
प्रजा पाती सुख को । बनाते नए कानूनों को ।।
चिंता करते छोटे-बड़ों की । परवाह नहीं होती किसी की ।।
रूप शक्ल छोटे कद की । बल से भी चतुराई की ।।
सुंदर गठन चेहरे की । बनाई मुद्रा गुणरत्न की ।।

।। तर्ज ।।

हिम्मत भारी । बड़ी खबरदारी ।।
वाणी प्यारी । भाषण करी ।।
बड़ा विचारी । प्रभाव भारी ।।
कोशिश सारी । कल्याणकारी ।।
दोस्ती भारी । देते नौकरी ।।
चाहते भारी । बात करते खरी ।।
अंग्रेजी ज्ञान होते ही कहे, मैं पुत्र क्षत्रिय का ।
फेंका पट्टा ब्रह्मा का ।।
जोतीराव फुले ने गाया बेटा क्षुद्र का ।।
प्रधान स्वामी पेशवाओं का ।।
बालक जिजी ताई का काल हुआ यवनों का ।
पंवाड़ा गाता हूँ शिवाजी का ।।
कुलकानि-भूषण पँवाड़ा गाता हूँ भोसले का ।
छत्रपति शिवाजी का ।।8।।

।। अभंग ।।

सत्ता तेरी रानीताई । हिन्दुस्थानी सचेत नहीं ।।1।।
जिधर उधर ब्राह्मणशाही । आँखें खोलो तो सही ।।2।।
गाँव-देहातों में कुलकर्णी । हैं कलम का कसाई ।।3।।
तहसीलों में तहसीलदारी । जैसे अष्ट अधिकारी ।।4।।
यमराज जैसा तहसीलदार । शूद्रों को सजा बार-बार ।।5।।
धूर्त मुहर्रिर के आगे । कैसे कलेक्टर की चल सके ।।6।।
रेव्हिन्यू की दफ्तरदारी । ब्राह्मण कितने अधिकारी ।।7।।
चारों ओर पंडितशाही । कुनबियों को स्थान नहीं ।।8।।
जोती कहे जरा सोचो । दुष्टों से छुटकारा पाओ ।।9।।

पँवाड़ा
शिक्षा-विभाग के ब्राह्मण अध्यापक का

शिक्षा-विभाग के ब्राह्मण अध्यापक[1]

जिसका माल उसके हाल बैठी टुकड़खोरों की पाँत।
बच्चे वे गैरों के ही पढ़ाते ।।
माली-कुनबी खेतों में जुतते करते अनाज की भरती।
मिलती नहीं लँगोटी भली भाँति ।।
छोटे-छोटे बच्चे करते पशुओं की रखवाली।
जूते नहीं पाँव की चमड़ी जलती ।।
पढ़ने को समय नहीं पिता मन में कुढ़ता।
दोष देखिए नसीब को देता।।
पढ़ाने के बहाने प्रजा को मूर्ख बनाते।
द्विज पंडित को भेजते ।।
पटवारी की मदद कुछ बच्चे इकट्ठा करते।
संख्या रपट में लिखते ।।
महारों के बच्चों को पढ़ाने में अपवित्र मानते।
अंग्रेजों से हाथ में हाथ मिलाते ।।

॥ तर्ज ॥

चाकरी पंडितजी की करते।
लज्जा नहीं दूर-दूर रहते।
अब क्यों महाअरि कहते।
दास तुम्हारे जीवन भरके।
शर्म अमरीका को आई।

1. 'सत्यदीपिका', जून 1869, पेज 86-92

किंतु ब्राह्मणों को नहीं आई।

॥ तर्ज ॥

ब्रह्मा को श्रेष्ठ समझते हैं।
अन्य धर्मों की निंदा करते हैं।
नित बोध पढ़ाते हैं।
शूद्र बच्चों को झूठा धर्म धीरे से समझाते हैं।
नफरत रानी के प्रति सिखाते हैं।
ऐसे दुष्ट लोगों को पंडितजी बनाते।
बच्चे वे गैरों के ही पढ़ाते॥
स्वजाति के गलती करने पर बार-बार समझाते।
शिक्षा समझाकर देते॥
परजाति के बच्चे गलती करते, थप्पड़-मुक्का मारते।
जोर से कान ऐंठते॥
शूद्र बालक को मन से घायल करके भगा देते।
केवल गिनती को रखते।
शिक्षा विभाग का बड़ा अधिकारी आता चुगलखोरी करते।
कितनी अर्जी उनको देते॥

॥ तर्ज ॥

जाति वाले निरीक्षक।
जाँचते हाजिरी मास्टर।
गुणी कहते स्कूल मास्टर।
पंडितजी तारीफ अपार॥
रपट में लंबा-चौड़ा विस्तार॥
गाता हूँ मैं संक्षेप में सार॥

॥ तर्ज ॥

शूद्र की जाति मूर्ख है।
लिखने की प्रवृत्ति नहीं है।
ऐसी-वैसी चुगलखोरी करते हैं।

सिद्ध साधक होकर करते जाति वालों की बढ़ती।
कोई नहीं लेता इनकी तलाशी ।।
अंधा पिसता उनके सारे कुत्ते पिसान खा जाते ।
बच्चे वे गैरों के ही पढ़ाते ।।
स्नान पूजा-पाठ नित निश्चय से पंडितजी करते ।
हाजिरी लड़के ही ले लेते ।
शूद्र लड़कों को ट फ पढ़ाकर समय काट लेते ।
गुरु का पद चलाते ।।
आठ बजते समय हुआ बड़े जल्दबाजी में आए ।
कुर्सी आसन पर बैठ गये ।
ब्राह्मणों के बच्चों को पढ़ाते दस बजा देते ।
छाँव कहाँ पहुँची देखते ।।
थक गए बेचारे माथे का पसीना पोंछते ।
भाग्य को दोष देते ।।
टेबिल पर आराम से अपना माथा टिकाते ।
बच्चों को कितना प्रेम दिखाते ।।
भोजन समय हुआ बीच में ही हड़बड़ाकर उठते ।
स्कूल को चट् छुट्टी देते ।।

।। तर्ज ।।

शांति से सो जाते भोजन पाकर ।।
फिर पढ़ते न्यूज पेपर ।।
लिखते पत्र आखिर ।।
ठंडक आने पर ।।
स्कूल जाते बस थोड़ी देर ।।
पढ़ाते मर्जी होने पर ।।

।। तर्ज ।।

ब्राह्मण पंडितजी करते हैं ।।
शूद्रों की पढ़ाई में मिट्टी मिलाते हैं ।।
समझाता हूँ तुम्हें यही अनुभव है ।।
माली-कुनबियों को तसल्ली देकर रात में पोथी पढ़ते ।

अपना महत्त्व सिखाते ।।

फिजूल की बकवास करते सीधे, पर दक्षिणा लेते ।
बच्चे वे गैरों के ही पढ़ाते ।।

सारी दुनिया को शुद्ध नमूना देखो यह राजनीति ।
शूद्र को सरेआम सताते ।।
पढ़ाई के लिए लगान पैसा ब्राह्मण पंडितजी करते ।
दुनिया की शंका दूर करते ।।
महार जाति के भूपति भूदेव मानते ।
वहाँ दास क्या महत्त्व रखते ।।
ऐसे पाखंडी लोगों को अध्यापक बनाते ।
चालाक समझदार कहलाते ।।
बाघ मेढ़की के लिए करता टुकड़ों की बढ़ती ।
जैसे अग्नि में पंछी उड़ते ।।
समझदार मंडूकी साँप को ज्ञान पढ़ाती ।
ज्ञान से छाई उदासी ।।
अंग्रेजों की मेहरबानी लायक शिक्षित बनते ।
घर के भीतर पत्थर पूजते ।।

।। तर्ज ।।

गुरु बनाइए अन्य जाति के लोगों को ।।
नमूने सात्त्विक ज्ञान के ।
पढ़ाने काम पंडितजी के ।
केवल माली कुनबी के ।
दूसरे महार-मातंगों के ।
बीस लीजिए केवल अनुभव के ।

।। तर्ज ।।

पेड़ फिर देगा फलों को ।
सुख फिर होगा शूद्रों को ।
शर्मिंदा करो ब्राह्मणों को ।।
शूद्र बालक को न्याय नहीं जोती बेचैन होते ।
दूसरे ईसाई कष्ट पाते ।।
समझदार कहते हो अब तुम हमारे भूपति बनते ।
बच्चे वे गैरों के ही पढ़ाते ।।

ब्राह्मणों की चालाकी

प्रस्तावना

इस छोटी-सी किताब के लिए लंबी-चौड़ी प्रस्तावना लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। हमारे देश में ब्राह्मणों का कितना महत्त्व है और वे लोग धर्म के नाम पर आम लोगों पर कितना अन्याय करते हैं, इस बात को सभी लोग जानते हैं। यह अनुभव करते हुए भी कोई यह कहेगा कि इस किताब को लिखने की क्या आवश्यकता है, तो ऐसे व्यक्ति को यह जवाब दिया जा सकता है कि ब्राह्मण लोग सभी जातियों के साथ अपना षड्यंत्र एक जैसा नहीं चलाते। कुनबी, माली आदि शूद्र लोगों में उनकी पुरोहितगीरी बहुत चलती है; लेकिन यह बात अन्य जाति के लोगों को, खास कर आजकल के प्रगतिशील लोगों को, विशेष तौर पर मालूम नहीं। जो लोग पढ़-लिख गए, जिन्होंने अपना विकास किया, उनमें अब ब्राह्मणों का, पुरोहितों का महत्त्व दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। लेकिन यह बात आज शूद्र जातियों में नहीं है। उनके घरों में आज भी बाजीराव (पेश्वा) के काल की पुरोहितशाही राज कर रही है। ऐसे लोगों को इस गुलामी से मुक्त करने के लिए जोतिबा ने यह छोटा-सा प्रयास किया है। उनका इसमें दूसरा उद्देश्य यह भी है कि हमारी जाग्रत् अंग्रेज सरकार को अपनी सारी प्रजा के इस बहुत ही उपेक्षित वर्ग को शिक्षित करना चाहिए और उनकी आँखों की नींद समाप्त कर देनी चाहिए। उनको ब्राह्मण-पुरोहितशाही की दासता से मुक्त करना चाहिए। इसलिए यदि यह उद्देश्य सफल हुआ, तो ग्रंथरचयिता की मेहनत सफल होगी।

[पुण्य क्षेत्र हिंदुस्थान में ब्राह्मण (आर्य) सत्ताधारी होने से पहले यहाँ कौन-कौन, किस-किस तरह के अधिकारी कहाँ-कहाँ थे; ब्राह्मणों द्वारा इस देश को हथियाने के बाद युद्ध में पराजित होकर निहत्थे हुए लोगों को परशुराम ने किस तरह से गुलाम बनाकर रखा था; फिर उसने शेष महाअरियों में से कई लोगों को किस तरह से तबाह कर दिया था; और कुछ महाअरियों को क्यों पाताल में ढकेल दिया था; आज भी उन लोगों के साथ किस तरह से जुल्म-ज्यादतियाँ हो रही हैं—इसी के संबंध में प्रस्तुत है यह पँवाड़ा।]

एक

सत्ता नौ खंड। थी अखंड॥
वैसे ही दसवें काशी को।
सँभाला बहुत एकता को॥

गुरुगंभीर। संग्राम में शूर॥
नियुक्त किया हर खंड के लिए।
खंडोबा नाम रखा उसके लिए॥

वीर प्रचंड। स्थिर मार्तंड॥
मुखिया बनाया कालभैरव को।
सँभालता नौ खंडों को॥

देश असीम। सूबे बेहिसाब॥
देखकर नियुक्त किया खास को।
मानते सभी अचंभे को॥

मुख्य महा सूबा[1]। रखवाला बड़ा ।।
कमी नहीं खबरदारी को।
सहायक कालभैरव को ।।

इंसाफ तलाशी। सुपुर्द करते विज्ञों को ।।
नियुक्त किए मददगारों को।
मुख्य नौ[2] खंड की इंसाफी को ।।

कई सेना के दल। घोड़ों का बल।।
कमी नहीं तीरंदाजों को।
भिड़ाया भाला कंधे को ।।

राजनीति से। लड़ते जी-जान से ।।
भिड़ते मल्ल युद्ध को।
सँभाला बहुत एकता को ।।1।।

छोटे रजवाड़े। उलझन में पड़े ।।
दौड़कर आते सहायता को।
लेकर सप्त[3] आश्रय को ।।

मौसम पानी। आमदनी ।।
बाफुरसत भोगते सत्ता को।
लजाते स्वर्ग के सुख को ।।

रत्नागिरि। पहाड़ भारी ।।
जाते वहाँ हवा खाने को।
देखकर शीतल स्थल को ।।

गढ़ जेजुरी। जाते मल्लअरी ।।
साथ लेते प्रधान को।
हमेशा तैयार सहायता को ।।

1. महिषासुर
2. नौखणों की जाणाई
3. साती आसरा।

बहुत रंगीले । पीछे लगे ।।
मशगूल हुए ऐशोआराम को ।
मालूम हुआ परदेशी लोगों को ।।

दंगेखोर आए । षड़यंत्र रचाए ।।
नियुक्त किया मुख्य ब्रह्मा को ।
लगे लूट-खसोट को ।।

मार दिया । परेशान किया ।।
दास किया बहुतों को ।
पहचानो इन शूद्रों को ।।

बाकी बचे । लैस रहे ।।
मुकाबला दिया परशुराम को ।
सँभाला अपनी एकता को ।।2।।

देश का रिश्ता था । प्रेम भाई का था ।।
मारा विदेशी लुटेरों को ।
शपथ आजाद करेंगे शूद्रों को ।।

परशुराम को । किया परेशान उसको ।।
देखकर विधवा बहन को ।
पीड़ा महाअरियों को ।।

सदा हमले करके । बेकरार किया ।।
बख्शा नहीं गर्भिनी को ।
मारता जन्म लेते बच्चों को ।।

द्विजविरोधी । महाअरि जो ।।
आखिर परेशान किया ।
मटियामेट उसको किया ।।

खोज किया । हर दिन अनुभव किया ।।
अपनी भूमि से बेदखल किया ।
भगवान के भरोसे छोड़ दिया ।।

बचे-खुचे को। गहरा चूसा उनको ॥
मातंग-महार उनको।
भीलों इन पुराने क्षत्रियों को ॥

गुर्राना बस। कुरेदना बस ॥
छोड़ो अब बदले की बात।
कहता हूँ तुमको सही बात ॥

रोज समझाता हूँ। तुमको सुझाता हूँ ॥
सहते रहेंगे आखिर धोखे को।
सँभाला बहुत एकता को ॥3॥

हुई बर्बादी। छुए नहीं कोई ॥
आसानी से धंधे पर बंदी आई।
नौकरी को रखे नहीं कोई ॥

अनाज को मुहताज। पेट की जलती आग ॥
इलाज नहीं पेट भरने को।
खाते मरे हुए जानवरों को ॥

भूख सही नहीं जाती। दर्द कम नहीं होता ॥
हाथ में लेकर कटोरे को।
निकले जूठा माँगने को ॥

माँ जी। भाई साहब ॥
आवाज देते सभी को।
घर में आने-जाने वालों को ॥

चंडालों को। जूठन देने को ॥
मन्ना धर्मी ब्राह्मणों को।
पाप का जूता देते तुमको ॥

दरवाजे बैठो मत। बुलाओ मत ॥
परेशान हूँ ताकते मुँह को।
उठो मारो पत्थर को ॥

कैसा तेरा धर्म । समझने दे मर्म ॥
भिक्षा शूद्र की खाने हो ।
किसको अपना खास धर्म कहते हो ॥

छोड़ गर्व को । लग जा मार्ग को ॥
जला दे इस झूठे धर्म को ।
सँभाला बहुत एकता को ॥

रानी ताई धन्य हो । नींद कैसी लेती हो ॥
मोर्चे की आशा खास हो ।
मुक्त करो दीन भाइयों को ॥

सारी दुनिया को । पाठ पढ़ाया तुमने मुक्ति को ॥
बंद किया गुलामगीरी को ।
लगे ना बट्टा कीर्ति को ॥

नाम सुनकर । आया दौड़कर ॥
कब आएगी तू देखने को ।
त्रस्त किया मातंग-महारों को ॥

गोरे कामगार । बड़े दरबार ॥
हवाले करते सभी ब्राह्मणों को ।
मन में डर बहुत उनको ॥

जानकारी थोड़ी । मिजाज बड़ी ॥
भोगते नित आराम को ।
मुहैया करते हक पेंशन को ॥

मातंग महाअरि । परेशान हुए भारी ॥
भूल गए अपने महत्त्व को ।
समझते नहीं दुश्मन की बातों को ॥

बदला लिया । नीच कह दिया ॥
छूने ही जाते नहाने को ।
पढ़ाता कौन लिखने को ॥

खोज अपनी । जोतीराव की जबानी ।।
बताते रानी ताई को ।
मुक्त करते गुलामों को ।।5।।

दो

[शूद्रों के घर में बच्चा पैदा होने के बाद ब्राह्मण जोशी (जोतिषी) किस तरह से उनके घर आता है और पैसे कैसे लूटता है, इसके संबंध में ।]

अभंग

सोहोम कोहोम आवाज इतने में ।
पहुंचा जोतिषी जोशी घर में ।।1।।

पूछता जन्मकाल राशिचक्र लिखता है ।
गिनता उँगलियां छड़ी पागल जैसा ।।2।।

निहारता सभी भोले पिता से कहता ।
अशुभ काल में आया बालक तेरा ।।3।।

पाखंडी के बोल कानों पर आते ही ।
घबराए मन में अनपढ़ जन ।।4।।

माता बालक को देखकर रोती ।
सबको पागल बनाया पाखंडी ने ।।5।।

देखा यह मौका उपाय सुझाया ।
जप करवाने लगता ब्राह्मणों से ।।6।।

अनुष्ठान में दान ब्राह्मणों को देना ।
आई सकट घटा देरी न करो ।।7।।

शनि ग्रहों का डर कहता कर्ज ले लेंगे ।
गहने-बरतन बेच देंगे सुख के लिए ।।8।।

जप अनुष्ठान यथाविधि किया ।
मूर्ख लूटे गए शनि ग्रहों के नाम पर ।।9।।

ज्वरदाह बढ़ता गया नन्हा मुन्ना घबराया।
प्राण पखेरू उड़ गए थोड़ी ही देर में ॥10॥

पुत्र उत्साह के सुख-समारंभ का।
आनंद के रंग को भंग किया ॥11॥

पेट मत पालो लोगों को ठगकर।
ईश्वर से दगाबाजी जोती कहे ॥12॥

तीन

[ब्राह्मण जोशी (जोतिषी) शूद्रों की शादी में उनको किस तरह से दुविधा में डालते हैं, इसके संबंध में।]

अभंग

मँगनी के समय जोशी शास्त्री आते।
राशिबल देखते बड़े शान से ॥1॥

स्वार्थ की बातों को अनदेखी करने का बहाना।
ग्रहफल बताकर जप करते ॥2॥

शादी का मुहूर्त बताते दुकान रचाते।
गणपति बनाते सुपारी का ॥3॥

खारक खोपड़ा नैवेद्य की भरमार।
दक्षिणा सही-सलामत पैसे की लूट ॥4॥

लिखते कागज पर तय की गई तिथि।
कुंकुम लगाई हाथ में दिया ॥5॥

वर्ण आयु गुण तौलकर देखिए॥
नहीं आता पसंद जिससे हो न्यून ॥6॥

शादी के पहले बड़ी गड़बड़।
दौड़ते फुदक-फुदक दोनों ओर ॥7॥

शुरुआत की दूल्हे को कपड़े देकर।
मंत्रों का तिलक लगाते मंदिर में ॥8॥

उठते तेजी से विवाह मंडप में पहुँचते।
कहते तुरंत जल्दी करो ॥9॥

हाथ में शस्त्र देते पीठ रखवाले किए।
मामा खड़े किए दोनों के ॥10॥

बीचोबीच खड़े रहे हाथ में अंतःपट।
मंगल पाठ शुरू किया ॥11॥

तालियों की आवाज बाजों का धमाका।
कहते शुभ मंगल सावधान ॥12॥

दूल्हा-दुलहिन दोनों बेचारे अनपढ़।
दिया फंसाकर जीवन भर ॥13॥

आगंतुक सारे गड़बड़ी में आते।
हाथ फैलाते पैसे के लिए ॥14॥

धागा लपेटकर दूल्हा-दुलहिन को घेर लेते।
दक्षिणा माँगते जैसे कहते हों मंत्र ॥15॥

घास लकड़ी जलाया लज्जाहवन किया।
मन में नहीं शर्म बेशर्म हुआ ॥16॥

दोनो का दुश्मन तेलसाड़ी देते।[1]
नाक-भौं सिकोड़ते समय गँवाते ॥17॥

---

1. विवाह के पहले वर की तरफ से कन्या के लिए भेजी जानेवाली साड़ी, तेल, नारियल आदि वस्तुएँ देते समय ब्राह्मण जोशी शूद्रों से काफी रुपया ऐंठ लेते हैं।

बहुत थोड़ी कहते मंडपखिराज ।
लेते वह आखिर में लड़-झगड़कर ॥18॥

परजाति पर तुम इतना भरोसा न करो ।
बर्बाद करते हरामी धर्म के लालच से ॥19॥

छोटे-बड़े स्नेही दोनों के ।
पंच स्वजाति के इकट्ठा करो ।।20॥

साल उम्र गुण प्रेम दोनों का देखो ।
देखो सार-असार को जाँच करके ॥21॥

भगवान को याद करके पहनवाओ माला ।
मिला करके मेल आनन्द का ॥22॥

ब्राह्मणों का यहाँ नहीं है प्रयोजन ।
भगा दो इनको जोती कहे ॥23॥

चार

[ब्राह्मण जोशी शूद्रों के घरों में ऋतु-शांति के समय अनुष्ठान आदि करके घी-रोटियों का खाना खाकर किस तरह से गुलछर्रे उड़ाता है और किस तरह से दक्षिणा हड़पता है, इसके संबंध में ।]

अभंग

देख मौका ऋतु-प्राप्ति का सुनहरा समझते ।
असहनीय पीड़ा उसको यह दर पर खड़े ॥1॥

दिखाते खुशी मीठी बातों से ।
मन में चिंता दक्षिणा पाने की ॥2॥

छोड़कर लज्जा-शर्म पूछते साल ।
देखते राशिबल पंचांग में ॥3॥

जप-अनुष्ठान की स्थापना करवाते।
दौड़-भाग करते जैसे हों स्नेही ॥4॥

ब्राह्मण-भोज घी की विपुलता।
दक्षिणा जोरदार पहले ही माँगते ॥5॥

हराम का खाते अंतड़ियाँ फुलवाते।
करते उबकाई पानी पीते हुए ॥6॥

यजमान, भोजन पाते ही पेट-दर्द करता।
खटाई में पानी और डालो ॥7॥

फुसलाते अज्ञानी घर का बढ़ावा।
इहलोक के काल हैं ये हरामी ॥8॥

दोस्त-रिश्तेदारों का मिलाकर मिलाप।
तज दो इनको समूल पाखंडियों को ॥9॥

प्रार्थना करो निर्माता की भोजन निर्मल।
सदा सर्वकाल जोती कहे ॥10॥

पाँच

[जब शूद्र घर बनाते हैं, तब ब्राह्मण जोशी गृह-प्रवेश के समय स्वयं बढ़िया ताजा भोजन खाकर बचा-खुचा जूठा भोजन किस तरह यजमानों को खाने के लिए मजबूर करता है, इसके संबंध में।]

अभंग

लहलहाती धूप में नींव मजदूर खोदते।
टोकरी ढोते मलबे की ॥1॥

ऊँचाई पहाड़ी पर थवई चढ़ते।
ईंटें वे रखते लसदार लेप में ॥2॥

बंदरों की तरह बढ़ई चढ़ते।

लकड़े जोड़ते नसूले से ॥3॥

पेट के खातिर सारी तकलीफें भोगते।
नहीं पेट के लिए डर मजदूर को ॥4॥

पसीना बहता बूंदें टपकतीं।
सदा मेहनत करते दया आती ॥5॥

मेहनत देखकर अमीर खुश होते।
वचन तो देते भोजन का ॥6॥

ऐसे भोजन को मकान नाम देते।
खुशामद के लिए आते आखिर में ॥7॥

देकर मुहूर्त दिन चुनते।
जाल में फँसाते हैं यजमानों को ॥8॥

ब्राह्मण-भोजन-होम-हवन करवाते।
ढाल खड़े करते निशानों के ॥9॥

झाँसा देकर भोजन हड़पते।
दक्षिणा भी लेते जैसा मन चाहे ॥10॥

सायंकाल हुआ आशीर्वाद देते।
बर्बाद करके जाने अज्ञानियों को ॥11॥

अमीर अधिकारी मुँह की ओर देखते।
जूठा बचा-खुचा खाने धीरे-धीरे ॥12॥

भोले श्रद्धालुओं को लुटेरे फँसाते।
दुर्गति को पाते जोती कहे ॥13॥

अभंग

अंगार लगे तुम्हारे ऐसे जीने को।
धोखेबाज ने पहले ताजा खा लेने को ॥1॥

ऐसे करना शर्मनाक समझो खुद को।
समझने दो उन धूर्त पाखंडियों को ॥2॥

ले लीजिए मेरी सलाह को।
फिर क्यों नं कहूँ कई बातों को ॥3॥

अपनी मेहनत पर भरोसा करना सीखो।
जोती सिखाते ऐसे निर्लज्जों को ॥4॥

छः

[ब्राह्मण शूद्रों के घर पर पोथी पढ़ने के बहाने आता है और उसके पारिवारिक उलझनों में दखलंदाजी देकर उसको किस तरह से बर्बाद कर देता है, इसके संबंध में।]

पँवाड़ा

ब्राह्मणी बदमाशी को। समझना है तुमको।
हैं अकल के चतुर।
धोखेबाज आरपार।।

ऋषिमंडल, धर्म का बल। वेद सबल।
कड़क बिजली शाप का घर।
मारो[1] लात छाती पर।

सिपाही क्रूर। कलम खंजर।।
दास किए महायोद्धा वीर।
ब्रह्मा मुखिया रखा सर पर।।

रण में रणशूर। घुसे बेशुमार।।
तीरों का मार बेहिसाब।
परशुराम की फौज अपार।।

1. भृगु नाम के ऋषि ने विष्णु की छाती पर लात मारी थी।

ज्ञानहीन बेचारे । शूद्र सारे ।।
धीरे से गाँठते उसको ।
लगता पोथी पढ़ने को ।।

बोध करता । महत्व पढ़ाता ।।
भूलता नहीं नित काम को ।
निर्धन बनाते भोले-भाले को ।।

चालाक धूर्त । देखकर मुहूर्त ।।
समाप्ति दिन तय किया ।
शाल-चादर लूट लिया ।।

चापलूसी करते । कारकून बनते ।।
घाटे में लाते सारा कारोबार ।
धोखेबाज आरपार ।।1।।

खलते तप्तर । उतावला होकर ।।
कारनामे पर एक साथ निर्णय करते ।
तकाजा घर-घर भेजते ।।

पैसा उगाहते । नोक दिखाते ।।
होशियारी दबाव घरस्वामी पर ।
अर्जी ऐंठन किसान पर ।।

चुनट निकालते । कोर्ट-कचहरी घूमते ।।
उन्मत्त अर्जी पढ़ेगा ।
निर्णय हिस्सेदारी माँगेगा ।।

किसान के घर जाते । इशारा देते ।।
प्रार्थना किया तुमसे ।
कहता हूँ एहसान न भूल हमसे ।।

दोष हो मेरा । बता दे कहना तेरा ।।
लेने लगता तुम्हारी तकरार ।
करवाता हफ्ते मुकर्रर ।।

करके फुतूर । किया हौसला ठार ।।
घर मालिक का झूठा समाधान ।
दोनों को बेवकूफ बनाया ।।

घूमकर थक गया । सही में मेहनत किया ।।
नींद आई बदन में सुरसुरी ।
बदन हिलाता बार-बार ।।

काम का सत्यानाश हुआ । सब कुछ खाक हुआ ।।
घर को जाता सूत्रधार ।
धोखेबाज आरपार ।।2।।

गुढ़ी पाडवा[1] । निशान डोलता ।।
रामजन्म की दुकानदारी ।
चिपकाते हनुमान पीठ पर ।।

आषाढ़ मास की । एकादशी तिथि ।।
बाकी चार सोमवार ।
पूजवा ले बैलों का पोला ।।

नागपंचमी । कृष्ण अष्टमी ।।
ब्राह्मण-भोज की भरमार ।
घी हुन बरसता ।।

पिंड रखता । पाँव पड़वाता ।।
भादों भट्ठी व्यापार ।
उन्मत्त टट्टू गुलजार ।।

विजय दशमी को । पूजवाता घोड़े को ।।
जलपान धनतेरस को ।
लक्ष्मी-पूजन किताबों का ।।

---

1. चैत्र शु० 1 के दिन महाराष्ट्र में उच्चवर्णीय हिंदू लोगों के घर-घर में होने-वाला ध्वजारोपण ।

तुलसी विवाह में। मकरसंक्रांति में।
पढ़ता है वर्षफल सार।
मजदूरी मांगता हाथ पर ॥

पैसा खिसक गया। शूद्र तबाह हो गया॥
बचा है होली का त्योहार।
शोर मचाता आखिर ॥

मन में मन्नत माँगी। ग्रहराशि देखा ॥
दान-धर्म की भरमार।
धोखेबाज आरपार ॥3॥

हिसाब में घोटाला। पूरा ही घपला।
थोपता कर्ज सिर पर।
अंदर से बनता साहूकार ॥

पैसे पर जान। न आता रहम ॥
फरियाद करवाते किसान पर।
रुपया देते गिरवी चीजों पर ॥

समय देखकर। मौका पाकर ॥
माँग का दबाव उस पर।
तकाजा भेजता पीठ पर ॥

दाम दुगुना। सारा कुल मिलाना ॥
लिखते गिरवी बहीखाते पर।
पिछाड़ी पुश्त रजिस्टर ॥

संध्या स्नान बार-बार। भस्म चमकदार ॥
डाँट पड़ी किसान पर।
बदगोई करता खर्चीला है बेहिसाब ॥

छोड़ा घर। घर में व्यापार ॥
चलाता कारोबार गिरवी पर।
पालता पेट ब्याज पर ॥

उधार देता। लिखवाकर लेता ।।
इकरार शर्त स्टँप पर।
किया मुकदमा आखिर ।।

किसान पर निर्भर। किया बड़ा गिड़गिड़ाना ।।
इनाम बगैर किराया का घर।
धोखेबाज आरपार ।।4।।

फेंकना पाँसा। लाचार बनाया खासा ।।
अगुआ बहुत हिम्मत वाला।
निराश नहीं कोई रखवाला ।।

समझौता किया। खाते पर चढ़वाया ।।
नाजायज हक जमीन पर।
किया आखिर उपकार ।।

उपाय थम गया। परेशानी बढ़ गई ।।
हुआ सिपाही जमींदार ।
नारी पर संसार का भार ।।

घर नहीं सगवारा। बढ़ा आहार ।।
आखिर पेट पिसाई पर।
बच्चे भूख से बेजार ।।

औरत को जाने दो। पेट पालने दो ।।
गाऊँगा दूसरे में सार।
ताली बजाता हाथ पर ।।

रानी ताई। खोजकर देख तो सही ।।
पाप-गठरी यह तेरे सिर पर आई।
कैसे जवाब देगी तू माई ।।

कुछ तो जरा समझ। थोड़ी-सी हो अक्ल ।।
करो शिक्षा का प्रसार।
छोड़ो मत कर्तव्य सार ।।

जोतीराव । कैसे देते दाँव ।।
पाकर राजनीतिक अधिकार ।
धोखेबाज आरपार ।।5।।

।। सात ।।

[शूद्र की मृत्यु के क्षण में ब्राह्मण, वैद, पंडित और पुरोहित बनकर उसकी औरत को क्रूरता से किस प्रकार लूटता है, इसके संबंध में ।]

पँवाड़ा

शूद्र जर्जर । चलता लकड़ी के सहारे पर ।।
तीन पाँव के पशु बन गए ।
तकाजे यमराज कालदंड हो गए ।।

करते छटपटाहट । दिमाग़ी कसरत ।।
मन संसारी बहुत बहलाया ।
मायाजाल में कितना उलझ गया ।।

हुई घबराहट । उलझा प्रपंच ।।
भीड़भाड़ वैद की चली गई ।
बंदी आँखों से ओझल कर दिए ।।

नब्ज देखते । प्रमाण ठहराते ।।
महँगी दवा दे गए ।
पैसे लूटकर ले गए ।।

खबर सुनकर । आया दौड़कर ।।
पंख कौवे के फड़फड़ाए ।
स्वाँग ब्राह्मण के बीच में आए ।।

प्राण पखेरू उड़ गया । मौका जान गया ।।
भड़भड़ा पुराण पढ़ गया ।
दान धर्म माँगना शुरू किया ।

शोक भयानक । बीच में बड़बड़ ।।
कान के परदे फट गए ।
दुष्ट सुने, ना बोले ।।

दान माँगता दान । पशु गौदान ।।
आख़िर जोड़ा लिए ।
तक़ाज़े यमराज कालदंड हो गए ।।1।।

स्त्री चक्कर काटती । जैसे चील आसमान घूमती ।।
आँसुओं की बाढ़ आती ।
दिल की धड़कनें बढ़तीं ।।

मन में डरती । भीर-भीर देखती ।।
पति को गौर से निहारा ।
जैसे आसमान गिरा ।।

बेसब्री से उठती । बच्चे की ओर जाती ।।
उठाकर छाती से लगाती ।
दूध बेचैनी से पिलाती ।।

झटके से छोड़ देती । लौट चली आती ।।
ब्राह्मण रुकावट बन गए ।
नारी को बोलने से रुकवाए ।।

जान तड़पाती । पति को निहारते रहती ।।
नीचे ठोड़ी को पकड़ लिया ।
होंठों को धीरे से चूम लिया ।।

दान करने दो । शांति से मरने दो ।।
दुखी संसार बहुत हुआ ।
बुलावा भगवान से आया ।।

अब बहुत हो गया । छोड़ा इस ममता को ।।
बक-बक पुराण लगाया ।
व्यर्थ में जीवन गँवाया ।।

द्विजों की ढिलाई। तबाही की हद नहीं ।।
कई देखिए, बर्बाद हुए।
तक़ाजे यमराज कालदंड हो गए ।।2।।

बहुत सह लिया। प्राण त्याग दिया ।।
घेरा ममता का रह गया ।
पंडित को उसमें घेर लिया ।।

धीरे से निकला। घर में पहुँचा ।।
खाना भरपेट खा लिया।
पंडिती श्मशान में किया ।।

मन में सोचा। राशिग्रहों को खोजा ।।
त्रिपाद खोज निकाला।
सभी के मन को डरवाया ।।

विधि शुरू किया। मंत्र कहते गया ।।
कनकी के पुतले करवाया।
कुश जल से स्थापित किया ।।

पैसे लेकर। अग्नि देकर ।।
ठगई करके घर चला गया।
डोम कौवे ने आखिर ऐसे चूस लिया ।।

आह रह गई। शांत हो गए ।।
स्त्री को समझाने लगे ।।
बच्चा उसके लगा गले ।।

खोपड़ी फूट गई। सारे उठ गए ।।
हिम्मत स्त्री की टूट गई।
घर में मित्रों ने पहुँचाया ।।

पंडित आता। धीरे से कह जाता ।।
निश्चय विधि का कर गए ।।
तक़ाजे यमराज कालदंड हो गए ।।3।।

बड़े पुत्र को। जीन पहनाया ।।
गरूड़ पुराण सुनवाया।
विधि नौ दिन करवाया ।।

दसवें दिन को। बुलाया सभी को ।।
पिंड कनकी का रखवाया।
कौवों को भोज़न खिलवाया ।।

भाँडा-बरतन दान। छाता निदान ।।
मन लाठी पर रुक गया।
आखिर जूते से शांत हुआ ।।

धूर्त भारी। क़िया सौदागरी ।।
पंडित ने शूद्रों को ठगाया।
कैसे सबको मूर्ख बनाया ।।

हुआ कर्जदार। पड़ा सारा भार ।।
धर्म बहकावे ने कितना लूट लिया।
दम तेरहवें दिन नहीं बच पाया ।।

पंडित भया साहूकार। शूद्र कर्जदार ।।
कर्ज खेत के नाम लिया ।।
भोजन जाति को खिलाया ।।

थोड़े दिन में। ब्याज कर्ज में ।।
गिरवी खाता पूरा नया किया।
मिरासी पंडित वारिस हुआ ।।

नमकहरामी। भयंकर गुलामी ।।
सेवक यजमान को बनाए।
तक़ाज़े यमराज कालदंड हो गए ।।4।।

घास काटती। मदद करती ।।
भगिनी के सुख के दिन गए।
समय पर रोटी टुकड़ा न मिल पाए ।।

पैसा चला गया । दाँत गिर गए ।।
सूखी रोटी भी न मिल पाती ।।
बच्चे को देखकर रोती ।

भूख से सूख गई । मरने की नौबत आई ।।
पंडित को मिलने बुलाया ।
बहुत गरीबी जान नहीं आया ।।

भगिनी मर गई ।। खेत में दफनाई गई ।।
गरूड़ पुराण कहाँ छुप गया ।
पंडित ने मुँह काला किया ।।

रानी ताई । समझ लो सही ।।
पीड़ा यह रोकर बतलाया ।।
द्विजों ने शूद्रों को सताया ।।

पढ़ाइए शूद्रों को । अपाहिज भाई को ।।
ब्रह्मा ने सभी को दास बनाया ।
पढ़ने पर रोक लगाया ।।

ख्याति सुनकर । आया दौड़कर ।।
दुनिया में दास मुक्त किए ।
ज्ञान तुमने सबको दिए ।।

राव जोती का । प्रहार फुले का ।।
पहचानकर दुश्मन पर वार किए ।
तक़ाजे यमराज कालदंड हो गए ।।5।।

॥ आठ ॥

[ब्राह्मण शूद्रो को हर साल भाद्रपद महीने की पूर्णिमा में, साल भर के छोटे-बड़े त्यौहारों में और सूर्य तथा चंद्रमा के ग्रहण के समय किस तरह से झूठी आशाएँ दिखाकर बर्बाद करता है इसके संबंध में।]

॥ अभंग ॥

भूमिदास किया मुक्त नहीं करते शूद्र को।
लगान लगाया सालाना ॥1॥

उगाही का ठाट भाद्रपद मासी।
मुक्त नहीं करते पुत्र को जीवन-भर ॥2॥

संक्रांति प्रतिपदा सूराख सभी त्यौहारों को।
लज्जा नहीं मन में सत्यानाशी को ॥3॥

तीर्थयात्रा के स्थानों में बगुले की तरह।
भिखारी बनाते श्रद्धालुओं को ॥4॥

उपद्रवी बेटे खाली समय में।
घूमते गाँव-देहात में भिखमंगे ॥5॥

आकाश के ग्रहों का स्वाँग खड़ा किया।
नौटंकी ले आए धन के लिए ॥6॥

लताड़ते हुए भी दान सब लेते।
बर्बाद करके जाते कुनबी को ॥7॥

तक़ाज़े का तुम इंतजार मत करो।
चिल्लाओ, बुलाओ जोशी के नाम ॥8॥

ब्याज बट्टा भी ढोंगी का बाकी।
चुकाओ बग़ैर भूले साफ़-साफ़ ॥9॥

अब तो तुम शूद्रों को धोखा मत देना।
जोतिबा का ठोंका सुनते हुए ॥10॥

।। नौ ।।

[ब्राह्मण के साधारण गुण और काम, इनका सबसे ज्यादा लोभ और उसको प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार की धोखेबाजी करता है, उसके संबंध में।]

।। अभंग ।।

प्रथम ब्राह्मण पैदा हुआ हिंदुस्थान में।
दिखता शूद्र जैसा निरंतर ।।1।।

धागा पहनाकर शूद्र द्विज किया।
नहीं बदल सका अपने आप को ।।2।।

शरारती नटखट स्वभाव शरीर का।
धूर्तता मूल में जाएगी नहीं ।।3।।

स्नान पूजापाठ नित तिलक माथे पर।
उठाते गोद में वेश्याओं को ।।4।।

पहने पीतांबर अछूते हो गया।
छूता नहीं शूद्रों को पवित्र कैसा ।।5।।

सुनना वेदों का शूद्रों को बंद किया।
लेकिन पढ़ाया अंग्रेजों को ।।6।।

भूदेव बनकर पाँव पूजने लगवाते।
स्वयं पाँव पकड़ते वेश्याओं के ।।7।।

शूद्र को खाना दूर से परोसते।
सुरापान करते मांस-भोजन ।।8।।

पाँव धुलवाकर शूद्र को तीर्थ देते।
मुँहपान करते यवनी का ।।9।।

ज्ञानहीन शूद्र लज्जाहीन हुआ।
जूते उठाए ब्राह्मणों के ।।10।।

हाथ के जूते बीच में ही कहीं न रखो।
खोज करो सच्चा जोती कहे ।।11।।

गुलामगीरी

PREFACE

"The day that reduces a man to slavery takes from him the half of his virtue."—Homer.

"Our system of Government in India is not calculated to raise the character of those subject to it, nor is the present system of education one to do more than *over-educate the few*, leaving the mass of the people as ignorant as ever and still mere at the mercy of the few learned ; in fact, it is an extension of the demoralizing Brahmin-ridden policy, which, perhaps, has more retarded the progress of civilization and improvement in India generally than anything else."

Col. G. J. Haly—*On Fisheries in India*

"Many ages have elapsed since peculiar resources were afforded to the Brahmins ; but the most considerate cosmopolite would hesitate to enroll them amongst the benefactors of the world. They boast of vast stores of ancient learning. They have amassed great riches, and been invested with unbounded power, but to what good end ? They have cherished the most degrading superstitions and practised the most shameless impostures. They have arrogated to themselves the possession and enjoyment of the rarest gifts of fortune and perpetuated the most revolting system known to the world. It is only from a diminution of their abused power that we can hope to accomplish the great work of national regeneration."

Mead's—*Sepoy Revolt*

Recent researches have domonstrated beyond a shadow of doubt that the Brahmans were not the aborigines of India—At some remote period of antiquity, probably more than 3000 years ago, the Aryan progenitors of the present Brahmin race

descended upon the plains of Hindustan from regions lying beyond the Indus, the Hindoo Kush and other adjoining tracts. According to Dr. Pritchard, the Ethnologist they were an off-shoot of the Great Indo-European race, from whom the Persian, Medes, and other Iranian nations in Asia and the principal nations in Europe like-wise are descended. The Affinity existing between the Zend, the Persian and Sanskrit languages, as also between all the European languages, unmistakably points to a common source of origin. It appears also more than probable that the original cradle of this race being an arid, sandy and mountainous region, and one ill calculated to afford them the sustenance which their growing wants required, they branched off into colonies, East and West. The extreme fertility of the soil in India, its rich productions, the poverbial wealth of its people, and the other innumerable gifts which this favoured land enjoys, and which have more recently tempted the cupidity of Western nations, no doubt, attracted the Aryans, who came to India not as simple emigrants with peaceful intentions of colonization, but as conquerors. They appear to have been a race imbued with very high notions of self, extremely cunning arrogant and bigoted. Such self-gratulatory, pride-flattering epithets as आर्य, भूदेव etc., with which they designated themselves, confirm us in our opinion of their primitive character, which they have preserved up to the present time, with perhaps, little change for the better. The aborigines whom the Aryans subjugated, or displaced, appear to have been a hardy and brave people from the determined front which they offered to these interlopers. Such opprobrious terms as (शूद्र) Shoodra 'insignificant.' महारी 'the great foe' अत्यज चांडाल etc. with which they designated them, undoubtedly show that originally they offered the greatest resistance in their power to their establishing themselves in the country, and hence the great aversion and hatred in which they are held. From many customs* traditionally

* A most remarkable and striking corroboration of these views is to be found in the religious rites observed on some of the grand festivals which have a reference to Bali Raja, the great king who appears to have reigned once in the hearts

handed down to us as well as from the mythological legends contained in the sacred books of the Brahmins, it is evident that there had been a hard struggle for ascendancy between the two races. The wars of Dev and Daitya, or the Rakshas, about which so many fictions are found scattered over the sacred books of the Brahmins, have certainly a reference to this primeval struggle. The original inhabitants with whom these earthborn Gods, the Brahmins, fought, were not inappropriately termed Rakshas, that is the protectors of the land. The incredible and foolish legends regarding their form and shape are no doubt mere chimeras, the fact being that these people were of superior stature and hardy make. Under such leaders as Brahma, Parashuram and others the Brahmins waged very protracted wars against the original inhabitants. They eventually succeeded in establishing their supremacy and subjugating the aborigines to their entire control. Accounts of these conquests, enveloped with a mass of incredible fiction, are found in the books of the Brahmins. In some instances

and affections of the Shoodras and whom the Brahmin rulers displaced. On the day of *Dushhara*, the wife and sisters of a Shoodra, when he returns from his worship of the *Shumi Tree* and after the distribution of its leaves, which are regarded on that day as equivalent to gold, amongst his friends, relations and acquaintances, he is greeted, at home with a welcome "अला बला जावे और बली का राज आवे", "Let all troubles and misery go, and the kingdom of Bali come." Whereas the wife and sisters of a Brahmin place on that day in the foregroud of the house an image of Bali, made generally of wheaten or other flour, and when the Brahmin returns from his worship of the *Shumi Tree* he takes the stalk of it, pokes with it the belly of the image and then passes into the house. This contrariety, in the religious customs and usages obtaining amongst the Shoodras and the Brahmins and of which many more examples might be adduced can be explained on no other supposition but that which I have tried to confirm and elucidate in these pages.

they were compelled to emigrate, and in others wholesale extermination was resorted to. The cruelties which the European settlers practised on the American Indians on their first settlement in the new world, had certainly their parallel in India on the advent of the Aryans and their subjugation of the aborigines. The cruelties and inhuman atrocities which Parashuram committed on the Kshetrias, the people of this land, if we are to believe even one tenth of what the legends say regarding him, surpass our belief and show that he was more a friend than a God. Perhaps in the whole range of history it is scarcely possible to meet with such another character as that of Parashuram, so selfish, infamous, cruel and inhuman. The deeds of Nero, Alaric or Machiavelli sink in to insignificance before the ferocity of Parashuram. The myriads of men and defenceless children whom he butchered simply with a view to the establishment of his coreligionists on a secure and permanent basis in this land, is a fact for which generations ought to execrate his name, rather than deify it.

This, in short, is the history of Brahmin domination in India. They originally settled on the banks of the Ganges whence they gradually spread over the whole of India. In order, however, to keep a better hold on the people they devised that weird system of mythology, the ordination of caste, and the code of cruel and inhuman laws, to which we can find no parallel amongst other nations. They founded system of priestcraft so galling in its tendency and operatation, the like of which we can hardly find anywhere since the times of the Druids. The institution of Caste, which has been the main object of their laws, had no existence among them originally. That it was an after-creation of their deep cunning is evident from their own writings. The highest rights, the highest privileges and gifts, and everything that would make the life of a Brahmin easy, smoothgoing and happy everthing that would conserve or flatter their self-pride, were specially inculcated and enjoined, whereas the Shoodras and Atishoodras were regarded with supreme hatred and contempt, and the commonest rights of humanity were denied them. Their, touch, nay, even their shadow, is deemed a pollution. They are considered as mere chattels, and their life of no more value than that of meanest

reptile; for it is enjoined that if a Brahmin, "kill a cat or an ichneumon, the bird Chasha, or a frog or a dog, a lizard, an owl, a crow or a Shoodra" he is absolved of his sin by performing the चांद्रायण प्रायश्चित्त, a fasting penance, perhaps for a few hours or a day and requiring not much labour or trouble. While for a Shoodra to kill a Brahmin is considered the most heinous offence he could commit, and the forfeiture of his life is the only punishment his crime is considered to merit. Happily for our Shoodra brethren of the present day our enlightened British Rulers have not recognized these preposterous, inhuman and unjust penal enactments of the Brahmin leg..lators. They no doubt regard them more as ridiculous fooleries than as equitable laws. Indeed, no man possessing even a grain of common sense would regard them as otherwise. Any one, who feels disposed to look a little more into the laws and ordinances as embodied in the *Manava Dharma Shastra* and other works of the same class, would undoubtedly be impressed with the deep cunning underlying them all. It may not, perhaps, be out of place to cite here a few more instances in which the superiority or excellence of the Brahmins is held and enjoined on pain of Divine displeasure.

The Brahmin is styled the Lord of the Universe, even equal to the God himself. He is to be worshipped, served and respected by all.

A Brahmin can do no wrong.

Never shall the King slay a Brahmin, though he has committed all possible crimes.

To save the life of a Brahmin any falsehood may be told. There is no sin in it.

No one is to take away anything belonging to a Brahmin.

A king, though dying with want, must not receive any tax from a Brahmin, nor suffer him to be afflicted with hunger or the whole kingdom will be afflicted with famine.

The feet of a Brahmin are holy. In his left foot reside all the तीर्थ (holy pilgrimages) and by dipping which into water he makes it as holy as the waters at the holiest of shrines.

A Brahmin may compel a man of the servile class to perform servile duty, because such a man was created by the

almighty only for the purpose of serving Brahmins.

A Shoodra, though emancipated by his master, is not released from state of servitude ; for, being born in a state which is natural to him by whom can he be divested of his natural attributes ?

Let a Brahmin not give temporal advice nor spiritual counsel to a Shoodra.

No superfluous accumulation of wealth shall be made by a Shoodra, even though he has the power to make it, since a servile man who has amassed riches becomes proud, and by his insolence or neglect he gives pain even to Brahmins.

If a Shoodra cohabit with a Brahminee adultress, his life is to be taken. But if a Brahmin goes even into the lawful wife of Shoodra he is exempted from all corporal punishment.

It would be needless to go on multiplying instances such as these. Hundreds of similar ordinances including many more of a wors characters than these can be found scattered over their books. But what can have been the motives and objects of such cruel and inhuman Laws ? They are, I believe, apparent to all but to the infatuated, the blind and the self-interested. Anyone who runs may even read them. Their main object in fabricating these falsehoods was to dupe the minds of the ignorant and to rivet firmly on them the chains of perpetual bondage and slavery which their selfishness and cunning had forged. The severity of laws as affecting the Súdras ; and the intense hatred with which they were regarded by the Brahmins can be explained on no other supposition but that there was, originally between the two, a deadly feud, arising as we have shown above, from the advent of the latter into this land. It is surprising to think what a mass of specious fiction the interlopers invented with a, view to hold the original occupiers of the soil fast in their clutches, and rule securely for ages yet to come through the means of their credulity. Anyone who will consider well the whole history of Brahmin domination in India, and the thraldomunder which it has retained the people even up to the present day, will agree with us in thinking that no language could be too harsh by which to characterise the selfish heartlessness and the consummats cunning of the Brahmin tyranny by which India has been so long

governed. How far the Brahmins have succeed in their endeavours to enslave the minds of the Shoodras and Atishoodras, those of them who have come to know the true state of matters know well to their cost. For generations past they have borne these chains of slavery and bondage. Innumerable Bhut writers, with the selfsame objects as those of Menu and others of his class, added from time to time to the existing mass of legends, the idle phantasies of their own brains, and palmed them off upon the ignorant masses as of Divine inspiration, or as the acts of the Deity himself. The most immoral, inhuman, unjust actions and deeds have been attibuted to that being who is our Creator, Governor and Protector and who is all Holiness himself. These blasphemous writings, the products of the distempered brains of these interlopers, were received as gospel truths, for to doubt them was considered as the most unpardonable of sins. This system of slavery, to which the Brahmins reduced the lower classes is in no respects inferior to that which obtained a few years ago in America. In the days of rigid Brahmin dominancy, so lately as that of the time of the Peshwa, my Shoodra brethren had even greater hardships and oppression practised upon them than what even the slaves in America had to suffer. To this system of selfish superstition and bigotry, we are to attribute the stagnation and all the evils under which India has been groaning for many centuries past. It will, indeed, be difficult to name a single advantage which accured to the aborigines from the advent of this intensely selfish and tyrannical sect. The Indian Ryot (the Shoodra and Atishoodra) has been in fact a proverbial Milch cow. He has passed from hand to hand. Those who succeesively held sway over him cared only to fatten themselves on the sweat of his brow, without caring for his welfare or condition. It was sufficient for their purposes that they held him safe in their clutches for squeezing out of him as much as they possibly could. The Brahmin had at last so contrived to entwine himself round the Shoodra in every large or small undertaking, in every domestic or public business that the latter is by custom quite unable to transact any concern of moment without his aid.

This is even true at the present time. While the Shoodra on

the other hand is so far reconciled to the Brahmin yoke, that like the American slave he would resist any attempt that may be made for his deliverance and fight even against his benefactor. Under the guise of religion the Brahmin has his finger in every thing, big or small, which the Shoodra undertakes. Go to his house, to his field or to the court to which business may invite him, the Brahmin is there under some specious pretext or other, trying to squeeze out of him as much as his cunning and wily brain can manage. The Brahmin despoils the Shoodra not only in his capacity of a priest, but does so in a variety of other ways having by his superior education and cunning monopolized all the higher places of emolument, the ingenuity of his ways is past finding out, as the reader will find on an attentive perusal of this book. In the most insignificant village as in the largest town. the Brahmin is the all in all ; the be all and the end all of the Ryot. He is the master ruler. The Patel of a village, the headman is in fact a nonentity. The Koolkarnee the hereditary Brahmin village accountant, the notorious quarrel-monger, moulds the Patel according to his. He wishes is the temporal and spiritual adviser of the ryots, the Soucar in his necessities and the general referee in all matters. In most instances he plans active mischief by advising opposite parties differently, so that he may feather his own nest well. If we go up higher, to the Court of a Mamlutdar, we find the same thing. The first anxiety of a Mamlutdar is to get round him, if not his own relatives, his castemen to fill the various offices under him. These actively foment quarrels and are the media of all corrupt practices prevailling generally round about these Courts. If a Shoodra or Atishoodra repairs to his Courts the treatment which he receives is akin to what the meanest reptile gets. Instead of his case receiving a patient and careful hearing, a choice lot of abuse is showered on his devoted head, and his prayer is set aside on some pretext or other. Whereas if one of his own castemen were to repait to the Court on the self-same business, he is received with all courtesy, and there is hardly any time lost in getting the matter right. If we go up still higher to the Collector's and Revenue Commissioner's Courts and to the other Departments of the Public Service, the Engineer, Educational etc., the same system is

carried out on a smaller or greater scale. The higher European officer generally view men and things through Brahmin spectacles, and hence the deplorable ignorance they often exhibit in forming a correct estimate of them. I have tried to place before my readers in the concluding portions of this book what expedients are employed by these Brahmin officials for fleecing the Cunbee in the various departments to which business or his necessities induce him to resort. Any one knowing intimately the workings of the different departments and the secret springs which are in motion, will unhesitatingly concur with me in saying that what I have described in the following pages is not one hundredth part of the rogueries that are generally practised on my poor, illiterate and ignorant Shoodra brethren. Though the Brahmin of the old Peshwa school is not quite the same as the Brahmin of the present day, though the march of Western ideas and civilization is undoubtedly telling on his superstition and bigotry, he has not as yet abandoned his time-cherished notions of superiority or the dishonesty of his ways. The Beef, the Mutton, the intoxicating beverages stronger and more fiery than the famed *some juice*, which their ancestors once relished, as the veriest dainties, are fast finding innumerable votaries among them.

The Brahmin of the present time finds to some extent, like Othello, that his occupation is gone. But knowing full well this state of matters, is the Brahmin inclined to make atonement for his past selfishness ? Perhaps, it would have been useless to repine over what has been suffered and what has passed away, had the present state heen all that is desirable. We know perfectly well that the Brahmin will not descend from his self-raised high pedestal and meet his Cunbee and low caste brethren on an equal footing without a struggle. Even the educated Brahmin who knows his exact position and how he has come by it, will not condescend to acknowledge the errors of his forefathers and willingly forego the long cherished false notions of his own superiority. At present, not one has had the moral courage to do what only duty demands and as long as this state of matters continues, rect distrusting and degrading sect, the condition of the Shoodras will remain unaltered, and India will never advance in greatness or

prosperity.

Perhaps a part of the blame in bringing matters to this crisis may be justly laid to the credit of the Government. Whatever may have been their motives in providing ampler funds and greater facilities for higher education and neglecting that of the masses, it will be acknowledged by all that in justice to the latter this is not as it should be. It is an admitted fact that the greater portion of the revenues of the Indian Empire are derived from the Ryot's labor—from the sweat of his brow. The higher and richer classes contribute little or nothing to the state's exchequer. A well informed English writer states that,

"Our income is derived, not from surplus profits, but from capital; not from luxuries but from the poorest necessaries. It is the product of sin and tears."

That Government should expend profusely a large portion of revenue thus raised, on the education of the higher classes, for it is these only who take advantage of it, is anything but just or equitable. Their object in patronising this virtual high class education appears to be to prepare scholars. "Who, it is thought, would in time vend learning without money and without price." 'If we can inspire," say they "the love of knowledge in the minds of the superior classes, the result will be a higher standard of morals in the cases of the individuals, a large amount of affection for the British Government, and an unconquerable desire to spread among their own countrymen the intellectual blessings which they have received."

Regarding these objects of Government the writer, above alluded to, states that:

"We have never heard of philosophy more benevolent and more uptopian. It is proposed by men who witness the wondrous changes brought about in the Western world, purely by the agency of popular knowledge, to redress the defects of the two hundred millions of India, by giving superior education to the superior classes and to them only." ****"We ask the friends of Indian Universities to favour us with a single example of the truth of their theory from the instances which have already fallen within the scope of their experience. They have educated many children of wealthy men, and have been

the means of advancing very materially the worldly prospects of some of their pupils ; but what contribution have these made to the great work of regenerating their fellowmen ? How have they begun to act upon the masses ? Have any of them formed classes at their own homes or elsewhere, for the instruction of their less fortunate or less wise countrymen ? Or have they kept their knowledge to themselves, as a personal gift, not to be soiled by contact with the ignorant vulger ? Have they in any way shown themselves anxious to advance the general interests and repay philanthropy with patriotism ? Upon what grounds is it asserted that the best way to advance the moral and intellectual welfare of the people is to raise the standard of instruction among the higher classes ? A glorious argument this for aristocracy were it only tenable. To show the growth of the national happiness, it would only be necessary to refer to the number of pupils at the colleges and the lists of academic degree. Each wrangler would be accounted a national benefactor ; and the existence of Deans and Proctors would be associated, like the game laws and the tenpound franchise, with the best interests of the Constitution."

Perhaps the most glaring tendency of the Government system of high class education has been the virtual monopoly of all the higher offices under them by the Brahmins. If the welfare of the Ryot is at heart, if it is the duty of Government to check a host of abuses, it behoves them to narrow this monopoly, day by day, so as to allow a sprinkling of the other castes to get in the public service. Perhaps some might be inclined to say that it is not feasible in the present state of education Our only reply is that if Government loak a little less after higher education and more towards the education of the masses, the former being able to take care of itself, there would be no difficulty in attaining up a body of men every way qualified and perhaps far better in morals and manners.

My object in writing the present volume is not only to tell my Shoodra brethren how they have been duped by the Brahmins, but also to open the eyes of Government to that pernicious system of high class education which has hither to been so persistently followed and which statesmen like Sir George Campbell, the present Lieutenant Governor of Bengal, with

broad and universal sympathies, are finding to be highly mischievous and pernicious to the interests of Government. I sincerely hope that Government will ere long see the error of their ways, trust less to writers or men who look through high class spectacles and take the glory in to their own hands of emancipating my Shoodra brethren from the trammels of bondage which the Brahmins have woven round them like the coils of a serpent. It is no less the duty of such of my Shoodra brethren as have received any education to place before Government the true state of their fellowmen and endeavour to the best of their power to emancipate themselves from Brahmin thraldom. Let their be schools for the Shoodras in every village; but away with all Brahmin school-masters! The Shoodras are the life and sinews of the country, and it is to them alone and not to the Brahmins that the Government must ever look to tide them over their difficulties, financial as well as political. If the hearts and minds of the Shoodras are made happy and contended the British Government need have no fear for their loyalty in the future.

—Joteerao Phooley

प्रस्तावना

सैकड़ों साल से आज तक शूद्रादि-अतिशूद्र (अछूत) समाज, जब से इस देश में ब्राह्मणों की सत्ता कायम हुई तब से लगातार जुल्म और शोषण के शिकार हैं। ये लोग हर तरह की यातनाओं और कठिनाइयों में अपने दिन गुजार रहे हैं। इसलिए इन लोगों को इन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए। ये लोग अपने-आपको ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों की जुल्म-ज्यादतियों से कैसे मुक्त कर सकते हैं, यही आज हमारे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल है। यही इस ग्रंथ का उद्देश्य है। यह कहा जाता है कि इस देश में ब्राह्मण-पुरोहितों की सत्ता कायम हुए लगभग तीन हजार साल से भी ज्यादा समय बीत गया होगा। वे लोग परदेश से यहाँ आए। उन्होंने इस देश के मूल निवासियों पर बर्बर हमले करके इन लोगों को अपने घर-बार से, जमीन-जायदाद से वंचित करके अपना गुलाम (दास) बना लिया। उन्होंने इनके साथ बड़ी अमानवीयता का रवैया अपनाया था। सैकड़ों साल बीत जाने के बाद भी इन लोगों में बीती घटनाओं की विस्मृतियाँ ताजी होती देखकर कि ब्राह्मणों ने यहाँ के मूल निवासियों को घर-बार, जमीन-जायदाद से बेदखल कर इन्हें अपना गुलाम बनाया है, इस बात के प्रमाणों को ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों ने तहस-नहस कर दिया। दफनाकर नष्ट कर दिया।

उन ब्राह्मणों ने अपना प्रभाव, अपना वर्चस्व इन लोगों के दिलो-दिमाग पर कायम रखने के लिए, ताकि उनकी स्वार्थपूर्ति होती रहे, कई तरह के हथकंडे अपनाए और वे सभी इसमें कामयाब भी होते रहे। चूँकि उस समय ये लोग सत्ता की दृष्टि से पहले ही पराधीन हुए थे और बाद में ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों ने उन्हें ज्ञानहीन-बुद्धिहीन बना दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों के दाँव-पेंच, उनकी जालसाजी इनमें से किसी के भी ध्यान में नहीं आ सकी। ब्राह्मण-पुरोहितों ने इन पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए, इन्हें हमेशा-हमेशा के लिए अपना गुलाम बनाकर रखने के लिए, केवल अपने निजी हितों को ही मद्दे-नजर रखकर, एक से अधिक बनावटी ग्रंथों की रचना करके कामयाबी हासिल की।

उन नकली ग्रंथों में उन्होंने यह दिखाने की पूरी कोशिश की कि उन्हें जो विशेष अधिकार प्राप्त हैं, वे सब उन्हें ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं। इस तरह का झूठा प्रचार उस समय के अनपढ़ लोगों में किया गया और उस समय के शूद्रादि-अतिशूद्रों में मानसिक गुलामी के बीज बोए गए। उन ग्रंथों में यह भी लिखा गया कि शूद्रों को (ब्रह्म द्वारा) पैदा करने का उद्देश्य बस इतना ही था कि शूद्रों को हमेशा-हमेशा के लिए ब्राह्मण-पुरोहितों की सेवा करने में ही लगे रहना चाहिए और ब्राह्मण-पुरोहितों की मर्जी के खिलाफ कुछ भी नहीं करना चाहिए। मतलब, तभी इन्हें ईश्वर प्राप्त होंगे और इनका जीवन सार्थक होगा।

लेकिन अब इन ग्रंथों के बारे में कोई मामूली ढंग से भी सोचे कि, यह बात कहाँ तक सही है, क्या वे सचमुच ईश्वर द्वारा प्रदत्त हैं, तो उन्हें इसकी सच्चाई तुरंत समझ में आ जाएगी। लेकिन इस प्रकार के ग्रंथों से सर्वशक्तिमान, सृष्टि का निर्माता जो परमेश्वर है, उसकी समानत्ववादी दृष्टि को बड़ा गौणत्व प्राप्त हो गया है। इस तरह के हमारे जो ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित वर्ग के भाई हैं, जिन्हें भाई कहने में भी शर्म आती है, क्योंकि उन्होंने किसी समय शूद्रादि-अतिशूद्रों को पूरी तरह से तबाह कर दिया था और वे ही लोग अब भी धर्म के नाम पर, धर्म की मदद से इनको चूस रहे हैं। एक भाई द्वारा दूसरे भाई पर जुल्म करना, यह भाई का धर्म नहीं है। फिर भी हमें, हम सभी को उत्पन्नकर्ता के रिश्ते से, उन्हें भाई कहना पड़ रहा है। वे भी खुले रूप से यह कहना छोड़ेंगे नहीं, फिर भी उन्हें केवल अपने स्वार्थ का ही ध्यान न रखते हुए न्यायबुद्धि से भी सोचना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे। तो उन ग्रंथों को देखकर-पढ़कर बुद्धिमान अंग्रेज, फ्रेंच, जर्मन, अमेरिकी और अन्य बुद्धिमान लोग अपना यह मत दिए बिना नहीं रहेंगे कि उन ग्रंथों को (ब्राह्मणों ने) केवल अपने मतलब के लिए लिख रखा है। उन ग्रंथों में हर तरह से ब्राह्मण-पुरोहितों का महत्त्व बताया गया है। ब्राह्मण-पुरोहितों का शूद्रादि-अतिशूद्रों के दिलो-दिमाग पर हमेशा-हमेशा के लिए वर्चस्व बना रहे इसलिए उन्हें ईश्वर से भी श्रेष्ठ समझा गया है। ऊपर जिनका नाम निर्देश किया गया है, उनमें से कई अंग्रेज लोगों ने इतिहासादि ग्रंथों में कई जगह यह लिख रखा है कि ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों ने अपने निजी स्वार्थ के लिए अन्य लोगों को यानी शूद्रादि-अतिशूद्रों को अपना गुलाम बना लिया है। उन ग्रंथों द्वारा ब्राह्मण-पुरोहितों ने ईश्वर के वैभव को कितनी निम्न स्थिति में ला रखा है, यह सही में बड़ा शोचनीय है। जिस ईश्वर ने शूद्रादि-अतिशूद्रों को और अन्य लोगों को अपने द्वारा निर्मित इस सृष्टि की सभी वस्तुओं को समान रूप से उपभोग करने की पूरी आजादी दी है, उस ईश्वर के नाम पर ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित एकदम झूठ-मूठ ग्रंथों की रचना करके, उन ग्रंथों में सभी के (मानवी) हक को नकारते हुए स्वयं मालिक हो गए।

इस बात पर हमारे कुछ ब्राह्मण भाई इस तरह प्रश्न उठा सकते हैं कि यदि

ये तमाम ग्रंथ झूठ-मूठ के हैं, तो उन ग्रंथों पर शूद्रादि-अतिशूद्रों के पूर्वजों ने क्यों आस्था रखी थी? और आज भी इनमें से बहुत सारे लोग क्यों आस्था रखे हुए हैं? इसका जवाब यह है कि आज के इस प्रगति काल में कोई किसी पर जुल्म नहीं कर सकता। मतलब, अपनी बात को लाद नहीं सकता। आज सभी को अपने मन की बात, अपने अनुभव की बात स्पष्ट रूप से लिखने या बोलने की छूट है।

कोई धूर्त आदमी किसी बड़े व्यक्ति के नाम से झूठा पत्र लिखकर लाए तो कुछ समय के लिए उस पर भरोसा करना ही पड़ता है। बाद में समय के अनुसार वह झूठ उजागर हो ही जाता है। इसी तरह, शूद्रादि-अतिशूद्रों का, किसी समय ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों के जुल्म और ज्यादतियों के शिकार होने की वजह से, अनपढ़-गँवार बनाकर रखने की वजह से, पतन हुआ है। ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए समर्थ (रामदास)[1] के नाम पर झूठे-पाखंडी ग्रंथों की रचना करके शूद्रादि-अतिशूद्रों को गुमराह किया और आज भी इनमें से कई लोगों को ब्राह्मण-पुरोहित लोग गुमराह कर रहे हैं, यह स्पष्ट रूप से उक्त कथन की पुष्टि करता है।

ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित लोग अपना पेट पालने के लिए, अपने पाखंडी ग्रंथों द्वारा, जगह-जगह, बार-बार, अज्ञानी शूद्रों को उपदेश देते रहे, जिसकी वजह से उनके दिलो-दिमाग में ब्राह्मणों के प्रति पूज्यबुद्धि उत्पन्न होती रही। इन लोगों को उन्होंने (ब्राह्मणों ने) इनके मन में ईश्वर के प्रति जो भावना है, वही भावना अपने को (ब्राह्मणों को) समर्पित करने के लिए मजबूर किया। यह कोई साधारण या मामूली अन्याय नहीं है। इसके लिए उन्हें ईश्वर के पास जवाब देना होगा। ब्राह्मणों के उपदेशों का प्रभाव अधिकांश अज्ञानी शूद्र लोगों के दिलो-दिमाग पर इस तरह से जड़ जमाए हुए है कि अमेरिका के (काले) गुलामों की तरह जिन दुष्ट लोगों ने हमें गुलाम बनाकर रखा है, उनसे लड़कर मुक्त (आजाद) होने की बजाए जो हमें आजादी दे रहे हैं, उन लोगों के विरुद्ध फिजूल कमर कसकर लड़ने के लिए तैयार हुए हैं। यह भी एक बड़े आश्चर्य की बात है कि हम लोगों पर जो कोई उपकार कर रहे हैं, उनसे कहना कि हम पर उपकार मत करो, फिलहाल हम जिस स्थिति में हैं वही स्थिति ठीक है, यही कहकर हम शांत नहीं होते बल्कि उनसे झगड़ने के लिए भी तैयार रहते हैं, यह गलत है। वास्तव में हमको गुलामी से मुक्त करनेवाले जो लोग हैं, उनको हमें आजाद कराने से कुछ हित होता है, ऐसा भी नहीं है, बल्कि उन्हें अपने ही लोगों में से सैकड़ों लोगों की बलि चढ़ानी पड़ती है। उन्हें बड़ी-बड़ी जोखिमें उठाकर अपनी जान पर भी खतरा झेलना पड़ता है।

1. समर्थ रामदास—मराठी संत कवि। ब्राह्मण जाति में पैदा हुए और वे ब्राह्मणवाद के कट्टर समर्थक रहे हैं।

अब उनका इस तरह से दूसरों के हितों का रक्षण करने के लिए अगुवायी करने का उद्देश्य क्या होना चाहिए, यदि इस संबंध में हमने गहराई से सोचा तो हमारी समझ में आएगा कि हर मनुष्य को आजाद होना चाहिए, यही उसकी बुनियादी जरूरत है। जब व्यक्ति आजाद होता है तब उसे अपने मन के भावों और विचारों को स्पष्ट रूप से दूसरों के सामने प्रकट करने का मौका मिलता है। लेकिन जब उसे आजादी नहीं होती तब वह वही महत्त्वपूर्ण विचार, जनहित में होने के बावजूद दूसरों के सामने प्रकट नहीं कर पाता और समय गुजर जाने के बाद वे सभी विचार लुप्त हो जाते हैं। आजाद होने से मनुष्य अपने सभी मानवी अधिकार प्राप्त कर लेता है और असीम आनंद का अनुभव करता है। सभी मनुष्यों को मनुष्य होने के जो सामान्य अधिकार, इस सृष्टि के नियंत्रक और सर्वसाक्षी परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं, उन तमाम मानवी अधिकारों को ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित वर्ग ने दबोचकर रखा है। अब ऐसे लोगों से अपने मानवी अधिकार छीनकर लेने में कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए। उनके हक उन्हें मिल जाने से उन अंग्रेजों को खुशी होती है। सभी को आजादी देकर, उन्हें जुल्मी लोगों के जुल्म से मुक्त करके सुखी बनाना, यही उनका इस तरह से खतरा मोल लेने का उद्देश्य है। वाह-वाह ! यह कितना बड़ा जनहित का कार्य है !

उनका इतना अच्छा उद्देश्य होने की वजह से ही ईश्वर उन्हें, वे जहाँ गए, वहाँ ज्यादा-से-ज्यादा कामयाबी देता रहा है। और अब आगे भी उन्हें इस तरह के अच्छे कामों में उनके प्रयास सफल होते रहें, उन्हें कामयाबी मिलती रहे, यही हम भगवान से प्रार्थना करते हैं।

दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका जैसे पृथ्वी के इन दो बड़े हिस्सों में सैकड़ों साल से अन्य देशों से लोगों को पकड़-पकड़कर यहाँ उन्हें गुलाम बनाया जाता था। यह दासों को खरीदने-बेचने की प्रथा यूरोप और तमाम प्रगतिशील कहलानेवाले राष्ट्रों के लिए बड़ी लज्जा की बात थी। उस कलंक को दूर करने के लिए अंग्रेज, अमेरिकी आदि उदार लोगों ने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़कर अपने नुकसान की बात तो दरकिनार, उन्होंने अपनी जान की परवाह नहीं की और गुलामों की मुक्ति के लिए लड़ते रहे। यह गुलामी-प्रथा कई सालों से चली आ रही थी। इस अमानवीय गुलामी प्रथा को समूल नष्ट कर देने के लिए और असंख्य गुलामों को उनके परम-प्रिय माता-पिता से, भाई-बहनों से, बीवी-बच्चों से, दोस्त-मित्रों से जुदा कर देने की वजह से जो यातनाएँ सहनी पड़ीं, उससे उन्हें मुक्त करने के लिए उन्होंने संघर्ष किया। उन्होंने जो गुलाम एक-दूसरे से जुदा कर दिए गए थे, उन्हें एक-दूसरे के साथ मिला दिया। वाह ! अमेरिका आदि सदाचारी लोगों ने कितना अच्छा काम किया है ! यदि आज उन्हें इन गरीब, अनाथ गुलामों की बदतर स्थिति देखकर दया न आई होती तो ये गरीब बेचारे अपने प्रियजनों से मिलने की इच्छा मन-

ही-मन में रखकर मर गए होते।

दूसरी बात, उन गुलामों को पकड़कर लानेवाले दुष्ट लोग उन्हें क्या अच्छी तरह रखते भी थे या नहीं ? नहीं, नहीं ! उन गुलामों पर वे लोग जिस प्रकार से जुल्म ढाते थे, उन जुल्मों की कहानी सुनते ही पत्थर दिल आदमी की आँखें भी रोने लगेंगी। वे लोग उन गुलामों को जानवर समझकर उनसे हमेशा लात-जूतों से काम लेते थे। वे लोग उन्हें कभी-कभी लहलहाती धूप में हल जुतवाकर उनसे अपनी जमीन जोत-बो लेते थे और इस काम में यदि उन्होंने थोड़ी-सी भी आना-कानी की तो उनके बदन पर बैलों की तरह छाँटे से घाव उतार देते थे। इतना होने पर भी क्या वे उनके खान-पान की अच्छी व्यवस्था करते होंगे ? इस बारे में तो कहना ही क्या ! उन्हें केवल एक समय का खाना मिलता था। दूसरे समय कुछ भी नहीं। उन्हें जो भी खाना मिलता था, वह भी बहुत ही थोड़ा-सा। इसकी वजह से उन्हें हमेशा आधे भूखे पेट ही रहना पड़ता था। लेकिन उनसे छाती चूर-चूर होने तक, मुँह से खून फेंकने तक दिन-भर काम करवाया जाता था और रात को उन्हें जानवरों के कोठे में या इस तरह की गंदी जगहों में सोने के लिए छोड़ दिया जाता था, जहाँ थककर आने के बाद वे गरीब बेचारे उस पथरीली जमीन पर मुर्दों की तरह सो जाते थे। लेकिन आँखों में पर्याप्त नींद कहाँ से होगी ? बेचारों को आखिर नींद आएगी भी कहाँ से ? इसमें पहली बात तो यह थी कि पता नहीं मालिक को किस समय उनकी गरज पड़ जाए और उसका बुलावा आ जाए, इस बात का उनको जबर्दस्त डर लगा रहता था। दूसरी बात यह थी कि पेट में पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं होने की वजह से जी घबराता था और टाँग लड़खड़ाने लगती थी। तीसरी बात यह थी कि दिन-भर बदन पर छाँटे के वार बरसते रहने से सारा बदन लहूलुहान हो जाता था और उसकी यातनाएँ इतनी जबर्दस्त होती थीं कि पानी में मछली की तरह रात-भर तड़फड़ाते हुए इस करवट से उस करवट पर होना पड़ता था। चौथी बात यह थी कि अपने लोग दास न होने की वजह से उस बात का दर्द तो और भी भयंकर था। इस तरह बातें मन में आने से यातनाओं के ढेर खड़े हो जाते थे और आँखें रोने लगती थीं। वे बेचारे भगवान से दुआ माँगते थे कि 'हे भगवान ! अब भी तुझको हम पर कुछ दया नहीं आती ! तू अब हम पर रहम कर। अब हम इन यातनाओं को बर्दाश्त करने के भी काबिल नहीं रहे हैं। अब हमारी जान भी निकल जाए तो अच्छा ही होगा।' इस तरह की यातनाएँ सहते-सहते, इस तरह से सोचते-सोचते ही सारी रात गुजर जाती थी। उन लोगों को जिस-जिस प्रकार की पीड़ाओं को, यातनाओं को सहना पड़ा, उनको यदि एक-एक करके कहा जाए तो भाषा और साहित्य के शोक-रस के शब्द भी फीके पड़ जाएँगे, इसमें कोई संदेह नहीं। तात्पर्य, अमेरिकी लोगों ने आज सैकड़ों साल से चली आ रही इस गुलामी की अमानवीय परंपरा को समाप्त करके गरीब अनाथ लोगों को

उन चंड लोगों के जुल्म से मुक्त करके उन्हें पूरी तरह से सुख की जिंदगी बख्शी है। इन बातों को जानकर शूद्रादि-अतिशूद्रों को अन्य लोगों की तुलना में बहुत ही ज्यादा खुशी होगी, क्योंकि गुलामी की अवस्था में गुलाम लोगों को, गुलाम जातियों को कितनी यातनाएँ बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, इसे स्वयं अनुभव किए बिना अंदाजा करना नामुमकिन है। जो सहता है, वही जानता है।

अब उन गुलामों में और इन गुलामों में फर्क इतना ही होगा कि पहले प्रकार के गुलामों को ब्राह्मण-पुरोहितों ने अपने बर्बर हमलों से पराजित करके गुलाम बनाया था और दूसरे प्रकार के गुलामों को दुष्ट लोगों ने एकाएक जुल्म करके गुलाम बनाया था। शेष बातों में इनकी और उनकी स्थिति समान है। इनकी स्थिति और उन गुलामों की स्थिति में बहुत फर्क नहीं है। उन्होंने जिस-जिस प्रकार की मुसीबतों को बर्दाश्त किया है; वे सभी मुसीबतें ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों द्वारा ढाए जुल्मों से कम हैं। यदि यह कहा जाए कि उन लोगों से भी ज्यादा ज्यादतियाँ इन शूद्रादि-अतिशूद्रों को बर्दास्त करनी पड़ी हैं, तो इसमें किसी तरह का संदेह नहीं होना चाहिए। इन लोगों को जो जुल्म सहना पड़ा, उसकी एक-एक दास्तान सुनते ही किसी भी पत्थरदिल आदमी को ही नहीं, बल्कि साक्षात् पत्थर भी पिघलकर उसमें से पीड़ाओं के आँसुओं की बाढ़ निकल पड़ेगी और उस बाढ़ से धरती पर इतना बहाव होगा कि जिन पूर्वजों ने शूद्रादि-अतिशूद्रों को गुलाम बनाया, उनके आज के वंशज जो ब्राह्मण, पुरोहित भाई हैं, उनमें से जो अपने पूर्वजों की तरह पत्थरदिल नहीं हैं, बल्कि जो अपने अंदर के मनुष्यत्व का जाग्रत् रखकर सोचते हैं, उन लोगों को यह जरूर महसूस होगा कि यह एक जलप्रलय ही है। हमारी दयालु अंग्रेज सरकार को, शूद्रादि-अतिशूद्रों ने ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित से किस-किस प्रकार का जुल्म सहा है और आज भी सह रहे हैं, इसके बारे में कुछ भी मालूमात नहीं है। वे लोग यदि इस संबंध में पूछताछ करके कुछ जानकारी हासिल करने की कोशिश करेंगे तो उन्हें यह समझ में आ जाएगा कि उन्होंने हिंदुस्थान का जो भी इतिहास लिखा है उसमें एक बहुत बड़े, बहुत भयंकर और बहुत ही महत्त्वपूर्ण हिस्से को नजरअंदाज किया है। उन लोगों को एक बार भी शूद्रादि-अतिशूद्रों के दुखदर्दों की जानकारी मिल जाए तो सच्चाई समझ में आ जाएगी और उन्हें बड़ी पीड़ा होगी। उन्हें अपने (धर्म) ग्रंथों में, भयंकर बुरी अवस्था में पहुँचाए गए और चंड लोगों द्वारा सताए हुए, जिनकी पीड़ाओं की कोई सीमा ही नहीं है, ऐसे लोगों की दुरावस्था की उपमा देना हो तो शूद्रादि-अतिशूद्रों की स्थिति की ही उपमा उचित होगी, ऐसा मुझे लगता है। इससे कवि को बहुत विषाद होगा। कुछ को अच्छा भी लगेगा कि आज तक कविताओं में शोकरस की पूरी तसवीर श्रोताओं के मन में स्थापित करने के लिए कल्पना की ऊँची उड़ानें भरनी पड़ती थीं, लेकिन अब उन्हें इस तरह की काल्पनिक दिमागी

कसरत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि अब उन्हें यह स्वयंभोगियों का जिंदा इतिहास मिल गया है। यदि यही है तो आज के शूद्रादि-अतिशूद्रों के दिल और दिमाग अपने पूर्वजों की दास्तानें सुनकर पीड़ित होते होंगे, इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम जिनके वंश में पैदा हुए हैं, जिनसे हमारा खून का रिश्ता है, उनकी पीड़ा से पीड़ित होना स्वाभाविक है। किसी समय ब्राह्मणों की राजसत्ता में हमारे पूर्वजों पर जो भी कुछ ज्यादतियाँ हुई, उनकी याद आते ही हमारा मन घबराकर थरथराने लगता है। मन में इस तरह के विचार आने शुरू हो जाते हैं कि जिन घटनाओं की याद भी इतनी पीड़ादायी है, तो जिन्होंने उन अत्याचारों को सहा है, उनके मन की स्थिति किस प्रकार की रही होगी, यह तो वे ही जान सकते हैं। इसकी अच्छी मिसाल हमारे ब्राह्मण भाइयों के (धर्म) शास्त्रों में ही मिलती है। वह यह कि इस देश के मूल निवासी क्षत्रिय लोगों के साथ ब्राह्मण-पुरोहित वर्ग के मुखिया परशुराम जैसे व्यक्ति ने कितनी क्रूरता बरती, यही इस ग्रंथ में बताने का प्रयास किया गया है। फिर भी उसकी क्रूरता के बारे में इतना समझ में आया है कि उस परशुराम ने कई क्षत्रियों को मौत के घाट उतार दिया था। और उस (ब्राह्मण) परशुराम ने क्षत्रियों की अनाथ हुई नारियों से, उनके छोटे-छोटे चार-चार, पाँच-पाँच माह के निर्दोष मासूम बच्चों को जबर्दस्ती छीनकर अपने मन में किसी प्रकार की हिचकिचाहट न रखते हुए बड़ी क्रूरता से उनको मौत के हवाले कर दिया था। यह उस ब्राह्मण परशुराम का कितना जघन्य अपराध था। वह चंड इतना ही करके चुप नहीं रहा, अपने पति के मौत से व्यथित कई नारियों को, जो अपने पेट के गर्भ की रक्षा करने के लिए बड़े दुखित मन से जंगलों-पहाड़ों में भागे जा रही थीं, वह उनका कातिल शिकारी की तरह पीछा करके, उन्हें पकड़कर लाया और प्रसूति के पश्चात् जब उसे यह पता चलता कि पुत्र की प्राप्ति हुई है, तो वह चंड होकर आता और प्रसूतिशुदा नारियों का कत्ल कर देता था। इस तरह की कथा ब्राह्मण ग्रंथों में मिलती है। और जो ब्राह्मण लोग उनके विरोधी दल के थे, उनसे उस समय की सही स्थिति समझ में आएगी, यह तो हमें सपने में भी नहीं सोचना चाहिए। हमें लगता है कि ब्राह्मणों ने उस घटना का बहुत बड़ा हिस्सा चुराया होगा। क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने मुँह से अपनी गलतियों को कहने की हिम्मत नहीं करता। उन्होंने उस घटना को अपने ग्रंथ में लिख रखा है, यही बहुत बड़े आश्चर्य की बात है। हमारे सामने यह सवाल आता है कि परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों को पराजित करके उनका सर्वनाश क्यों किया और उनकी अभागी नारियों के अबोध, मासूम बच्चों का भी कत्ल क्यों किया? शायद इसमें उसे बड़ा पुरुषार्थ दिखता हो और उसकी यह बहादुरी बाद में आनेवाली पीढ़ियों को भी मालूम हो, इसलिए ब्राह्मण ग्रंथकारों ने इस घटना को अपने शास्त्रों में लिख रखा है। लोगों में एक कहावत प्रचलित

है कि हथेली से सूरज को नहीं ढका जा सकता। उसी प्रकार यह हकीकत, जबकि उनको शर्मिंदा करनेवाली थी, फिर भी उनकी इतनी प्रसिद्धि हुई कि उनसे उस घटना पर जितना परदा डालना संभव हुआ, उतनी कोशिश उन्होंने की, और जब कोई इलाज ही नहीं बचा तब उन्होंने उस घटना को लिखकर रख दिया। हां, ब्राह्मणों ने इस घटना की जितनी हकीकत लिखकर रख दी, उसी के बारे में यदि कुछ सोच-विचार किया जाए तो मन को बड़ी पीड़ा होती है क्योंकि परशुराम ने जब उन क्षत्रिय गर्भधारिनी नारियों का पीछा किया तब उन गर्भिनियों को कितनी यातनाएँ सहनी पड़ी होंगी! पहली बात तो यह कि नारियों को दौड़-भाग करने की आदत बहुत कम होती है। उसमें भी कई नारियाँ मोटी और कुलीन होने की वजह से, जिनको अपने घर की दहलीज पर चढ़ना भी मालूम नहीं था, घर के अंदर उन्हें जो कुछ जरूरत होती, वह सब नौकर लोग लाकर देते थे। मतलब जिन्होंने बड़ी सहजता से अपने जीवन का पालन-पोषन किया था, उन पर जब अपने पेट के गर्भ के बोझ को लेकर सूरज की लहलहाती धूप में टेढ़े-मेढ़े रास्तों से भागने की मुसीबत आई, इसका मतलब है कि वे भयंकर आपत्ति के शिकार थीं। उनको दौड़-भाग करने की आदत बिलकुल ही नहीं होने की वजह से पाँव से पाँव टकराते थे और कभी धड़ल्ले से चट्टान पर तो कभी पहाड़ की खाइयों में गिरती होंगी। उससे कुछ नारियों के माथे पर, कुछ नारियों की कुहनी को, कुछ नारियों के घुटनों को और कुछ नारियों के पाँव को ठेस-खरोंच लगकर खून की धाराएँ बहती होंगी। और परशुराम पीछे-पीछे दौड़कर आ रहा है, यह सुनकर और भी तेजी से भागने-दौड़ने लगती होंगी। रास्ते में भागते-दौड़ते समय उनके नाजुक पाँवों में काँटे, कंकड़ चुभते होंगे। कंटीले पेड़-पौधों से उनके बदन के कपड़े भी फट गए होंगे और उन्हें काँटे भी चुभे होंगे। उसकी वजह से उनके नाजुक बदन से लहू भी बहता होगा। लहलहाती धूप में भागते-भागते उनके पाँव में छाले भी पड़ गए होंगे। और कमल के डंठल के समान नाजुक नीलवर्ण कांति मुरझा गई होगी। उनके मुँह से फेन बहता होगा। उनकी आँखों में आँसू भर आए होंगे। उनके मुँह को एक-एक दिन, दो-दो दिन पानी भी नहीं छुआ होगा। इसलिए बेहद थकान से पेट का गर्भ पेट में ही शोर मचाता होगा। उनको ऐसा लगता होगा कि यदि अब धरती फट जाए तो कितना अच्छा होता। मतलब उसमें वे अपने-आपको झोंक देतीं और इस चंड से मुक्त हो जातीं। ऐसी स्थिति में उन्होंने आँखें फाड़-फाड़कर भगवान की प्रार्थना निश्चित रूप से की होगी कि 'हे भगवान! तूने हम पर यह क्या जुल्म ढाए हैं? हम स्वयं बलहीन हैं, इसलिए हमको अबला कहा जाता हैं। हमें हमारे पतियों का जो कुछ बल प्राप्त था, वह भी इस चंड ने छीन लिया है। यह सब मालूम होने पर भी तू बुजदिल होकर कायर की तरह हमारी कितनी इम्तिहान ले रहा है! जिसने हमारे शौहर को मार डाला और हम अबलाओं पर

हथियार उठाए हुए है और इसी में जो अपना पुरुषार्थ समझता है, ऐसे चंड के अपराधों को देखकर तू समर्थ होने पर भी मुँह में उँगली दबाए पत्थर जैसा बहरा-अंधा क्यों बन बैठा है ?' इस तरह वे नारियाँ बेसहारा होकर किसी के सहारे की तलाश में मुँह उठाए ईश्वर की याचना कर रही थीं। उसी समय चंड परशुराम ने वहाँ पहुँचकर उन अबलाओं को नहीं भगाया होगा ? फिर तो उनकी यातनाओं की कोई सीमा ही नहीं रही होगी। उनमें से कुछ नारियों ने बेहिसाब चिल्ला-चिल्लाकर, चीख-चीखकर अपनी जान नहीं गँवाई होगी ? और शेष नारियों ने बड़ी विनम्रता से उस चंड परशुराम से दया की भीख नहीं माँगी होगी कि 'हे परशुराम, हम आपसे इतनी ही दया की भीख माँगना चाहते हैं कि हमारे गर्भ से पैदा होने-वाले अनाथ बच्चों की जान बख्शो ! हम सभी आपके सामने इसी के लिए अपना आँचल पसार रहे हैं। आप हम पर इतनी ही दया करो। अगर आप चाहते हो तो हमारी जान भी ले सकते हो, लेकिन हमारे इन मासूम बच्चों की जान न लो ! आपने हमारे शौहर को बड़ी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया है, इसीलिए हमें बेसमय वैधव्य प्राप्त हुआ है। और अब हम सभी प्रकार के सुखों से कोसों दूर चले गए हैं। अब हमें आगे बाल-बच्चे होने की भी कोई उम्मीद नहीं रही। अब हमारा सारा ध्यान इन बच्चों की ओर लगा हुआ है। अब हमें इतना ही सुख चाहिए। हमारे सुख की आशास्वरूप हमारे ये जो मासूम बच्चे हैं, उनको भी जान से मार-कर हमें आप क्यों तड़फड़ाते देखना चाहते हो ? हम आपसे इतनी ही भीख माँगते हैं। वैसे तो हम आपके धर्म की ही संतान हैं। किसी भी तरह से क्यों न हो, आप हम पर रहम कीजिए।' इतने करुणापूर्ण, भावपूर्ण शब्दों से उस चंड परशुराम का दिल कुछ-न-कुछ तो पिघल जाना चाहिए था, लेकिन आखिर पत्थर पत्थर ही साबित हुआ। वह उन्हें प्रसूत हुए देखकर उनसे उनके नवजात शिशु छीनने लगा। तब ये उन नवजात शिशुओं की रक्षा के लिए उन पर औंधी गिर पड़ी होंगी और गर्दन उठाकर कह रही होंगी कि 'हे परशुराम, आपको यदि इन नवजात शिशुओं की ही जान लेनी है तो सबसे पहले यही बेहतर होगा कि हमारे सिर काट लो, फिर हमारे पश्चात् आप जो करना चाहें सो कर लो, किंतु हमारी आँखों के सामने हमारे इन नन्हे-मुन्हे बच्चों की जान न लो !' लेकिन कहते हैं न, कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। उसने उनकी एक भी न सुनी। यह कितनी नीचता ! उन नारियों की गोद में खेल रहे उन नवजात शिशुओं को जबर्दस्ती छीन लिया गया होगा, तब उन्हें जो यातनाएँ हुई होंगी, जो मानसिक पीड़ाएँ हुई होंगी, उस स्थिति को शब्दों में व्यक्त करने के लिए हमारे हाथ की कलम थरथराने लगती है। खैर, उस जल्लाद ने उन नवजात शिशुओं की जान उनकी माताओं की आँखों के सामने ली होगी। उस समय कुछ माताओं ने अपनी छाती को पीटना, बालों को नोंचना और जमीन को कुरेदना शुरू कर दिया होगा। उन्होंने अपने ही हाथ से अपने मुँह

में मिट्टी के ढेले ठूंस-ठूंसकर अपनी जान भी गंवा दी होगी। कुछ माताएँ पुत्रशोक में बेहोश होकर गिर पड़ी होंगी। उनके होश-हवास भूल गए होंगे। कुछ माताएँ पुत्रशोक के मारे पागल-सी हो गई होंगी। 'हाय मेरा बच्चा, हाय मेरा बच्चा!' करते-करते दर-दर, गाँव-गाँव, जंगल-जंगल भटकती रही होंगी। लेकिन इस तरह सारी हकीकत हमें ब्राह्मण-पुरोहितों से मिल सकेगी, यह उम्मीद लगाए रहना फिजूल की बातें हैं।

इस तरह ब्राह्मण-पुरोहितों के पूर्वज, अधिकारी परशुराम ने सैकड़ों क्षत्रियों को जान से मारकर उनके बीबी-बच्चों के भयंकर बुरे हाल किए और उसी को आज के ब्राह्मणों ने शूद्रादि-अतिशूद्रों का सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सारी सृष्टि का निर्माता कहने के लिए कहा है, यह कितने बड़े आश्चर्य की बात है! परशुराम के पश्चात् ब्राह्मणों ने इन्हें कम परेशान नहीं किया होगा। उन्होंने अपनी ओर से जितना सताया जा सकता है, उतना सताने में कोई कसर बाकी छोड़ी नहीं होगी। उन्होंने घृणा से इन लोगों में से अधिकांश लोगों के भयंकर बुरे हाल किए। उन्होंने इनमें से कुछ लोगो को इमारतों-भवनों की नींव में जिंदा गाड़ देने में भी कोई आनाकानी नहीं की, इस बारे में इस ग्रंथ में लिखा गया है।

उन्होंने इन लोगों को इतना नीच समझा था कि किसी समय कोई शूद्र नदी के किनारे अपने कपड़े धो रहा हो और इत्तिफाक से वहाँ यदि कोई ब्राह्मण आ जाए, तो उस शूद्र को अपने सभी कपड़े समेट करके बहुत दूर, जहाँ से ब्राह्मण के तन पर पानी का एक मामूली कतरा भी पड़ने की कोई संभावना न हो, ऐसे पानी के बहाव के नीचे की जगह पर जाकर अपने कपड़े धोना पड़ता था। यदि वहाँ से ब्राह्मण के तन पर पानी की बूंद का एक कतरा भी छू गया, या उसको इस तरह का संदेह भी हुआ, तो ब्राह्मण-पंडा आग के शोले की तरह लाल हो जाता था और उस समय उसके हाथ में जो भी मिल जाए या अपने ही पास के बर्तन को उठाकर, न आव देखा न ताव, उस शूद्र के माथे को निशाना बनाकर बड़े जोर से फेंककर मारता था। उससे उस शूद्र का माथा खून से भर जाता था। बेहोशी में जमीन पर गिर पड़ता था। फिर कुछ देर बाद जब होश आता था तब अपने खून से भीगे हुए कपड़ों को हाथ में लेकर बिना किसी शिकायत के, मुंह लटकाए अपने घर चला जाता था। यदि सरकार में शिकायत करो तो, चारों तरफ ब्राह्मणशाही का जाल फैला हुआ था; बल्कि शिकायत करने का खतरा यह रहता था कि खुद को ही सजा भोगने का मौका न आ जाए। अफसोस! अफसोस!! हे भगवान, यह कितना बड़ा अन्याय है!

खैर, यह एक दर्दभरी कहानी है, इसलिए कहना पड़ रहा है। किंतु इस तरह की और इससे भी भयंकर घटनाएँ घटती थीं, जिसका दर्द शूद्रादि-अतिशूद्रों को बिना शिकायत के सहना पड़ता था। ब्राह्मणवादी राज्यों में शूद्रादि-अतिशूद्रों को

व्यापार-वाणिज्य के लिए या अन्य किसी काम के लिए घूमना हो तो बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, बड़ी कठिनाइयाँ बर्दाश्त करनी पड़ती थीं। इनके सामने मुसीबतों का ताँता लग जाता था। उसमें भी एकदम सुबह के समय तो बहुत भारी दिक्कतें खड़ी हो जाती थीं, क्योंकि उस समय सभी चीजों की छाया काफी लंबी होती है। यदि ऐसे समय शायद कोई शूद्र रास्ते से जा रहा हो और सामने से किसी ब्राह्मण की सवारी आ रही है, यह देखकर उस ब्राह्मण पर अपनी छाया न पड़े, इस डर से कंपित होकर उसको पल-दो-पल अपना समय फिजूल बरबाद करके रास्ते से एक ओर होकर वहीं बैठ जाना पड़ता था। फिर उस ब्राह्मण के चले जाने के बाद उसको अपने काम के लिए निकलना पड़ता था। मान लीजिए, कभी-कभार बगैर खयाल के उसकी छाया उस ब्राह्मण पर पड़ी तो ब्राह्मण तुरंत क्रोधित होकर चंड बन जाता था और उस शूद्र को मरते दम तक मारता-पीटता था और उसी वक्त नदी पर जाकर स्नान कर लेता था।

शूद्रों में से कई लोगों को (जातियों को) रास्ते पर थूकने की भी मनाही थी। इसलिए उन शूद्रों को ब्राह्मणों की बस्तियों से गुजरना पड़ा तो अपने साथ थूकने के लिए मिट्टी के किसी एक बरतन को रखना पड़ता था। समझ लो, उसकी थूक जमीन पर पड़ गई और उसको ब्राह्मण-पंडे ने देख लिया तो उस शूद्र के दिन भर गए। अब उसकी खैर नहीं। इस तरह ये लोग (शूद्रादि-अतिशूद्र जातियाँ) अन-गिनत मुसीबतों को सहते-सहते मटियामेट हो गए। लेकिन अब हमें वे लोग इस नरक से भी बदतर जीवन से कब मुक्ति देते हैं, इसी का इंतजार है। जैसे किसी व्यक्ति ने बहुत दिनों तक जेल के अंदर अपनी जिंदगी गुजार दी हो, वह कैदी अपने साथी-मित्रों से, बीवी-बच्चों से, भाई-बहन से मिलने के लिए या स्वतंत्र रूप से आजाद पंछी की तरह घूमने के लिए बड़ी उत्सुकता से जेल से मुक्त होने के दिन का इंतजार करता है, उसी तरह का इंतजार, बेसब्री इन लोगों को भी होना स्वाभाविक ही है। ऐसे समय बड़ी खुशकिस्मत कहिए कि ईश्वर को उन पर दया आई, इस देश में अंग्रेजों की सत्ता कायम हुई और उनके द्वारा ये लोग ब्राह्मणशाही की शारीरिक गुलामी से मुक्त हुए। इसीलिए ये लोग अंग्रेजी राजसत्ता का शुक्रिया अदा करते हैं। ये लोग अंग्रेजों के इन उपकारों को कभी भूलेंगे नहीं। उन्होंने इन्हें आज सैकड़ों साल से चली आ रही ब्राह्मणशाही की गुलामी की फौलादी जंजीरों को तोड़ करके मुक्ति की राह दिखाई है। उन्होंने इनके बीवी-बच्चों को सुख के दिन दिखाए हैं। यदि वे यहाँ न आते तो ब्राह्मणों ने, ब्राह्मणशाही ने इन्हें कभी सम्मान और स्वतंत्रता की जिंदगी न गुजारने दी होती। इस बात पर कोई शायद इस तरह का संदेह उठा सकता है कि आज ब्राह्मणों की तुलना में शूद्रादि-अतिशूद्रों की संख्या करीबन दस गुना ज्यादा है। फिर भी ब्राह्मणों ने शूद्रादि-अतिशूद्रों को कैसे मटियामेट कर दिया? कैसे गुलाम बना लिया? इसका जवाब यह है कि एक

बुद्धिमान, चतुर आदमी इस अज्ञानी लोगों के दिलो-दिमाग को अपने पास गिरवी रख सकता है। उन पर अपना स्वामित्व लाद सकता है। और दूसरी बात यह है कि दस अनपढ़ लोग यदि एक ही मत के होते तो वे उस बुद्धिमान, चतुर आदमी की दाल न गलने देते, एक न चलने देते; किंतु वे दस लोग दस अलग-अलग मतों के होने की वजह से ब्राह्मणों-पुरोहितों जैसे धूर्त-पाखंडी लोगों को उन दस भिन्न-भिन्न मतवादी लोगो को अपने जाल में फँसाने में कुछ भी कठिनाई नहीं होती। शूद्रादि-अतिशूद्रों की विचार-प्रणाली, मत-मान्यताएँ एक-दूसरे से मेल-मिलाप न करें, इसके लिए प्राचीन काल में ब्राह्मण-पुरोहितों ने एक बहुत बड़ी धूर्ततापूर्ण और बदमाशीभरी विचारधारा खोज निकाली। उन शूद्रादि-अतिशूद्रों के समाज की संख्या जैसे-जैसे बढ़ने लगी, वैसे-वैसे ब्राह्मणों में डर की भावना उत्पन्न होने लगी। इसीलिए उन्होंने शूद्रादि-अतिशूद्रों के आपस में घृणा और नफरत की भावना बढ़ती रहे, इसकी योजना तैयार की। उन्होंने समाज में प्रेम के बजाय जहर के बीज बोए। इसमें उनकी चाल यह थी कि यदि शूद्रादि-अतिशूद्र (समाज) आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे तब कहीं यहाँ अपने टिके रहने की बुनियाद मजबूत रहेगी और हमेशा-हमेशा के लिए उन्हें अपना गुलाम बनाकर बगैर मेहनत के उनके पसीने से प्राप्त कमाई पर बिना किसी रोक-टोक के गुलछर्रे उड़ाने का मौका मिलेगा। अपनी इस चाल, विचारधारा को कामयाबी देने के लिए जातिभेद की फौलादी जहरीली दीवारें खड़ी करके, उन्होंने इसके समर्थन में अपने जाति-स्वार्थसिद्धि के कई ग्रंथ लिख डाले। उन्होंने इन ग्रंथों के माध्यम से अपनी बातों को अज्ञानी लोगों के दिलो-दिमाग पर पत्थर की लकीर की तरह लिख दिया। उनमें से कुछ लोग जो ब्राह्मणों के साथ बड़ी कड़ाई और दृढ़ता से लड़े, उनका उन्होंने एक वर्ग ही अलग कर दिया। उनसे पूरी तरह बदला चुकाने के लिए उनकी जो बाद की संतान हुई, उसको 'उन्हें छूना नहीं चाहिए, इस तरह की जहरीली बातें ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों ने उन्हीं लोगों के दिलो-दिमाग में भर दी फिलहाल जिन्हें माली, कुनबी (कुर्मी आदि) कहा जाता है। जब यह हुआ तब इसका परिणाम यह हुआ कि उनका आपसी मेल-मिलाप बंद हो गया और वे लोग अनाज के एक-एक दाने के लिए मोहताज हो गए। इसीलिए इन लोगों को जीने के लिए मरे हुए जानवरों का मांस मजबूर होकर खाना पड़ा। उनके इस आचार-व्यवहार को देखकर आज के शूद्र जो बहुत ही अहंकार से माली, कुनबी, सुनार, दरजी, लुहार, बढ़ई, (तेली, कुर्मी) आदि बड़ी-बड़ी संज्ञाएँ अपने नाम के साथ लगाते हैं, वे लोग केवल इस प्रकार का व्यवसाय करते हैं। कहने का मतलब यही है कि वे लोग एक ही घराने के होते हुए भी आपस में लड़ते-झगड़ते हैं और एक-दूसरे को नीच समझते हैं। इन सब लोगों के पूर्वज स्वदेश के लिए ब्राह्मणों से बड़ी दृढ़ता से, बड़ी निर्भयता से लड़ते रहे, इसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मणों ने इन सबको समाज के निचले स्तर पर

लाकर रख दिया और दर-दर के भिखारी बना दिया। लेकिन अफसोस यह है कि इसका रहस्य किसी के ध्यान में नहीं आ रहा है। इसीलिए ये लोग ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों के बहकावे में आकर आपस में नफरत करना सीख गए। अफसोस ! अफसोस !! ये लोग भगवान की निगाह में कितने बड़े अपराधी हैं ! इन सबका आपस में इतना बड़ा नजदीकी संबंध होने पर भी किसी त्यौहार पर ये उनके दरवाजे पर पका-पकाया भोजन माँगने के लिए आते हैं तो वे लोग इनको नफरत की निगाह से ही नहीं देखते हैं, कभी-कभी तो डंडा लेकर इन्हें मारने के लिए भी दौड़ते हैं। खैर, इस तरह जिन-जिन लोगों ने ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों से जिस-जिस तरह से संघर्ष किया, उन्होंने उसके अनुसार उनको जातियों में बाँटकर एक तरह से सजा सुना दी या जातियों का दिखावटी आधार देकर सभी को पूरी तरह से गुलाम बना लिया। ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित सबमें सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिकार संपन्न हो गए, है न मजे की बात ! जब से ब्राह्मणों ने शूद्रादि-अतिशूद्रों में जातिभेद की भावना को पैदा किया, बढ़ावा दिया, तब से उन सभी के दिलो-दिमाग आपस में उलझ गए और नफरत से अलग-अलग हो गए। ब्राह्मण-पुरोहित अपने षड्यंत्र में कामयाब हुए। उनको अपना मनचाहे व्यवहार करने की पूरी स्वतंत्रता मिल गई। इस बारे में एक कहावत प्रसिद्ध है कि 'दोनों का झगड़ा और तीसरे का लाभ।' मतलब यह कि ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों ने शूद्रादि-अतिशूद्रों के आपस में नफरत के बीज जहर की तरह बो दिए और खुद उन सभी की मेहनत पर ऐशो-आराम कर रहे हैं।

संक्षेप में, ऊपर कहा ही गया है कि इस देश में अंग्रेज सरकार आने की वजह से शूद्रादि-अतिशूद्रों की जिंदगी में एक नई रोशनी आई। ये लोग ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त हुए, यह कहने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं है। फिर भी हमको यह कहने में बड़ा दर्द होता है कि अभी भी हमारी इस दयालु सरकार के, शूद्रादि-अतिशूद्रों को शिक्षित बनाने की दिशा में, गैर-जिम्मेदारीपूर्ण रवैया अख्तियार करने की वजह से ये लोग अनपढ़ के अनपढ़ ही रहे। कुछ लोग शिक्षित, पढ़े-लिखे बन जाने पर भी ब्राह्मणों के नकली-पाखंडी (धर्म) ग्रंथों के, शास्त्र-पुराणों के अंध भक्त बनकर मन से, दिलो-दिमाग से गुलाम ही रहे। इसलिए उन्हें सरकार के पास जाकर कुछ फरियाद करने, न्याय माँगने का कुछ आधार ही नहीं रहा है। ब्राह्मण-पंडा-पुरोहित लोग अंग्रेज सरकार और अन्य सभी जाति के लोगों के पारिवारिक और सरकारी कामों में कितनी लूट-खसोट करते हैं, गुलछर्रे उड़ाते हैं, इस बात की ओर हमारी अंग्रेज सरकार का अभी तक कोई ध्यान ही नहीं गया है। इसलिए हम चाहते हैं कि अंग्रेज सरकार को सभी जनों के प्रति समानता का भाव रखना चाहिए और उन तमाम बातों की ओर ध्यान देना चाहिए जिससे शूद्रादि-अतिशूद्र समाज के लोग ब्राह्मणों की मानसिक गुलामी से मुक्त हो सकें।

अपनी इस सरकार से हमारी यही प्रार्थना है।

इस किताब को लिखते समय मेरे मित्र विनायक राव बापूजी भंडारकर और सा० राजन्नलिंगू ने मुझे जो उत्साह दिया, इसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

—जोतीराव गोविंदराव

ब्राह्मणवादी धर्म की छत्रच्छाया में

गुलामगीरी

[जोतीराव और धोंडीराव-संवाद]

परिच्छेद : एक

[ब्रह्मा की व्युत्पत्ति, सरस्वती और इराणी या आर्य लोगों के संबंध में ।]

धोंडीराव : पश्चिमी देशों के अंग्रेज, फ्रेंच आदि दयालु, सभ्य राज्यकर्ताओं ने इकट्ठा होकर गुलामी प्रथा पर कानूनन रोक लगा दी है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने ब्रह्मा के (धर्म) नीति-नियमों को ठुकरा दिया है। क्योंकि मनुसंहिता में लिखा गया है कि ब्रह्मा (विराट पुरुष) ने अपने मुंह से ब्राह्मण वर्ण को पैदा किया है और उसने इन ब्राह्मणों की सेवा (गुलामी) करने के लिए ही अपने पाँव से शूद्रों को पैदा किया है।

जोतीराव : अंग्रेज आदि सरकारों ने गुलामी प्रथा पर पाबंदी लगा दी है, इसका मतलब ही यह है कि उन्होंने ब्रह्मा की आज्ञा को ठुकरा दिया है, यही तुम्हारा कहना है न ! इस दुनिया में अंग्रेज आदि कई प्रकार के लोग रहते हैं, उनको ब्रह्मा ने अपनी कौन-कौन-सी इंद्रियों से पैदा किया है और इस संबंध में मनु-संहिता में क्या-क्या लिखा गया है ?

धोंडीराव : इसके संबंध में सभी ब्राह्मण, मतलब बुद्धिमान और बुद्धिहीन यह जवाब देते हैं कि अंग्रेज आदि लोगों के अधम, दुराचारी होने की वजह से उन लोगों के बारे में मनुसंहिता में कुछ भी लिखा नहीं गया।

जोतीराव : तुम्हारे इस तरह के कहने से यह पता चलता है कि ब्राह्मणों में अधम, नीच, दुष्ट, दुराचारी लोग बिलकुल हैं ही नहीं ?

धोंडीराव : अनुभव से यह पता चलता है कि अन्य जातियों की तुलना में ब्राह्मणों में सबसे ज्यादा अधम, नीच, दुष्ट और दुराचारी लोग हैं।

जोतीराव : फिर यह बताओ कि इस तरह के अधम, नीच, दुष्ट, दुराचारी ब्राह्मणों के बारे में मनु की संहिता में किस प्रकार से लिखा गया है ?

धोंडीराव : इस बात से यह प्रमाणित होता है कि मनु ने अपनी संहिता में जो व्युत्पत्ति सिद्धांत प्रतिपादित किया है, वह एकदम तथ्यहीन, निराधार है; क्योंकि वह सिद्धांत सभी मानव समाज पर लागू नहीं होता।

जोतीराव : इसीलिए अंग्रेज आदि लोगों के जानकारों ने ब्राह्मण ग्रंथकारों की बदमाशी को पहचानकर गुलाम बनाने की प्रथा पर कानूनन पाबंदी लगा दी। यदि यह ब्रह्मा तमाम मानव समाज की व्युत्पत्ति के लिए सही में कारण होता तो उन्होंने गुलामी प्रथा पर पाबंदी ही नहीं लगाई होती। मनु ने चार वर्णों की उत्पत्ति लिखी है। यदि इस व्युत्पत्ति को कुल मिलाकर सभी सृष्टि-क्रमों से तुलना करके देखा जाए तो वह तुमको पूरी तरह तथ्यहीन, निराधार ही दिखाई देगी।

धोंडीराव : मतलब, यह किस प्रकार से ?

जोतीराव : ब्राह्मणों का कहना है कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए लेकिन कुल मिलाकर सभी ब्राह्मणों की आदिमाता ब्राह्मणी ब्रह्मा के किस अंग से उत्पन्न हुई, इसके बारे में मनु ने अपनी संहिता में कुछ भी नहीं लिख रखा है। आखिर ऐसा क्यों ?

धोंडीराव : क्योंकि वह उन विद्वान ब्राह्मणों के कहने के अनुसार मूर्ख दुराचारी होगी। इसलिए फिलहाल उसे म्लेच्छ[1] या विधर्मियों की पंक्ति में रख दिया जाए।

जोतीराव : हम भूदेव हैं, हम सभी वर्णों में श्रेष्ठ हैं, यह हमेशा बड़े गर्व से कहने वाले इन ब्राह्मणों को जन्म देनेवाली आदिमाता ब्राह्मणी ही है न ? फिर तुम उसको म्लेच्छों की पंक्ति में किसलिए रखते हो ? उसको वहाँ की शराब और मांस की बदबू कैसे पसंद आएगी ? बेटे, तू यह बड़ी गलत बात कर रहा है।

धोंडीराव : आपने ही कई बार सरेआम सभाओं में, व्याख्यानों में कहा है कि

1. अनार्य, वह मानव-समाज, जो ब्राह्मणों के चातुर्वर्ण्य समाज से बाहर का है।

ब्राह्मणों के आदिवंशज जो ऋषि थे, वे श्राद्ध[1] के बहाने गौ की हत्या करके गाय के मांस से कई प्रकार के पदार्थ बनवा करके खाते थे। और अब आप कहते हैं कि उनकी आदिमाता को बदबू आएगी, इसका मतलब क्या है? आप अंग्रेजी राज के दीर्घजीवी होने की कामना कीजिए और कुछ दिन के लिए रुक जाइए। तब आपको दिखाई देगा कि आज के अधिकांश मांगलिक[2] भिक्षुक ब्राह्मण इस तरह का प्रयास करेंगे कि रेसिडेंट, गवर्नर आदि अधिकारियों की उन पर ज्यादा-से-ज्यादा मेहरबानी हो, इसलिए ये ब्राह्मण उनकी मेज पर के बचे-खुचे गोश्त के टुकड़े बुटलेर[3] को भी लेने नहीं देंगे। क्या आपको यह मालूम नहीं कि अब तो कई महार बुटलेर ब्राह्मणों के नाम से अंदर-ही-अंदर फुसफुसाने लगे हैं? मनु महाराज ने आदिब्राह्मणी की व्युत्पत्ति के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। इसलिए इस दोष की सारी जिम्मेदारी उसी के सिर पर डाल दीजिए। उसके बारे में आप मुझे क्यों दोष दे रहे हैं कि मैं गलत-सलत बोल रहा हूँ? छोड़िए इन बातों को, आगे बताइए।

जोतीराव : अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा, वही सच क्यों न हो। अब ब्राह्मण को पैदा करनेवाले ब्रह्मा का जो मुँह है, वह हर माह मासिक धर्म (माहवार) आने पर तीन-चार दिन के लिए अपवित्र (बहिष्कृत) होता था या लिंगायत[4] नारियों की तरह भस्म लगाकर पवित्र (शुद्ध) होकर घर के काम-धंधे में लग जाता था, इस बारे में मनु ने कुछ लिखा भी है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं। किंतु ब्राह्मणों की उत्पत्ति का आदि कारण ब्रह्मा ही है। और उसको लिंगायत नारी का उपदेश कैसे उचित लगा होगा? क्योंकि आज के ब्राह्मण लोग लिंगायतों से इसलिए घृणा करते हैं क्योंकि वे इसमें छुआछूत नहीं मानते।

जोतीराव : इससे तुम सोच ही सकते हो कि ब्राह्मण का मुँह, बाँहें, जाँघें और पाँव—इन चार अंगों की योनि, माहवार (रजस्वला) के कारण, उसको कुल

1. हिंदुओं में (ब्राह्मणों में) पितरों के सम्मान और उनकी तृप्ति के लिए शास्त्र के अनुसार या धार्मिक रस्म-रिवाजों के अनुसार किया जानेवाला धार्मिक अनुष्ठान, जैसे—तर्पण, पिंडदान, ब्राह्मणों को भोजन कराना। यह श्राद्ध सांस्कृतिक परंपरा नहीं, बल्कि हिंदुओं की धार्मिक विधि है। इसका प्रारंभ ब्राह्मण-पुरोहितों ने अपने स्वार्थ के लिए किया था।
2. मांगलिक —मराठी में इसके लिए 'सोंवळे-ओवळे' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
3. बुटलेर—अंग्रेजों के घर में खाना पकानेवाला—खानसामा।
4. लिंगायत —एक शैव संप्रदाय, जिसका प्रसार दक्षिण भारत में हुआ है।

मिलाकर सोलह दिन के लिए अशुद्ध होकर दूर-दूर रहना पड़ता होगा। फिर सवाल उठता है कि उसके घर का काम-धंधा कौन करता होगा? क्या मनु महाराज ने अपनी मनुस्मृति में इसके संबंध में कुछ लिखा भी है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं।

जोतीराव : अच्छा। वह गर्भ ब्रह्मा के मुँह में जिस दिन से ठहरा, उस दिन से लेकर नौ महीने बीतने तक किस जगह पर रहकर बढ़ता रहा, इस बारे में मनु ने कुछ कहा भी है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं।

जोतीराव : अच्छा। फिर जब यह ब्राह्मण बालक पैदा हुआ, उस नवजात शिशु को ब्रह्मा ने अपने स्तन का दूध पिलाया या बाहर का दूध पिलाकर छोटे से बड़ा किया, इस बारे में भी मनु महाराज ने कुछ लिखा है या नहीं?

धोंडीराव : नहीं।

जोतीराव : सावित्री ब्रह्मा की औरत होने पर भी उसने उस नवजात शिशु के गर्भ का बोझ अपने मुँह में नौ महीने तक सँभालकर रखने, उसे जन्म देने और उसकी देखभाल करने का झमेला अपने माथे पर क्यों ले लिया? यह कितना बड़ा आश्चर्य है!

धोंडीराव : उसके (ब्रह्मा के) शेष तीन सिर इस झमेले से दूर थे या नहीं? आपकी राय इस मामले में क्या है? उस रंडीबाज को इस तरह से माँ बनने की इच्छा क्यों पैदा हुई होगी?

जोतीराव : अब यदि उसे रंडीबाज कहा जाए तो उसने सरस्वती नाम की अपनी कन्या से ही संभोग (व्यभिचार) किया था। इसीलिए उसका उपनाम बेटीचोद हो गया है। इसी बुरे कर्म के कारण कोई भी व्यक्ति उसका मान-सम्मान (पूजा) नहीं कर रहा है।

धोंडीराव : यदि सचमुच में ब्रह्मा को चार मुँह होते तो उसी हिसाब से उसे आठ स्तन, चार नाभियाँ, चार योनियाँ और चार मलद्वार होने चाहिए। किंतु इस बारे में सही जानकारी देनेवाला कोई लिखित प्रमाण नहीं मिल पाया है। फिर, उसी तरह शेषनाग की शैया पर सोनेवाले को, लक्ष्मी नाम की स्त्री होने पर भी, उसने अपनी नाभि से चार मुँहवाले बच्चे को कैसे पैदा किया? इस बारे में यदि सोचा जाए तो उसकी भी स्थिति ब्रह्मा की तरह ही होगी।

जोतीराव : वास्तव में, हर दृष्टि से सोचने के बाद हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि ब्राह्मण लोग समुद्रपार जो इराण नाम का देश है, वहाँ के मूल निवासी हैं। पहले जमाने में उन्हें इराणी या आर्य कहा जाता था। इस मत का प्रतिपादन कई अंग्रेजी ग्रंथकारों ने उन्हीं के ग्रंथों के आधार पर किया है। सबसे पहले उन आर्य लोगों ने बड़ी-बड़ी टोलियाँ बना करके इस देश में आकर कई बर्बर

हमले किए। यहाँ के मूल निवासी राजाओं के प्रदेशों पर बार-बार हमले करके बड़ा आतंक फैलाया। फिर (बटू). वामन के बाद आर्य (ब्राह्मण) लोगों का ब्रह्मा नाम का मुख्य अधिकारी हुआ। उसका स्वभाव बहुत जिद्दी था। उसने अपने काल में यहाँ के हमारे आदिपूर्वजों को अपने बर्बर हमलों में पराजित कर उन्हें अपना गुलाम बनाया। बाद में उसने अपने लोग और इन गुलामों में हमेशा-हमेशा के लिए भेद-भाव बना रहे, इसलिए कई प्रकार के नीति-नियम बनवाए। इन सभी घटनाओं की वजह से ब्रह्मा की मृत्यु के बाद आर्य लोगों का मूल नाम अपने-आप लुप्त हो गया और उनका नया नाम पड़ गया 'ब्राह्मण'।

फिर मनु महाराज जैसे (ब्राह्मण) अधिकारी हुए। पहले से बने हुए और अपने बनाए हुए नीति-नियमों का क्षय बाद में भी कोई न कर पाए, इस डर की वजह से उसने ब्रह्मा के बारे में नई-नई तरह की कल्पनाएँ फैलाईं। फिर उसने इस तरह के विचार उन गुलाम लोगों के दिलो-दिमाग में ठूँस-ठूँसकर भर दिए कि ये बातें ईश्वर की इच्छा से हुई हैं। फिर उसने शेषनाग शैया की दूसरी अंधी कथा (पुराण कथा) गढ़ी और समय देखकर, कुछ समय के बाद, उन सभी पाखंडों के ग्रंथ-शास्त्र बनाए गए। उन ग्रंथों के बारे में शूद्र गुलामों को नारद जैसे धूर्त, चतुर, सदा औरतों में रहनेवाले छछोरे के ताली पीट-पीटकर उपदेश करने की वजह से यूँही ब्रह्मा का महत्त्व बढ़ गया। अब हम इस ब्रह्मा के बारे में, शेषनाग शैया करनेवाले के बारे में खोज करने लगें तो उससे हमें छदाम का फायदा तो होगा नहीं, बल्कि हम दोनों का यह बड़ा कीमती समय व्यर्थ में खर्च होगा क्योंकि उसने जानबूझकर उस बेचारे को सीधा लेटा हुआ देखकर उसकी नाभि से यह चार मुँहवाले बच्चे को पैदा करवाया। मुझे ऐसा लगता है कि पहले से ही औंधाचित हुए गरीब पर ऊपर से पाँव देना, इसमें अब कुछ मजा नहीं है।

परिच्छेद : दो

[मत्स्य और शंखासुर के संबंध में]

धोंडीराव : इस देश में (बटू) वामन के पहले इराण से आर्य लोगों के कुल मिलाकर कितने जत्थे आए होंगे ?

जोतीराव : इस देश में आर्य लोगों के कई जत्थे जलमार्ग से आए ।

धोंडीराव : उनमें से पहला जत्था जलमार्ग से लड़ाकू नौका से आया था या किसी और मार्ग से ?

जोतीराव : लड़ाकू नौकाएँ उस काल में नहीं थीं। इसलिए वे जत्थे छोटी-छोटी नौकाओं पर आए थे और वे नौकाएँ मछलियों की तरह तेजी से पानी के ऊपर चलती थीं। इसलिए उस जत्थे के अधिकारी का उपनाम मत्स्य हो गया होगा।

धोंडीराव : फिर ब्राह्मण इतिहासकारों ने भागवत आदि ग्रंथों में इस तरह लिखा है कि उस जत्थे का मुखिया मत्स्य से पैदा हुआ था, इसका क्या मतलब होगा ?

जोतीराव : उसके बारे में तुम ही सोचो कि मनुष्य और मछली—इनके इंद्रियों में, आहार में, निद्रा में, मैथुन में और पैदा होने की प्रक्रिया में कितना अंतर है ? उसी प्रकार उनके मस्तिष्क में, मेधा में, कलेजे में, फेफड़े में, अंतड़ियों में, गर्भ पालने-पोसने की जगह में, और प्रसूति होने के मार्ग में कितना चमत्कारिक अंतर है। मनुष्य जमीन पर रहकर अपनी जिंदगी बसर करनेवाला प्राणी है। वह जरा-सी असावधानी से पानी में गिरने पर तैरना न आए तो डूबकर मर जाता है; किंतु मछली हमेशा ही पानी में रहती है। लेकिन मछली को पानी से बाहर निकालकर जमीन पर रखते ही तिलमिलाकर मर जाती है। नारी स्वाभाविक रूप में एक समय एक ही बच्चे को जन्म देती है। लेकिन मछली सबसे पहले कई अंडे देती है। उसके कुछ दिनों बाद उन अंडों को फोड़कर उसमें से अपने सभी बच्चों को बाहर निकालती है।

अब जिस अंडे में यह मत्स्य बालक था, उसको उसने पानी से बाहर निकालकर जमीन पर फोड़ा होगा और उस अंडे से उसने इस मत्स्य-बालक को बाहर निकाला होगा। यदि यह कहा जाए, तो उस मछली की जान पानी से बाहर जमीन पर कैसे बची होगी ? शायद उसने पानी में ही उस अंडे को फोड़कर उस मत्स्य बालक को बाहर निकाला होगा, यदि यही कहा जाए तो उस मत्स्य जैसे बालक की जान पानी में कैसे बची होगी ? कोई आदमी इस तरह का सवाल उठा सकता है कि मनुष्यों में से किसी मंजे हुए गोताखोर ने पानी के अंदर गहरी डुबकी लगाकर मत्स्य बालक जिस अंडे में था, उस अंडे को पहचानकर उसने उसको जमीन पर लाया होगा। खैर, यह भी सच मान लीजिए। लेकिन बाद में किस चतुर मर्द ने मछली के उस अंडे को फोड़कर उसमें से उस मत्स्य बालक को बाहर निकाला होगा, क्योंकि यूरोप और अमेरिकी देशों में काफी विकास हुआ है और बड़े-बड़े ख्यातिप्राप्त विद्वान चिकित्साशास्त्र में विज्ञ हुए हैं, फिर भी उनमें से किसी एक ने भी अपनी छाती पर हाथ रखकर यह दावा नहीं किया है कि मैं मछली के अंडे को फोड़ करके उसमें से बच्चे को जिंदा बाहर निकाल देता हूँ। खैर, वह अंडा पानी में है, इस तरह का महत्त्वपूर्ण संदेश किस अमर मछली ने पानी से बाहर आकर उस गोताखोर को बताया होगा और उस जलचर संदेशवाहक की भाषा मानव को कैसे समझ में आई होगी ? इस प्रकार की एक से अधिक शंकाओं से भरे उन लेखों से सही समाधान होना बिलकुल असंभव है। इसलिए उसके बारे में यह अनुमान प्रमाणित होता है कि, बाद में कुछ मूर्ख लोगों ने मौका मिलते ही अपने प्राचीन ग्रंथों में इस तरह की काल्पनिक कथाओं को घुसेड़ दिया होगा।

धोंडीराव : अच्छा, फिर सवाल यह उठता है कि उस जत्थे का नायक अपने लोगों के साथ किस जगह पर आकर रुका होगा ?

जोतीराव : पश्चिम के समुद्र को पार करते हुए वह एक बंदरगाह पर उतरा।

धोंडीराव : उस बंदरगाह पर उतरने के बाद उसने क्या किया ?

जोतीराव : उसने शंखासुर नाम के क्षेत्रपति को जान से मार डाला और उसके राज्य को छीन लिया। बाद में शंखासुर का वह राज्य मत्स्य के मरते समय तक आर्य लोगों के अधिकार में बगैर खतरे के रहा। मत्स्य के मरते ही शंखासुर के लोगों ने अपना राज्य वापस लेने के उद्देश्य से मत्स्य के कबीले पर बड़ा ही खतरनाक हमला बोल दिया।

धोंडीराव : बाद में इस खतरनाक हमले का क्या परिणाम हुआ ?

जोतीराव : उस करारी हमले में मत्स्य के कबीले की करारी हार हुई। इसलिए उसने युद्धभूमि से ही भाग जाना बेहतर समझा और भाग निकला। बाद में

शंखासुर के लोगों द्वारा उसका पीछा करने की वजह से वह अंत में किसी पहाड़ी पर जाकर घने जंगल में छुप गया। उसी समय इराण से आर्य लोगों का दूसरा एक बड़ा कबीला कचवे से बंदरगाह पर आ पहुँचा और वे कचवे मछवे से कुछ बड़े होने की वजह से पानी पर कछुए की तरह धीरे-धीरे चल रहे थे। इसी की वजह से उस कबीले के मुखिया का उपनाम कच्छ हो गया।

परिच्छेद : तीन

[कच्छ, भूदेव, भूपति, क्षत्रिय, द्विज और कश्यप राजा के संबंध में।]

धोंडीराव : मछली और कछुवा, इन सभी बातों में तुलना करने पर कुछ बातों में निश्चित रूप से फर्क दिखाई पड़ता है। लेकिन कुछ बातों में जैसे पानी में रहना, अंडे देना, उन्हें फोड़ना आदि में उनमें समानता भी दिखाई देती है। इसलिए भागवत आदि पुराणकर्ताओं ने यह लिख रखा है कि कच्छ कछुए से पैदा हुआ है। इसके बारे में भी सोचने पर परिणाम मत्स्य जैसा ही होगा और अपना सारा समय व्यर्थ में खर्च होगा, ऐसा मुझे लगता है। इसलिए मैं आपसे आगे की बात पूछना चाहता हूँ कि कच्छ ने बंदरगाह पर उतरने के बाद क्या किया?

जोतीराव : सबसे पहले उस बंदरगाह की जिस पहाड़ी पर मत्स्यों का कबीला मुसीबत में पड़ गया था, वहाँ के मूल क्षेत्रवासी लोगों को भगाकर उसने अपने लोगों को मुक्त किया और वह स्वयं उस क्षेत्र का भूदेव यानी भूपति बन गया।

धोंडीराव : फिर जिनको कच्छ ने खदेड़ा था, वे क्षत्रिय लोग किस ओर चले गए?

जोतीराव : विदेशी इराणी या आर्य लोगों का कबीला समुद्र के रास्ते से आया देखकर, घबराकर 'द्विज आए, द्विज आए' चिल्लाते हुए पहाड़ी के उस पार कश्यप नाम के क्षेत्रपति के पीछे-पीछे निकल पड़े। कच्छ ने उनको इस तरह पीछे-पीछे जाते हुए देखकर अपने साथ कुछ फौज लेकर उस पहाड़ी के एक छोर से नीचे उतरा। उसने उस पहाड़ी को पीठ पर लेकर, मतलब पीछे छोड़कर कश्यप के राज्य के क्षत्रियों को इराण की मदद से कष्ट देने लगा। बाद में कश्यप ने उस पहाड़ी को कच्छ से वापस लेने के इरादे से जंग की तैयारी की, लेकिन कच्छ ने अपनी मृत्यु तक उस पहाड़ी को उस क्षेत्रपति के हाथ नहीं लगने दिया और अपनी युद्धभूमि छोड़कर एक कदम पीछे भी नहीं हटा।

परिच्छेद : चार

[वराह और हिरण्यगर्भ के संबंध में।]

धोंडीराव : कच्छ के मरने के बाद द्विजों का मुखिया कौन हुआ ?

जोतीराव : वराह।

धोंडीराव : भागवत आदि इतिहासकारों ने यह लिखकर रखा है कि वराह की पैदाइश सुअर से हुई है। इसमें आपकी क्या मान्यता है ?

जोतीराव : वास्तव में सही बात यह है कि मनुष्य और सुअर में किसी भी दृष्टि से चमत्कारिक भिन्नता है। अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए और तुम्हारा पूरा समाधान हो, इसलिए यहाँ उदाहरण के तौर पर सिर्फ एक ही बात कहना चाहता हूँ कि वे अपने बच्चों को पैदा करने के बाद उनसे किस तरह का व्यवहार करते हैं, यही सिर्फ हमें देखना है। मनुष्य जाति की नारी अपने बच्चों को पैदा करते ही वह उस बच्चे को किसी भी तरह का कष्ट नहीं होने देती और उसे बड़े प्यार से पालती-पोसती है। लेकिन सुअरी कुतिया की तरह अपने पैदा किए पहले बच्चे को एकदम खा लेती है। उसके बाद दूसरे बच्चे को पैदा करती है। इससे यह सिद्ध होता है कि वराह की सुअरी माता ने सबसे पहले अपने सुअर जाति के बच्चे को खाकर बाद में उस मानव सुअर को पैदा किया होगा। किंतु भागवत आदि ग्रंथकारों के अनुसार, वराह यदि आदिनारायण का अवतार है तो उसकी सर्वज्ञता और समानदृष्टि को दाग लगा या नहीं ? क्योंकि वराह आदिनारायण का अवतार होने की वजह से, उसको पैदा करनेवाली सुअरी को उसके बड़े सुअर भाई को मारकर नहीं खाना चाहिए। उसने इसके पहले से ही कुछ बंदोबस्त क्यों नहीं करके रखा था ? हाय ! पद्मा सुअरी वराह आदिनारायण की माँ ही तो है न ! और उसने इस तरह से अपने नन्हे-मुन्ने अबोध बालक की हत्या क्यों की ? 'बालहत्या' शब्द का अर्थ सिर्फ बच्चों को जान से मारना ही होता है, फिर वह बच्चा किसी का भी क्यों न

हो। किंतु इसने अपने पैदा किए हुए अबोध बच्चे की ही हत्या करके उसको खा लिया। इस तरह के अन्याय का अच्छा अर्थबोध हो, ऐसा शब्द किसी शब्दकोश में खोजने से भी नहीं मिलेगा। यदि इसको डाकिनी कहा जाए तो डाकिनी भी अपने बच्चों को नहीं खाती, यह एक पुरानी कहावत है। उस वराह की पद्मा माता को इस तरह का अघोर कर्म करने की वजह से नरक की यातनाएँ भोगने से मुक्ति मिले, इसलिए उसने ऐसा पापमुक्ति का कर्म किया, इसका कहीं कोई जिक्र भी नहीं मिलता, इसका हमें बड़ा अफसोस है।

धोंडीराव : वराह की सुअरी माता का नाम यदि पद्मा था तो इससे यह सिद्ध होता है कि उसके सुअर पति का कुछ न कुछ नाम होना ही चाहिए कि नहीं ?

जोतीराव : पद्मा सुअरी के पति का नाम ब्रह्मा था।

धोंडीराव : इससे यही समझ में आ रहा है कि प्राचीन काल में जानवर मनुष्यों की तरह आपस में एक दूसरे को ब्रह्मा, नारद और मनु, इस तरह के नाम देते थे। उनके नाम इन गपोड़ी ग्रथकारों को कैसे समझ में आए होंगे ? दूसरी बात यह कि पद्मा सुअरी ने वराह को उसके बचपन में अपने स्तन से दूध पिलाया ही होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। किंतु बाद में उसके कुछ बड़ा होने पर गाँव के खंडहरों में बहुत ही कोमल फूल-पौधों का चारा चरने की उसे आदत लगी होगी कि नहीं, यह तो वही वराह आदिनारायण ही जानें। इस तरह से उनके (धर्म) ग्रंथों में कई तरह के महत्त्वपूर्ण सवालों के प्रमाण नहीं मिलते। इसलिए मुझे लगता है कि धर्मग्रंथों में लिखा यह सब झूठ है कि वराह सुअरी से पैदा हुआ है और इस तरह की झूठ-मूठ की बातें शास्त्रों में लिखते समय उन ग्रंथकारों को लज्जा भी नहीं आई होगी ?

जोतीराव : यह कैसी बेतुकी बात है कि तुम्हारे जैसे ही लोग उस तरह के झूठमूठ के ग्रंथों की शिक्षा की वजह से ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों और उनकी संतानों के पाँवों को धोकर पानी भी पीते हैं। अब तुम ही बताओ, इसमें तुम निर्लज्ज हो या वे ?

धोंडीराव : खैर, इन सब बातों को अब छोड़ दीजिए। आपके ही कहने के अनुसार, उस मुखिया का नाम वराह कैसे पड़ा ?

जोतीराव : क्योंकि उसका स्वभाव, उसका आचार-व्यवहार, उसका रहन-सहन बहुत ही गंदा था और वह जहाँ भी जाता था, वहीं जंगली सुअर की तरह झपट्टा मारकर अपना कार्य सिद्ध करता था। इसी की वजह से महाप्रतापी हिरण्यगर्भ और हिरण्यकश्यप नाम के जो दो क्षत्रिय थे, उन्होंने उसका नाम

अपनी निषेध की भावना व्यक्त करने के लिए सुअर अर्थात् वराह रखा। इससे वह और बौखला गया होगा और उसने अपने मन में उनके प्रति प्रतिशोध की भावना रखते हुए उनके प्रदेशों पर बार-बार हमले करके, वहाँ के सभी क्षेत्रवासियों को तकलीफें दे करके, अंत में उसने एक युद्ध में (हिरण्याक्ष) हिरण्यगर्भ को मार डाला। इसका परिणाम यह हुआ कि देश के सभी क्षेत्रपतियों में घबराहट पैदा हो गई और वे कुछ लड़खड़ाने लगे और इसी समय वराह मर गया।

परिच्छेद : पाँच

[नरसिंह, हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद, विप्र, विरोचन आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : वराह के मरने के बाद द्विज लोगों का मुखिया कौन हुआ ?

जोतीराव : नरसिंह।

धोंडीराव : नरसिंह स्वभाव से कैसा था ?

जोतीराव : नरसिंह स्वभाव से लालची, धोखेबाज, विश्वासघात करनेवाला, विनाशकारी, क्रूर और भ्रष्ट था। वह शरीर से बहुत मजबूत और बलवान था।

धोंडीराव : उसने क्या-क्या किया था ?

जोतीराव : सबसे पहले उसके मन में हिरण्यकश्यप की हत्या करने का विचार आया। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि उसकी हत्या किए बगैर उसका राज्य उसे मिलनेवाला नहीं था। उसका अपना दुष्ट उद्देश्य सफल हो, इसके लिए उसने गुप्त हरकतें करना शुरू कर दिया। उसने अपने एक द्विज शिक्षक के माध्यम से हिरण्यकश्यप के बेटे प्रह्लाद के अबोध मन पर अपने धर्म-सिद्धांत थोपना प्रारंभ किया। इसकी वजह से प्रह्लाद ने अपने हर-हर नाम के कुलस्वामी की पूजा करना त्याग दिया। बाद में हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद के भ्रष्ट हुए मन को पुनः अपने कुलस्वामी की पूजा करने के लिए अनुकूल करने की दृष्टि से हर तरह की कोशिश की, लेकिन नरसिंह की ओर से प्रह्लाद को भीतर से मदद होने के कारण हिरण्यकश्यप के सारे प्रयास बेकार गए। अंत में नरसिंह ने उस अबोध बालक को अपने बहकावे में लाकर उसका मन इस तरह से भ्रष्ट कर दिया कि वह अपने पिता की हत्या कर दे। लेकिन इस तरह का अमानवीय कृत्य करने के लिए उस लड़के की हिम्मत ही नहीं हुई। इसलिए नरसिंह ने मौका देखकर ताजिया के बाघ के बनावटी स्वाँग की तरह अपने सारे बदन को रंगवाया, मुँह में बड़े-बड़े नकली दाँत लगवाए, और लंबे-लंबे बालों की दाढ़ी-मूँछें लगवाईं और वह एक

तरह से (नकली) भयंकर सिंह बन गया। यह सारा स्वाँग छुपाने के लिए नरसिंह ने जरी से बुनी हुई ऊँचे किस्म की सौड़ी (पातल) पहन लिया और सती की तरह अपने मुँह पर लंबा-चौड़ा घूँघट डालकर बड़े ही नखरैल ढंग से झूमते-लहराते हुए उस बच्चे की मदद से एक दिन उसके पिता द्वारा बनवाए विशाल मंदिर में, जहाँ खंबों का ताँता लगा हुआ था, वहाँ जाकर चुपके से खड़ा हो गया। उसी दरम्यान हिरण्यकश्यप सारे दिन के शासन-भार से थका अपने मंदिर में आकर आराम करने के उद्देश्य से ज्योंही पलंग पर लेटा, नरसिंह ने बड़ी तेजी के साथ सिर का घूँघट खोलकर, आँचल को कमर में लपेटकर, उन खंबों की ओट से निकलकर हिरण्यकश्यप के बदन पर कातिलाने ढंग से टूट पड़ा। उसने अपने हाथ की मुट्ठी में छुपाए हुए बघनघा से उसके पेट पर वार करके उसके पेट को फाड़ दिया। इस तरह उसने हिरण्यकश्यप की हत्या कर दी। बाद में नरसिंह वहाँ से सभी द्विजों को साथ लेकर रात और दिन एक करके अपने मुल्क में भाग गया। इधर नरसिंह ने प्रह्लाद को तो भुलावे में रख दिया था; लेकिन जब क्षत्रियों को यह ध्यान में आया कि नरसिंह ने अमानवीय कर्म किया है तब उन्होंने आर्य लोगों को द्विज कहना बिलकुल त्याग दिया और नरसिंह को विप्रिय[1] कहने लगे। इसी विप्रिय शब्द से बाद में उसका नाम विप्र पड़ा होगा। बाद में क्षत्रियों ने नरसिंह को नारसिंह यानी सिंह की औरत कहकर कोसना शुरू कर दिया। अंत में हिरण्यकश्यप के बच्चों में से कइयों ने नरसिंह को पकड़कर, उसको उचित दंड देने की कोशिश की, किंतु नरसिंह हिरण्यकश्यप की राजसत्ता हड़पने की इच्छा छोड़कर केवल अपने मुल्क और अपनी जान को सँभालते हुए, किसी प्रकार का पुन: प्रयास न करते हुए मर गया।

घोंडीराव : फिर नारसिंह के इस तरह के अमानवीय कृत्यों की वजह से उसके नाम को लेकर बाद में कोई उसकी छी-थू न करे, इस डर से विप्र इतिहासकारों ने कुछ समय के बाद उचित समय को जानकर नारसिंह के बारे में यह सिद्ध करने की कोशिश की कि वह तो खंबे से पैदा हुआ। इस तरह उसके नाम के साथ कई झूठ-मूठ की कल्पनाएँ गढ़कर इतिहास में घुसेड़ दी गई होंगी।

जोतीराव : हाँ, इसमें भी कोई संदेह नहीं, क्योंकि यदि वह खंबे से पैदा हुआ, यह कहा जाए, तब उसकी गर्भ की नाल दूसरे किस व्यक्ति ने काटी होगी और उसके मुँह में दूध का स्तन दिए बगैर वह कैसे जिया होगा ? बाद में वह किसी न किसी दाई का या बाहर का दूध पिए बगैर छोटे से बड़ा कैसे

1. विप्रिय— अप्रिय, धोखेबाज, छली-कपटी, दुष्ट।

हुआ होगा ? शायद यह भी हो सकता है, यदि यह कहा जाए, लेकिन सृष्टि में इस तरह से कुछ भी घटते हुए नहीं दिखाई देता। यह तो सृष्टिक्रम के विरुद्ध ही है। इन लापरवाह विप्र ग्रंथकारों ने नारसिंह को एकदम लकड़ियों के खंबों से पैदा करवाते ही बगैर किसी की सहायता के अपने-आप ही इतना शक्तिशाली दाढ़ी-मूँछवाला, अक्ल का दुश्मन बना दिया कि उसने तुरंत ही हिरण्यकश्यप की हत्या कर डाली। हाय, जो पिता अपनी समझ के अनुसार, पितृधर्म की भावना को अपने मन में जगाकर, केवल शुद्ध ममता से अपने स्वयं के पुत्र का मन सच्चे धर्म में लगाने का प्रयास कर रहा था, उस पिता को आदिनारायण के अवतार द्वारा मार दिया जाना क्या सही में उचित था ? इस तरह का अमानवीय कुकर्म अज्ञानी मनुष्य का अवतार भी शायद ही करेगा। आदिनारायण का अवतार होने की वजह से उसे चाहिए था कि वह हिरण्यकश्यप को दर्शन देकर यह विश्वास दिलाता कि वह आदिनारायण का अवतार है, और वह पिता-पुत्र में सुलह करवाने आया है; लेकिन ऐसा न कर उसने हिरण्यक़श्यप की हत्या कर डाली, यह कितने आश्चर्य की बात है ! यदि वह उस हिरण्यकश्यप को उपदेश देकर उसको समझा नहीं पाया तो फिर वह सबकी बुद्धि का दाता कैसे ? इससे यह सिद्ध होता है कि नारसिंह में किसी सामान्य स्त्री से भी कम अक्ल थी।

फिलहाल हिंदुस्थान में अमेरिकी और यूरोपियन मिशनरियों ने यहाँ के कई युवकों को ख्रिस्ती बना लिया; किंतु उनमें से किसी ने भी किसी (ख्रिस्ती) युवक के पिता की हत्या नहीं की, यह कितना बड़ा आश्चर्य है !

धोंडीराव : नारसिंह की इस तरह दुर्दशा होने पर विप्रों ने प्रह्लाद का राज्य लेने के लिए कुछ कोशिश भी की या नहीं ?

जोतीराव : विप्रों ने प्रह्लाद का राज्य हड़पने के लिए कई तरह के लुके-छिपे प्रयास किए, किंतु उन लोगों को इसमें कोई कामयाबी नहीं मिली। चूँकि, बाद में प्रह्लाद की आँखें खुल गईं और उसको विप्रों की कुटिलता स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। तब से प्रह्लाद ने विप्रों पर किसी भी तरह का भरोसा करना छोड़ दिया और सभी लोगों से केवल ऊपरी दिखावे का स्नेह रखकर अपने राज्य की उचित व्यवस्था, योग्य प्रतिबंध करके मर गया। उसके मरने के बाद उसी के बेटे विरोचन ने अपने राज्य को सँभालते हुए, उस राज्य को बलशाली बनाते हुए अंतिम साँस ली। विरोचन का बेटा 'बली' बहुत ही योद्धा निकला। उसने सबसे पहले अपने ही पड़ोस में रहनेवाले छोटे-बड़े क्षेत्रपतियों को धृष्ट दंगाखोरों की ज्यादतियोंसे मुक्त किया और उन पर अपना अधिकार कायम किया। बाद में उसने अपने राज्य को बढ़ाने की

दिनोंदिन कोशिश की। उस समय विप्रों का मुखिया (बटू) वामन था। उसको यह सब बर्दाश्त नहीं हो रहा था। इसलिए उसने बली का राज्य लड़-झगड़कर लेने के उद्देश्य से ही गुप्त रूप से बहुत बड़ी फौज तैयार की और अचानक बली के राज्य की सीमा पर आ पहुँचा। वामन बहुत ही लोभी, साहसी और अड़ियल दिमागवाला था।

परिच्छेद : छः

[बली राजा, ज्योतिबा, मराठे, खंडोबा, महासूबा, नवखंडों का न्यायी, भैरोबा, सात आश्रित, डेरा डालना, रविवार को पवित्र मानना, वामन, श्राद्ध करना, विंध्यावली, घट रखना, बली राजा की मृत्यु, सती जाना, आराधी लोग, शिलंगण, भात का बली राजा बनाना, दूसरे बली राजा के आने की भविष्यवाणी, बाणासुर, कुजागरी, वामन की मृत्यु, उपाध्ये, होली, वीर पुरखों की भक्ति, बलि प्रतिपदा, भाई-दूज आदि के संबंध में ।]

धोंडीराव : फिर बली राजा ने क्या किया ?

जोतीराव : बली राजा ने अपने राज्य के करीब-करीब सभी सरदारों को पड़ोसी क्षेत्रपतियों की ओर तुरंत भेज दिया और इस तरह की ताकीद की कि उन सभी लोगों को किसी भी तरह की दलील न देते हुए अपनी सारी फौज लेकर उसकी मदद के लिए आना चाहिए ।

धोंडीराव : इस देश का इतना बड़ा प्रदेश बली के अधिकार में था ?

जोतीराव : इस देश में कई प्रदेश बली राजा के अधिकार में थे। इसके अलावा सिंहलद्वीप आदि पड़ोस के कई प्रदेश इसके अधिकार में थे, ऐसा भी कहा जाता है। चूंकि वहाँ बली नाम का एक द्वीप भी है। इस प्रदेश के दक्षिण में कोल्हापुर की पश्चिम दिशा में बली के अधिकार में कोंकण और मावला[1] प्रदेश के कुछ क्षेत्र थे। वहाँ ज्योतिबा नाम का मुखिया था। उसके रहने का मुख्य स्थान कोल्हापुर के उत्तर में रत्नगिरी नाम का पहाड़ था। इसी प्रकार दक्षिण में बली के अधिकार में दूसरा एक और प्रदेश था, उसको महाराष्ट्र कहा जाता था और वहाँ के सभी मूल क्षेत्रवासियों को महाराष्ट्री कहा जाता था। बाद में उसी का अपभ्रंश रूप हो गया मराठे। यह महाराष्ट्र प्रदेश बहुत

1. मावला—मराठी में मावळा। महाराष्ट्र के अंतर्गत पूना के इर्द-गिर्द का प्रदेश ।

बड़ा होने से बली राजा ने उस प्रदेश को नौ क्षेत्रों में बाँट दिया था। इसी के कारण उस हर क्षेत्र के मुखिया का नाम खंडोबा पड़ गया था, इस तरह का उल्लेख मिलता है। हर खंड के मुखिया की योग्यता के अनुसार उनके हाथ के नीचे कहीं एक, तो कहीं दो प्रधान रहते थे। उसी प्रकार हर एक खंडोबा के हाथ के नीचे बहुत मल्ल (पहलवान) थे। इसलिए उसको मल्लूखान कहते हैं।

उन नौ में जेजोरी का खंडोबा एक था।[1] यह खंडोबा नाम का मुखिया अपने पास-पड़ोस के क्षत्रपतियों के अधिकार में रहने वाले मल्लों को ठीक करके उन्हें अपने वर्चस्व में रखता था। इसलिए उसका दूसरा नाम मल्लअरी पड़ गया था। मल्हारी[2] इसी का अपभ्रंश है। उसकी यह विशेषता थी कि वह धर्म के अनुसार ही लड़ता था। उसने कभी भी पीठ दिखाकर भागने वाले किसी भी शत्रु पर वार नहीं किया। इसलिए उसका नाम मारतोंड पड़ गया था, जिसका अपभ्रंश मार्तंड[3] हो गया। उसी प्रकार वह दीन लोगों का दाता था। उसको गाने का बड़ा शौक था। उसके द्वारा स्थापित या उसके नाम पर प्रसिद्ध मल्हार राग है। यह राग इतना अच्छा है कि उसी के सहारे से तानसेन नाम का मुसलिमों में जो प्रसिद्ध गायक हुआ है, उसने भी एक दूसरा मल्हार राग बनाया है। इसके अलावा बली राजा ने महाराष्ट्र में महासूबा और नौ खंडों के न्यायी के रूप में दो मुखिया वसूली और न्याय करने के लिए नियुक्त किए थे। उनके हाथ के नीचे अन्य कई मजदूर थे, इस प्रकार का भी उल्लेख मिलता है। फिलहाल उस महासूबे का अपभ्रंश म्हसोबा हुआ है। वह समय-समय पर लोगों की खेती-बाड़ी की जाँच-पड़ताल करता था और उसी के आधार पर छूट-सहूलियत देकर सभी को खुश रखता था। इसीलिए मराठों में एक भी कुल (किसान) ऐसा नहीं मिलेगा जो अपनी खेती-बाड़ी के समय

---

1. जेजोरी का खंडोबा—महाराष्ट्र का एक प्रसिद्ध देवस्थान है। यह स्थान पूना की आग्नेय दिशा में करीबन तीस मील की दूरी पर है। जेजोरी की पहाड़ी पर कई पठार और गढ़कोट हैं। इन दो जगहों पर खंडोबा के मंदिर हैं। इनमें कई शिलालेख हैं। यहाँ सबसे पुराना शिलालेख ई० सं० 1246 का है। जेजोरी में चंपाषष्ठी, सोमवती अमावस्या, चैत्री, श्रावणी, पौषी और माघी पूर्णिमा को विशेष उत्सव होते हैं। चंपाषष्ठी यहाँ का सबसे बड़ा उत्सव है।
2. मल्हारी—शिव का एक अवतार माना जाता है। एक देवता।
3. मार्तंड—इस देवता को 'मल्हारी मार्तंड' नाम से भी जानते-पुकारते हैं। महाराष्ट्र की लोककलाओं में यह नाम बहुत ही प्रचलित है।

किसी भी पत्थर को महासूबे के नाम पर सिंदूर की लिपा-पोती कर, उसको धूप जलाकर उसका नाम लिए बगैर खेत बोएगा। वे तो उसका नाम लिए बगैर खेत को हँसिया भी नहीं लगा सकते। उसके नाम का स्मरण किए बगैर खलिहान में रखे अनाज के ढेर को तौल भी नहीं सकते। उस बली राजा द्वारा सूबे (प्रदेश) बना करके किसानों से वसूली करने का तरीका यवन लोगों ने अपनाया होगा, इस प्रकार का तर्क दिया जा सकता है। क्योंकि उस समय यवन लोग ही नहीं, बल्कि मिस्र के कई विद्वान यहाँ आकर, ज्ञान पढ़कर जाते थे, इस तरह के भी प्रमाण मिलते हैं। तीसरी बात यह है कि अयोध्या के पड़ोस में काशीक्षेत्र के इर्द-गिर्द कुछ क्षेत्र बली राजा के अधिकार मे थे। उस प्रदेश को दसवाँ खंड कहा जाता था। वहाँ के मुखिया का नाम कालभैरी था, इसके भी प्रमाण मिलते हैं। इसी प्रकार वह मुखिया कुछ दिन पहले काशी शहर का कोतवाल था, इसके भी प्रमाण मिलते हैं। वह गायन-कला में इतना कुशल था कि उसने अपने नाम पर एक स्वतंत्र राग बनाया। उस भैरव राग को सुनकर तानसेन जैसे ख्यातिप्राप्त महागायक भी नतमस्तक हुए। उसने अपनी ही कल्पना से डौर नाम के एक वाद्य का भी निर्माण किया। इस डौर नाम के वाद्य की रचना इतनी विलक्षणीय है कि उसके ताल-सूर में मृदंग, तबला आदि वाद्य भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते। लेकिन उसकी ओर ध्यान न देने से, उसको जितनी प्रसिद्धि मिलनी चाहिए थी, उतनी नहीं मिल सकी। उसके जो सेवक हैं, उन्हें भैरवाड़ी कहते हैं जिसका अपभ्रंश भराड़ी है। इससे इस बात का पता चलता है कि बली राजा का राज्य इस देश में आजपाल यानी राजा दशरथ के पिता जैसे कई क्षेत्रपतियों के राज्य से भी बड़ा था। इसीलिए सभी क्षेत्रपति उसी की नीति का अनुसरण करते थे। इतना ही नहीं, उनमें से सात क्षेत्रपति बली राजा को लगान देकर उसी के आश्रय में रहते थे। इसलिए उसका नाम सात-आश्रित पड़ गया था, इस प्रकार का उल्लेख मिलता है। तात्पर्य, उक्त सभी कारणों से बली का राज्य विशाल था और वह बहुत बलशाली था, इस बात को प्रमाणित करनेवाली एक लोक-कहावत भी है। वह कहावत यह है कि **'जिसकी लाठी उसकी भैंस'** (बळी तो कान पिळी)। इसका मतलब है, जो बलवान है उसी का राज। बली राजा कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण काम अपने सरदारों पर सौंप देता था। उस समय बली राजा अपना दरबार भरवाता था। वहाँ सबके सामने एक उलटी थाली रख देता था। उस थाली में हलदी का चूर्ण और नारियल के फल के साथ पान का बीड़ा रखवाकर कहता था कि जिसमें यह काम करने की हिम्मत है, वह यह पान का बीड़ा उठा ले। बली राजा के इस तरह कहने पर जिसमें इस

तरह के काम करने की हिम्मत होती थी, वही 'हर-हर महावीर'[1] की कसम खाकर, हलदी का तिलक माथे पर लगाकर, नारियल और पान के बीड़े को हाथ में उठाकर, अपने माथे पर रखकर बाद में अपने दुपट्टे में बाँध लेता था। उसी वीर को बली राजा उस काम की जिम्मेदारी सौंप देता था। बाद में वह वीर बली राजा की आज्ञा लेकर अपनी फौज के साथ पूरी शक्ति लगाकर शत्रु की फौज पर हमला बोल देता था। इसी की वजह से उस संस्कार का नाम तड़ उठाना (तळ उचलणे) पड़ा होगा। उसका अपभ्रंश 'तड़ी उठाना' (तळी उचलणे) हो गया। बलि राजा के महावीरों में भैरोबा, ज्योतिबा तथा नवखंडोबा अपनी रैयत की सुख-सुविधा के लिए इसी तरह के शर्तिया प्रयास करते थे। आज भी मराठों ने कोई भी अच्छा कार्य प्रारंभ करने से पहले तड़ी उठाने का संस्कार अपना रखा है। उन्होंने अपने इस संस्कार के तहत बहिरोबा, ज्योतिबा और खंडोबा को देवता-स्वरूप कबूल कर लिया और उनके नाम से तड़ी उठाने लगे। वे लोग 'हर-हर-महादेव' बहिरोबाचा अथवा ज्योतिबाचा चांग भला—इस प्रकार का युद्धघोष करते थे और बहिरोबा या ज्योतिबा का स्तुतिगान करते थे। इतना ही नहीं, बली राजा अपनी सारी प्रजा के साथ महादेव के नाम से रविवार के दिन को पवित्र दिन के रूप में मनाता था। इसकी पृष्ठभूमि में आज के मराठे यानी मातंग, महार, कुनबी और माली आदि लोग हर रविवार के दिन, अपनें-अपने घर के उस कुलस्वामी की प्रतिमा को जलस्नान करवाकर, उसको भोजन अर्पण किए बगैर वे अपने मुँह में पानी की एक बूँद भी नहीं डालते हैं।

धोंडीराव : बली राजा के राज्य की सरहद पर आने के बाद वामन ने क्या किया?

जोतीराव : वामन अपनी सारी फौज को लेकर बली राजा के राज्य में सीधे-सीधे घुस आया। उसने बली राजा की प्रजा को मारते-पीटते, खदेड़ते हुए हाहाकार मचा दिया था और इस तरह से वह बली की राजधानी तक आ पहुँचा। इसलिए बली अपनी देशभर में फैली हुई फौज को इकट्ठा करने से पहले ही, बेबस होकर, अपनी निजी फौज को साथ में लेकर वामन से मुकाबला करने के लिए युद्धभूमि पर उतर पड़ा। बली राजा (बली) भाद्रपद वद्य 1 पद से वद्य 30 तक, हर दिन वामन और उसकी फौज के साथ लड़कर शाम को

---

1 हर-हर—इस शब्द का अपभ्रंश 'हुर्रा-हुर्रा' है, यह तर्क निकलता है, क्योंकि अंग्रेज लोगों में एक पुराना रिवाज है कि वे 'हुर्रा-हुर्रा' करके चिल्लाए बगैर दुश्मन पर टूट पड़ने की आज्ञा ही नहीं देते। यह बात उनके इतिहास में कही गई है। "Hurrah Boys ! loose the saddle or win the horse !"

आराम के लिए अपने महल में आता था । इसी की वजह से दोनों ओर के जितने लोग उस पखवाड़े में एक-दूसरे से लड़ते हुए मर गए, उनके मरने की तिथियाँ ध्यान में रहीं । इसलिए हर साल भाद्रपद माह में उस तिथि को श्राद्ध करने की परंपरा पड़ गई होगी, इस तरह का तर्क निकलता है । आश्विन शुद्ध 1 पव से शुद्ध अष्टमी तक बली राजा वामन-के साथ लड़ाई में इतना व्यस्त था कि वह सब कुछ भूल गया था और उस दरम्यान अपने महल में आराम के लिए भी नहीं आ सका । इधर बली राजा की विंध्यावली रानी ने अपने हिजड़े पंडे सेवक के द्वारा एक गड्ढा खुदवाया । उसने उसमें उस पंडे सेवक के द्वारा जलाव लकड़ियाँ डलवाईं और वह उस गड्ढे के पास आठ रात आठ दिन तक बिना कुछ खाए-पिए बैठी रही । उसने वहाँ अपने साथ पानी का एक कलश रखा था। रानी इस तरह बिना खाए-पिए पानी के सहारे इस कामना की पूर्ति के लिए उस गड्ढे के सामने आठ दिन तक बैठी कि इस युद्ध में उसके पति की विजय हो और वामन की बला टल जाए। इसलिए रानी यहाँ बैठकर महावीर की प्रार्थना कर रही थी । इस दरम्यान आश्विन शुद्ध अष्टमी की रात में बली राजा के युद्ध में मारे जाने की खबर मिलते ही उसने उस गड्ढे में पहले से ही रखी गई लकड़ियों को आग लगा-कर अपने-आपको उसमें झोंक दिया । उसी दिन से सती होने की रूढ़ि चल पड़ी होगी, यह तर्क किया जा सकता है । जब रानी विंध्यावली अपने पति के विछोह के कारण आग में कूदकर मर गई, तब उसकी सेवा में रहनेवाली औरतों और हिजड़े पंडों ने अपने-अपने बदन के कपड़ों को नोंच-नोंचकर फाड़ डाला होगा और उस आग में जला दिया होगा । उन्होंने अपनी-अपनी छाती को पीटकर, जमीन पर अपने हाथों को पिटते हुए, तालियाँ पिटते हुए, रानी के गुणों का वर्णन करते हुए, उस गड्ढे के इर्द-गिर्द घूमकर अपना शोक प्रकट किया होगा कि 'हे रानी, तेरा ढिंढोरा घमघमाया,' आदि । दुख की चिता के ये शोले वहीं शांत हो जाएँ, फैले नहीं, इसलिए ब्राह्मणों के धूर्त ग्रंथकारों ने बाद में मौका तलाश कर, उस गड्ढे का होम (कुंड) बनवाकर उसके संबंध में कई गलत-सलत बदमाशी-भरी घटनाएँ गूँथकर अपने ग्रंथों में लिखकर रखी होंगी, इसमें कोई शक नहीं । उधर बली राजा के युद्धभूमि में मरने के बाद बाणासुर ने पूरे एक दिन हर तरह की मुसीबतों का मुकाबला करते हुए वामन की फौज से युद्ध किया । बाद में बाणासुर आश्विन शुद्ध नवमी की रात में अपनी शेष फौज लेकर भाग गया । इस युद्ध में विजय की मस्ती में वामन इतना बदमस्त हुआ कि बली राजा की मुख्य राजधानी में कोई भी पुरुष नहीं है, यह सुनहरा मौका देखकर उस राजधानी पर हमला बोल दिया । वामन अपने साथ पूरी फौज लेकर आश्विन शुद्ध दशमी को बड़ी सुबह ही उस

शहर में पहुँचा। उसने वहाँ के अंगणों में लगा हुआ जितना सोना था, सब लूट लिया। उस शब्द का अपभ्रंश 'शिलंगण का सोना लूट लिया', यह हो गया। इस लूट के बाद वामन तुरंत अपने घर (प्रदेश) लौट गया। जब वह अपने घर पहुँचा, तो पहले से ही उसकी औरत ने मजाक के खातिर कनकी (चावल) का एक बली राजा बना करके अपने दरवाजे की दहलीज पर रखा था। वामन के घर पहुँचने पर उसने वामन से कहा कि यह देखो, बली राजा आपके साथ पुनः युद्ध करने के लिए आया है। यह सुनते ही उसने उस कनकी के बली राजा को अपने लात की ठोकर से फेंक दिया और फिर घर के अंदर प्रविष्ट किया। उस दिन से आज तक ब्राह्मणों के घरों में हर साल आश्विन महीने में विजयादशमी (दशहरा) को ब्राह्मण औरतें कनकी या भात का बली राजा बनाकर अपने-अपने दरवाजे की दहलीज पर रखती हैं। बाद में अपना बायाँ पाँव उस कनकी के बली राजा के पेट पर रखकर कचनार की लकड़ी से उसका पेट फाड़ती हैं। बाद में उस मृत बली राजा को लाँघकर अपने घर में प्रविष्ट होती हैं। यही उनमें सदियों से चली आ रही परिपाटी है। (ब्राह्मण-पंडा-पुरोहितों के घरों में यह त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है, इसलिए इस त्यौहार को ब्राह्मणों का त्यौहार कहते हैं। अनु०) इसी तरह बाणासुर के लोग आश्विन शुद्ध दशमी की रात में अपने-अपने घर गए। उस समय उनकी औरतों ने उनके सामने दूसरे बली राजा की प्रतिमा रखकर और यह भविष्यवाणी जानकर कि दूसरा बली राजा ईश्वर के राज्य की स्थापना करेगा, अपने घर की दहलीज में खड़े होकर उसकी आरती उतारी होगी और यह कहा होगा कि 'अला-बला जावे और बली का राज आवे (इडा पिडा जावो आणि बळीचे राज्य येवो)।' उस दिन से लेकर आज तक सैकड़ों साल बीत गए, फिर भी बली के राज्य के कई क्षेत्रों में क्षत्रिय वंश की औरतों ने हर साल आश्विन शुद्ध दशमी को शाम के समय अपने-अपने पति और पुत्र की आरती उतारकर आगे बली का राज्य आवे, इस इच्छा का त्याग नहीं किया है। इससे पता चलता है कि आगे आनेवाला बली राजा कितना अच्छा होगा। धन्य है वह बली राजा और धन्य है वह राजनिष्ठा। लेकिन आज के तथाकथित माँगलिक हिंदू लोग अंग्रेज शासकों की मेहरबानी पाने के लिए कि उनको अंग्रेजी सत्ता में बड़े-बड़े पद और प्रतिष्ठा के स्थान मिलें, इसलिए ये लोग रानी के जन्म दिन पर, आम सभाओं में लंबे-लंबे भाषण देते हैं। लेकिन समाचार-पत्रों में या आपसी बातचीत में उनके खिलाफ अपना रोष व्यक्त करने का दिखावा करते हैं।

धोंडीराव : उस समय बली राजा द्वारा बुलाए गए सरदार क्या उसकी मदद के लिए आए ही नहीं?

जोतीराव : बाद में कई छोटे-मोटे सरदार अपनी-अपनी फौज के साथ आश्विन शुद्ध चौदहवीं को आकर बाणासुर से मिले। उनके बाणासुर से मिलने की खबर सुनते ही बली राज्य के कुल मिलाकर सभी ब्राह्मण अपनी जान बचाकर वामन की ओर भाग गए। उनको इस तरह भागकर आते देखा तो वामन बहुत ही घबरा गया। उसने सभी ब्राह्मणों को इकट्ठा किया। आश्विन शुद्ध पंद्रहवीं को वे सभी इकट्ठा होकर सारी रात जागकर, अपने भगवान के सामने प्रसाद स्वरूप दाँवपेंच तय करने लगे कि बाणासुर से अपना संरक्षण कैसे किया जाए। दूसरे दिन वामन अपने बाल-बच्चों के साथ सारी फौज को साथ लेकर अपने प्रदेश की सीमा पर पहुँचकर बाणासुर का इंतजार कर रहा था।

धोंडीराव : बाद में बाणासुर ने क्या किया ?

जोतीराव : बाणासुर ने न आव देखा न ताव, उसने एकदम वामन पर हमला बोल दिया। बाणासुर ने बाद में उसको पराजित कर दिया और उसके पास जो कुछ था वह सब लूट लिया। फिर उसने वामन को उसके सभी लोगों के साथ अपनी भूमि से खदेड़कर हिमालय की पहाड़ी पर भगा दिया। फिर उसने उस पहाड़ी को चारों ओर से घेरकर, पहाड़ी के पायदान पर अपना डेरा डालकर वामन को दाने-दाने के लिए इतना मोहताज बना दिया कि उसके कई लोग केवल भूख से मरने लगे। अंत में इसी चिंता में वहीं पर वामन-अवतार का सर्वनाश हुआ। मतलब, वामन भी मर गया। वामन के मरने से बाणासुर के लोगों को बड़ी खुशी हुई। वे कहने लगे कि सभी ब्राह्मणों में वामन एक बहुत बड़ा संकट था। उसके मरने से, उसके नष्ट हो जाने से हमारा शोषण, उत्पीड़न समाप्त हो गया। उसी समय से ब्राह्मणों को उपाध्य कहने की परिपाटी चली आ रही होगी, इस तरह का तर्क निकाला जा सकता है। बाद में उन उपाध्यों ने अपने-अपने घरों पर युद्ध में मरे अपने सभी रिश्तेदारों के नाम से चिता (जिसको आजकल होली कहा जाता है) जलाकर उनकी दाहक्रिया की; क्योंकि उनमें पहले से ही मृत आदमी को जलाने का रिवाज था। उसी प्रकार बाणासुर और अन्य तमाम क्षत्रिय इस युद्ध में मरे अपने-अपने सभी रिश्तेदारों के नाम से फाल्गुन वद्य 1 पद को वीर बनकर, हाथ में नंगी तलवारें लिए बड़े उत्साह में नाचे, कूदे और उन्होंने मृत वीरों का सम्मान किया। क्षत्रियों में मृत आदमी के शरीर को जमीन में दफनाने की बहुत पुरानी परंपरा दिखाई देती है। अंत में बाणासुर ने उस उपाध्ये के रक्षण के लिए कुछ लोगों को वहाँ रखा। शेष सभी को अपने साथ लेकर अपनी राजधानी में पहुँचा। बाणासुर के अपनी मुख्य राजधानी में पहुँचने के बाद जो खुशी हुई, उसका वर्णन करने से ग्रंथ का विस्तार होगा, इस डर की वजह से यहाँ मैं

उस घटना का संक्षिप्त इतिहास दे रहा हूँ। बाणासुर अपने सारे जायदाद की गिनती करके आश्विन वद्य त्रयोदशी को उसकी पूजा की। फिर उस नेवद्य चतुर्दशी और वद्य 30 को अपने सभी सरदारों को बढ़िया-बढ़िया खाना खिलाया और सभी ने मौज मनाई। बाद में कार्तिक शुद्ध 1 को अपने कई सरदारों को उनकी योग्यता के अनुसार इनाम दिया और उनको अपने-अपने मुल्क में जाकर काम में लग जाने का हुक्म भी दिया गया। इससे वहाँ की सभी स्त्रियों को भी खुशी हुई। उन्होंने कार्तिक शुद्ध 2 को अपने-अपने भाइयों को यथासामर्थ्य भोजन खिलाया। उन्होंने उनको भोजन खिलाकर उनका पूरी तरह से समाधान किया। बाद में उन्होंने उनकी आरती उतारी और कहा कि, 'अला बला जावे और बली का राज्य आवे (इडा पिडा जावो आणि बळीचे राज्य येवो)।' इस तरह उन्होंने आने वाले बली[1] के राज्य का स्मरण दिलाया। उस समय से आज तक हर साल दीवाली को, भैयादूज (भाऊबीज) के दिन क्षत्रिय लड़कियाँ अपने-अपने भाइ को आनेवाले बली राज्य का ही स्मरण दिलाती हैं। लेकिन उपाध्ये कुल में इस तरह का स्मरण दिलाने का रिवाज बिलकुल ही नहीं है।

धोंडीराव : लेकिन बली राजा को पाताल में गाड़ने के लिए आदिनारायण ने वामन अवतार लिया। उस वामन ने भिखारी का रूप धारण किया और उसने बँली राजा को अपने छलकपट में फँसाया। उसने बली राजा से तीन कदम धरती का दान माँगा। बली राजा ने अपने भोलेपन में उसको दान देने का वचन दे दिया। दान का वचन मिलने के बाद उसने भिखारी का रूप त्याग दिया और इतना विशाल आदमी बन गया कि उसने सारी धरती और आकाश को अपने दो कदमों में घेर लिया। बाद में उसने बली राजा से पूछा कि अब मुझे तीसरा कदम कहाँ रखना चाहिए? उसका यह विशालकाय रूप देखकर बली राजा बेबस हुआ। उसने उस वामन को यह जवाब दिया कि अब तुम अपना तीसरा पाँव मेरे सिर पर रख दो। बली राजा का यह कहना

1. बली—(बरि, बेदगु)—बली कन्नड़ शब्द है। इसका तमिल अनुवाद 'बरि' तथा तेलुगु 'बेरगु' है। इसका अर्थ है बाहरी जाति। बलि का उल्लेख अनेकों बार ऋग्वेद में एक देवता तथा एक राजा के रूप में हुआ है। बलि एक प्रसिद्ध दानव राजा था। उसने तीनों लोकों को जीत लिया था। देवता (ब्राह्मण) उससे त्रस्त थे। पुराणों में कहा गया है कि बली राजा दान देने के लिए प्रसिद्ध था। विष्णु दया करके कश्यप और अदिति से वामन-रूप में उत्पन्न हुए और ब्राह्मण का रूप धारण कर बली राजा के पास गए। वामन ने छल-कपट से बली राजा से तीन पग भूमि माँगी।

सुनते ही उस गलीजगेंडे ने अपना तीसरा पाँव बली राजा के सिर पर रख दिया और उसने बली राजा को पाताल में दफना कर अपना इरादा पूरा कर लिया। इस तरह की बात ब्राह्मण उपाध्यों ने भागवत आदि पुराणों में लिख रखी है। लेकिन आपने जिस हकीकत का वर्णन किया है, उससे यह पुराण-कथा झूठ साबित होती है। इसलिए इस बारे मे आपका मत क्या है, यही हम जानना चाहते हैं।

जोतीराव : इससे अब तुम्हीं सोचो कि जब उस गलीजगेंडे ने अपने दो कदमों से सारी धरती और आकाश को घेर लिया था, तब उसके पहले ही कदम के नीचे कई गाँव, गाँव के लोग दब गए होंगे और उन्होंने अपनी निर्दोष जानें गँवाई होंगी कि नहीं? दूसरी बात यह कि उस गलीजगेंडे ने जब अपना दूसरा कदम आकाश में रखा होगा, उस समय आकाश में सितारों की बहुत भीड़ होने से कई सितारे एक-दूसरे से टकरा गए होंगे कि नहीं? तीसरी बात यह कि उस गलीजगेंडे ने अपने दूसरे कदम से यदि सारे आकाश को हड़प लिया होगा, तब उसके कमर के ऊपर के शरीर का हिस्सा कहाँ रहा होगा? इस गलीज-गेंडे के कमर से ऊपर माथे तक आकाश शेष बचा होगा। तब उस गलीजगेंडे को अपने ही माथे पर अपना तीसरा कदम रखना चाहिए था और अपना इरादा पूरा करना चाहिए था। लेकिन उसने अपना इरादा पूरा करने की बात अलग रख दी और उसने केवल छल-कपट से अपना तीसरा कदम बली राजा के माथे पर रख दिया और उसको पाताल में दफना दिया, उसकी इस नीति को क्या कहना चाहिए!

धोंडीराव : क्या सचमुच में वह गलीजगेंडा आदिनारायण का अवतार है? उसने इस तरह की सरेआम धोखेबाजी कैसे की? जो लोग ऐसे धूर्त, दुष्ट आदमी को आदिनारायण का अवतार मानते हैं, उन इतिहासकारों को छी:-छी: करते हुए, हम उनका निषेध करते हैं; क्योंकि उन्हीं के लेखों से वामन छली, धोखेबाज, विनाशकारी और हरामखोर साबित होता है। उसने अपने दाता को ही, जिसने उस पर उपकार किया था, दया दिखाई थी, उसी को पाताल में दफना दिया!

जोतीराव : चौथी बात यह है कि उस गलीजगेंडे का सिर जब आकाश को पार करके स्वर्ग में गया होगा, तब उसको वहाँ बड़े जोर से चिल्लाते हुए बली से पूछना पड़ा होगा कि अब मेरे दो कदमों में ही सारी धरती और आकाश समेट गए, फिर अब आप ही बताइए कि मैं तीसरा कदम कहाँ रखूँ और अपना इरादा तथा आपके इरादे को कैसे पूरा करूँ? क्योंकि आकाश में उस गलीजगेंडे का मुँह और पृथ्वी पर बली राजा—इसमें अनगिनत कोसों का फासला रहा ही होगा, और आश्चर्य की बात यह है कि रशियन, फ्रेंच, अंग्रेज

और अमेरिकी आदि लोगों में से किसी एक को भी उस संवाद का एक शब्द भी सुनाई नहीं दिया, यह कैसी अजीब बात है ! उसी प्रकार धरती के मानव बली राजा ने उस वामना नाम के गलीजगेंडे को उत्तर दिया कि तुम अपना तीसरा क़दम मेरे माथे पर रख दो, फिर यह बात उसने सुनी होगी, यह भी बड़े आश्चर्य की बात है। क्योंकि बली राजा उसके जैसा बेढंगा आदमी बना नहीं था। पाँचवीं बात यह है कि उस गलीजगेंडे के बोझ से धरती की कुछ भी हानि नहीं हुई, यह भी कितने आश्चर्य की बात है !

धोंडीराव : यदि धरती की हानि हुई होती तब हम यह दिन कहाँ से देखते ! उस गलीजगेंडे ने क्या-क्या खाकर अपनी जान बचाई होगी ? फिर जब वह गलीजगेंडा मरा होगा तब उसके उस विशाल लाश को श्मशान में ले जाने के लिए कंधा देनेवाले चार लोग कहाँ से मिले होंगे ? वह उसी जगह पर मर गया होगा, यह कहा जाए, तब उसको जलाने के लिए पर्याप्त लकड़ियाँ कहाँ से मिली होंगी ? यदि उस तरह की विशालकाय लाश को जलाने के लिए पर्याप्त लकड़ियाँ नहीं मिली होंगी, यह कहा जाए, तब उसको वहीं के वहीं कुत्ते-सियारों ने नोंच-नोंचकर खा लिया होगा और उसका हलवा पस्त किया होगा कि नहीं ? तात्पर्य यह कि भागवत आदि सभी (पुराण) ग्रंथों में उक्त प्रकार की शंका का समाधान नहीं मिलता है। इसका मतलब स्पष्ट है कि उपाध्यों ने बाद में समय देखकर सभी पुराण-कथाओं से इस तरह के ग्रंथों की रचना की होगी, यही सिद्ध होता है।

जोतीराव : तात, आप उस भागवत पुराण को एक बार पढ़ लें। फिर आपको ही उस भागवत पुराण से ज्यादा इसप-नीति अच्छी लगेगी।

परिच्छेद : सात

[ब्रह्मा, ताड़ के पत्तों पर लिखने का रिवाज, जादूमंत्र, संस्कृत का मूल, अटक नदी के उस पार जाने पर रोक,-प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग घोड़ी आदि जानवरों का मांस खाते थे, पुरोहित, राक्षस, यज्ञ, वाणासुर की मृत्यु, अछूत (परवारी), धागे की गेंडली का निशान, मूलमंत्र, महार, शूद्र, कुलकर्णी, कुनबी, शूद्रों से नफरत, अस्पर्शनीय भाव, मांगल्य (सोवळे), धर्मशास्त्र, मनु, पुरोहित, पुरोहितों की पढ़ाई-लिखाई का परिणाम, प्रजापति की मृत्यु, ब्राह्मण आदि के संबंध में।]

घोंडीराव : वामन की मृत्यु के बाद उपाध्यों का मुखिया कौन हुआ ?

जोतीराव : वामन की मृत्यु के बाद उन लोगों को कुलीन मुखिया की नियुक्ति के लिए समय ही नहीं मिला होगा । इसलिए ब्रह्मा नाम का एक चतुर-चालाक दफ्तरी था, वही सारा राज्य-शासन सँभालने लगा : वह बहुत ही कल्पना-बहादुर था । उसको जैसे-जैसे मौका मिलता था, वह उस तरह से काम करके अपना मतलब साध लेता था । उसके कहने पर, उसकी बात पर लोगों को बिलकुल ही विश्वास नहीं था । इसलिए उसको चौमुँहा कहकर पुकारने का प्रचलन चल पड़ा । मतलब यह कि वह बहुत ही चतुर, हठीला, धूर्त, दुस्साहसी और निर्दयी था ।

घोंडीराव : ब्रह्मा ने सबसे पहले क्या किया होगा ?

जोतीराव : ब्रह्मा ने सबसे पहले ताड़वृक्ष के सूखे पत्तों पर कील से कुरेदकर लिखने की तरकीब खोज निकाली और उसको जो कुछ इराणी जादूमंत्र और व्यर्थ की नीरस कहानियाँ याद थीं, उनमें से कुछ कहानियाँ उसमें मिलाकर, उस काल की सर्वकृत (जिसका अपभ्रंश 'संस्कृत' शब्द है) चालू भाषा में आज की पारसी बयती जैसी छोटी-छोटी कविताओं (छंदों) की रचना की और सबका सार ताड़वृक्ष के पत्तों पर लिख दिया । बाद में इसकी बहुत प्रशंसा भी हुई । उसी की वजह से यह धारणा प्रचलित हुई कि ब्रह्मा के मुँह से ब्राह्मणों के लिए जादूमंत्र विद्या का प्रादुर्भाव हुआ है । उस समय उपाध्ये लोग बिना

भोजन-पानी के मरने लगे थे। इसी की वजह से वे लोग लुके-छिपे इराण में भाग गए। इसके बाद उन्होंने यह नियम बना लिया था कि अटक नदी या समुद्र को लाँघकर उस पार किसी को नहीं जाना चाहिए, और इसका उन्होंने पूरा बंदोबस्त कर लिया था।

धोंडीराव : फिर उन्होंने उस जंगल में क्या-क्या खाकर अपनी जान बचाई?

जोतीराव : उन्होंने वहाँ के पेड़ों के फल, फूल, पत्ती, कंदमूल और उस जंगल के कई तरह के पंछी और जानवरों को ही नहीं, बल्कि कई लोगों ने अपने पालतू घोड़ी की भी हत्या करके उन्हें भून करके खाया और अपनी जान बचाई। इसीलिए उनके रक्षक उन्हें भ्रष्ट कहने लगे। बाद में उन पंडों ने कई तरह की कठिनाइयों में फँस जाने की वजह से कई तरह के जानवरों के मांस खाए। लेकिन जब उन्हें उस बात की लज्जा आने लगी तब उन्होंने किसी भी प्रकार का मांस खाने पर रोक लगा दी होगी। लेकिन जिन ब्राह्मणों को पहले से ही मांस खाने की आदत लगी थी, उस आदत को एकदम से छुड़ाना बड़ी मुश्किल बात थी। उन्होंने कुछ समय बीत जाने के बाद समय देखकर उस निम्न कर्म का दोष छुपाने के लिए पशुओं की हत्या करके उनका मांस खाने में सबसे बड़ा पुण्य मान लिया और खाने योग्य पशुओं की हत्या को पशुयज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि प्रतिष्ठित नामों से संबोधित कर उनके बारे में उन्होंने अपने ग्रंथों में लिखकर रखा। (उसमें उन्होंने यज्ञों का पूरी तरह से समर्थन किया। उनका धर्म अर्थात् ब्राह्मण-धर्म बाद में 'यज्ञों का धर्म' ही कहलाया। उनके यज्ञ पूरी तरह से हिंसक ही थे। बिना हिंसा के वैदिकों का, ब्राह्मणों का यज्ञ होता ही नहीं था—अनु०)।

धोंडीराव : बाद में ब्रह्मा ने क्या किया?

जोतीराव : बली राजा का पुत्र बाणासुर के मरने के बाद उसके राज्य में कोई मुखिया नहीं रहा। प्रजा पर जो नियंत्रण था, वह भी ढीला पड़ गया। जिधर देखिए, उधर बेबसी का वातावरण था। हर कोई अपने-आपको राजा समझकर चल रहा था। सभी लोग ऐशोआराम की जिंदगी में पूरी तरह से मशगूल थे। यही सुनहरा, उचित समय समझकर ब्रह्मा ने अपने साथ उन सभी भूख से त्रस्त, व्याकुल ब्राह्मण परिवारों को (जिसका अपभ्रंश आज 'परिवारी' है) लिया। फिर उसने राक्षसों पर (रक्षक—जो अब्राह्मणों के यहाँ के मूल निवासियों के रक्षक थे, उन्हें राक्षस कहा गया होगा। राक्षस शब्द मूलतः रक्षक अर्थात् रक्षण करनेवाला होना चाहिए—अनु०) रात में एकाएक हमला बोल दिया और उनका पूरी तरह से विनाश किया। बाद में उसने बाणासुर के राज्य में घुसने के पहले इस तरह सोचा होगा कि आगे न जाने किस तरह की मुसीबत अपने पर आ जाए और हमें सभी को इधर-उधर तितर-बितर

होना पड़े, उसमें हमको अपने-अपने परिवार को पहचानने में कठिनाई हो जाएगी लेकिन तितर-बितर होने के बाद भी हम अपने-अपने परिवार के लोगों को पहचान सकें, इसलिए ब्रह्मा ने अपने परिवार के सभी लोगों के गले में छह सफेद धागों से बने रस्से को अर्थात जाति-निर्देशित निशान, मतलब, जिसको आज (ब्राह्मण लोग) ब्रह्म-सूत्र कहते हैं (जनेऊ), उसको उसने हर ब्राह्मण के गले में पहना दिया। उस जनेऊ के लिए उसने उनको एक जाति-निर्देशित मूलमंत्र दिया, जिसको गायत्री-मंत्र[1] कहा जाता है। उन पर किसी प्रकार की मुसीबत आने पर भी उन्हें उस गायत्री-मंत्र को क्षत्रियों को नहीं बताना चाहिए, इस तरह की शपथ दिलाई। इसी की वजह से ब्राह्मण लोग अपने-अपने परिवार के लोगों को बड़ी आसानी से पहचानकर अलग-अलग करने लगे।

धोंडीराव : उसके बाद ब्रह्मा ने और क्या-क्या किया ?

जोतीराव : ब्रह्मा ने अपने उन सभी पारिवारिक ब्राह्मणों को साथ में लेकर बाणासुर के राज्य में घुसपैठ की, फिर हमला किया। उसने वहाँ के कई छोटे-बड़े सरदारों के हौसले नाउम्मेद कर दिया। उसने अधिकांश भूक्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया और युद्ध में कमर कसकर लड़नेवाले महाअरी (आज उस शब्द का अपभ्रंश रूप 'महार' है) क्षत्रियों के अलावा जो लोग उसकी चंगुल में आ गए थे, उनका सब कुछ उसने छीन लिया। बाद में उसने सत्ता की गर्मी में उन सब क्षूद्र लोगों (जिसका अपभ्रंश रूप 'शूद्र' है) को अपना गुलाम बनाया। उसने उनमें से कई लोगों को गुलामस्वरूप सेवा के लिए अपने लोगों के घर-घर बाँट दिया। फिर उसने गाँव-गाँव में एक-एक ब्राह्मण-सेवक भेजकर उनके द्वारा भूक्षेत्र विभाजन करवाया और उन शेष सभी शूद्रों को कृषिकार्य करने के लिए मजबूर किया। उसने इन कृषक-शूद्रों को जिंदा रहने के लिए जमीन की उपज का कुछ हिस्सा स्वयं लेकर शेष भाग इन स्वामियों को दे देने का नियम बनाया। इसी की वजह से उन ग्राम-सेवक ब्राह्मण कर्मचारियों का नाम कुलेकरणी (जिसका अपभ्रंश रूप है कुलकर्णी) हो गया और उसी प्रकार उन शूद्र कुलों का (किसान) नाम कुलवाड़ी (जिसका अपभ्रंश शब्द है कुलंबी, कुळंबी या कुनबी[2]) हो गया। लेकिन उन दास कुनबियों

1. गायत्री मंत्र—'गायत्री' ऋग्वेद में एक छंद का नाम है। गायत्री का अर्थ है 'गायन्तं त्रायते इति' अर्थात 'गानेवाले की रक्षा करनेवाली'। सभी द्विजों के लिए प्रात: और संध्याकाल की प्रार्थना में इस मंत्र का पाठ करना अनिवार्य माना गया है।
2. कुनबी—हिंदुओं की एक शूद्र जाति जो प्राय: खेती करती है।

की औरतों को हमेशा ही खेती का काम नहीं मिल पाता था। उनको कभी-कभी ब्राह्मणों के घर का काम करने के लिए, मजबूर होकर ही क्यों न सही, लेकिन जाना पड़ता था। इसलिए कुनबी और दासी इन दो शब्दों में कोई अर्थ-भिन्नता नहीं दिखाई देती। उक्त प्रकार के बुनियादी आधार के अनुसार बाद में सभी ब्राह्मण दिन-ब-दिन मस्ती में आकर शूद्रों को इतना नीच मानने लगे कि उसके संबंध में यदि सारी हकीकत लिखी जाए तो उसका एक अलग से ग्रंथ हो जाएगा। इस तरह की कुछ बातें आज भी समाज में प्रचलित हैं। ग्रंथ-विस्तार के डर से उन बातों की चर्चा यहाँ मैं संक्षेप में ही कर रहा हूँ। उसी प्रकार आजकल के ब्राह्मण भी (चाहे वे झाड़ू लगानेवाले मातंग-महारों की तरह अनपढ़ ही क्यों न हों) भूखे मरने लगे, इसलिए जो नहीं करना चाहिए, वह नीचकर्म करने पर आमादा हुए हैं। वे लोग पाप-पुण्य की कल्पना का किसी भी प्रकार का विधि-निषेध नहीं रखते हैं और अज्ञानी शूद्रों को अपने जाल में फँसाने के लिए हर तरह की तरकीबें खोजते रहते हैं। अंत में जब उनका बस न चलता है तब वे शूद्रों के दरवाजे-दरवाजे पर धर्म के नाम पर भीख माँग-कर जैसे-तैसे अपना पेट पालते हैं। लेकिन शूद्रों के घर के नौकर (सेवक) बन-कर उनके खेत के जानवरों की देखभाल करने के लिए राजी नहीं होंगे। जानवरों के कोठे में पड़े गोबर को उठाने के लिए, कोठे की साफ-सफाई करने के लिए, गोबर की टोकरी सिर पर उठाने के लिए तैयार नहीं होंगे। गोबर को टोकरी में उठाकर गड्ढे में डालने के लिए तैयार नहीं होंगे। वे लोग किसान के खेत में हल जोतने के लिए, मोट को जोतकर खेतों को, फल-सब्जियों के बागों को पानी देने के लिए तैयार नहीं होंगे। वे लोग खलिहान में काम करने के लिए राजी नहीं होंगे। वे लोग खेतों को खोदने, कुदाली-फावड़ा चलाने के लिए राजी नहीं होंगे। वे लोग खेतों में हँसिया से घास काटकर बैलों के लिए खेत से घास सिर पर ढोने के लिए तैयार नहीं होंगे। वे लोग हाथ में लठ लेकर रात-रात-भर खेतों की देख-रेख करने के लिए राजी नहीं होंगे। वे लोग किसी भी प्रकार का शारीरिक श्रम करने के लिए शरमाते हैं। वे लोग शूद्रों के घरों में नौकर बनकर, उनकी घोड़ियों की साफ-सफाई करने के लिए, घोड़ियों को दाना खिलाने के लिए, घोड़ों के आगे-पीछे दौड़ने के लिए शरमाते हैं। वे लोग शूद्रों की जूतियों को बगल में दबाकर, सँभालकर रखने के लिए राजी नहीं होंगे। वे लोग शूद्रों के घर की साफ-सफाई करने के लिए, उनके घर के जूठे बर्तनों की साफ-सफाई करने के लिए, उनके घर की लालटेन साफ करके जलाने के लिए तैयार नहीं होंगे। वे लोग शूद्रों के घर का लिपा-पोती का काम करने के लिए तैयार नही होंगे। वे लोग रेलवे स्टेशनों पर, बस स्टेशनों पर, माल-धक्के पर कुली, कबाड़ी का काम करने के लिए शरमाते

हैं। इसी प्रकार ब्राह्मण औरतें शूद्रों की नौकरानियाँ होकर शूद्रानियों को नहलाएगी नहीं, उनके बाल-कंघी नहीं कर देंगी। शूद्रों के घर साफ-सफाई का काम नहीं करेंगी। शूद्रानियों के लिए बिछाना नहीं लगाकर देंगी। उनकी साड़ियाँ, उनके कपड़े धोने के लिए राजी नहीं होंगी। उनकी जूतियाँ सँभालने के लिए तैयार नहीं होंगी, शरमाती हैं।

फिर जब वे महाअरि (महार) लोग अपने शूद्र भाइयों को ब्राह्मणों के जाल से मुक्त करने की इच्छा से ब्राह्मणों से प्रतिवाद करने लगे, उन पर हमले करने लगे, तब सभी ब्राह्मण शूद्रों से इतनी नफरत करने लगे कि वे शूद्र का छुआ हुआ भोजन भी खाने से इनकार करते थे। उसी नफरत की वजह से आजकल के ब्राह्मण शूद्रों द्वारा छुआ हुआ भोजन तो क्या, पानी भी नहीं पीते हैं। ब्राह्मणों को किसी शूद्र के द्वारा छुई हुई कोई भी वस्तु नहीं लेनी चाहिए, इसलिए माँगलिक (सोवळे-ओवळे) होने की संकल्पना को जन्म दिया गया और उनमें यह आम रिवाज हो गया। फिर अधिकांश शूद्र-विरोधी ब्राह्मण ग्रंथकारों ने, दूसरों की बात छोड़िए, अपने मन में भी थोड़ी लज्जा नहीं रखी। उन्होंने माँगलिक होने के रिवाज का इतना महत्त्व बढ़ाया कि माँगलिक ब्राह्मण किसी शूद्र का स्पर्श होते ही वह अपवित्र (नापाक), अमाँगलिक हो जाता था। इसके समर्थन के लिए उन्होंने धर्मशास्त्र जैसी कई अपवित्र, भ्रष्ट किताबें लिखी हैं। ब्राह्मणों ने इस बात की भी पूरी सावधानी रखी कि शूद्रों को किसी भी तरह पढ़ना-लिखना नहीं सिखाना चाहिए। उन्हें ज्ञान-ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि कुछ समय बीत जाने के बाद यदि शूद्रों को अपने बीते हुए काल के श्रेष्ठत्व की स्मृतियाँ हो गईं तब वे कभी-न-कभी उनकी छाती नोंचने के लिए कोई भी कसर बाकी नहीं रखेंगे। उनके खिलाफ बगावत, विद्रोह करेंगे, इसलिए उन्होंने शूद्रों को पढ़ने-लिखने से, ज्ञान-ध्यान की बातों से दूर रखने का पूरा षड्यंत्र रचा था। उन्होंने अपने धर्मशास्त्रों में शूद्रों के पढ़ने-लिखने के खिलाफ विधान बनाया। उन्होंने इतना ही नहीं किया बल्कि कोई ब्राह्मण यदि धर्मग्रंथ का अध्ययन कर रहा हो, तो उसके अध्ययन का एक शब्द भी शूद्रों के कान तक नहीं पहुँचना चाहिए, इस बात की भी पूरी व्यवस्था उन्होंने की थी और इस तरह का विधान भी उन्होंने अपने धर्मशास्त्रों में लिख रखा था। इस बात के कई प्रमाण मनुस्मृति में मौजूद हैं। इसी आधार पर आजकल के माँगलिक ब्राह्मण भी उस तरह की अपवित्र, भ्रष्ट किताबों को शूद्रों के सामने नहीं पढ़ते। लेकिन अब समय में कुछ परिवर्तन आ गया है। अब जब कि ईसाई समझी जानेवाली अंग्रेज सरकार की धाक से शिक्षाविभाग के पेटू ब्राह्मणों को अपने मुँह से यह कहने की हिम्मत ही नहीं होगी कि वे शूद्रों को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाएंगे। फिर भी वे लोग अपने

पूर्वजों का लुच्चापन, हरामखोरी लोगों के सामने रखने की हिम्मत नहीं दिखाएँगे। उनमें आज भी यह हिम्मत नहीं है कि शूद्रों को सही समझ देकर अपने पूर्वजों की गलतियों को स्वीकार करें और अपना अवास्तविक महत्त्व न बताएँ। उनको आज भी अपने झूठे इतिहासकार पर गर्व है। वे स्कूलों में शूद्रों के बच्चों को सिर्फ काम-चलाऊ व्यावहारिक ज्ञान की बातें भी नहीं पढ़ाते, लेकिन वे शूद्रों के बच्चों के मन में हर तरह की फालतू देश-अभिमान, देश-गर्व की बातें पढ़ाते रहते हैं और उनको पक्के अंग्रेज 'राजभक्त' बनवाते हैं। फिर वे अंत में उन शूद्रों के बच्चों को शिवाजी जैसे धर्मभोले, अज्ञानी शूद्र राजा के बारे में गलत-सलत बातें सिखाते रहते हैं। शिवाजी राजा ने अपना देश म्लेच्छों से (मुसलमान) मुक्त करवाकर गौ-ब्राह्मणों का कैसे रक्षण किया, इस संबंध में झूठी, मनगढ़ी कहानियाँ पढ़ाकर उन्हें खोखले स्वधर्म (ब्राह्मण-धर्म) के अभिमानी बनाते हैं। ब्राह्मणों के इसी षड्यंत्र की वजह से शूद्र-समाज की शक्ति के अनुसार जोखिम के काम करने लायक विद्वान नहीं बन पाते। इसका परिणाम यह होता है कि सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारी, अधिकारियों की ही भीड़ समा जाती है। सभी सरकारी सेवाओं का लाभ इन्हीं ब्राह्मणों को मिल जाता है। और शूद्र समाज के लोग इन सरकारी नौकरियों में, सरकारी सेवाओं में न आ पाए, इसलिए इतनी सफाई से, चतुराई से जुल्म-ज्यादतियाँ करते हैं कि यदि इस संबंध में पूरी-पूरी हकीकत लिखी जाए, तो कलकत्ते में नील की खेती के बागानों में काम करनेवाले मजदूरों पर अंग्रेज लोग जो जुल्म करते हैं, वह हजार में एक अधन्ना भी नहीं भर पाएगा। अंग्रेजी राज में भी चारों ओर ब्राह्मणों के हाथ में (नाम मात्र के लिए टोपीवाले) सत्ता होने की वजह से वे अज्ञानी और शूद्र रैयत को ही नहीं बल्कि सरकार को भी नुकसान पहुँचाते हैं। और वे लोग आगे सरकार को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। ब्राह्मणों के इस व्यवहार के बारे में सरकार को भी जानकारी है, फिर भी अंग्रेज सरकार अंधे का स्वाँग लेकर केवल ब्राह्मण अधिकारी-कर्मचारियों के कंधों पर अपना हाथ रखकर उनकी नीति से चल रही है। लेकिन अंग्रेज सरकार को ब्राह्मणों की इसी नीति से गंभीर खतरा पैदा होने की संभावना है, इस बात को कोई नकार नहीं सकता। तात्पर्य यह कि ब्रह्मा ने यहाँ के मूल क्षेत्रवासियों को अपना गुलाम बना लेने के बाद इतनी मस्ती में चढ़ गया था कि उपहास करने की दृष्टि से महाअरियों का नाम 'प्रजापति' रखा दिया, यह तर्क निकाला जा सकता है। किंतु ब्रह्मा के बाद आर्य लोगों का मूल नाम 'भट्ट' लुप्त हो गया और बाद में उनका नाम 'ब्राह्मण' हो गया।

परिच्छेद : आठ

[परशुराम, मातृहत्या, इक्कीस बार हमले, राक्षस, खंडेराव ने रावण की मदद ली, नवखंडों की जाणाई, सात देवियाँ (सप्त आसरा), महारों के गले का काला धागा, अतिशूद्र, अछूत, मातंग, चांडाल, महारों को पाँवों तले रौंदना, ब्राह्मणों को गंधर्व ब्याह करने की मनाही, क्षत्रिय बच्चों की हत्या, प्रभु, रामोशी, जिनगर आदि लोग, परशुराम की हार हो जाने पर उसने अपनी ही जान दे दी, और चिरंजीव परशुराम को निमंत्रण आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : प्रजापति (ब्रह्मा) के मरने के बाद ब्राह्मणों का मुखिया कौन था ?

जोतीराव : ब्राह्मणों का मुखिया परशुराम था।

धोंडीराव : परशुराम स्वभाव से कैसा था ?

जोतीराव : परशुराम स्वभाव से उपद्रवी, साहसी, विनाशी, निर्दयी, मूर्ख और नीच प्रवृत्ति का था। उसने जन्म देनेवाली अपनी माता रेणुका की गरदन काटने में भी कोई संकोच महसूस नहीं किया। परशुराम शरीर से मजबूत और तिरंदाज था।

धोंडीराव : उसके शासनकाल में क्या हुआ ?

जोतीराव : प्रजापति (ब्रह्मा) के मरने के बाद शेष महाअरियों ने ब्राह्मणों के जाल में फंसे हुए अपने भाइयों को गुलामी से मुक्त करने के लिए परशुराम से इक्कीस बार युद्ध किया। वे इतनी दृढ़ता से युद्ध लड़ते रहे कि अंत में उनका नाम द्वैती पड़ गया और उस शब्द का बाद में अपभ्रंश 'दैत्य' हो गया। जब परशुराम ने सभी महाअरियों को पराजित किया तब उनमें से कई महावीरों ने निराश होकर, अपने स्नेहियों के प्रदेशों में जाकर अपने आखिरी दिन बिताए। मतलब, जेजोरी के खंडेराव ने जिस तरह रावण का सहारा लिया, उसी प्रकार नवखंडों के न्यायी और सात आश्रय आदि सभी कोंकण के निचले भूप्रदेश में जाकर छुप गए और उन्होंने वहाँ अपने आखिरी दिन बिताए। इससे ब्राह्मणों में नफरत की भावना और भी गहरी

हो गई। उन्होंने नवखंडों का जो न्यायी था, उसका नाम स्त्री के नाम पर निंदासूचक अर्थ में 'नव चिथड़ोंवाली देवी' (नऊ खणाची जानाई)[1] रख दिया और सात आश्रयों का नाम 'सात पुत्रोंवाली माता' (साती असरा)[2] रख दिया। शेष जितने महाअरियों को परशुराम ने युद्ध-भूमि में कैद करके रखा, उन पर उसने कड़े प्रतिबंध लगाकर रखा था। उन महाअरियों को कभी भी ब्राह्मणों के विरुद्ध कमर नहीं कसनी चाहिए, ऐसी शपथ उनको दिलाई गई। उसने सभी के गले में काले धागे की निशानी बँधवाई और उन्हें अपने शूद्र भाइयों को छूना नहीं चाहिए, ऐसा सामाजिक प्रतिबंध लगाया। बाद में परशुराम ने उन महाअरी क्षत्रियों को अतिशूद्र, महार, अछूत, मातंग और चांडाल आदि नामों से पुकारने की प्रथा प्रचलित की। इस तरह के गंदे प्रचलन के लिए दुनिया में कोई मिसाल ही नहीं है। इस शत्रुतापूर्ण भावना से महार, मातंग आदि लोगों से बदला चुकाने के लिए उसने हर तरह से घटिया से घटिया तरकीबें अपनाईं। उसने अपने जाति-बिरादरी के लोगों की बड़ी-बड़ी इमारतों की नींव के नीचे कई मातंगों को उनकी औरतों के साथ खड़ा करके, उनके बेसहाय चिल्लाने से किसी को अनुकंपा होगी, इसके लिए उनके मुँह में तेल और सिंदूर डालकर उन लोगों को जिंदा अवस्था में ही दफनाने की परंपरा शुरू की। जैसे-जैसे मुसलिमों की सत्ता इस देश में मजबूत होती गई, वैसे-वैसे ब्राह्मणों द्वारा शुरू की गई यह अमानवीय परंपरा समाप्त होती गई। लेकिन इधर महाअरियों से लड़ते-लड़ते परशुराम के इतने लोग मारे गए कि ब्राह्मणों की अपेक्षा ब्राह्मण विधवाओं की संख्या ज्यादा हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि उन विधवाओं की व्यवस्था किस तरह से की जाए, इसकी भयंकर समस्या ब्राह्मणों के सामने खड़ी हो गई। अंत में ब्राह्मण विधवा औरतों को पुनर्विवाह करने की मनाही कर दी गई। तब कहीं जाकर उनकी गाड़ी रास्ते पर आई। परशुराम अपने ब्राह्मण लोगों की हत्या से इतना पागल हो गया था कि उसने बाणासुर के सभी राज्यों के क्षत्रियों को समूल नष्ट कर देने के इरादे से अंत में उन महाअरी क्षत्रियों की निराधार गर्भवती विधवा औरतों को, जो अपनी जान बचाने के लिए जहाँ-तहाँ छुप गई थीं, उन औरतों को पकड़-पकड़कर लाने की मुहिम शुरू कर दी। इस अमानवीय शत्रुतापूर्ण मुहिम से नजर बचाकर बचे हुए नन्हे बच्चों द्वारा

---

1. भराडी के पूँगी और वाघ्या के भंडारी को काला धागा है, उसे देखिए। जाणाई देवी को सटवाई, मायराणी, कालकाई की तरह शूद्र देवी कहते हैं।
2. आसरा—जलदेवी। ये सात हैं।

निर्मित कुछ कुल (वंश) इधर प्रभु[1] लोगों में मिलते हैं। इसी तरह परशुराम की इस धूमधाम में रामोशी, जिनगर, तुंबडीवाले और कुम्हार आदि जाति के लोग होने चाहिए, क्योंकि कई रस्म-रिवाजों में उनका शूद्रों से मेल होता है। तात्पर्य, हिरण्याक्ष से बली राजा के पुत्र का निर्वंश होने तक उस कुल को निस्तेज करके उनके लोगों को पूरी तरह से तहस-नहस कर दिया था। इससे अज्ञानी क्षेत्रपतियों के दिमाग पर इस तरह की धाक जम गई कि ब्राह्मण लोग जादू-विद्या में माहिर हैं। वे लोग ब्राह्मणों के मंत्रों से बहुत ही डरने लगे। किंतु इधर परशुराम की मूर्खता की वजह से, उसके धींगामस्ती से ब्राह्मणों की बड़ी हानि हुई। इसकी वजह से सभी ब्राह्मण लोग परशुराम के नाम से घृणा करने लगे। यही नहीं, उस समय वहाँ के एक क्षेत्रपति के रामचंद्र नाम के पुत्र ने परशुराम के धनुष को जनक राजा के घर में भरी सभा में तोड़ दिया। इससे परशुराम के मन में उस रामचंद्र के प्रति प्रतिशोध की भावना घर कर गई। उसने रामचंद्र को अपने घर जानकी को ले जाते हुए देखा तो उसने रामचंद्र से रास्ते में ही युद्ध छेड़ दिया। उस युद्ध में परशुराम की करारी हार हुई। उस पराजय से परशुराम इतना शर्मिंदा हो गया कि उसने अपने सभी राज्यों का त्याग करके अपने परिवारों तथा कुछ निजी संबंधियों को साथ लिया और कोंकण के निचले भाग में जाकर रहने लगा। वहाँ पहुँचने के बाद उसको उसके द्वारा किए गए सभी बुरे कर्मों का पश्चात्ताप हुआ। इस पश्चात्ताप का परिणाम उस पर इतना बुरा हुआ कि उसने अपनी जान कहाँ, कब और कैसे खो दी, इसका किसी को कोई पता नहीं लग सका।

धोंडीराव : सभी ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित अपने धर्मशास्त्रों (धर्मग्रंथ) के आधार पर यह कहते हैं कि परशुराम आदिनारायण का अवतार है। वह चिरंजीवी है। वह कभी भी मरता नहीं। और आप कहते हैं कि परशुराम ने आत्महत्या की है। इसका अर्थ क्या है?

जोतीराव : दो साल पहले मैंने शिवाजी महाराज के नाम एक पँवाड़ा[2] लिखा था। उस पँवाड़े के पहले छंद में मैंने कहा था कि सभी ब्राह्मणों को अपने परशुराम को न्योता देकर बुलाना चाहिए और उसकी उपस्थिति में मेरे सामने इस बात का खुल्लमखुल्ला खुलासा करना चाहिए कि आजकल के मातंग-महारों के

1. बाणासुर की कन्या उषा कृष्ण के प्रद्युम्न नाम के पुत्र को दी गई थी। परभू या प्रभु, गैर ब्राह्मणों की एक जाति—जिसको महाराष्ट्र में सी० के० पी० कहते हैं। यही उत्तर-पूर्व भारत की कायस्थ जाति है। ब्राह्मण लोग इस जाति के लोगों से भी शूद्र जैसा ही व्यवहार करते थे।
2. पँवाड़ा—वीरगाथा।

पूवज परशुराम से इक्कीस बार लड़नेवाले महाअरी क्षत्रिय थे या नहीं। इसकी सूचना ब्राह्मणों को दी गई, लेकिन वास्तविकता यह है कि उन्होंने परशुराम को न्योता देकर नहीं बुलाया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि परशुराम सचमुच में आदिनारायण का अवतार नहीं था और न ही वह चिरंजीवी था। यदि परशुराम आदिनारायण का अवतार होता और चिरंजीवी होता तो ब्राह्मण उसको कब का खोज निकाला होता। और मेरी बात तो क्या, सारी दुनिया के ख्रिस्ती और महम्मदी लोगों के मन का समाधान करके, सभी म्लेच्छ लोगों के विद्रोह को अपनी मंत्रविद्या की सामर्थ्य से तहस-नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ता।

धोंडीराव : मेरे विचार से आपको स्वयं ही एक बार परशुराम को यहाँ बुलाना चाहिए। यदि परशुराम सचमुच में जिंदा है तो वह निश्चित रूप से चला आएगा। आजकल के ब्राह्मण अपने आपको कितना भी विविध-ज्ञानी होने का दावा करते हों, फिर भी उनको परशुराम के मतानुसार, भ्रष्ट और पतित ही मानना चाहिए। इस बात के लिए प्रमाण यह है कि अभी-अभी कई ब्राह्मणों ने शास्त्रविधि के अनुसार करेले खाने का निषेध किया है। लेकिन धर्म-शास्त्रों द्वारा निषिद्ध ठहराए गए मालियों के द्वारा सींचे गए पानी से उत्पन्न गाजरों को छुप-छुपकर खाने की होड़ ब्राह्मणों ने लगा दी थी।

जोतीराव : ठीक है। जो भी कुछ क्यों न हो।

मुकाम सब जगह

चिरंजीव परशुराम अर्थात आदिनारायण के अवतार को

ताल, परशुराम !

तुम ब्राह्मणों के ग्रंथों की वजह से चिरंजीवी हो। करेला कड़वा क्यों न हो, किंतु तुमने विधिपूर्वक करेले खाने का निषेध नहीं किया है। परशुराम, तुमको पहले जैसे मछुओं की लाश से दूसरे नए ब्राह्मण पैदा करने की गरज नहीं पड़ेगी, क्योंकि आज यहाँ तुम्हारे द्वारा पैदा किए गए जो ब्राह्मण हैं, उनमें कई ब्राह्मण विविधज्ञानी हो गए हैं। अब तुम्हें उनको बहुत ज्यादा ज्ञान देने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। इसलिए हे परशुराम ! तुम यहाँ आ जाओ और जिन ब्राह्मणों ने शूद्र मालियों के द्वारा खेत में उत्पन्न गाजरों को छुप-छुपकर खाया है, उन सभी ब्राह्मणों को चंद्रायन प्रायश्चित्त देकर, उन पर तुम वेदमंत्रों के जादू की सामर्थ्य से पहले जैसे कुछ चमत्कार अंग्रेज, फेंच आदि लोगों को दिखा दो, बस हो जाएगा। हे परशुराम, तुम इस तरह मुँह छुपाकर, भगोड़ा बनकर मत घूमा करो। तुम इस नोटिस की तारीख से छह माह के भीतर-भीतर

यहाँ पर उपस्थित हो सके, तब मैं ही नहीं, सारी दुनिया के लोग, तुम सचमुच में आदिनारायण के अवतार हो, ऐसा समझेंगे और लोग तुम्हारा सम्मान करेंगे। लेकिन यदि तुम ऐसा न कर सके तो यहाँ के महार-मातंग हमारे म्हसोबा[1] के पीछे छुपकर बैठे हैं। वे लोग तुम्हारे विविधज्ञानी कहलानेवाले ब्राह्मण बच्चों को खींचकर बाहर ले आएँगे और उनको बेहाल करने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि उनके भांडों के इकतारा (तुनतुना, एकतारी वाद्य) का तार टूट जाएगा और उनकी झोली में पत्थर गिर जाएँगे। फिर उन्हें विश्वामित्र जैसे भूखे, कंगाल रहने पर इतनी मजबूरी का सामना करना पड़ेगा कि उनको कुत्ते का मांस भी खाना पड़ सकता है। इसलिए हे परशुराम, तुम अपने विविधज्ञानी ब्राह्मणों पर रहम खाओ, ताकि उन पर विपत्ति के पहाड न टूट पड़े।

तुम्हारा सत्यरूप देखनेवाला
जोतीराव गोविंदराव फुले

तारीख 1 ली
महीना अगस्त
सन् 1872
पूना, जूनागंज
मकान नं० 527

1. म्हसोबा—अर्थात म्हषासुर, महिषासुर। देवी द्वारा मारा गया एक दैत्य। महिष एक असुर का नाम, जो तमोगुण का प्रतीक है और दुर्गा अपनी शक्ति से इसी का छेदन करती है।

परिच्छेद : नौ

[वेदमंत्र, जादू का प्रभाव, अनछर पढ़कर मारना, भक्ति का दिखावा करना, जप, चार वेद, ब्रह्मजाल, नारदशाही, नया ग्रंथ, शूद्रों को पढ़ने-पढ़ाने पर पाबंदी, भागवत और मनुसंहिता में असमानता आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : सचमुच में आपने उनके मूल पर ही प्रहार किया है। आपके कहने के अनुसार परशुराम मर गया और मिट्टी में भी मिल गया, इसमें कोई संदेह नहीं। किंतु शेष सभी क्षेत्रपतियों के मन पर ब्राह्मणों के मंत्रों का प्रभाव कैसे पड़ा, कृपया आप इस बात को हमें जरा समझाइए।

जोतीराव : क्योंकि उस समय ब्राह्मण लोग युद्ध में हर एक शस्त्र पर मंत्रविधि करके उन शस्त्रों में प्रहार की क्षमता लाए बगैर उनका प्रयोग शत्रु पर करते नहीं थे। उन्होंने इस तरह से जब कई दाँवपेच लड़ाकर बाणासुर की प्रजा और उसके राजकुल को धूल में मिला दिया, उस समय बड़ी आसानी से शेष सभी भोले-भाले क्षेत्रपतियों के दिलो-दिमाग पर ब्राह्मणों की विद्या का डर फैल गया था। इसका प्रमाण इस तरह से दिया जा सकता है कि भृगु नाम के ऋषि ने जब विष्णु की छाती पर लात मारी, तब विष्णु ने (उनके मतानुसार आदिनारायण) ऋषि के पाँव को तकलीफ हो गई होगी, यह समझकर उसने ऋषि के पाँव की मालिश करना शुरू किया। अब इसका सीधा-सा अर्थ स्वार्थ से जुड़ा हुआ है। वह यह कि, जब साक्षात् आदिनारायण ही, जो स्वयं विष्णु है, ब्राह्मण की लात को बर्दाश्त करके उसके पाँव की मालिश की अर्थात् सेवा की, तब हम जो शूद्र लोग हैं, (उनके कहने के अनुसार शूद्र प्राणी) यदि ब्राह्मण अपने हाथों से या लातों से मार-पीटकर हमारी जान भी ले ले, तब भी हमें विरोध नहीं करना चाहिए।

धोंडीराव : फिर आज जिन नीची जाति के लोगों के पास जो कुछ जादू-मंत्र विद्या है, उसको उन्होंने कहाँ से सीख लिया होगा?

जोतीराव : आजकल के लोगों के पास जो कुछ अनछर पढ़ने की, मोहिनी देने की

बंगाली जादूमंत्र विद्या है, उसको उन्होंने केवल वेदों के जादूमंत्र विद्या से नहीं लिया होगा, ऐसा कोई भी नहीं कह सकता है; क्योंकि अब जब कि उसमें बहुत हेरफेर हुई है, बहुत शब्दों के उच्चारणों का अपभ्रंश हुआ है, फिर भी उसके अधिकांश मंत्रों और तंत्रों में 'ओम् नमो, ओम् नमः, ओम ह्रीं-ह्रीं नमः' आदि वेदमंत्रों के वाक्यों की भरमार है। इससे यह प्रमाणित होता है कि ब्राह्मणों के मूल पूर्वजों ने इस देश में आने के बाद बंगाल में सबसे पहले अपनी बस्ती बसाई होगी। उसके बाद उनकी जादू-मंत्र-विद्या वहाँ से चारों ओर फैली होगी। इसलिए इस विद्या का नाम बंगाली-विद्या पड़ा होगा। इतना ही नहीं, बल्कि आर्यों के पूर्वज आज के अनपढ़ लोगों की तरह अलौकिक (चमत्कार) शक्ति का (देव्हारा घूमविणारे) प्रदर्शन करनेवाले भी थे। क्योंकि उस काल में उन लोगों में अलौकिक शक्ति का प्रदर्शन करनेवाले लोगों को ब्राह्मण कहा जाता था। ब्राह्मण-पुरोहित लोग सोमरस नाम की शराब पीते थे और उस शराब के नशे में बड़बड़ाते थे और कहते थे कि 'हम लोगों के साथ ईश्वर (परमात्मा, देव) बात करता है।' उनके इस तरह के कहने पर अनाड़ी लोगों का विश्वास जम जाता था, उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती थी, थोड़ा डर भी उत्पन्न होता था। इस तरह वे इन अनाड़ी लोगों को डरा-धमकाकर उनको लूटते थे। इस तरह की बातें उनके ही वेद-शास्त्रों से सिद्ध होती है।[1] उसी अपराधी विद्या के आधार पर इस प्रगतिशील, आधुनिक युग में आज के ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिए जप, अनुष्ठान, जादू-मंत्र विद्या के द्वारा अनाड़ी माली, कुनबियों को जादू का धागा बाँधकर उनको लूटते हैं, फिर भी उन अनाड़ी अभागे लोगों को उन पाखंडी, धूर्त मदारियों की (ब्राह्मण-पंडित-पुरोहितों की) जालसाजी पहचानने के लिए समय भी कहाँ मिल रहा है। क्योंकि ये अनाड़ी लोग दिन-भर अपने-अपने खेत में काम में जुते रहते हैं और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते हुए सरकार को लगान देते-देते उनकी नाक में दम चढ़ जाता है।

धोंडीराव : मतलब, जो ब्राह्मण यह शेखी बघारते हैं कि ब्रह्मा के मुंह से चार वेद निकले हैं, वेद स्वयंभू है, उनके कहने में और आपके कहने में कोई तालमेल नहीं है?

जोतीराव : तात, इन ब्राह्मणों का यह मत पूरी तरह से मिथ्या है; क्योंकि यदि उनका कहना सही मान लिया जाए, तब ब्रह्मा के मरने के बाद ब्राह्मणों के कई ब्रह्मर्षियों या देवर्षियों द्वारा रचे गए सूक्त ब्रह्मा के मुँह से स्वयंभू निकले हुए

1. कई यूरोपियन ग्रंथकारों की भी यही मान्यता है।

वेदों में क्यों मिलते हैं ? उसी प्रकार चार वेदों की रचना एक ही कर्ता द्वारा एक ही समय में हुई है, यह बात भी सिद्ध नहीं होती । इस तरह का मत कई यूरोपियन परोपकारी ग्रंथकारों ने सिद्ध करके दिखाया है ।

धोंडीराव : तात, फिर ब्राह्मण-पंडितों ने यह ब्रह्मघोटाला कब किया है ?

जोतीराव : ब्रह्मा के मरने के बाद कई ब्रह्मर्षियों ने ब्रह्मा के लेख को तीन हिस्सों में विभाजित किया । मतलब, उन्होंने उसके तीन वेद बनाए । फिर उन्होंने उन तीन वेदों में भी कई प्रकार की हेराफेरी की। उनको पहले की जो कुछ गलत-सलत व्यर्थ की बातें मालूम थीं, उस पर उन्होंने उसी रंग-ढंग की कविताएँ रचकर उनका एक नया चौथा वेद बनाया । इसी काल में परशुराम ने बाणासुर की प्रजा को बेरहमी से धूल खिलाई थी । इसीलिए स्वाभाविक रूप से ब्राह्मण-पुरोहितों के वेदमंत्रादि जादू का प्रभाव अन्य सभी क्षेत्रपतियों के दिलो-दिमाग पर पड़ा । यही मौका देखकर नारद जो हिजड़ों की तरह औरतों में ही अक्सर बैठता-उठता था, उसने रामचंद्र और रावण, कृष्ण और कंस तथा कौरव और पांडव आदि सभी भोले-भाले क्षेत्रपतियों के घर-घर में रात और दिन चक्कर लगाना शुरू कर दिया था । उसने उनके बीवी-बच्चों को कभी अपने इकतारे (वीणा) से आकर्षित किया तो कभी इकतारे के तार को तुन-तुन बजाकर और उनके सामने थइ-थइ नाचते हुए तालियाँ बजाईं और उनको आकर्षित किया । इस तरह का स्वाँग रचाकर और इन क्षेत्रपतियों को, उनके परिवारों को ज्ञान का उपदेश देने का दिखावा करके अंदर-ही-अंदर उनमें आपस में एक-दूसरे की चुगलियाँ लगाकर झगड़े लगवा दिया और सभी ब्राह्मण-पुरोहितों को उसने आबाद-आजाद करा दिया । इसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण ग्रंथकारों ने उस काल में सभी लोगों की नजरों में धूल झोंककर वेदमंत्रों के जादू और उससे संबंधित सारी व्यर्थ बातों का मिलाप करवाकर कई स्मृतियाँ, संहिताएँ, धर्मशास्त्र, पुराण आदि बड़े-बड़े ग्रंथों को अपने घर की चारदीवारों के अंदर बैठ करके ही लिख डाला और उन ग्रंथों में उन्होंने शूद्रों पर ब्राह्मण लोगों के स्वामित्व का समर्थन किया है । उन्होंने उन ग्रंथों में हमारे खानदानी सिपाहगरी के रास्ते में कंटीला खंबा गाड़ दिया और अपनी नकली धार्मिकता का लेप लगा दिया । फिर उन्होंने यह सारा ब्रह्मच्छल बाद में फिर कभी शूद्रों के ध्यान में भी न आने पाए, इस डर से या उन ग्रंथों में मनचाहे परिवर्तन करने की सुविधा हो, इसलिए शूद्रों को ज्ञान-ध्यान से पूरी तरह दूर रखा । पाताल में दफनाए गए शूद्रादि लोगों में से किसी को भी पढ़ना-लिखना नहीं सिखाना चाहिए, इस तरह का विधान मनुसंहिता जैसे ग्रंथों में बहुत ही सूझबूझ और प्रभावी ढंग से लिखकर रखा है ।

धोंडीराव : तात, क्या भागवत भी उसी समय में लिखा गया होगा ?

जोतीराव : यदि भागवत उसी समय लिखा गया होता तो सबके पीछे हुए अर्जुन के जन्मेजय नाम के पड़पोते की हकीकत उसमें कभी न आई होती।

धोंडीराव : तात, आपका कहना सही है। क्योंकि उसी भागवत में कई पुरातन कल्पित व्यर्थ की पुराणकथाए ऐसी मिलती हैं कि उससे इसप-नीति हजारों गुणा अच्छी है, यह मानना पड़ेगा। इसप-नीति में बच्चों के दिलो-दिमाग को भ्रष्ट करनेवाली एक भी बात नहीं मिलेगी।

जोतीराव : उसी तरह मनुसंहिता भी भागवत के बाद लिखी गई होगी, यह सिद्ध किया जा सकता है।

धोंडीराव : तात, इसका मतलब यह कैसे होगा कि मनुसंहिता भागवत के बाद में लिखी गई होगी ?

जोतीराव : क्योंकि भागवत के वशिष्ठ ने, इस तरह की शपथ ली कि मैंने हत्या नहीं की है। सुदामन राजा के सामने लेने की शपथ मनु ने अपने ग्रंथ के 8वें अध्याय के 110वें श्लोक में कैसे ली है ? उसी प्रकार विश्वामित्र ने आपात्-काल में कुत्ते का मांस खाने के संबंध में जो कहा है, उसी ग्रंथ के 10वें अध्याय के 108वें श्लोक में क्यों लिखा है ? इसके अलावा भी मनुसंहिता में कई असंगत बातें मिलती हैं।

परिच्छेद : दस

[दूसरा बलि राजा, ब्राह्मण धर्म की दुर्दशा, शंकराचार्य की बनावटी बातें, नास्तिक मान्यता, निर्दयता, प्राकृत ग्रंथकर्ता, कर्म और ज्ञानमार्ग, बाजीराव पेशवा, मुसलिमों से नफरत और अमेरिकी तथा स्कॉच उपदेशकों ने ब्राह्मणों के कृत्रिम किले की दीवारें तोड़ दीं, आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : तात, अब तो चरम सीमा हो गई, क्योंकि आपने शिवाजी के पँवाड़े की प्रस्तावना में यह लिखा था और सिद्ध किया था कि चार घर की चार ग्रंथकर्ता ब्राह्मण लड़कियों ने मिलकर घर की कोठरी में झूठ-फरेबी का खेल खेला।

जोतीराव : किंतु आगे जब एक दीन (दलितों) का दाता, समर्थक, महापवित्र, सत्यज्ञानी, सत्यवक्ता बलि राजा इस दुनिया में पैदा हुआ, तब उसने हम सभी को पैदा करनेवाला, हम सबका निर्माणकर्ता महापिता जो है, उसका उद्देश्य जान लिया। निर्माणकर्ता द्वारा दिए गए सत्यमय पवित्र ज्ञान और अधिकार को उपभोग करनें का समान अवसर सबको प्राप्त हो, इस-लिए उस बलि राजा ने अपने दीन, दुर्बल और शोषित भाइयों को सभी ब्राह्मणों की अर्थात् बनावटी, दुष्ट, धूर्त, मतलबी बहेलियों की गुलामी से मुक्त करके, न्याय पर आधारित राज्य की स्थापना करके अपनी ज्येष्ठ महि-लाओं के भविष्य की आकांक्षाओं को कुछ हद तक पूरा किया, यह कहा जा सकता है। तात, जहाँ मिस्टर टॉम्स पेंस जैसे बड़े-बड़े विद्वानों के पूर्वजों ने इस बलि राजा के प्रभाव में आकर अपने पीछे की सारी बलाएं दूर करके सुखी हुए, अंत में जब उस बलि राजा को (ईसा मसीह) चार दुष्ट लोगों ने सुली पर चढ़ाया, उस समय सारे यूरोप में बड़ा तहलका मच गया था। करोड़ों लोग उसके अनुयायी हो गए और वे अपने निर्माणकर्ता के शासन के अनुसार इस दुनिया में केवल उन्हीं की सत्ता कायम हो, इस दिशा में रात और दिन प्रयत्नशील रहे। लेकिन इसी समय इस क्षेत्र में कुछ स्वस्थ

वातावरण होने की वजह से यहाँ के कई बुद्धिमान खेतिहरों और किसानों ने उस घर की कोठरी के अंदर की नादान लड़कियों के झूठ-फरेबी खेल को ही तहस-नहस कर दिया। मतलब सांख्यमुनि जैसे बुद्धिमान सत्पुरुषों ने ब्राह्मणों के वेदमंत्र, जादूविधि के अनुसार चमत्कार का प्रदर्शन किया। उसने उन ब्राह्मणों को भी अपने धर्म का अनुयायी बनाया जो पशुओं की बलि चढ़ा करके उत्सव-यात्रा के बहाने गोमांस-भक्षण करते थे। उसी प्रकार जो ब्राह्मण घमंडी, पाखंडी, स्वार्थी, दुराचारी आदि दुर्गुणों से युक्त थे और जिन ग्रंथों में जादूमंत्रों के अलावा और कुछ नहीं था, ऐसे ग्रंथों पर तेल-काजल का लेप लगाकर अर्थात् उन ग्रंथों को नकारते हुए उसने अधिकांश ब्राह्मणों को होश में लाया। लेकिन उनमें से बचे-खुचे शेष कुतर्की ब्राह्मण कर्नाटक में भाग जाने के बाद उन लोगों में शंकराचार्य नाम अपनाकर एक तरह से वितंडा-वादी विद्या जाननेवाला महापंडित पैदा हुआ। उस ब्राह्मणवादी पंडित ने जब यह देखा कि अपने ब्राह्मण जाति के दुष्ट कर्म की धूर्तता की सभी ओर निंदा हो रही है, थू-थू हो रही है और बुद्ध के धर्म का चारों ओर प्रचार हो रहा है, तो उसे अपनी आँखों से यह सब देखा नहीं गया, सहा नहीं गया। उसने यह भी देखा कि अपने लोगों का (ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित) पेट पालने का धंधा ठीक से चल नहीं रहा है, इसलिए उसने एक नया ब्रह्मजाल खोज निकाला। जिन दुष्ट कर्मों की वजह से उनके वेदोंसहित सभी ग्रंथों का बौद्ध जनता ने निषेध किया था, उसका उस शंकराचार्य ने बड़ी गहराई से अध्ययन किया और बौद्धों ने जिन बातों के लिए ब्राह्मणों की आलोचना की थी, उसने उनमें से केवल गोमांस खाना और शराब पीना निषिद्ध मान लिया। लेकिन उसने बाद में अपने सभी ग्रंथों में थोड़ी-बहुत हेराफेरी करके उन सभी में मजबूती लाने के लिए एक नए मत-वाद की स्थापना की। शंकराचार्य की उस विचारधारा को वेदांत या ज्ञानमार्ग कहा जाता है।

बाद में उसने वहाँ शिवलिंग की स्थापना की। इस देश में जो तुर्क आए थे, उसने हिंदुओं के एक वर्ण क्षत्रियों में उन्हें शामिल कर लिया। फिर उसने उनकी मदद से मुसलिमों की तरह तलवार के बल पर बौद्धों को पराजित किया और फिर पुनः उसने अपनी उस शेष जादूमंत्र-विद्या और भागवत की व्यर्थ की पुराण कथाओं का प्रभाव अज्ञानी शूद्रों के दिलो-दिमाग पर थोप दिया। शंकराचार्य के इस हमले में उसके लोगों ने बौद्ध धर्म के कई लोगों को तेली के कोल्हू में ठूँस-ठूँस करके मौत के घाट उतार दिया। इतना ही नहीं, शंकराचार्य के लोगों ने बौद्धों के असंख्य मौलिक और अच्छे-अच्छे ग्रंथों को जला दिया। उसने उनमें से केवल अमरकोश जैसा ग्रंथ अपने उपयोग के लिए बचाया। बाद में जब उस शंकराचार्य के डरपोक चेले पंडित-पुरोहितों

की तरह दिन में ही मशालों को जलाकर, डोली में सवार होकर, चारों ओर सधवा नारी की तरह नोक-झोंक करके नाचते हुए घूमने लगे तो ब्राह्मणों को नंगा नाच करने की पूरी स्वतंत्रता मिल गई। उसी समय मुकुंदराज, ज्ञानेश्वर, रामदास आदि जैसे पायली के पचास ग्रंथकार हुए और बेहिसाब, बेभाव बिक गए। लेकिन उन ब्राह्मण ग्रंथकारों में किसी एक ने भी शूद्रादि-अतिशूद्रों के गले की गुलामी की जंजीरें तोड़ने की हिम्मत नहीं दिखाई, क्योंकि उनमें सभी कर्मों का खुलेआम त्याग करने की हिम्मत नहीं थी। इसलिए उन्होंने उन सभी दुष्ट कर्मों को कर्म-मार्ग और नास्तिक मतों का ज्ञानमार्ग—इस तरह के दो भेद करके उन पर कई पाखंडी, निरर्थक ग्रंथों की रचना की। इस तरह उन्होंने अपनी जाति के स्वार्थों का जो-जान से रक्षण किया और अज्ञानी शूद्रों से लूट-खसोट करके अपनी जाति को खूब खिलाया-पिलाया। लेकिन बाद में उन्होंने पूरी लज्जा-शर्म छोड़ दी और हर रात को जो कुकर्म नहीं करना चाहिए, उसको भी करने लगे। फिर ब्राह्मण लोगों को दिन के एक-चौथाई समय गुजरने तक मुसलिमों का मुँह न देखना चाहिए, रजस्वला स्त्री की तरह घर के घर में ही माँगलिक अवस्था में रहनेवाले ऐसे लोग बाजीराव के दरबार में इकट्ठे होते थे। लेकिन अब समय ने करवट ले ली थी। पहले दिन के बीतने और दूसरे दिन के प्रारंभ में सभी मेहनतखोर ब्राह्मणों को ऐयाशी और गुलछर्रे उड़ाने के लिए जो सुख-सुविधाएँ मिलने वाली थीं, उसके पहले ही अंग्रेज बहादुरों का झंडा चारों ओर लहराने लगा। उसी समय उस बलि राजा के अधिकांश अनुयायी अमेरिकी और स्कॉच उपदेश ने (मिशनरी) अपने-अपने देश की सरकारों की किसी भी प्रकार की परवाह न करते हुए इस देश में आए। बलि राजा ने जो सही उपदेश दिया था, उसे सभी नकली, दुष्ट, धूर्त ब्राह्मणों को प्रमाण द्वारा सिद्ध करके दिखाया और उन्होंने कई शूद्रों को ब्राह्मणों की इस अत्यंत अमानवीय गुलामी से मुक्त किया। उन्होंने शूद्रों के (शूद्रादि-अतिशूद्र) गले में ब्राह्मणों द्वारा सदियों से टाँगी हुई गुलामी की बेड़ियों को तोड़ दिया और उन गुलामी की बेड़ियों को ब्राह्मणों के मुँह पर फेंक मारा। उस समय अधिकांश ब्राह्मण समझ गए कि, अब ये ख्रिस्ती उपदेशक (मिशनरी) उनका नकली प्रभाव अन्य शूद्रों पर बिलकुल टिकने नहीं देंगे। वे उनके सारे ढोल के पोल खोल के रख देंगे, यह उनकी पक्की समझ हो गई थी। इसी डर की वजह से उन्होंने बलि राजा के अनुयायी उपदेशकों और अज्ञानी शूद्रों में साँठ-गाँठ, मेल-मिलाप हो और उन दोनों में गहरी पहचान बने, इससे पहले ही बलि राजा के अनुयायी उपदेशकों और अंग्रेज सरकार को इस देश से ही भगा देने के इरादे से कई हथकंडे

अपनाए। कई ब्राह्मणों ने अपनी खानदानी पाखंडी (वेद) विद्या की मदद से अज्ञानी शूद्रों को उपदेश देना शुरू कर दिया, जिससे उनके मन में अंग्रेज सरकार के प्रति घृणा और नफरत की भावना जाग जाए। लेकिन दूसरी तरफ कुछ ब्राह्मणों ने अंग्रेजी विद्या भी प्राप्त की और उसके माध्यम से ब्राह्मणों के कुछ लोग बाबू, क्लर्क हुए और कुछ अन्य-अन्य सरकारी सेवाओं में गए। इस तरह से ब्राह्मण लोग कई प्रकार का सरकारी काम अपनाकर सभी प्रकार की सरकारी नौकरियों में पहुँचे। अंग्रेजों का सरकारी या घरेलू ऐसा एक भी काम नहीं है जहाँ ब्राह्मण न पहुँचे हों।

परिच्छेद : ग्यारह

[पुराण सुनाना, झगड़ाखोरी का परिणाम, शूद्र संस्थानिक, कुलकर्णी, सरस्वती की प्रार्थना, जप, अनुष्ठान, देवस्थान, दक्षिणा, बड़े कुलनामों की सभाएँ आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : तात, यह बात पूरी तरह सत्य है कि इन अधर्मी मदारियों के (ब्राह्मणों के) झगड़ालू पूर्वजों ने इस देश में आकर हमारे आदि पूर्वजों को (मूल-निवासियों को) पराजित किया। फिर उन्होंने उनको अपना गुलाम बनाया। फिर उन्होंने अपनी बाहुओं को प्रजापति बनाया और उनके माध्यम से उन्होंने जहाँ-तहाँ दहशत फैलाई। इसमें उन्होंने अपना कोई बहुत बड़ा पुरुषार्थ दिखाया है, इस बात को मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। यदि हमारे पूर्वजों ने ब्राह्मणों के पूर्वजों को पराजित किया होता, तब हमारे पूर्वज ब्राह्मणों के पूर्वजों को अपना गुलाम बनाने में क्या सचमुच में कुछ आनाकानी करते ? तात, छोड़ दीजिए इस बात को। बाद में फिर जब ब्राह्मणों ने अपने उन पूर्वजों की धींगामस्ती को, मौका देखकर ईश्वरी धर्म का रूप दे दिया और उस नकली धर्म की छाया में कई ब्राह्मणों ने तमाम अज्ञानी शूद्रों के दिलो-दिमाग में हमारी दयालु अंग्रेज सरकार के प्रति पूरी तरह से नफरत पैदा करने की कोशिश की, मतलब वे कौन-सी बातें थीं ?

जोतीराव : कई ब्राह्मणों ने सार्वजनिक स्थानों पर बनवाए गए हनुमान मंदिरों में रात-रात बैठकर बड़ी धार्मिकता का प्रदर्शन किया। वहाँ उन्होंने गंभीर ज्ञान-दर्शन बताने का झूठा प्रदर्शन किया। वहाँ उन्होंने दिखावे के लिए भागवत जैसे ग्रंथों की दकियानूसी बातें अनपढ़ शूद्रों को पढ़ाईं और उनके दिलो-दिमाग में अंग्रेजों के प्रति नफरत की, घृणा की भावना पैदा की। इन ब्राह्मण-पंडितों ने उन अनपढ़ शूद्रों को मंदिरों के माध्यम से यही पढ़ाया कि बलि के मतानुयायियों की छाया में भी खड़े नहीं रहना चाहिए। उनका इस तरह का नफरत-भरा उपदेश क्या सचमुच में अकारण था ? नहीं,

बिलकुल अकारण नहीं था; बल्कि उन ब्राह्मणों ने समय का पूरा लाभ उठाकर उसी ग्रंथ की बेतुकी बातें पढ़ाकर सभी अनपढ़ शूद्रों के मन में अंग्रेजी राज के प्रति नफरत की भावना के बीज बो दिए। इस तरह उन्होंने इस देश में बड़ी-बड़ी धींगामस्ती को पैदा किया है कि नहीं ?

धोंडीराव : हाँ, तात, आपका कहना सही है। क्योंकि आज तक जितनी भी धींगामस्ती हुई है, उसमें भीतर से कहो या बाहर से, ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित वर्ग के लोग अगुवाई नहीं कर रहे थे, ऐसा हो ही नहीं सकता। इस द्रोह का पूरा नेतृत्व वे ही लोग कर रहे थे। देखिए, उमाजी रामोशी[1] की धींगामस्ती में काले पानी की सजा भोगनेवाले धोंडोपंत नाम के एक (ब्राह्मण) व्यक्ति का नाम आता है। उसी प्रकार कल-परसों के चपाती संग्राम में परदेशी ब्राह्मण पांडे, कोंकण का नाना (पेशवे), तात्या टोपे आदि कई देशस्थ[2] ब्राह्मणों के ही नाम मिलते हैं।

जोतीराव : लेकिन उसी समय शूद्र संस्थानिक शिंदे, होलकर आदि लोग नाना फडणीस से कुछ हद तक सेवक की हैसियत से संबंधित थे। उन्होंने उस धींगामस्ती करनेवालों की कुछ भी परवाह नहीं की और उस मुसीबत में हमारी अंग्रेज सरकार को कितनी सहायता की, इस बात को भी देखिए। लेकिन अब इसे छोड़ दीजिए। इन बातों से हमारी सरकार को ब्राह्मणों की उस धींगामस्ती को तहस-नहस करने के लिए बड़े भारी कर्ज का बोझ भी उठाना पड़ा होगा और उस कर्ज के बोझ को चुकाने के लिए पर्वती[3] जैसे फिजूल संस्थान की आय को हाथ लगाने की बजाय हमारी सरकार ने नए करों का बोझ किस पर डाल दिया ? अपराधी कौन हैं और अपराध न करनेवाले लोग कौन हैं, इसकी पहचान किए बगैर ही सरकार ने सारी जनता पर कर (लगान) लगा दिया; किंतु यह कर इन बेचारे अनपढ़ शूद्रों से वसूल करने का काम हमारी इस मूर्ख सरकार ने किसके हाथों में सौंप दिया, इस बात पर भी हमको

1. उमाजी रामोशी—महाराष्ट्र में उमाजी नाईक नाम का एक आदमी था। वह बड़ा लड़वैया था। उसने अंग्रेजों से भी मुकाबला किया था। लेकिन उमाजी नाईक रामोशी शूद्र जाति में पैदा हुआ था, इसलिए उसको कोई शहीद नहीं मानता। लेकिन जो ब्राह्मण सही में डाकू थे और अंग्रेजों से लड़े, उन्हें शहीद माना गया।
2. देशस्थ—महाराष्ट्र के ब्राह्मणों में देशस्थ ब्राह्मण नाम की एक उपजाति है।
3. पार्वती—पूना का पार्वती देवस्थान, एक संस्थान। इसकी पूजा द्वारा प्राप्त आय केवल ब्राह्मणों पर खर्च होती थी। यहाँ हमेशा ब्राह्मणों को दान दिया जाता था। यहाँ हमेशा ब्राह्मण-भोज चलता था।

सोचना चाहिए। ब्राह्मण लोग अंदर-ही-अंदर शूद्र संस्थानिकों से जी-जान से इसलिए गाली-गलौज कर रहे थे क्योंकि उन्होंने इनकी जाति के नाना फडणीस को उचित समय पर मदद नहीं की, जिसकी वजह से उसकी अंग्रेजों के साथ लड़ते हुए पराजय हुई। अंग्रेज सरकार ने उन लोगों के हाथ में कर-वसूली का काम सौंप दिया, जो शूद्र संस्थानिकों से जी भरकर गाली-गलौज करनेवाले थे, दिन में तीन बार स्नान करके माँगल्यता का ढिंढोरा पिटनेवाले थे, धनलोलुप और ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण कुलकर्णी थे। अरे, इन कामचोर ग्रामराक्षसों को (ब्राह्मण कर्मचारी), इन मूल ब्रह्मराक्षसों को जिस दिन से सरकारी काम की जिम्मेदारी दे दी गई, उस दिन से उन्होंने शूद्रों की कोई परवाह नहीं की। किसी समय मुसलिम राजाओं ने गाँव के सभी पशुओ-पक्षियों की गरदनों को छुरी से काटकर उनको हलाल करने का हुक्म अपनी जाति के मौलानाओं को सौंप दिया था। लेकिन उनकी तुलना में देखा जाए तो स्पष्ट रूप से पता चल जाएगा कि ब्राह्मण-पंडितों ने अपने कलम की नोक पर शूद्रों की गरदनें छांटने में उस मौलाना को भी क़ाफी पीछे धकेल दिया है, इसमें कोई दो राय नहीं है। इसीलिए तमाम लोगों ने सरकार की बिना परवाह किए इन ग्रामराक्षसों को (ब्राह्मणों को) 'कलम कसाई' की जो उपाधि दी है, वह आज भी प्रचलित है। और अपनी मूर्ख सरकार उनका अन्य सभी काम-गारों की तरह तबादला करने की बजाय उनकी राय लेकर अज्ञानी लोगों पर लगान (कर) मुकर्रर करने के कारण नोटिस तैयार करती है। बाद में उसी कुलकर्णी को सभी शूद्र किसानों के घर-घर जाकर नोटिस बाँटने का काम दिया जाता है। उन नोटिसों को घर-घर पहुँचाने के बाद उनसे मिलनेवाले कुलकर्णियों की सिर्फ स्वीकृति लेकर सरकार उनमें से कई नोटिसों को खारिज कर देती है और अनपढ़ लोगों पर लगान बहाल कर देती है। अब इसको कहें भी क्या ?

धोंडीराव : क्या, ऐसा करने से कुलकर्णियों को कुछ लाभ भी होता होगा ?

जोतीराव : उससे उन कुलकर्णियों को कुछ फायदा होता होगा या नहीं, यह वे ही जानते हैं। लेकिन उनको यदि किसी वाहियात फतूरिया से कुछ लाभ न भी होता हो, फिर भी वे उनपर इस तरह की नोटिस भिजवाकर कम-से-कम चार-आठ दिन की रुकावट निश्चित रूप से पैदा करते होंगे और आने-जाने में सारी शक्ति खर्च करवाते होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं। वे उनपर अपना रुतबा जमा करके उनके कामों की उपेक्षा करते होंगे। बाद में उन्होंने शेष सभी काम बगुला भगत की तरह पूरी आत्मीयता से किया होगा। इसीलिए सभी अनपढ़ छोटे-बड़े लोगों और शंकराचार्य जैसे लोगों ने लक्ष्मी की स्तुति की कि "हे हमारी सरकारी सरस्वती मैया, तू अपने कानून से रोकती है

और लाच खानेवालों को और उसी तरह लाचार होकर लाच देनेवाले को दंड देती है, इसलिए तू धन्य है।" इससे कई लोग प्रसन्न हुए और उन्होंने कुछ कुलकर्णियों के घरों पर कई दिनों तक लगातार पैसों की वारिश बरसाई। कुछ लोगों ने इसके खिलाफ शोर मचाया। यदि यह बात सच है तब उसकी पूरी जाँच-पड़ताल करनी चाहिए और ऐसे हरामखोर कुलकर्णियों को किसी गधे पर बैठाकर उनको गाँव के तमाम रास्तों से घुमाने का काम अपनी सरकार का है।

धोंडीराव : तात, सुनिए। ब्राह्मणों ने जो टेढ़ी-मेढ़ी हलचल शुरू की थी, उसको कुछ बुद्धिमान गृहस्थों ने अब अच्छी तरह पहचान लिया है, और उस बली राजा (अंग्रेज सरकार) के अधिकारियो को, मुखियों को इस चालबाजी से अवगत कराया गया। फिर भी सरकार उन पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर ऐसे कलम-कसाइयों को प्रसन्न करने में लगी हुई है। आज के ब्राह्मणों में कई लोग ऐसे हैं जो शूद्रों के श्रमरूप लगान की वजह से बड़े-बड़े विद्वान हुए हैं। लेकिन वे इस उपकार के लिए शूद्रों के प्रति किसी भी प्रकार की कृतज्ञता प्रदर्शित नहीं करते; बल्कि उन्होंने कुछ दिनों तक मनचाहे मौज़-मस्ती की है और अंत में अपनी माँगल्यता का दिखावा करके यह भी सिद्ध करने की कोशिश की है कि उनकी वेदमंत्रादि जादू विद्या सही है। इस तरह की झूठी बातों से उन्होंने शूद्रों के दिलो-दिमाग पर प्रभाव कायम किया। शूद्रों को उनका पिछलग्गू बनना चाहिए, इसके लिए न जाने किस-किस तरह के फाँसें फेंके होंगे। उन्होंने शूद्रों को अपने पिछलग्गू बनाने की इच्छा से उन्हीं के मुँह से यह कहलवाया कि शादावल के लिंगपिंड के आगे या पीछे बैठकर किराए पर बुलाए गए ब्राह्मण-पुरोहितों के द्वारा जप, अनुष्ठान करवाने की वजह से इस साल बहुत बारिश हुई, और महामारी का उपद्रव भी बहुत कम हुआ। इस जप, अनुष्ठान के लिए उन्होंने आपस में रुपया-पैसा भी इकट्ठा किया था। इस तरह उन्होंने जप, अनुष्ठान के आखिरी दिन बैलबंडी पर भात का बली राजा बनवाकर सभी प्रकार के अज्ञानी लोगों को बड़ी-बड़ी, लंबी-चौड़ी झूठी खबरें दिलवाकर, बड़ी-बड़ी यात्राओं का आयोजन करवाया। फिर उन्होंने सबसे पहले अपनी जाति के इल्लतखोर ब्राह्मण-पुरोहितों को बेहिसाब भोजन खिलाया और बाद में जो भोजन शेष बचा उसको सभी प्रकार के अज्ञानी शूद्रों की पंक्तियाँ बिठाकर किसी को केवल मुट्ठी-भर भात, किसी को केवल दाल का पानी, और कइयों को केवल फाल्गुन की रोटियाँ ही परोसी गई। ब्राह्मणों को भोजन से तृप्त कराने के बाद उनमें से कई ब्राह्मण-पुरोहितों ने उन अज्ञानी शूद्रों के दिलो-दिमाग पर अपने वेदमंत्र-जादू का प्रभाव कायम रखने के लिए उपदेश देना शुरू किया हो, तो

इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन वे लोग ऐसे मौके पर अंग्रेज लोगों को प्रसाद लेने के लिए आमंत्रित क्यों नहीं करते ?

जोतीराव : अरे, ऐसे पाखंडी लोगों ने इस तरह चावल के चार दाने फेंक दिए और थू-थू करके इकट्ठे किए हुए ब्राह्मण-पुरोहितों ने यदि हर तरह का रूद्र नृत्य करके भों-भों किया, तब उन्हें अपने अंग्रेज बहादुरों को प्रसाद देने की हिम्मत होगी ?

धोंडीराव : तात, बस रहने दीजिए। इससे ज्यादा और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। एक कहावत है कि 'दूध का जला छाँछ भी फूंक-फूंक कर पीता है।' उसी तरह इस बात को भी समझ लीजिए।

जोतीराव : ठीक है। समझ अपनी-अपनी, खयाल अपना-अपना। लेकिन आजकल के पढ़े-लिखे ब्राह्मण अपनी जादूमंत्र-विद्या का और उससे संबंधित जप-अनुष्ठानों का कितना भी प्रचार क्यों न करें, उस मटमैले को कलई चढ़ाने का कितना भी प्रयास क्यों न करें और तमाम गली-कूचों में से भौंकते हुए क्यों न फिरते रहें, लेकिन अब उनसे किसी का कुछ भी कम-ज्यादा होनेवाला नहीं है। लेकिन अपने मालिक के खानदान को सातारा के किले में कैद करके रखनेवाले नमकहराम बाजीराव (पेशवे) जैसे हिजड़े ब्राह्मणों ने रात और दिन खेती में काम करनेवाले शूद्रों की मेहनत का पैसा लेकर मुँहदेखी पहले दर्जे के जवांमर्द ब्राह्मण सरदारों को सरंजाम बनाया। उन जैसे लोगों को दिए हुए अधिकारपत्र (सनद) के कारणों को देखकर फर्स्ट सॉर्ट टरक्कांड साहब जैसे पवित्र नेक कमिश्नर को भी खुशी होगी, फिर वहाँ दूसरे लोगों के बारे में कहना ही क्या ? उन्होंने पार्वती जैसे कई संस्थानों का निर्माण करके, उन संस्थानों में अन्य सभी जातियों के अंधे, दुर्बल लोगों तथा उनके बाल-बच्चों की बिना परवाह किए, उन्होंने (ब्राह्मणों ने) अपनी जाति के मोटे-ताजे आलसी ब्राह्मणों को हर दिन हर तरह का मीठा-अच्छा भोजन खिलाने की परंपरा शुरू की। उसी प्रकार ब्राह्मणों के स्वार्थी-नकली ग्रंथों का अध्ययन करनेवाले ब्राह्मणों को हर साल यथायोग्य दक्षिणा देने की भी परंपरा शुरू कर दी। लेकिन खेद इस बात का है कि ब्राह्मणों ने जो परंपराएँ शुरू की हैं, केवल अपनी जाति के स्वार्थ के लिए। उन सभी परंपराओं को अपनी (अंग्रेज) सरकार ने जस के तस अभी तक कायम रखा है। इससे हमको यह कहने में क्या कोई आपत्ति हो सकती है कि उसने अपनी प्रौढ़ता और राज-नीति को बड़ा धब्बा लगा लिया है ? उक्त प्रकार का फिजूल खर्च से ब्राह्मणों के अलावा अन्य किसी भी जाति को कुछ भी फायदा नहीं है; बल्कि उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे हराम का खाकर मस्ताए हुए कृतघ्न साँड़ हैं। और ये लोग हमारे अनपढ़ शूद्र दाताओं को अपने चुड़ैल धर्म के गंदे पानी

से अपने पाँव धोकर वही पानी पिलाते हैं। अरे, इन कर्मनिष्ठ ब्राह्मणों के पूर्वजों ने अपने ही धर्मशास्त्रों और मनुस्मृति के कई वाक्यों को काजल पोत-कर ऐसे बुरे कर्म कैसे किए ? लेकिन अब तो उन्हें होश में आना चाहिए और इस काम के लिए अपनी भोली-भाली सरकार की कुछ न सुनते हुए पार्वती जैसे संस्थानों में इन स्वार्थी ब्राह्मणों में से किसी को भी शूद्रों के पसीने से पकनेवाली रोटियाँ नहीं खानी चाहिए। इसके लिए एक जबर्दस्त सार्वजनिक ब्राह्मण सभा की स्थापना करके उनकी सहायता से इस पर नियंत्रण रखना चाहिए; जिससे उनके ग्रंथों का कुछ-न-कुछ दबाव पुनर्विवाह उत्तेजक मंडली पर पड़ेगा, यही हमारी भावना थी। किंतु उन्होंने इस तरह की बड़े-बड़े उपनामों की सभाएँ स्थापित करके उनके माध्यम से अपनी आँखों का मोतियाबिंद ठीक करना तो छोड़ दिया और अज्ञानी लोगों को सरकार की आँखों के दोष दिखाने की कोशिश में लगे रहे। यह हुई न बात कि 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।' इसको अब क्या कह सकते हैं ! अब हमारे अज्ञानी सभी शूद्रों की उस बली राजा के साथ गहरी दोस्ती होनी चाहिए, इसका प्रयास करना चाहिए और उस बली राजा के सहारे से ही इनकी गुलामी की जंजीरें टूटनी चाहिए। ब्राह्मणों की गुलामी से शूद्रों को मुक्ति करने के लिए अमेरिकी स्कॉच और अंग्रेज भाइयों के साथ जो दोस्ती होने जा रही है, उसमें उन्हें कुछ दखलंदाजी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अब उनकी दौड़धूप बहुत हो गई है। अब हम उनकी गुलामी का निषेध करते हैं।

परिच्छेद : बारह

[इनामदार ब्राह्मण कुलकर्णी, यूरोपियन लोगों के उपनिवेशों की आवश्यकता, शिक्षा विभाग के मुँह पर काला धब्बा, यूरोपियन कर्मचारियों का दिमाग कुंठा-ग्रस्त क्यों होता है, आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : तात, लेकिन आपने पहले कहा था कि ऐसा कोई विभाग नहीं है जिसमें ब्राह्मण न हो, फिर चाहे वह सरकारी विभाग हो या गैरसरकारी और इन सबमें मुखिया ब्राह्मण कौन है?

जोतीराव : ये सरकारी पटवारी (वतनदार) ब्राह्मण कुलकर्णी हैं और इनकी जालसाजी के बारे में अधिकांश दयालु यूरोपियन कलेक्टरों को पूरी जानकारी है। इसलिए जब उनको अज्ञानी शूद्रों पर दया आई तो उन्होंने सरकार को रिपोर्ट के बाद रिपोर्ट भेज करके सभी कानूनों के द्वारा कुलकर्णियों को कदम-कदम पर बंधनों में बाँधने की कोशिश की। उनको कानूनों के माध्यम से नियंत्रित रखकर उनके अनियंत्रित व्यवहार को नियंत्रित किया गया। फिर भी इन कलम-कसाइयों का उनके मतलबी धर्म से शूद्रों के संबंध होने की वजह से शूद्रों पर प्रभाव था। इसलिए ये शैतान की तरह अपने स्वार्थी झूठे धर्म की छत्र-छाया में खुले रूप में चौपाल में बैठकर उस बलि राजा के विचारों की आलोचना करके बेचारे अनपढ़ शूद्रों के मन को क्या वे लोग दूषित नहीं करते होंगे? अगर ऐसा न कहें, तो शूद्रों को तो बिलकुल ही न लिखना आता है और न पढ़ना, फिर वे किस वजह से या किस कारण सरकार से इतनी नफरत करने लगे हैं? इसके बारे में यदि तुम्हें कुछ अन्य कारण मालूम हो तो मुझे जरा समझा दो। इतना ही नहीं, तो वे लोग मौका देखकर उसी चौपाल में (चावड़ी) बैठ करके किसी गैरवाजबी सरकारी कानून को लेकर उस पर कई तरह के पैने कुतर्क नहीं देते होंगे? और शूद्रों को सरकार से नफरत करनी चाहिए, इसलिए उनको क्या चोरी-चोरी पाठ नहीं पढ़ाते होंगे? और उनका एक शब्द भी अपनी सजग

सरकार के कान में डाल देने के लिए शूद्र लोग क्या कँरकँपाते[1] नहीं होंगे? चूँकि सभी ऊपरी दफ्तरों के कर्मचारी ब्राह्मण जाति के हैं, इसलिए अब तो अपनी सरकार को होश सँभालना चाहिए। सबसे पहले हर एक गाँव में एक-एक अंग्रेज या स्कॉच गृहस्थ को उनके निर्वाह-योग्य परंपरागत खेतों का इनाम देकर, उन्हें उपदेशकों का काम सौंप देना चाहिए, साथ में यह हिदायत भी कि वे उस-उस गाँव की हकीकत के बारे में करीब-करीब साल में एक रिपोर्ट सरकार को भेजते रहें। यदि इसके अनुकूल कानून बनवाकर बंदोबस्त किया गया, तब आगे किसी समय नाना पेशवा जैसे ब्राह्मण को पुनः जब कभी किसी भी प्रकार का उटाव करने की बात ध्यान में आई और उसने किसी पीर से मिन्नत माँगी या उसने किसी शिवलिंग की यात्रा करके उसके द्वारा रसीला भोजन खिलाने की बजाय चमत्कारिक ढंग से तैयार की गई रोटियाँ निश्चित समय पर गाँव-गाँव में एकसाथ पहुँचाकर, वह प्रसाद अनपढ़ शूद्रों को खिलाकर सरकार के विरुद्ध विद्रोह करवाने की बात सूझी तो इन पटवारी (वतनदार) कुलकर्णियों[2] की एकता बिलकुल किसी काम नहीं आएगी। इस तरह किए बगैर सभी अनपढ़ शूद्रों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा, उनके पाँव इस धरती पर नहीं टिके रहेंगे। इतना ही नहीं, जब वे यूरोपियन उपदेशक सभी शूद्रों को सही ज्ञान देंगे और इनकी आँखें खोल देंगे, तब ये लोग इन ग्रामराक्षसों के नजदीक भी खड़े नहीं रहेंगे। दूसरी बात यह है कि सरकार को अपने ग्राम कर्मचारी (नौकर), पटेल (चौधरी) से लेकर कुलकर्णियों तक के काम की परीक्षा लेनी चाहिए और इस तरह के महत्वपूर्ण कामों को एक ही जाति या विशिष्ट जाति के लोगों के हाथ नहीं सौंपना चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि फौज की तरह इस काम में कुछ विशेष अधिकार की बात पैदा नहीं होगी; बल्कि उसका पूरी तरह से बंदोबस्त हो जाएगा और सभी लोगों में पढ़ने-लिखने की इच्छा अपने-आप पैदा होगी। यदि आवश्यकता हो तो हमारी दयालु सरकार को चाहिए कि शिक्षा विभाग का फिजूल खर्च एकदम बंद कर दे और यह सारा पैसा कलेक्टर के खाते में जमा कर देना चाहिए। फिर हर एक यूरोपियन कलेक्टर की ओर से, जॉरविस साहब की तरह किसी भी प्रकार का पक्षपात न करते हुए, सभी जाति के होशियार छात्रों में से कुछ छात्रों का चुनाव करके, उनको केवल रूखा-सूखा खाना और छोटे-मोटे कपड़ों की व्यवस्था करके, उनके लिए हर कलेक्टर साहब के बंगले के करीब पाठशाला चलानी चाहिए और उन छात्रों को पटेल, कुलकर्णी तथा पंतोजी (पटवारी, पुलिस, पटेल, ग्राम-

1. Chapter IV, The Sepoy Revolt, by Henry mead.

सेवक आदि) के काम की ट्रेनिंग देकर, फिर परीक्षा लेकर, इस तरह के काम सौंप देने चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि ये लोग सभी (ब्राह्मण) कुलकर्णियों की एकता के लिए बदनाम नाना पेशवा जैसे ब्राह्मणों के काम नहीं आएँगे, बल्कि जो लोग अज्ञानी शूद्रों को फँसा करके उनके खेत (वतन) हड़पते होंगे और उन लोगों से हर तरह के झगड़े-फसाद करवाते होंगे, उनको वैसा करने के लिए वक्त ही नहीं मिलेगा। आज तक लाखों रुपया शिक्षा विभाग के माध्यम से खर्च हुआ है, फिर भी उससे शूद्र समाज की संख्या की तुलना में उनमें विद्वानों की संख्या नहीं बढ़ सकी। इतना ही नहीं, महार, मातंग और चमार आदि जातियों में से एक भी पढ़ा-लिखा कर्मचारी नहीं दिखाई दे रहा है। फिर यहाँ एम० ए० या बी० ए० पढ़े-लिखे लोग दवा के लिए भी नहीं मिलेंगे। अरे-रे! अपनी इस सरकार के इतने विशाल शिक्षा विभाग के गोरे चेहरे पर इन काले मुँहवाले ब्राह्मण-पंडितों ने यह कितना बड़ा काला दाग लगाया है? अरे, यह कड़वे करेले हमारी सरकार ने इतने घी में तलकर, शक्कर में घोलकर पकाए, फिर भी उन्होंने अपनी जाति, स्वभाव छोड़ा नहीं और अंत में वे कड़वे करेले की तरह कड़वे ही रहे।

धोंडीराव : तात, आपका कहना सही है। लेकिन ये कुलकर्णी अनपढ़ शूद्रों की भूमि (वतन) को किस प्रकार का फाँसा डालकर हड़पते होंगे?

जोतीराव : जिन शूद्रों को पढ़ना-लिखना बिलकुल ही नहीं आता, ऐसे अनपढ़ शूद्रों को ये कुलकर्णी खोजते रहते हैं और फिर स्वयं उनके साहूकार होकर वे उनसे जब गिरवीखाता लिखवा लेते हैं, उस समय वे अपनी जाति के अर्जनविस से मेल-मिलाप करके उनमें एक तरह की शर्तें लिखवा लेते हैं जो उन शूद्र किसानों के खिलाफ हों और इस कुलकर्णी साहूकार के फायदे की हों। फिर जो शर्तें लिखी जाती हैं, उनको न पढ़ते हुए गलती-सलती बातें पढ़कर सुनाई जाती हैं। फिर उस कागज पर उनके हाथ के अंगूठे के निशान लगाकर अपना बही-खाता पूरा कर लेते हैं। फिर कुछ दिनों के बाद जालसाजी से उन शूद्रों की जमीन-जायजाद लिखी गई शर्तों के अनुसार हड़पते होंगे कि नहीं?

धोंडीराव : तात, आपका कहना बिलकुल सही है। ये लोग जाति से ही कलम-कसाई हैं। लेकिन ये लोग अनपढ़ शूद्रों में किस प्रकार के झगड़े पैदा करते होंगे?

जोतीराव : खेती-बाड़ी, जमीन-जायदाद आदि के संबंध में, सन-त्यौहार, पोला आदि में और होली के दिन होली के बाँस को पहले पूरी आदि कौन बाँधेगा, इस संबंध में शूद्रों के आपस में जो झगड़े-फसाद होते हैं, इनमें ब्राह्मण कुलकर्णियों का हाथ नहीं होता है, वे लोग इन झगड़े-फसादों को करवाने में

जिम्मेदार नहीं होते, इस तरह के कुछ उदाहरण तुम वास्तव में दिखा पाओगे ?

धोंडीराव : तात, आपकी बात से मैं इनकार नहीं कर सकता, लेकिन शूद्रों के आपस में इस तरह के झगड़े-फसाद करवाने में इन ब्राह्मण-कुलकर्णी आदि कलम-कसाइयों को क्या मिलता होगा ?

जोतीराव : अरे, जब कई घरंदाज अनपढ़ शूद्रों के घराने मन-ही-मन द्वेष की अग्नि में जलकर आपस में एक-दूसरे से लड़ते होंगे, तब अंदर-ही-अंदर से इन कलम-कसाइयों सहित अन्य ब्राह्मण कर्मचारियों के घर इस आग में तपते-तपते जलकर क्या नष्ट नहीं हुए होंगे ? अरे, इन कलम-कसाइयों के नारद-शाही की वजह से स्थानीय (मुल्की) फौजदारी और दिवाणी विभाग (खाता) का खर्च बेहद बढ़ गया है और वहाँ के अधिकांश कर्मचारी, मामलेदार से लेकर ग्रामसेवक तक, सभी अपने 'तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात'—इस असली गायत्री मंत्र से बेईमानी करते हैं। इसके संबंध में 'चिरी मिरी देव, चिरी मिरी देव'—इस यवनी (विदेशी) गायत्री का उपदेश उन पवित्र पुरोहितों के अपनाने की वजह से ब्राह्मण वकीलों की दलाली काफी बढ़ गई । फिर यह बताओ कि वे बड़ी-बड़ी कोर्ट-कचहरियों में बैठकर जोर-जोर से हँसी के फव्वारे छोड़ते हुए घूमते हैं कि नहीं ? इसके अलावा मुंसिफ नवाब के सरंजाम कितने बड़े हैं, इसका हिसाब दो । इतना बंदोबस्त होने के बावजूद भी गरीब लोगों को न्याय सस्ता और आसानी से मिलता भी है या नहीं ? इसी वजह से गाँव-खेड़ों के सभी लोगों को मिलाकर एक कहावत प्रसिद्ध हुई है। वह कहावत यह है कि 'सरकारी विभागों से अपना काम करवाना हो तो काम करनेवाले ब्राह्मण कर्मचारियों के हाथ में अमुक-तमुक दिए बगैर वे हम जैसे गरीबों के काम को हाथ ही नहीं लगाते । उनकी झोली में डालने के लिए घर से कुछ-न-कुछ साथ में ले लो, तब कहीं काम के लिए बाहर निकलो ।'

धोंडीराव : तात, यदि ऐसा ही होता हो, तब तो गाँव-खेड़ों के तमाम शूद्र लोगों को यूरोपियन कलेक्टरों से अकेले में मिलकर उनको अपनी शिकायतें क्यों नहीं बतानी चाहिए ?

जोतीराव : अरे, जिनको बेर की गांड़ किधर होती है, यह मालूम नहीं, ऐसे डर-पोक खिलौनों को ऐसे महान कर्मचारियों के सामने खड़े होने की हिम्मत कैसे होगी ? और ये लोग अपनी शिकायतें सही ढंग से उनके सामने क्या बता पाएंगे ? ऐसी हालत में किसी लंगोट बहादुर ने बड़ी हिम्मत से, किसी बुटलेर की मदद से, यूरोपियन कलेक्टर से अकेले में मिलकर और उनके सामने खड़े होकर यह कहे कि 'ब्राह्मण कर्मचारियों के सामने हमारी कोई सुनवाई

नहीं होतीं,' तब इतने चार शब्द कहने की इन कलम-कसाइयों को भनक भी लग गई तो समझ लो, हो गया इसका काम तमाम। फिर उस अभागे आदमी के नसीब ही फूट गए, समझ लेना चाहिए, क्योंकि वे लोग कलेक्टर, कचहरी के अपनी जाति के ब्राह्मण कर्मचारी (बाबू) से लेकर रेव्हेन्यू के या जज के ब्राह्मण कर्मचारी तक—सभी के सभी—अंदर-ही-अंदर उस यवनी गायत्री की वरदी घुमा देते हैं, फिर आधे कलम-कसाई तुरंत हर तरह के दस्तावेजों के साथ पुरावे लेकर वादी के (साक्षीदार) गवाहदार बन जाते हैं और आधे कलम-कसाई वादी के विरुद्ध हर तरह के दस्तावेजों के साथ पुरावे लेकर प्रतिवादी के गवाहदार बन जाते हैं। ये लोग उनके झगड़े में इतनी उलझन पैदा कर देते हैं कि उसमें सत्य क्या है, यह पहचान पाना भी मुश्किल हो जाता है। इस सत्य-असत्य को खोज निकालने के लिए बड़े-बड़े विद्वान यूरोपियन कलेक्टर और जज लोग अपनी सारी अक्ल खर्च कर देते हैं, फिर भी उनको छिपे हुए रहस्य का कुछ भी पता नहीं चलता, और न ही कुछ हाथ लगता है; बल्कि वे उस शिकायत करनेवाले लंगोटधारी को ही यह कहने में लज्जा का अनुभव नहीं करते कि 'तू ही बड़ा शरारती है।' और अंत में उसके हाथ में नारियल की खाली टोकरी देकर उसको फजीहत होने के लिए घर पर भेज देते होंगे कि नहीं? अंत में ब्राह्मण कर्मचारियों की इसी प्रकार की प्रवृत्ति की वजह से कई गरीब किसान शूद्रों के मन में यह बात आती होगी कि यहाँ हमारे किसी शिकायत पर कोई सुनवाई नहीं है। इसलिए बड़ी मजबूरी में आकर उन्होंने अपनी ही खुदकशी की होगी कि नहीं? इनमें से कई लोगों ने डाकू और लुटेरों का जीवन अपनाया होगा और अपनी ही जान को तबाह किया होगा कि नहीं? इनमें से कइयों के दिलो-दिमाग में असंतोष की भावना भड़क उठी होगी और फिर वे पागलपन के शिकार बन गए होंगे कि नहीं? और इनमें से कइयों ने अपनी दाढ़ी-मूँछें बढ़ाई होंगी और अधपगले होकर रास्ते में जो भी कोई मिल जाए उसको अपनी शिकायत सुनाते-कहते फिरते होंगे कि नहीं?

---

1. कुलकर्णी—कुलकर्णी, कर्णिक, पटवारी, तलाटी आदि शब्द समानार्थक हैं। गाँव के चौधरी या प्रधान का कारकुन। गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब रखनेवाला एक छोटा सरकारी कर्मचारी। कुल का मतलब जमीन (खेत) का हिस्सा और करण का मतलब है मेहनताना। उस समय ऊँची जाति के ही लोग कुलकर्णी, पटवारी आदि होते थे। आज ब्राह्मणों तथा कायस्थों में कुलकर्णी, कर्णिक सरनेम (कुलनाम) हैं।

परिच्छेद : तेरह

[तहसीलदार, कलेक्टर, रेव्हेन्यू, जज और इंजीनियरिंग विभाग के ब्राह्मण कर्मचारी आदि के संबंध में ।]

धोंडीराव : तात, इसका मतलब यह हुआ कि ब्राह्मण लोग मामलेदार आदि होने की वजह से अनपढ़, अज्ञानी शूद्रों को नुकसान पहुँचाते हैं ?

जोतीराव : आज तक जो भी ब्राह्मण मामलेदार हुए हैं, उनमें से कई मामलेदार अपने बुरे करतूतों की वजह से सरकार की नजर में अपराधी सिद्ध हुए हैं और सजा पाने के काबिल हुए हैं । वे ब्राह्मण मामलेदार अपना काम करते समय इतनी दुष्टता से बर्ताव करते थे और गरीब लोगों पर इतना अमानवी जुल्म ढाते थे कि उन दास्तानों का एक ग्रंथ लिखा जा सकता है । अरे, इस पूना जैसे शहर में ब्राह्मण मामलेदार कुलकर्णी से लिखवाकर लाई हुई लायकी दिखाए बगैर बड़े-बड़े साहूकारों की भी जमानत स्वीकार नहीं करते । फिर वहाँ गरीबों के प्रति हमदर्दी, अपनापन कौन दिखाएगा ? अरे, ये कुलकर्णी लोग लायकी का प्रमाणपत्र देते समय अपना चक्कर चलाते होंगे कि नहीं ? उसी प्रकार इस शहर की म्युनिसिपालिटी किसी मकान-मालिक को उसके पुराने मकान की जगह पर नया मकान बनाने की तब तक अनुमति नहीं देती जब तक ब्राह्मण मामलेदार द्वारा उस नगर के कुलकर्णी का अभिप्राय समझ नहीं लिया जाता । अरे, उस कुलकर्णी के पास उस नगर का नक्शा होने के बावजूद नई खरीदी करनेवालों के नाम मिला करके हर साल उसकी एक नकल मामलेदार के दफ्तर में लिखवाकर रखने का कोई रिवाज ही नहीं है और न कोई कारण भी । फिर उस जगह के संबंध में कुलकर्णी का अभिप्राय आवश्यक और सच है, यह कैसे मानना चाहिए ? इन तमाम बातों से इस तरह की शंका पैदा होती है कि ब्राह्मण मामलेदारों ने अपनी जाति के कलम-कसाइयों का हित-साधन के लिए इस व्यवस्था को बरकरार रखा होगा । इससे तुम ही सोच करके देखो कि जहाँ यूरोपियन लोगों की बस्तियों के करीब पूना जैसे

शहर में ब्राह्मण मामलेदार इस प्रकार की बेपरवाही से अपनी जाति के कलम-कसाइयों की रोटी पकाते हैं, तब गाँव-खेड़ों में उनका कितना जबर्दस्त जुल्म रहता होगा ? यदि इस बात को हम लोग सच न मानें तब ये जो अधिकांश देहातों के अज्ञानी, अनपढ़ शूद्रों के समूह अपने बगल में अपने कपड़े-लत्ते दबाकर ब्राह्मण कर्मचारियों के नाम से चिल्लाते हुए घूमते दिखाई देते हैं, क्या यह सब झूठ है ? इन्हीं लोगों में से कुछ लोग कहते हैं कि 'ब्राह्मण कुलकर्णी की वजह से ही ब्राह्मण मामलेदार ने मेरा अर्ज समय पर स्वीकार नहीं किया। इसीलिए प्रतिवादी ने मेरे पक्ष के सभी गवाह बदल दिए और मेरी ही जमानत करवाई गई।' कुछ लोग कहते हैं कि 'ब्राह्मण मामलेदार ने मेरी अर्जी ले ली और कुछ समय के लिए उसने मेरी अर्जी को अंदर-ही-अंदर दबा करके रख दिया और मेरे प्रतिवादी का अर्ज दूसरे दिन लेकर मेरे चल रहे काम से मुझे उजाड़ दिया। और इस तरह उसने मुझे भिखारी बना दिया।' कोई कहता है कि 'ब्राह्मण मामलेदार ने, मैं जैसा बोल रहा था, उस प्रकार से लिखा ही नहीं और बाद में उसी जबानी से मेरे सारे झगड़े को इस तरह खानाखराब कर दिया कि अब मैं पागल होने की स्थिति में पहुँच गया हूँ।' कोई कहता है कि 'मेरे प्रतिवादी ने ब्राह्मण मामलेदार की सलाह पर मेरे अच्छी तरह चल रहे काम को बंद करवा दिया और उसके मेरे खेत में अपना हल जोतने का काम शुरू करते ही मैं उस ब्राह्मण मामलेदार के पास जा पहुंचा और मैंने उसको बड़ी नम्रता से भूमि को स्पर्श करके प्रणाम किया और उससे एक शब्द भी न बोलते हुए मैंने केवल उसके हाथ में अपनी अर्जी दे दी और मैं तुरंत चार-पाँच कदम पीछे हट गया। मैं उसके सामने अपने दोनों हाथ जोड़कर बड़े ही दीन-दुखी भाव में काँपते हुए खड़ा रहा। फिर कुछ ही देर में उस दुष्ट ने मेरी ओर ऊपर-नीचे देखकर झट से उस अर्जी को मेरी ओर फेंक दिया—यह कारण दिखाकर कि मैंने कोर्ट का अपमान किया है, उसने मुझे ही दंडित किया। लेकिन उस दंड-राशि को देने की मेरी क्षमता नहीं होने की वजह से मुझे कुछ दिन के लिए जेल में बंद रहना पड़ा। इधर प्रतिवादी ने बोने के लिए तैयार किए हुए मेरे खेत में अपना अनाज बो दिया और उस खेत को अपने अधिकार में ले लिया, जिसकी वजह से मैंने बाद में कलेक्टर साहब को दो-तीन अर्जियाँ दीं और उनको हर बात से सूचित किया, लेकिन मेरी सभी अर्जियाँ वहाँ के ब्राह्मण क्लर्क ने कहाँ दबा करके रख दीं कि कुछ पता ही नहीं चल रहा है। अब इसका क्या किया जा सकता है ?' कोई कहता है कि 'ब्राह्मण क्लर्क ने मेरी अर्जी कलेक्टर को पढ़कर दिखाते समय वहाँ की मुख्य बातों को हटा करके, ब्राह्मण मामलेदार द्वारा दी गई अर्जी निकालकर वहाँ जस का तस रखवा दिया।' कोई कहता है कि 'मेरी

अर्जी के आधार पर कलक्टर ने मौखिक रूप में जो बातें लिखने के लिए उस ब्राह्मण क्लर्क को कहा था, उसने कलेक्टर के बताए आदेश के विरुद्ध आर्डर लिखा। लेकिन उस आर्डर को कलेक्टर के सामने पढ़ते समय उसने कलेक्टर के बताए अनुसार ही बराबर पढ़कर सुना दिया और फिर उस निकालपत्र पर उसके हस्ताक्षर लेकर, वह निकालपत्र जब मुझे मामलेदार के द्वारा प्राप्त हुआ, तब उस पत्र को देखकर मैं अपने माथे को पीटता ही रह गया और मैंने मन-ही-मन में कहा कि हे ब्राह्मण कर्मचारी, तुम लोग अपना लक्ष्य पूरा किए बगैर चुप नहीं रह सकते।' कोई कहता है कि 'जब मेरी कलेक्टर साहब के पास कुछ भी सुनवाई नहीं हुई, तब मैंने रेव्हेन्यू साहब को दो-तीन अर्जियां भेज दीं। लेकिन मेरी वे सभी अर्जियाँ वहाँ के ब्राह्मण क्लर्क लोगों ने कोशिश करके फिर उस साहब की ओर से पुनः कलेक्टर के ही अभिप्राय के लिए लौटा दीं। बाद में कलेक्टर के ब्राह्मण कर्मचारियों ने मेरे सभी कागजात घुमा-फिराकर कलेक्टर साहब को पढ़कर सुना दिए और यह कहकर कि मैं बड़ा शिकायतखोर आदमी हूँ, उन्होंने मेरी अर्जी के पिछले पन्ने पर उस कलेक्टर से अभिप्राय लिखवाकर रेव्हेन्यू साहब को गलत जानकारी दी। अब तुम ही बताओ, ऐसे करनेवालों के साथ क्या करना चाहिए?' कोई कहता है कि 'मेरा केस शुरू होते ही, अटर्नी द्वारा बीच में ही मुँह मारने की वजह से जज साहब कहने लगे, 'चुप रहो, बीच में मत बोलो।' बाद में उन्होंने स्वयं ही मेरे सभी कागजात पढ़ लिए। लेकिन कागजातों को वह बेचारे क्या करेंगे? क्योंकि पहले ही कलेक्टर-कचहरी के सभी ब्राह्मण कर्मचारियों ने कुलकर्णियों की सूचना के अनुसार मेरे पूरे केस का स्वरूप ही बदल दिया था।' कोई कहता है कि 'आज तक सभी ब्राह्मण कर्मचारियों के देवपूजा के कमरे के मंत्रोच्चारों के अनुसार उनके घर भरते-भरते हमारे घर उजड़ गए, हम बर्बाद हो गए। हमारे खेत नीलाम किए गए। हमारी जमीन-जायदाद चली गई। हमारा अनाज गया, हमारा अनाज से भरा बारदाना लुट गया। हमारे घर की हर चीज लूट ली गई और हमारे बीवी-बच्चों के बदन पर सोने का फूटा भी नहीं बचा। अंत में हम सब लोग भूख और प्यास से मरने लगे। तब मेरे छोटे भाइयों ने मिट्टी-गाड़े का काम खोजा और हम सभी सड़क के काम पर टोकरियाँ ढोने के लिए जाने लगे। वहाँ भी सभी ब्राह्मण कर्मचारी किसी काम को हाथ नहीं लगाते थे। केवल हर दिन सुबह और शाम को एक बार काम पर जाकर हाजिरी देते थे। बाद में किसी घटिया मराठी अखबार में अंग्रेज सरकार या उसके धर्म की यदि आलोचना, नुक्ताचीनी की गई हो, तो उसका मतलब जाते-जाते हम अज्ञानी, अनपढ़ शूद्र मजदूरों को समझाया करते और बाद में अपने घर लौट जाते थे। और सरकार भी ऐसे घटिया

लोगों को मेहनत करनेवाले मजदूरों से भी ज्यादा, डबल तनख्वाह देती है, फिर भी किसी मजदूर ने तनख्वाह (मजदूरी) लेने के बाद उस ब्राह्मण कर्मचारी के हाथ पर कुछ रुपया-पैसा रख दिया, तब तो कोई बात नहीं, यदि उसने उसके हाथ पर कुछ भी रुपया-पैसा न छोड़ा तो उसकी खैर नहीं। वह ब्राह्मण कर्मचारी दूसरे दिन से ही अपने से बड़े साहब को उस मजदूर के बारे में गलत-सलत बातें बता करके उस मजदूर के नाँगे लगाए जाते हैं। इतना ही नहीं, कोई ब्राह्मण कर्मचारी उस मजदूर से कहता है कि, तू सरकारी काम करने के बाद पत्रालियों के लिए बड़े और पलस के पान या पान की डालियाँ शाम को घर लौटते समय लाकर मेरे घर पर डाल देना। कोई ब्राह्मण कर्मचारी कहता है कि आम की डालियाँ शाम को मेरे घर पर डाल देना। कोई ब्राह्मण कहता है कि मुझे कुछ पत्ते लाकर देना। कोई कहता है कि आज रात को मैं गाँव में उस लेन-देन करनेवाली विधवा के घर में नाश्ता-पानी करने के लिए जानेवाला हूँ। इसलिए तू खाना खाकर मेरे निवास पर आकर मेरे परिवार के साथ सारी रात रहकर, वहीं सो जाना; लेकिन दूसरे दिन काम पर जाने के लिए भूलना नहीं; क्योंकि कल शाम को ही बड़े इंजीनियर साहब यहाँ अपना काम देखने के लिए आनेवाले हैं, इस प्रकार का इत्तिला राव साहब ने लिखकर भेजा है।' इस तरह से ब्राह्मणों द्वारा अंदर-ही-अंदर जो परेशानियाँ भोगनी पड़ती हैं[1], उसके बारे में मुझे मेरे भाई मेरे घर आकर बताते रहते हैं और आँखों से आँसू बहाते रहते हैं।

वे कहते हैं कि 'तात, हम क्या करें ! ये सभी ब्राह्मण अठारह जाति के गुरु हैं। ये लोग अपने-आपको सभी वर्णों के गुरु समझते हैं। इसलिए ये जैसा भी बर्ताव करें, हम शूद्रों को उनको एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए। शूद्रों को उनकी नुक्ताचीनी नहीं करनी चाहिए। यह अधिकार उनको नहीं है, यही उनके धर्मशास्त्रों का कहना है। धर्मशास्त्र कुछ भी कहे, लेकिन हमारे पास इस मर्ज का कोई इलाज नहीं है। यदि मैं अंग्रेजी बोलना सीख गया होता तो मैं ब्राह्मणों के सभी कारनामे, करतूतें, लफ्फाजी, ठगी आदि सभी बातें अंग्रेज साहब लोगों को बता दिया होता और उनके द्वारा ही इन लोगों को मजा चखाया होता।'

इसके अलावा इंजीनियर विभाग के सभी ब्राह्मण कर्मचारियों की लुच्चागीरी के बारे में ठेकेदार लोग इतना कुछ बताते हैं कि उसपर एक स्वतंत्र किताब लिखी जा सकती है। इसलिए इस बात को मैं यहीं समाप्त कर देता हूँ।

तात्पर्य, ऊपर लिखी गई तमाम दलीलों में जो भी आपको सच लगे, उसके बारे में गंभीर रूप से सोचना चाहिए और उसका पूरी तरह से

बंदोबस्त[1] भी करना चाहिए तथा उन तमाम कुरीतियों को जड़-मूल से, सामाजिक जीवन से समाप्त कर देना चाहिए, यही हमारी सरकार का धर्म है।

1. इसके बारे में 231 नं० पृष्ठ पर 'इंजीनियर विभाग' पर जो पँवाड़ा लिखा गया है, उसको पढ़िए।

परिच्छेद : चौदह

[यूरोपियन कर्मचारियों का निष्क्रिय बनना, सामंतों (ब्राह्मण खोत) का वर्चस्व, पेंशन लेकर सरकारी नौकरी से मुक्त हुए यूरोपियन कर्मचारियों द्वारा सरकार के दरबार में गाँव-गाँव की हकीकत बताए जाने की आवश्यकता, धर्म और जाति के अहंकार आदि के संबंध में।]

धोंडीराव : तात, यदि इस प्रकार का अनर्थ सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारियों का वर्चस्व होने की वजह से हो रहा हो, तब यूरोपियन कलेक्टर वहाँ बैठकर क्या कर रहे हैं? वे ब्राह्मणों की लुच्चागीरी के संबंध में सरकार को रिपोर्ट क्यों नहीं कर रहे हैं?

जोतीराव : अरे, इन ब्राह्मण कर्मचारियों के इस रवैये के कारण उनकी टेबल पर इतना काम पड़ा हुआ रहता है कि वे लोग उसमें से कुछ जरूरी काम कर लेते हैं। केवल मराठी कागजातों पर दस्तखत करते-करते उनकी नाक में दम आ जाता है। इसलिए उन बेचारों को इन तमाम अनर्थों की खोजबीन करके उस संबंध में सरकार को रिपोर्ट करने के लिए समय भी कहाँ है? इतना सब होने पर भी, मैं यह सुन रहा हूँ कि कोंकण के अधिकांश दयालु यूरोपियन कलेक्टरों ने अज्ञानी शूद्रों पर ब्राह्मण जमींदारों (खोत)[1] की ओर से जो जुलम

1. महाराष्ट्र में मराठा शासनकाल में और खास तौर पर पेशवाई के काल में खोती-पद्धति का उदय हुआ है। इसमें खोत ब्राह्मण होता था जो एक गाँव या इस तरह कई गाँवों की भूमि का स्वामी होता था। इस खोत का काम यही था कि शूद्रों को जमीन जोतने-बोने के लिए देना और फसल के समय किसानों से तीन-चौथाई अनाज जबरन ले लेना। शूद्र किसानों पर इसका अपना वर्चस्व चलता था। इतना ही नहीं, बल्कि यह भी कहा जाता है कि शूद्र किसानों की बहुओं को शादी के बाद की पहली रात इसी खोत के बंगले पर गुजारनी पड़ती थी। इसलिए इस अमानवीय खोती-प्रथा के विरुद्ध म० जोतीराव फुले से लेकर शाहू महाराज तक सभी ने आवाज बुलंद की थी और डॉ० बाबा साहब अंबेडकर ने बंबई असेंबली में इस खोती-प्रथा के विरुद्ध कानून बनवाया था।

ढाए जा रहे हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए अज्ञानी शूद्रों के पक्ष में स्वयं ब्राह्मण जमींदारों के (खोत) प्रतिवादी होकर वे सरकार में उस संबंध में प्रयास कर रहे हैं। लेकिन इसी समय सभी ब्राह्मण जमींदारों ने (खोत) अमेरिकी स्लेव्ह (गुलाम) होल्डर का अनुकरण करते हुए अपने मतलबी धर्म की सहायता से अज्ञानी, अनपढ़ शूद्रों में सरकार के विरोध में गलत-सलत बातें प्रचारित कीं। इसकी वजह से अधिकांश अज्ञानी शूद्रों ने यूरोपियन कलेक्टरों के विरोध में संघर्ष करने की तैयारी की। उन्होंने सरकार को कहा कि हम लोगों पर ब्राह्मण जमींदारों का (खोत) जो अधिकार है, उसको वैसे ही रहने दिया जाए। यहाँ के ब्राह्मण-जमींदारों ने (खोत) अज्ञानी, अनपढ़ शूद्रों को शैतानों की तरह अपनी मुट्ठी में रखा और अपनी इस भोली-भाली सरकार को अज्ञानी, अनपढ़ शूद्रों के विरोध में मानसिक रूप से खड़ा कर दिया। ब्राह्मण खोतों की इस तरह की चालबाजी की वजह से उस परहितकारी यूरोपियन कलेक्टर पर किस तरह की स्थिति गुजर रही है, वह देखिए।

धोंडीराव : इस तरह अज्ञानी शूद्र ब्राह्मणों के बहकावे में आकर अपना चारों ओर से नुकसान कर लेते हैं, यह अच्छी बात नहीं है। इसी तरह से आगे किसी समय उन्होंने ब्राह्मणों के बहकावे में आकर सरकार के विरोध में अपना हाथ खड़ा किया तब उनकी बड़ी हानि होगी, क्योंकि शूद्रों को ब्राह्मण-पंडितों-पुरोहितों की दासता से मुक्त होने का इससे अच्छा मौका पुनः प्राप्त होना बहुत ही मुश्किल है। इसलिए शूद्रों के हाथ से इस तरह का अनर्थ न हो, इसलिए आपको कुछ उपाय सूझ रहे हों तो एक बार जाकर अपनी दयालु सरकार को समझाकर देखिए, क्योंकि अज्ञानी, अनपढ़ शूद्रों को बताने से कोई फायदा नहीं। यदि इसके उपरांत भी शूद्र समाज के लोग मूर्ख के मूर्ख ही बने रहना चाहते हैं तो उसके लिए आप भी क्या करेंगे ?

जोतीराव : इसके लिए उपाय के तौर पर मेरा यह भी कहना नहीं है कि अपनी दयालु सरकार को सबसे पहले ब्राह्मण समाज की (जन) संख्या के अनुपात में सभी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारियों की नियुक्ति नहीं करनी चाहिए, लेकिन मेरा कहना यह है कि यदि उसी अनुपात में शेष सभी जातियों के कर्मचारी न मिलते हों तो सरकार को चाहिए कि वह उनके स्थान पर केवल यूरोपियन कर्मचारियों की नियुक्तियाँ करे। मेरे कहने का मतलब यह है कि फिर सभी ब्राह्मण कर्मचारियों को सरकार और अज्ञानी शूद्रों का नुकसान करने का मौका भी नहीं मिलेगा। दूसरी बात यह है कि सरकार को केवल उन यूरोपियन कलेक्टरों को, जिन्हें अच्छी तरह से महाराष्ट्र भाषा (मराठी भाषा) बोलना आता है, उन सभी को उम्रभर के लिए पेंशन देकर

वहीं तमाम गांव-खेड़ों में रहनेवाले अज्ञानी, अनपढ़, डरपोक और ब्राह्मण-पंडित-पुरोहितों के हाथ के खिलौने बने हुए शूद्रों में मिल-जुलकर रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए और फिर उन्हें सभी ब्राह्मण-कुलकर्णी आदि कर्मचारियों की चालाकी पर कड़ी नजर रखनी चाहिए। पेंशन-प्राप्त अधिकारियों के द्वारा हमेशा वहाँ की छोटी-मोटी गतिविधियों की रिपोर्ट मंगवानी चाहिए। इसका परिणाम यह होगा कि वहाँ के सरकारी शिक्षा विभाग के ब्राह्मण कर्मचारियों की लुभावनी चालाकी का तो पर्दाफाश हो ही जाएगा, साथ ही पिछले कुछ दिनों में सारे शिक्षा विभाग की जो भी दुर्दशा हुई है, उसका भी पूरी तरह से बंदोबस्त हो जाएगा। इस तरह तमाम अज्ञानी शोषित शूद्रों को यथार्थ का पता चलते ही वे लोग इन ब्राह्मण-पुरोहितों के कुतर्की अधिकारों का पूरी तरह से निषेध करेंगे और ये अज्ञानी शूद्र लोग अपनी अंग्रेज़ी सरकार के उपकारों को कभी भूलेंगे नहीं, इस बात का मुझे पूरा विश्वास है। क्योंकि हम शूद्रों के गले में सदियों से इन ब्राह्मण-पंडित-पुरोहितों द्वारा बाँधी गई गुलामी की जंजीरें जल्दी ही किसी के द्वारा खुल जाना संभव नहीं है।

धोंडीराव : तात, फिर आप अपने बचपन में अखाड़े खेलने और निशाने पर गोली दागने की कसरत किसलिए कर रहे थे?

जोतीराव : अपनी दयालु अंग्रेज सरकार को मार भगाने के लिए।

धोंडीराव : तात, लेकिन आपने इस तरह की दुष्ट मसलहत कहाँ से सीखी?

जोतीराव : दो-चार पढ़े-लिखे, सुधरे हुए ब्राह्मण विद्वानों से लेकर आज के सुधारणावादी (लेकिन घर में चूल्हे के पास) ब्राह्मणों तक सभी लोग इसका कारण यह बताते हैं कि 'अपने में ही अधिकांश जाति के लोग अनादि-सिद्ध धर्म के बारे में अज्ञानी हैं। इसलिए अपने सभी लोगों की एकता समाप्त हो गई है। इसी की वजह से अपने में ही कई प्रकार के जाति-भेद पैदा हो गए। अपने में ही इस तरह का बिखराव आने की वजह से अपना राज-काज अंग्रेजों के हाथ में चला गया और वे लोग अब हमारे अज्ञानी, भोले-भाले लोगों का अपने देश के प्रति जो अभिमान है, वह समाप्त हो, इसलिए उनको अपने मतलबी धर्म का आधार दिखाकर अपने गुरुभाई (धर्मबंधु) बना रहे हैं। इसलिए हम सभी जाति के लोगों में अपनी एकता कायम होनी चाहिए। इसके बगैर इन अंग्रेज लोगों को अपने देश से निकाल बाहर करने की शक्ति हम लोगों में आएगी नहीं और इस तरह किए बगैर हम लोगों का अमेरिकी, फ्रांस और रशियन लोगों की

बराबरी में आना कदापि संभव नहीं है।' यह उन्होंने मुझे टॉम्स पेन्स[1] आदि ग्रंथकारों की किताबों के कई वाक्य उद्धरण स्वरूप देकर सिद्ध करके दिखाया है। इसी की वजह से मैं इस तरह से मूर्खतापूर्ण आचार कुछ दिनों तक अपने बचपन में करता रहा था। लेकिन बाद में मैं उन्हीं ग्रंथों के सहारे गंभीर रूप से सोचने लगा, तब कहीं इन पढ़े-लिखे ब्राह्मणों के मतलबी मलहम-पट्टी का सही अर्थ मेरे ध्यान में आया। वह सही अर्थ यह है कि 'हम सभी शूद्र लोग अंग्रेजों के गुरुभाई (धर्मबंधु) होते ही उनके पूर्वजों के तमाम ग्रंथों का (धर्मशास्त्रों का) निषेध करेंगे और उससे उनके जाति-अहंकार को ठेस पहुँचेगी। इस तरह उसका तुरंत परिणाम यह होगा कि उनके हरामी लोगों को हम शूद्रों के श्रम की रोटियाँ खाने को नहीं मिलेंगी। इस प्रकार ब्रह्मा के बाप को भी यह कहने की हिम्मत नहीं होगी कि शूद्रों से ब्राह्मण ऊँचे वर्ण के हैं। अरे, जिन लोगों के पूर्वजों को ही देशाभिमान शब्द बिलकुल मालूम नहीं था, उन लोगों ने उस शब्द का इस तरह से अर्थ किया, इसके लिए हमको बहुत आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है। अंग्रेज लोगों ने वास्तव में बलि राजा आने के पहले देशाभिमान शब्द का अर्थ ग्रीक लोगों से पढ़ा था। लेकिन बाद में जब वे उस बलि राजा के अनुयायी हुए, तब से उनमें यह सद्गुण इतना बढ़ा कि उनकी बराबरी अन्य किसी भी धर्म का स्वाभिमानी व्यक्ति नहीं कर सकता था। यदि उनको देखना ही है तो अमेरिका के बलि राजा के मतानुयायी जॉर्ज वाशिंगटन की तुलना (योग्यता) का आदमी देखना चाहिए। यदि ऐसे महापुरुष की योग्यता का आदमी देखना संभव न हो तब उन्हें फ्रांस के बलि राजा के मतानुयायी लफेटे की योग्यता का आदमी देखना चाहिए। अरे, यदि इन पढ़े-लिखे विद्वानों के पूर्वजों को स्वदेशाभिमान वास्तव में मालूम होता, तो अपनी किताबों में, अपने धर्मशास्त्रों में अपने ही देशबंधुओं (शूद्रों) को पशु से भी नीच समझने के बारे में लेख नहीं लिखे होते। वे ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित वर्ग के लोग मैला खानेवाले पशु का गोमूत्र पीकर पवित्र होते हैं, लेकिन शूद्रों के हाथ का साफ-सुथरे झरने का पानी पीने से अपने-आपको अपवित्र समझते हैं। देखिए, इन पढ़े-लिखे विद्वानों के पूर्वजों द्वारा क्रिश्चियन लोगों के पवित्र देशाभिमान के विरुद्ध उपस्थित किया हुआ अपवित्र देशाभिमान! हमको यदि किसी की बदौलत समझा होगा, तो वह अंग्रेजों की बदौलत। और ऐसे

1. टॉम्स पेन—एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी विचारक। उनके 'मनुष्य के हक' (Rights of Man) नाम के ग्रंथ से म० जोतीराव फुले बहुत ही प्रभावित थे।

परोपकारी लोगों को, मतलब, हम सभी को ब्राह्मणों की गुलामी से मुक्त करनेवाले लोगों को, अपने देश से भगा देने की उन ब्राह्मण विद्वानों की कसरत में ऐसा कौन है जो शामिल होना चाहेगा? अरे, ऐसा कौन मूर्ख आदमी है जो अपने रक्षकों के विरुद्ध ही अपना हाथ उठाने की हिम्मत करेगा? लेकिन मैं तुमको इतना स्पष्ट रूप से बता देना चाहता हूँ कि अंग्रेज लोग आज हैं, कल नहीं रहेंगे। वे लोग हमेशा-हमेशा के लिए हम लोगों का साथ देंगे, ऐसी बात नहीं है। इसलिए जब तक उन अंग्रेज लोगों की सत्ता इस देश में है, तब तक हम सभी शूद्र लोगों को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी ब्राह्मण-पंडित-पुरोहितों की परंपरागत (धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक) गुलामी से मुक्त होना चाहिए, और इसी में हम सभी की बुद्धिमानी है। भगवान ने एक बार शूद्रों पर दया करके अंग्रेज बहादुरों के हाथ से ब्राह्मण नाना साहेब पेशवा के विद्रोह को चकनाचूर करवा दिया, यह अच्छा हुआ, वरना उन शादावल के लिंग के इर्दगिर्द रुद्र करनेवाले पढ़े-लिखे ब्राह्मणों ने आज तक कई महारों को ब्राह्मणी ढंग की धोती पहनने की वजह से या कीर्तनों में संस्कृत श्लोकों का पठन-पाठन करने की वजह से काला पानी दिखा दिया होता, इसमें कोई संदेह नहीं।

परिच्छेद : पंद्रह

[सरकारी शिक्षा विभाग, म्युनिसिपालिटी, दक्षणा प्राइज कमिटी और ब्राह्मण अखबारवालों की एकता तथा शूद्रों-अछूतों के बच्चों को लिखना-पढ़ना नहीं सीखना चाहिए, इसलिए ब्राह्मणों द्वारा रचाए गए षड्यंत्र आदि के संबध में।]

धोंडीराव : सरकारी बुनियादी शिक्षा विभाग के ब्राह्मण कर्मचारी गुलाबी बेईमानी करते हैं, इसका क्या मतलब है?

जोतीराव : फिलहाल जिस किताब की वजह से ब्राह्मणों के सभी ग्रंथों में, शास्त्रों में, साहित्य में जो बेईमानीपूर्ण बातें लिखी गई हैं, उसका रहस्य खुल जाएगा और उनके पूर्वजों का भंडाफोड़ होगा; उनकी बेइज्जती होगी, इस बात से वे लोग भयग्रस्त हो गए हैं। उन्होंने अपनी भोली-भाली सरकार से कभी-कभी अकेले में मिलकर और कभी-कभी अखबारों के द्वारा तरह-तरह की गुलाबी, रंगीन मसलनें देकर उनके अधिकार में जितनी सरकारी पाठशालाएँ हैं, उन सभी में सरकारी बुनियादी शिक्षा विभाग द्वारा उस किताब पर बहिष्कार घोषित करवा दिया है। अरे, यदि ऐसे प्रगतिशील युग में, उनके शिष्य कहलानेवाली सरकार ने चार स्वार्थी तथाकथित प्रगतिशील ब्राह्मणों की गुलाबी दलीलें सुनकर तमाम सरकारी शिक्षा विभाग से उस तरह की महत्त्वपूर्ण किताब को पाठ्यक्रम से निकाल बाहर किया, तब हम क्या कहें? पहले के जमाने में किन्हीं अज्ञानी अधिकारियों ने चार धर्मभ्रष्ट, पाखंड़ी पुरोहितों के आग्रह के खातिर उस तरह का उपदेश देनेवाले उपदेशक को सूली पर चढ़ा दिया था, इसलिए ब्राह्मण-पंडितों-पुरोहितों की, बलि धर्मशास्त्रों की पोल खोलनेवाली किताब को स्कूलों के पाठ्यक्रम से बहिष्कृत कर दिया गया, तब हमें भी क्यो आश्चर्य लगना चाहिए?

धोंडीराव : तात, लेकिन इसमें सरकार का क्या दोष है, इसके बारे में जरा समझाइए।

जोतीराव : इस बात को हम कैसे मानें कि इसमें सरकार का कुछ भी दोष नहीं

है ? क्योंकि सरकार ने जिन तथाकथित प्रगतिशील ब्राह्मणों की दलील पर उस तरह के सत्य को कहनेवाली किताब को स्कूलों के पाठ्यक्रम से निकाल बाहर किया, उस किताब का विरोध करनेवाले लोगों द्वारा तैयार की हुई किताबें सरकारी शिक्षा विभाग के द्वारा स्कूलों के अभ्यासक्रमों में लगवाकर, फिर उन्हीं लोगों को ही शूद्रों के स्कूलों में शिक्षक के रूप में नियुक्त करना, क्या यह उचित है ? चूँकि इसके बारे में सोच-विचार करने के बाद यह सिद्ध होता है कि कल तक उस किताब को जिन प्रतिवादियों ने सरकारी शिक्षा विभाग से बहिष्कृत करवाई, उन्हीं लोगों द्वारा तैयार की हुई सभी नई किताबें शिक्षा विभाग से बहिष्कृत करने की बजाय, सरकार उनको अनुदान-बख्शीश स्वरूप बड़ी-बड़ी रकमें देकर, उन लोगों को ही सभी सरकारी स्कूलों में शिक्षक के रूप में नियुक्त करके उनको उस पवित्र किताब के विरुद्ध शूद्रों को मुँह से उपदेश देने का अवसर क्यों दे रही है ? इसलिए हमारी भोली-भाली सरकार के लिए उस पवित्र किताब की तरह ही सरकारी शिक्षा विभाग के उन सभी प्रतिवादियों को उनकी किताबों के साथ निकाल-बाहर करना संभव न हो तो हमारी सरकार को कृपया सभी शिक्षा विभाग एक साथ बंद कर देना चाहिए जिससे ये लोग अपने-अपने घरों में जाकर आराम से बैठ जाएँगे और कम-से-कम यह होगा कि हम शूद्रों पर जो करों का बोझ लद्ता जाता है, वह कम हो जाएगा। क्योंकि शिक्षा विभाग के एक प्रमुख ब्राह्मण कर्मचारी को हर साल कम-से-कम सात हजार रुपया तनख्वाह देनी पड़ती है। अब सुलतानी रही नहीं; किंतु असमानी मेहर हुई तब बताइए कि इतनी रकम तैयार करने के लिए शूद्रों के कितने परिवारों को एक साल तक दिन-रात खेती में जुते रहना पड़ता होगा ? कम-से-कम एक हजार शूद्र परिवार इसमें जुतते ही होंगे !

दूसरी बात, इस मुआवजे के प्रमाण में इस बृहस्पति (ब्राह्मण) से शूद्रों को सही में कुछ लाभ भी होता है ? अरे, हर दिन चार पैसा कमानेवाले शूद्र मजदूरों को लहलहाती धूप में सूरज के निकलने के समय से लेकर सूरज के डूबने तक सड़क पर मिट्टी की टोकरियाँ सिर पर ढोनी पड़ती हैं। उस बेचारे को कहीं बाहर जाने के लिए एक पल की भी फुरसत नहीं मिलती और दूसरी ओर बिना काम किए, बगैर शारीरिक श्रम के हर दिन बीस रुपये मिलनेवाले ब्राह्मण कर्मचारियों को स्कूलों में खुली जगह पर कुर्सी में बैठने का काम करना पड़ता है। वे लोग म्युनिसिपालिटी के मेहमान बनकर हर दिन सुबह और शाम को धूप-गर्मी का माहौल समाप्त हो जाने के बाद बाहर घूमने के लिए निकल पड़ते हैं। उनके बाहर घूमने के लिए निकलने का उद्देश्य उन्हेंअपने सभी परिचितों से मेल-मिलाप के लिए जाना होता है। इसलिए वे लोग

सज-धज के, बड़े नखरे में घोड़े की गाड़ी में सवार होकर शहर के रास्तों पर लोगों की दहलीज़-खलिहान देखते हुए अपनी अकड़ दिखाते रहते हैं। लेकिन उनको यह सब अकड़ दिखाने के लिए फ़ुरसत कहाँ से मिल जाती है? अरे, उन्होंने शहर के लोगों को अभी तक यह नहीं बताया कि शिक्षा से क्या-क्या लाभ होते हैं; लेकिन उनको अपना इस तरह का नखरा दिखाते हुए शहर की सड़कों पर घूमने में बड़ा मजा आता है, बड़ा गौरव लगता है। लेकिन फिर भी मिशनरियों का हर माह दस रुपये माहवार पानेवाला उपदेशक इन ब्राह्मण-पंडित-पुरोहितों से हजार गुना अच्छा है। ये लोग उस मिशनरी उपदेशक के पाँव की धूल की भी बराबरी करने योग्य नहीं हैं; क्योंकि जिस शहर में वह (ख्रिस्ती) मिशनरी उपदेशक रहता है, उस शहर के सभी छोटे-बड़ों को यह मालूम रहता है कि वह एक धर्मोपदेशक है। किंतु यह ब्राह्मण शिक्षक जिस मकान में रहता है, उस मकान के नीचे के मकान में रहनेवाले किराएदार को भी मालूम नहीं रहता कि यह कौन तिस्मारखां है। अरे, यह ब्राह्मण शिक्षक अपने ऊपरवाले यूरोपियन कर्मचारी के पास हर दिन इधर-उधर की चार गप्पें लगाकर, मन चाहे तब घंटा-दो घंटा स्कूल में बच्चों को पढ़ाकर, उनको साल में दो-चार लिखित रिपोर्ट कर देता है। मतलब, उसका काम हो गया। और ऐसे लोगों को ही चार पढ़े-लिखे लोग ईमानदार नौकर और देश-भक्त कहते हैं। अरे, इन बिकाऊ ब्राह्मण नौकरों ने आज तक शिक्षा विभाग के लाखों रुपया खा लिए हैं। लेकिन सच कहता हूँ, उनके हाथ से न तो किसी अछूत को शिक्षा मिली और न शूद्रों को। उन्होंने उनमें से किसी एक को भी आज तक म्युनिसिपालिटी का सदस्य नहीं बनाया। इससे अब तुम ही सोचो कि इस शिक्षा विभाग में जितने ब्राह्मण कर्मचारी हैं, वे सभी वफादार नौकर अपने देश के अज्ञानी अछूतों के प्रति कितनी हमदर्दी दिखाते हैं! इतना ही नहीं, ये देशभक्त, म्युनिसिपालिटी में मुख्य अधिकारी होने पर भी, पिछले साल के पानी के अकाल में अछूतों को पीने के लिए सरकारी बावली का पानी भरने में कोई मदद नहीं की। इसलिए अछूतों का म्युनिसिपालिटी में सदस्य होना कितना आवश्यक है, इसके बारे में अब तुम्हीं सोच सकते हो।

धोंडीराव : तात, आपका कहना एकदम सच है। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। किंतु मैंने सुना है कि म्युनिसिपालिटी में फिलहाल शूद्रों में से कई सदस्य इतने विद्वान हैं कि वे अपना मत देते समय 'अरे गोविंदा'[1] कहलानेवाले यंत्र की तरह अपनी गरदन हिलाकर उनकी हाँ-में-हाँ मिला देते हैं, क्योंकि वहाँ खुद के हस्ताक्षर करनेवालों की ही पहले कमी, फिर वहाँ शेष सभी इने-गिने पूज्य कहे जानेवाले लोग रहे। फिर ऐसे शूद्र सदस्यों की कमिटी में कुर्सी

1. गरदन हिलानेवाले नंदी बैलों की तरह।

पर बैठकर अपनी गरदन हिलाकर हस्ताक्षर करने योग्य कुछ लोग क्या अछूतों में मिल जाएँगे ?

जोतीराव : ऐसे शूद्र सदस्यों से भी कई गुना अच्छी तरह लिखने-बोलनेवाले कई अछूत लोग मिलेंगे। लेकिन ब्राह्मणों के स्वार्थी, नकली, पाखंडी धर्मग्रंथों, धर्मशास्त्रों की वजह से सभी अछूतों को छूना पाप समझा गया। इसकी वजह से स्वाभाविक रूप से उन बेचारों को शूद्र सदस्यों की तरह सभी लोगों में मिल-जुलकर अमीर होने की सुविधा कहाँ उपलब्ध हो सकती है ! उनको आज भी गधों पर बोझ लादकर अपना, अपने परिवार का पेट पालना पड़ रहा है।

धोंडीराव : तात, सभी जातियों का अलग-अलग संख्या-प्रमाण देखने से म्युनिसिपालिटी में विशेष रूप से किस जाति के सदस्यों की संख्या ज्यादा दिखाई देती है ?

जोतीराव : ब्राह्मण जाति की।

धोंडीराव : तात, इसीलिए इस म्युनिसिपालिटी में बेगारियों और भंगियों को छोड़कर ब्राह्मण कर्मचारियों की ही संख्या ज्यादा है। इनमें से कुछ जलप्रदाय विभाग में काम करनेवाले ब्राह्मण कर्मचारी थे। वे भयंकर गर्मी के दिनों में अपनी जाति के ब्राह्मणों के घरों के टंकियों (हौद) में मनचाहे पानी भर देते थे और उस पानी का उपयोग वहाँ के इर्द-गिर्द के सभी पड़ोसी ब्राह्मणों के धोती-कपड़े-बर्तन आदि धोने के लिए होता था और ढेर सारा पानी व्यर्थ में भी बहता था। लेकिन जहाँ-जहाँ गरीबों की बस्तियाँ हैं, जिन-जिन मोहल्लों में गरीब शूद्रों की बस्तियाँ हैं, उन सभी मोहल्लों की टंकियों में (हौद) दोपहर के बाद भी पानी की बूँद नहीं गिरती थी। दोपहर में राह चलते राहगीर को अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी वहाँ मिलना भी दरकिनार। फिर वहाँ के लोगों को कपड़ा-लत्ता धोने के लिए, बाल-बच्चों सहित नहाने के लिए पानी कहाँ से मिलेगा ? इसके अलावा ब्राह्मणों की बस्तियों में नई टंकियाँ कितनी बनाई गई हैं ! उधर जूनागंज पेठ[1] (मंडी) आदि मोहल्लों के लोगों ने कई सालों से माँग कर रहे थे कि उनके मोहल्ले में पानी की टंकी बनवाई जाए, लेकिन म्युनिसिपालिटी ने उनकी बात पर, उनके चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया। यहाँ ब्राह्मण सदस्यों की संख्या ज्यादा होने की वजह से उन बेचारे गरीबों की कई वर्षों तक कुछ सुनवाई ही नहीं हुई। लेकिन अंत में, मतलब, पिछले साल जब पानी का अकाल पड़ा, तब मीठगंज के महार-मातंगों ने काले हौद को छूकर वहाँ से पानी भरना शुरू कर दिया। तब कहीं उस म्युनिसिपालिटी को होश आया और उसने इन लोगों की सुधि ली। इस

1 पूना शहर की एक बस्ती का नाम।

म्युनिसिपालिटी ने इतना बेलगामी खर्च उस काम पर किया कि वह उस म्युनिसिपालिटी के मुखिया की समझबूझ को और उस के हालात को शोभा ही नहीं देता। छोड़िए इन बातों को, लेकिन म्युनिसिपालिटी में इतनी बेबंदशाही होने पर भी उसके बारे में मराठी अखबारों के पत्रकार सरकार को क्यों आगाह नहीं कर रहे हैं?

जोतीराव : अरे, सभी मराठी अखबारों के संपादक ब्राह्मण होने की वजह से उनको अपनी जाति के लोगों के विरुद्ध लिखने के लिए हाथ नहीं चल रहा है। जब यूरोपियन मुखिया था, उस समय वह इन ब्राह्मणों की चतुराई चलने नहीं देता था। उस समय सभी ब्राह्मण संगठित होकर उनपर यह आरोप लगाने लगते थे कि उनके ऐसा करने से हम सभी प्रजा का इस तरह से नुकसान हुआ है। इस प्रकार ये ब्राह्मण लोग उनके विरुद्ध इस तरह गलत-सलत अफवाएँ फैलाकर उनको इतना त्रस्त कर देते थे कि उनको अपने मुखिया-पद से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ता था और वे आगे इस म्युनिसिपालिटी का नाम लेना भी छोड़ देते थे। लेकिन अपनी दयालु सरकार भी उन सभी ब्राह्मण अखबारों की बात को सुन करके, उन खबरों को सच मान करके कह देती थी कि उस लेख में सभी शूद्रों और अछूतों की बातें व्यक्त हो गई हैं। लेकिन ऐसा समझने में हमारी भोली-भाली सरकार की बहुत बड़ी गलती है। उसको इतना भी मालूम नहीं कि सभी ब्राह्मण अखबारवालों और शूद्र तथा अछूतों की जनम-जनम में भी ऐसे काम में मुलाकात नहीं होती। उनमें से अधिकांश अछूत ऐसे हैं जिनको यही नहीं मालूम कि आखिर अखबार किस बला का नाम है, सियाल या कुत्ता, या बंदर, यह सब कुछ भी मालूम नहीं। फिर ऐसे अपरिचित अनजान अछूतों के विचार इन सभी माँगलिक अखबारों को कहाँ से और कैसे मालूम होते हैं? उन्होंने सरकार का मजाक करके अनपढ़ लोगों के दिलों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, उनके प्रति झूठी हमदर्दी दिखाकर, अपने पेट पालने के लिए उन्होंने इस तरह का नया तरीका खोज निकाला है! यदि ऐसा न कहें, तब तमाम सरकारी विभागों में ब्राह्मण जाति के कर्मचारियों की ही भर्ती होने की वजह से सभी शूद्रों और अछूतों का भयंकर नुकसान हो रहा है। लेकिन उनको इसके बारे में जाँच-पड़ताल करने की फुरसत ही नहीं मिल रही है, इस बात को क्या हम सच मान सकते हैं? नहीं। क्योंकि सात समुद्र पार लंदन शहर की रानी सरकार के मुख्य-प्रधान अपने सपने में हिन्दुस्थान के बारे में किस-किस प्रकार की बातें बरगलाते रहे हैं, इस संबंध में छोटी-मोटी खबरें अखबारों में छपती रहती हैं। हमारा कहने का मतलब यह है कि यह सब कहने के लिए उनको कहाँ से फुरसत मिलती है! छोड़िए इन बातों को भी। फिर भी किसी मराठी ईसाई

अखबारवालों ने यह लिखा कि म्युनिसिपालिटी में गरीबों को दाद नहीं दी जाती, उनकी वहाँ कोई सुनवाई नहीं होती। इस तरह की खबर छपने के बाद सभी मराठी अखबारों की इस तरह की खबरें सारांश रूप में अंग्रेजी में अनुवाद करके सरकार को दिखाने का काम म्युनिसिपालिटी के ही किसी एक ब्राह्मण सदस्य को सौंप दिया गया है। लेकिन वे लोग इस तरह की रिपोर्ट को म्युनिसिपालिटी में अपने कंधे-से-कंधा मिलाकर बैठनेवाले जाति-भाइयों की परवाह न करते हुए उनके (अपनी जाति के लोगों के) विरुद्ध सरकार के सामने क्या रख पाएँगे?

धोंडीराव : तात, इस तरह चारों ओर सभी क्षेत्रों में ब्राह्मणों का वर्चस्व, बहुलता होने की वजह से ही शेष सभी जाति के लोगों का नुकसान हो रहा है। इसलिए यदि आप इस संबंध में एक छोटी-सी किताब लिखकर 'दक्षणा-प्राइज' कमिटी को पेश कर दीजिए। मतलब, उस किताब की वजह से सरकार की बंद आँखें खुल जाएँगी।

जोतीराव : ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित (जोशी) अपने मतलब धर्म के गपोड़े से अज्ञानी शूद्रों को किस-किस तरह बहकावे में लाकर, फुसला करके खाते-पीते हैं और ईसाई मिशनरी अपने निस्वार्थ धर्म की सहायता से अज्ञानी शूद्रों को सही ज्ञान देकर उनको किस प्रकार से सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं, आदि तमाम बातों के बारे में मैंने एक छोटा-सा नाटक लिखा है। वह नाटक सन् 1855 में 'दक्षणा-प्राइज' कमिटी को भेजा था; लेकिन वहाँ भी इसी प्रकार के जिद्दी ब्राह्मण सदस्यों के दुराग्रह की वजह से यूरोपियन सदस्यों की एक भी न चल सकी। तब उस कमिटी ने मेरे इस नाटक को नापसंद किया। अरे, इस 'दक्षणा-प्राइज' कमिटी को म्युनिसिपालिटी की ही छोटी बहन कहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। उस 'दक्षणा-प्राइज' कमिटी को शूद्रों को प्रेरित करना चाहिए था। शूद्रों को लिखने की प्रेरणा मिले इसलिए कितनी जगह पर सहयोग दिया, यह खोजने के लिए आप चिराग लेकर भी जाएँ तो कुछ मिलनेवाला नहीं है। अंत में मैंने उस किताब को अलग रख दिया और कुछ साल बीत जाने के बाद दूसरी छोटी-सी किताब लिखी। उस किताब में मैंने ब्राह्मणों की चालाकी के संबंध में लिखा था और मैंने स्वयं के पैसों से ही उस किताब को छपवाकर प्रसिद्ध किया था। उस समय पूना के मेरे एक मित्र ने बड़े आग्रह के साथ उस किताब की कुछ प्रतियाँ, शिक्षा विभाग के सभी मुख्य अधिकारियों को, उस पुस्तक की खरीद के लिए सूचना-पत्र के साथ भिजवाईं; लेकिन उनमें से किसी एक भी अधिकारी ने ब्राह्मण-पंडितों के डर की वजह से एक भी किताब खरीदकर अपने नाम को किसी भी प्रकार दोषारोपण नहीं लगने दिया।

धोंडीराव : तात, सच बात यह है कि आपको अपने लिए लोगों के आगे-पीछे करने की आदत है नहीं, इसलिए आपकी किताबें बिकतीं नहीं।

जोतीराव : अरे, मेरे बाप, अच्छे काम को सफल बनाने के लिए बुरे इलाज नहीं खोजने चाहिए, वरना उस काम के अच्छेपन को ही धब्बा लग जाता है। उन्होंने मेरी एक किताब नहीं खरीदी, इसलिए क्या उससे मेरा बहुत कुछ नुकसान हुआ है? नहीं, लेकिन अब इसके बाद मैं उस तरह के घटिया लोगों के सामने किसी भी प्रकार की अर्जी करना पसंद नहीं करूँगा। मैं उनका निषेध करूँगा। मैंने पढ़ा है कि किस तरह से हमें अपने उत्पन्नकर्ता पिता पर निर्भर रहना चाहिए। इसलिए मैं उसका तीन बार धन्यवाद करता हूँ।

धोंडीराव : तात, आपने जब ब्राह्मण जाति की लड़कियों के लिए स्कूल की स्थापना की थी, उस समय सरकार ने मेहरबान होकर आपको बड़े सत्कार के साथ एक शॉल भेंट की थी। बाद में उसी तरह आपने अछूतों के लिए भी स्कूल की स्थापना करके उसके लिए कई ब्राह्मणों की सहायता ली थी। और उन सभी स्कूलों में बड़े जोर-शोर के साथ पढ़ाई-लिखाई शुरू हो गई थी। लेकिन बीच में ही वह काम अचानक बंद हो गया। कुछ साल बीत जाने के बाद आपने यूरोपियन लोगों के घर में आना-जाना भी एकतरह से बंद जैसा ही कर दिया था। इसकी वजह क्या हो सकती है?

जोतीराव : ब्राह्मण जाति की लड़कियों के लिए स्कूल शुरू कर देने की वजह से सरकार को बड़ा आनंद हुआ और उसने मुझे एक शॉल भेंट कर दी, यह बात बिलकुल सच है। लेकिन मुझे जब अछूतों के लड़के-लड़कियों के लिए स्कूल शुरू करने की आवश्यकता महसूस हुई, तब मैंने उस काम के लिए कई ब्राह्मणों को सदस्य बनाया और वे सभी स्कूल ब्राह्मणों के हाथों में सौंप दिए। जब मैंने अछूतों के लड़के-लड़कियों के लिए स्कूल शुरू किए, उस समय सभी यूरोपियन गृहस्थों ने मुझे बहुत बड़ी मात्रा में अर्थ सहायता की। उन उदार गृहस्थों में रेव्हेन्यू कमिश्नर रीव्हज् साहब ने जो अर्थ-सहायता की, उसको मैं कभी भी भूल नहीं सकता। उन उदार गृहस्थों ने मुझे सिर्फ अर्थ की सहायता ही की है, ऐसी भी बात नहीं; बल्कि वे अपना महत्त्वपूर्ण धंधा सँभालते हुए भी उन अछूतों के स्कूल में बार-बार आकर इस बारे में बार-बार पूछताछ करते थे कि छात्रों ने पढ़ाई-लिखाई में कितनी तरक्की की है। उसी प्रकार छात्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने की वे बड़ी कोशिश करते थे। इसलिए उनके उपकार अछूतों के छात्रों के रग-रग में समाए हुए हैं। उनके इन उपकारों से मुक्त होने के लिए यदि वे अपने चमड़े की जूतियाँ बनाकर भी उनके पाँव में पहनाएँ, तब भी वे उनके उपकारों से मुक्त नहीं हो सकते।

इसी प्रकार अन्य कुछ यूरोपियन गृहस्थों ने मुझे इस काम के लिए

काफी सहायता की है, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। उस समय उस काम में भी मुझे ब्राह्मण सदस्यों को लेने की जरूरत महसूस हुई। इसके अंदर की बात किसी समय मैं जरूर बताऊँगा। लेकिन बाद में जब मैंने उन स्कूलों में ब्राह्मणों के पूर्वजों के बनावटी धर्मशास्त्रों में लिखी गई धूर्ततापूर्ण बातों के संबंध में उन छात्रों को पढ़ाना-समझाना शुरू कर दिया, तब उन ब्राह्मणों और मेरे अंदर-ही-अंदर बोलचाल में रूखापन बढ़ता गया। उनके कहने का रुख इस तरह दिखाई दिया कि उन अछूतों के बच्चों को बिलकुल ही नहीं पढ़ना-लिखना सिखाना चाहिए। लेकिन यदि उनको पढ़ना-लिखना सीखना जरूरी है तब उनको केवल अक्षरों का ज्ञान हो, बस! इतना ही पढ़ना-लिखना सिखाना चाहिए, इससे ज्यादा बिलकुल नहीं। लेकिन मेरा कहना यह था कि उन अछूत बच्चों को अच्छे दर्जे तक पढ़ना-लिखना सिखाकर उनमें इतनी क्षमता पैदा कर देनी चाहिए कि वे अपना हित-अहित स्वयं जान सकें। अब अछूतों को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाना चाहिए, यह कहने में उनका स्वार्थ क्या हो सकता है? उनके मन की बात को निश्चित रूप से समझ लेना आसान नहीं है। लेकिन यह हो सकता है कि ये लोग पढ़-लिखकर बुद्धिमान बनेंगे, ऐसा उनको लगता होगा। और यह भी लगता होगा कि 'हमारी तरह ही इनको भी पढ़ने-लिखने का मौका मिला, सही ज्ञान प्राप्त हुआ, और उनको सच और झूठ में फरक समझ में आया तब वे लोग हमारा निषेध करेंगे। और सरकार के वफादार अनुयायी बनकर हमारे पूर्वजों ने उन पर और उनके पूर्वजों पर जो जुल्म किए, जो ज्यादतियाँ की हैं, उस इतिहास के पन्ने पढ़कर हमारा पूरी तरह से निषेध करेंगे।' यही उनकी भावना हो सकती है। इस तरह जब उनके और मेरे विचारों में फर्क पड़ने लगा तब मैंने उन ब्राह्मण-पंडितों के नकली, स्वार्थी स्वरूप को पहचान लिया और उन दोनों संस्थाओं से एक ओर हट गया। इसी दरम्यान ब्राह्मण पांडे (मंगल पांडे, 1857 का विद्रोह) का विद्रोह शुरू हो गया। उसी समय से सभी यूरोपियन सभ्य लोग मेरे साथ पहले की तरह खुलकर बातचीत नहीं करते; बल्कि मुझे देखते ही उनके चेहरे पर मायूसी छाने लगती। तब से मैंने भी एक तरह से उनके घर पर आना-जाना एकदम बंद कर दिया है।

धोंडीराव : तात, ब्राह्मण पांडे की बदमस्ती की वजह से उन यूरोपियन लोगों ने हम जैसे निरपराधियों को नज़रअंदाज किया है और वे लोग हमको देखते ही अपने चेहरे पर मायूसी लाने लगे हैं। यह उनकी उदारवादी दृष्टि और उनकी बुद्धिमानी को शोभा नहीं देता। उसी प्रकार हमें ब्राह्मणों की विधवा नारियों के गर्भपात आदि जघन्य अपराधी कृत्य नहीं करना चाहिए। उन ब्राह्मण विधवा गर्भधारिनी नारियों को गुप्त रूप से प्रसूत होना चाहिए, इसके लिए

हमने अपने घर में ही पूरी व्यवस्था की है और उस काम के लिए हमने अपनी सरकार से किसी भी प्रकार की सहायता नहीं माँगी। उस काम में नाममात्र के लिए भी ब्राह्मण सदस्यों से कुछ न लेते हुए, यह कार्य हमने अपने स्वयं के खर्चे से चलाया है।

जोतीराव : अपनी सरकार के बारे में कहा जा सकता है कि जिधर दम, उधर हम। क्योंकि अछूतों को छूने का अधिकार नहीं होने की वजह से स्वाभाविक रूप से ही उनके सभी प्रकार के काम-धंधे करने के दरवाजे बंद हो गए हैं और उसी की वजह से उसके सामने अपने पेट की आग को बुझाने के लिए चोरी-डकैती आदि अवैध कामों को करने की नौबत आती है। लेकिन उन्हें चोरी-डकैती आदि अवैध काम नहीं करने चाहिए, इसलिए हमारी सरकार ने उनको नजदीक के पुलिस थाने में जाकर हाजिरी लगाने का दस्तूर शुरू किया है, यह बहुत ही अच्छा काम किया है। लेकिन ब्राह्मणों की अनाथ, निराधार विधवा स्त्रियों को दूसरा विवाह करने की मनाही होने की वजह से उन ब्राह्मण विधवा स्त्रियों को व्यभिचार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसका परिणाम कभी-कभी यह भी होता है कि उसको गर्भपात और भ्रूणहत्या (बालहत्या) भी करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इन तमाम बातों को हमारी न्यायी सरकार अपनी खुली आँखों से देखती रहती है। फिर भी मातंग-रामोशियों की तरह उन पर निगरानी नहीं रख रही है, यह कितना बड़ा आश्चर्य है! क्या यह अन्याय नहीं है? हमारी सरकार को गर्भपात और भ्रूणहत्या करनेवाली ब्राह्मण विधवा स्त्रियों की अपेक्षा चोरी-डकैती करनेवाले मातंग-महार लोग ज्यादा दोषी दिखाई देते हैं। दूसरी बात यह कि ब्राह्मणों की 'काम कम और बकवास ज्यादा' रहती है। अरे, जो लोग समझदार होकर अपनी छोटी नासमझ बहन की हजामत करनेवाले हज्जाम के हाथ को रोकने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा नहीं सकते, वैसे बुजदिल लोगों को ऐसे काम में सदस्य बना करके क्या फल होगा?

धोंडीराव : तात, कोई बात नहीं। लेकिन आपने पहले कहा था कि सभी सरकारी शिक्षा विभागों में कुछ अव्यवस्था फैली हुई है, उसका क्या मतलब है?

जोतीराव : इन सरकारी शिक्षा आदि विभागों में जो हर तरह की अव्यवस्था है, उसके बारे में यदि लिखा जाए, तब उसकी एक स्वतंत्र किताब ही हो जाएगी। इसी डर की वजह से उसमें से एक-दो बातें उदाहरण स्वरूप यहाँ ले रहा हूँ। पहली बात यह है कि शूद्र और अछूतों के बच्चों के स्कूलों के लिए शिक्षक तैयार करने की कोई दिलचस्पी नहीं है, उनको इस काम में पूरी अनास्था है।

धोंडीराव : तात, ऐसा कैसे कहा जा सकता है? सरकार ने सभी जाति के बच्चों

को पढ़ाने के लिए, शिक्षक (पंडित) प्रशिक्षित करने के लिए एक स्वतंत्र प्रशिक्षण स्कूल शुरू किया है। सरकार के मन में कोई भेदभाव की भावना नहीं दिखाई देती।

जोतीराव : यदि तुम ऐसा कहते हो, तब यह बताओ कि आज तक उन प्रशिक्षित शिक्षकों ने (पंडित) अछूतों के कितने बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाया है? अब तुम नीचे क्यों देख रहे हो? इसका मुझे जवाब दो।

धोंडीराव : तात, सभी ब्राह्मण-पंडित लोग ऐसा कहते हैं कि अछूत के बच्चों को स्कूल में दाखिल करते ही, हिंदुस्थान में बड़ी अव्यवस्था पैदा होगी। बड़ा असंतोष पैदा होगा। इसलिए सरकार घबराती है।

जोतीराव : अरे, सरकार अपनी फौज में सभी जाति के लोगों को भर्ती करती है। फिर हिंदुस्थान के लोग क्यों अव्यवस्था पैदा नहीं कर रहे हैं? यह सब सरकार की लापरवाही है। क्योंकि सभी जाति के लोगों को फौज में भर्ती करते समय सरकार उस काम को स्वयं कर लेती है और शिक्षक (पंडित) प्रशिक्षित करने का काम फालतू किसी हरामी गोबरगणेश को सौंप देती है, और उसको इस काम की कुछ भी जानकारी नहीं होती। यदि उसको इस काम की कुछ जानकारी होती, तब उसने सबसे पहले अछूतों के बच्चों को शिक्षक के रूप में तैयार (प्रशिक्षित) करने के काम में किसी भी प्रकार से आनाकानी न की होती। उसी प्रकार उन स्कूलों में केवल ब्राह्मणों के बच्चों की ही इतनी फालतू भर्ती न की होती।

धोंडीराव : तात, फिर सरकार को इसके लिए क्या करना चाहिए?

जोतीराव : इसका एक ही पर्याय है कि सरकार मेहरबान होकर इस काम को सभी यूरोपियन कलेक्टरों के हाथ में सौंप दे। तब ही यह शिक्षा के प्रचार का कार्य सफल होगा, वरना नहीं। क्योंकि इन्हीं लोगों का शूद्र और अछूतों से निकट का संबंध होने की वजह से ब्राह्मण कर्मचारियों पर किसी भी प्रकार का भरोसा नहीं करना चाहिए। उन्हें हर गाँव-खेड़े में एक-एक बार जाकर वहाँ यह समझाना चाहिए कि कुलकर्णियों की बिना मदद से गाँव के सभी बुजुर्ग-बाल-बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने से क्या-क्या लाभ होते हैं। उनके इस तरह से समझाने से गाँव-खेड़े के लोग अपने सभी होशियार बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बहुत ही खुशी से कलेक्टर साहब के हवाले कर देंगे। इस तरह यूरोपियन कलेक्टरों के कहने से शिक्षा के प्रचार-प्रसार का काम जितना सफल होगा, उस तरह ऐसे नासमझ (ब्राह्मण-पंडित) कर्मचारियों से न सफल हुआ और न होगा, यही हमारी धारणा है। इस संबंध में एक कहावत है कि 'जेनो काम तेनो थाय, बिजा करे तो गोता खाय'। इससे अब तुम्हीं सोचो कि शूद्र और अछूत जाति के पढ़े-लिखे लोगों की आज

कितनी जरूरत है। क्योंकि जब उस जाति के लोग पढ़-लिखकर तैयार होंगे, तब उनको अपनी जाति का अभिमान होगा और वे लोग अपनी-अपनी जाति के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाएंगे, उनको पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करेंगे। वे लोग अपनी-अपनी जाति के बच्चों को हाथ में डंडा लेकर जानवरों को हाँकते हुए उनके पीछे-पीछे जाने से पहले, शिक्षा के प्रति उनके मन में इतना प्रेम पैदा करेंगे कि जब वे बच्चे बड़े हो जाएँगे तब वे अपने में से एक बच्चे को बारी-बारी से खेत पर जानवरों को सँभालने के लिए रखेंगे और शेष सभी लड़कों को गाँव के मैदान पर गिल्ली-डंडा खेलने से रोकेंगे। उनको गांव में लाकर, अध्यापक के पास बैठाकर पढ़ना-लिखना सीखने के लिए, कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे। दुनिया में सबसे प्रगतिशील राष्ट्र अमेरिका के लोगों में आधे से ज्यादा लोगों ने अपने ही वर्ण के बंधुओं के विरोध में तीन साल तक लगातार जंग करने के बाद अपने हाथ के गुलामों को छोड़ दिया था। तब ऐसे मूर्ख ब्राह्मण स्कूलों में शूद्रादि-अछूतों को सही ज्ञान पढ़ाकर उनको अपनी गुलामी से मुक्त होने की प्रेरणा कैसे दे सकेंगे? अरे, जिस एक ब्राह्मण प्रोफेसर की तनख्वाह में छः शूद्र या नौ अछूत प्रोफेसर कम तनख्वाह में प्राप्त होने की पूरी संभावना होने पर भी अपनी सरकार इस काम के लिए ब्राह्मणों के पीछे ही लगी हुई है और अपने अज्ञानी भाइयों की कमाई का रुपया-पैसा इस तरह बेहिसाबी खर्च कर रही है। इसलिए यदि हमने अपनी सरकार को भरी नींद से जगाया नहीं, तब तो इस अनर्थ का दोष हमारे माथे पर लगेगा। इसी प्रकार चौधरियों की हवेलियों के रसोईघरों में अछूतों के कितने बच्चे काम करते हैं, इसके संबंध में जरा कुछ बताइए।

धोंडीराव : तात, जहाँ शूद्रों के बच्चों को ही कोई देखने-सँभालनेवाला नहीं है, वहाँ अछूतों के बच्चों की बात ही दरकिनार।

जोतीराव : आखिर ऐसा क्यों? तुम ही कहते हो न कि, सरकार भेदभाव नहीं करती, फिर यह जो कुछ हो रहा है, इसकी वजह क्या है?

धोंडीराव : इसका कारण वहाँ सभी ब्राह्मण कर्मचारियों का होना ही प्रतीत होता है। आपने एक बात मुझे एक दिन प्रत्यक्ष रूप से बताई थी। वह बात यह थी कि जो ब्राह्मण व्यक्ति पहले आपके पास नौकरी के लिए था, वह अछूतों के स्कूल में आकर किसी भी प्रकार का छुआछूत नहीं मानता था और स्कूल के सभी छात्रों को अच्छी तरह पढ़ना-लिखना सिखाता था। लेकिन वही ब्राह्मण जब रसोइया बना, तब वह इतना छुआछूत मानता था कि उसने एक गरीब सुनार को चौराहे पर खींच ले आया था; क्योंकि उस सुनार ने गर्मी के दिनों में उस टंकी से पानी निकालकर पिया था और अपनी प्यास बुझाई थी।

जोतीराव : अरे, इन महामूर्ख ब्राह्मणों द्वारा रचे गए गीतों को आज भी सभी नए

समाजों में गाया जाता है, और उन्होंने अब तक अपने मतलबी धर्म के अनुसार पत्थरों के भगवान को पूजना छोड़ा नहीं है। वही ब्राह्मण अपने घर की टंकी को शूद्रों को नहीं छूना चाहिए, इसलिए उसे अच्छी तरह से ढांककर काशी जाकर वहीं स्थायी होने की बात कर रहा है। लेकिन हमारे निष्पक्ष म्युनिसिपालिटी में ब्राह्मण सदस्यों की संख्या सबसे ज्यादा होने की वजह से उन्होंने उस टंकी के इर्द-गिर्द के घेरे को वैसे ही कायम रखा है। लेकिन उन्होंने बिना सोच-विचार किए ही शुक्रवारी के दर्जी की टंकी के घेरे को एकदम गिरा दिया। वहाँ के कई ब्राह्मणों ने सिर्फ अपने उपयोग के लिए उस टंकी के ऊपरी भाग में और उससे लगकर एक छोटी-सी चोर टंकी बाँध दी है और उसका पानी अपने स्नान के लिए, अपने पापों को धोने के लिए मनमानी खर्च करते हैं। ब्राह्मण जाति में जन्म लेकर इस तरह की पाखंडी हरकतें न करें, तब उस जाति की कीमत ही क्या है?

परिच्छेद : सोलह

[ब्रह्मराक्षसों के उत्पीड़न की क्षय।]

धोंडीराव : तात, आपके साथ जो संवाद हुआ, उससे यह सिद्ध होता है कि सभी ब्राह्मणों ने अपने नकली धर्म के नाम पर हमारी भोली-भाली सरकार की आँखों में धूल झोंकी है और हम सभी शूद्रादि-अछूतों का अमेरिका के (काले) गुलामों से भी ज्यादा शोषण किया है। वे आज भी कर रहे हैं। इसलिए हम सभी लोगों को मिलकर इन ब्राह्मणों के बनावटी धर्म का निषेध करना चाहिए और अपने अनपढ़ भाइयों को भी इस संबंध में जागृत करना चाहिए। आप इस बारे में क्यों नहीं सोच रहे हैं? और इन लोगों में जागृति लाने का कार्य क्यों नहीं कर रहे हैं?

जोतीराव : मैंने कल ही शाम को इसके लिए एक पर्चा तैयार किया है। मैंने उसे अपने एक साथी को सौंपकर उससे यह कहा है कि उस पर्चे में ह्रस्व-दीर्घ की जो भी गलतियाँ हों, उनको ठीक करके, उसकी एक-एक प्रति तैयार करके सभी ब्राह्मण और ईसाई अखबारवालों के अभिप्राय के लिए भेज दीजिए। उस पर्चे का स्वरूप इस प्रकार है :

शूद्रों को ब्रह्मराक्षसों की गुलामी से
इस प्रकार मुक्त होना चाहिए

मूल ब्राह्मणों के (इराणी) पूर्वजों ने इस देश के मूल निवासियों पर हमला किया। उन्होंने यहाँ के हमारे मूल क्षेत्रवासी पूर्वजों को युद्ध में पराजित किया और उनको अपना गुलाम बना लिया। बाद में उनको जिस तरह का मौका प्राप्त होता रहा, उस तरह उन्होंने अपनी सत्ता की मस्ती में कई तरह के मतलबी-नकली धर्म ग्रंथ लिखवाए और उन सबकी एक मजबूत किला बनाकर उसमें उन सभी पराजितों को वंश-परंपरा से बंदो बना करके रख दिया। वहाँ उन्होंने उनको कई तरह की यातनाएँ देकर आज तक वे ब्राह्मण-पंडित-पुरोहित बड़ी मौज-मस्ती में अपना जीवन गुजार रहे हैं। इसी

दरम्यान जब अंग्रेज बहादुरों का राज इस देश में कायम हुआ तब से अधिकांश दयालु यूरोपियन और अमेरिकी भले लोगों को हमारा उत्पीड़न अपनी आँखों से देखा नहीं गया। तब उन्होंने हमारे इस जेलखाने में बार-बार आकर हम लोगों को इस प्रकार का उपदेश दिया कि 'ऐ मेरे भाइयो, आप सभी लोग हमारी तरह ही इंसान हैं। आपका और हमारा जन्मदाता तथा पालनकर्ता एक ही है। इसलिए आप सभी लोग हमारी तरह ही तमाम मानवी हकों को पाने के हकदार होने के बावजूद, आप लोग इन ब्राह्मणों के नकली वर्चस्व को क्यों मान रहे हैं?' आदि इस तरह की कई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का अध्ययन करने पर मुझे मेरे स्वाभाविक और सही मानवी अधिकार समझ में आते ही मैंने उस जेलखाने के नकली मुख्य ब्रह्म दरवाजे के किवाड़ों को लात मारा और उस जेलखाने से बाहर निकल आया। इस ब्राह्मणी कैदखाने से निकलने के बाद मैंने अपने निर्माता के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

अब मैं उन परोपकारी यूरोपियन उपदेशकों के आँगन में अपना डेरा डालकर कुछ आराम करने से पहले यह प्रतिज्ञा करता हूं कि :

ब्राह्मणों के जिन प्रमुख धर्मग्रंथों के आधार पर हम (शूद्रादि-अतिशूद्र) लोग ब्राह्मणों के गुलाम है और उनके अन्य कई ग्रंथों-शास्त्रों में हमारी गुलामी के समर्थन में लेख लिखे हुए मिलते हैं, उन सभी ग्रंथों का, धर्मशास्त्रों का और उसका जिन-जिन धर्मशास्त्रों से संबंध होगा, उन सभी धर्मग्रंथों का हम निषेध करते हैं। उसी तरह जिन धर्मग्रंथों के आधार पर (फिर वह किसी भी देश का या धर्म के विचारवान व्यक्ति द्वारा तैयार किया हुआ क्यों न हो) सभी लोगों को समान रूप से सभी वस्तुओं का, सभी मानवी अधिकारों का समान रूप से उपभोग लेने की इजाजत हो, उस तरह के ग्रंथकर्ता को मैं अपने निर्माता के संबंध में छोटा भाई समझकर, उस तरह अपना आचरण रखूंगा।

दूसरी बात यह कि जो लोग अपनी एकतरफी सोच के अहंकार में जबर्दस्ती किसी को भी नीच समझने लायक आचरण करने लगते हैं, उन लोगों को उस तरह का आचरण करने का मौका देकर मैं अपने निर्माता द्वारा निर्मित पवित्र अधिकारों के नियमों को धब्बा नहीं लगाऊँगा।

तीसरी बात यह कि जो गुलाम (क्षूद्र, दास, दस्यु) केवल अपने निर्माता को मानकर नीति के अनुसार साफ-सुथरा उद्योग करने का निश्चय करके उसके अनुसार अपना आचरण कर रहे हैं, इस बात का मुझे पूरा यकीन होने पर, मैं उनको केवल अपने परिवार के भाई की तरह मानकर उनके साथ प्यार से खाना-पीना करूँगा, फिर वह आदमी, वे लोग किसी

भी देश के रहनेवाले क्यों न हों।

आगे किसी समय अज्ञान के अंधकार में सताए हुए मेरे शूद्र भाइयों में से किसी को भी ब्राह्मणों की गुलामी (दासता) से मुक्त होने की इच्छा होने पर, एक बार भी क्यों न हो, कृपया अपना नाम-पता पत्र के द्वारा लिखकर मुझे भेज दें। मुझे इस काम में बड़ी ताकत मिलेगी और मैं उनका बहुत ही शुक्रगुजार रहूँगा।

—जोतीराव गोविंदराव फुले

तारीख[1]: 5 दिसबर, 1872

पूना, जूनागंज नं० 527

1. प्रस्तुत पत्र के संबंध में अखबारवालों के जो-जो अभिप्राय प्राप्त हुए हैं, उनकी योग्यता जानने के लिए उनको हम अपने पाठकों के लिए यहाँ दे रहे हैं:

पूना, शनिवार, ता० 4 जनवरी, 1873

जनकल्याण की कामना से

हमारे अपने प्रसिद्ध महाज्ञानी, महाचिंतक और महान संशोधक, दार्शनिक जोतीराव गोविंदराव फुले ने एक बड़े गृहस्थ की सिफारिश पर एक अप्रयोजक, आत्मस्तुतियुक्त और ब्राह्मणों की बदनामी करनेवाला एक पत्र हमारी ओर भेजा है। उनके उस पत्र को हमारे अखबार में स्थान मिलने की कोई संभावना नहीं है। इसलिए हम प्रस्तुत पत्र के लेखक फुले से क्षमा चाहते हैं।

कोल्हापुर, ता० 1 फरवरी, 1873

शुभ वर्तमान दर्शक और चर्च के संबंध में विभिन्न संग्रह

पूना के अखबारवाले उक्त परिच्छेद को अपने अखबार में प्रकाशित नहीं कर रहे हैं, इसलिए इस पत्र को हमारी ओर भेजा गया है। यह परिच्छेद चारों ओर प्रसिद्ध करना चाहिए, इस तरह की जोतीराव गोविंदराव फुले की इच्छा होने की वजह से उनके इस परिच्छेद को .हम अपने अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। हमारे हिंदू मित्रों को यह परिच्छेद कुछ मात्रा में बदनामी करनेवाला लगेगा, फिर भी इसमें जो अभिप्राय व्यक्त हुआ है, वह बहुत ही प्रशंसनीय है, ऐसा मुझे लगता है। क्योंकि वास्तव में देखा जाए तो ब्राह्मणो की मान्यता के अनुसार जाति-भेद नहीं है, इस बात को 'जो भी व्यक्ति हमारे ध्यान में लाकर देगा, उस व्यक्ति से मैं तुरंत पत्र के द्वारा संपर्क स्थापित करूँगा,' इस बात को उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ कही है और इस तरह की हिम्मत रखनेवाले लोग इस देश में बहुत बड़ी संख्या में होने चाहिए।'

घोंडीराव : तात, आपने ऊपर जो सूचनापत्र दिया है, उसकी सभी धाराएं बहुत ही पसंद आई हैं और मैं उसी के अनुसार अपना आचरण रखूंगा। मैं आज हजारों साल के ब्राह्मणों के बनावटी और दर्दनाक धर्म के जेलखाने से पूरी तरह मुक्त हुआ हूँ। इसीलिए आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं सचमुच में आपका कृतज्ञ हूँ। संक्षेप में, आपके हर तरह के विश्लेषण को सुनने के बाद हिंदू धर्म (ब्राह्मण धर्म) के पाखंडी, बनावटी स्वरूप के बारे में मेरा यह स्पष्ट मत बन चुका है। लेकिन हम लोग जिस एक परमेश्वर को मानते हैं और सभी ज्ञानी लोग भी मानते हैं उस परमेश्वर को, जो सबको देखनेवाला और सर्वज्ञ होने पर भी, हम शूद्रादि-अतिशूद्रों की यातनाएँ, हमारा शोषण-उत्पीड़न उसको आज तक क्या सचमुच में नहीं दिखाई दिया होगा ?

जोतीराव : इसके संबंध में बाद में किसी ऐसे ही मौके पर तुमको सारा खुलासा करके बता दूंगा, जिससे तुमको पूरा विश्वास हो जाएगा और मन का समाधान भी।

पँवाड़ा

[इंजीनियरिंग विभाग में ब्राह्मण कर्मचारी किस तरह लूट-खसोट करते हैं, इसके संबंध में ।]

पेशवाई दक्षिणा विलासी इंजीनियर खा जाते ।
होलकर बोरिया भर-भर कर ले जाते ।।ध्रु।।
भिक्षा माँगते लज्जा न आए घर-घर घूमते ।
आलसी धर्म की छाया में पनाह पाते ।।
बेगारों का धंधा नीच मानते ये मतलबी ।
कितनी खुशामदगीरी करते ये पाखंडी ।।
ब्राह्मणों का कसब लिखने की बाबूगीरी करते ।
अनपढ़ कुनबियों को दिन-दहाड़े लूटते ।।
हाजिरी बहीखाता हाथ में लिए फैल पर जाते ।
हाजिरी मजदूरों की मौज मजे से लेते ।।
बगैर लांच लिए मजदूरों को देख भगा देते ।
उन पर फिजूल का दोष लगाते ।। चाल '।
मिस्तरियों को धमकियाँ देकर ।
कान पर फेटा लुढ़काकर ।।
स्वाँग बेगारी दिखलाकर ।
खड़ा रहता दूर जाकर ।।
आँखें सफेद-सी बनवाकर ।
कहता दाँतोंतले ओंठ दबाकर ।।
चल जा दूर छोड़कर फैल को ।
ले जाते बगल में मिस्तरी को ।।
शुरू कर देते कानों में बातों को ।। चाल ।।
फिजूल हाजिरी लिख नाम पढ़कर सुनाते ।
रिपोर्ट बार-बार देखते रहते ।।

बेगारों का धुस्सा दबा आसन पर बैठते ।
होलकर बोरिया भर-भर कर ले जाते ।।
पांड्या दिन बारह सारे माह में भर देता ।
शेष अट्ठारह अपनी मुट्ठी में रख देता ।।
आठ दिन काम नहीं शेष सात साथ में रखता ।
बाकी बेहिसाब भरती करता ।।
लोग तरे घर के सभी सिर्फ पगार के लिए ।
हाथ में चवन्नी मेहनताना उनके लिए ।।
सभी औरतें बच्चों को छोड़ छब्बीस दिन रहती ।
शेष बाकी गिनती करती ।।
राण्या, नाण्या, बच्चे नहीं थे दो दिन तक ।
भर देते अग्रिम सिर्फ पेशगी लायक ।।
रोजी बैल दिन दस नहीं महीने में कम ।
वही रे उमकी गति ।। चाल ।।
हम जाति से ब्राह्मण ।
जाते लाचार होकर ।।
रिश्ता धर्म का दिखाकर ।
मोहित करते धीरे कहकर ।।
नजरें सरकारी छुपाकर ।
करो हमारा पालन ।। चाल ।।
बांधकर कमर में धोती ।
नौकरी की क्यों करते चिंता ।।
रोज का नित्य कर्म न टलता ।। चाल ।।
आठ बजने का समय जान घोड़े पर चढ़ते ।
घर का रास्ता पकड़ते ।।
लौटने समय बागों पर आक्रमण करते ।
होलकर बोरियाँ भर-भरकर ले जात ।।2।।
मिस्तरी के प्रियजनों को खोज निकालते ।
उनकी हाजिरी भरं देते ।।
घोड़े के पीछे एक साथी देकर उसे फुसलाते ।
भूत-पिशाचों की खुशामद करते ।।
भोला-भाला मिस्तरी कहते-कहते घमंडी बन जाते ।
अपने अहंकार को और भी जगाते ।।
बीच में कभी भोजन दे-दिलवाकर वश कर लेते ।

देखो, कैसे मौका खोजते ॥
भोजन परोसते स्त्री कहती जलाने को लकड़ी नहीं।
अपने शौहर को छोड़कर आने को कहते ॥
सब्जी-भाजी का ठिकाना नहीं खेड़े की बस्ती।
निम्बू अचारों तक ही रहती ॥ चाल ॥
परोसते बहुत दूर से।
माँगल्य में होने का नखरा दिखाते ॥
मीठी-मीठी बातों से मायाजाल में भुलाते।
भोजन के मोह में फँसाकर ॥
देखो, अपना स्वार्थ साधते कैसे भुलाकर।
जगह शुद्ध कर लेते हैं बाद में गोबर पोतकर ॥चाल॥
दागता हूँ देखकर घाव को ॥
छोड़ दो तुम इस नीच कर्म को ॥
अंगार लग जाए तुम्हारे इस धर्म को ॥चाल॥
संकट देखते धीरे से मिस्तरी मुँह से लगता।
शेष सभी दूर हट जाते ॥
मिस्तरी को प्रेम दिखाकर गला घोंटते।
होलकर बोरियाँ भर-भरकर ले जाते ॥3॥
घास के लिए बिन बेगारी घोड़ों की भरती।
बारी-बारी से घोड़ों को खुजलाते ॥
गाँव की शूद्र औरतें बर्तन माँजतीं।
बेगारी लोग बिछौने लगाते ॥
पागल जैसे कुनबी देखकर पाँव दबवाते।
और मजे की नींद ले लेते ॥
स्वजाति के भिक्षुक ब्राह्मण काम पर ले जाते।
कहकर भिक्षा दिलवाते ॥
मिली भिक्षा का बँटवारा हुजूर साथियों को देते।
समझदारी बार-बार दिखलाते ॥
दफ्तरदारों के बँधे हुए हफ्ते और मिलने भी जाते।
सिपाहियों को बीड़ी के लिए बुलाते ॥चाल॥
यहाँ पहुँचे गोरे आकर।
कचहरी तम्बू लेकर ॥
थक गए शिकार खेलकर।
कागजों पर दस्तखत कर ॥

भट्ट-ब्राह्मणों पर सब कुछ सौंपकर ।
आराम की प्याली पीकर ।।चाल।।
शोभा देते खास कोच में ।
आँखें दौड़ाते अखबारों में ।।
देखो नजर गड़ाते बीच-बीच में ।।चाल।।
बिरागों की मुर्गियाँ आदि चीजों की भरमार ।
और फिर बीच में पैसा खाने में भी न शरमाते ।।
बुटलेरों के हाथों गोरे जुलाब करवाते ।
होलकर बोरियाँ भर-भरके ले जाते ।।4।।
फिजूल पैसा माटी में पानी की तरह बहाते ।
कागज-पत्र आँकड़ों में लिखते ।।
लूट-खसोट का पैसा याद भोगियों को होती ।
हिसाब-किताब में मेल बराबर बिठाते ।।
खजाना खाली देख लगान तय करते ।
हड्डियाँ कुनबियों की चूसते ।।
कर्मवादी नौकर बन गए लखपति ।
पाँवों तले पिसती कुनबियों की छाती ।।
टोपवालों को इसका रहस्य समझते ही त्यागपत्र देते ।
अपने मकान की मंजिल पर मंजिल चढ़ाते ।।
न्यायी कहते अब तुम हमारे भूस्वामी ।
दया नहीं शूद्रों के प्रति कितनी है मनमानी ।।चाल।।
कहता हूँ मैं अपने अनुभव की बातें ।
कहता हूँ मैं दिल से अपनी बातें ।।
सब जाति के लोगों को चुन लो ।
दो सबको संख्या के बल से ।।
सबका काम अलग-अलग तय कर लो ।
होगा सब के सुख का साधन ।।चाल।।
मैंने गलती से अवगत कराया ।
एक जाति के खतरे से जगाया ।।
शूद्रों को मैंने बंद दरवाजे दिखलाया ।।चाल।।
एंक जाति के सब मिलकर देश को ठगते ।
शेष सारे मुँह ताकते रहते ।।
न करो एक जाति की भरती जोतीराव कहते ।
होलकर बोरियाँ भर-भरकर ले जाते ।।5।।

[मारवाड़ी (बनिया), ब्राह्मण-पुरोहित आदि लोगों की चालाकी के बारे में।]

।। अभंग ।।

तन लपेटते लंगोटी।
घूमते हलके पाछी ।।1।।
एक धुस्से के अलावा।
नारियों को कहाँ मिलता बिलौना ।।2।।
जानवरों के पीछे दिन-रात में।
बच्चे घूमते रहते बन-बन में ।।3।।
रूखे-सूखे से पेट पालते।
उसी में ही धन्य समझते ।।4।।
रहता कपड़े-लत्तों का अभाव।
सो जाते एक दूसरे से लिपट के मनभाव ।।5।।
सरकारी पट्टी नेट।
बांधते तीन चोटी गाँठ ।।6।।
कर्ज रोकड़ लिखने में आनाकानी।
देखो, निर्दय मारवाड़ियों की बेईमानी ।।7।।
अज्ञानियों के समझ में न आती।
कुलकर्णियों की लिखी पंक्ति ।।8।।
वकीलों की रहती महँगाई।
जजों को दया नहीं कोई ।।9।।
पाप-पुण्य जहाँ फिक्र नहीं।
सिर्फ पैसों के लिए दादा-भाई ।।10।।
सब हर दिन मिलते एक जगह ही।
शूद्रों की किसी को कोई पर्वाह नहीं ।।11।।
राजा धर्मशील कहलाते।
अब क्यों पीछे हट जाते ।।12।।
पढ़ावो इन्हें केवल हो अक्षरों की पहचान।
निषेध कर इनका ज्योति कहे जागो मेहरबान ।।13।।

[ब्राह्मणों के पाखंडी ग्रंथों की चालाकी के सबंध में।]

।। अभंग ।।

रजाई की गरमाहट में आए अँगड़ाई।
नींद नहीं आती। निकम्मे को ।।1।।

ओस बिंदु से जब लथपथ रहते थे खेत-बंधवान।
बैलों को चराए। आधी रात को ॥2॥
खाना-पीना नित भरपेट कर्मकांडों का ठाट।
संध्या के लिए पाट। मौन सुख ॥3॥
ठीक-ठाक करते बैलबंडी और हल को।
टूटी हुई डोरी से। बाँधते उसको ॥4॥
पांव में जूतियां चमड़े की चुन्नट की धोती।
पगड़ी का बोझ। उसके मैले-कुचैले कपड़े ॥5॥
नंग-धड़ंगा वह बंब लंगोटी बहादुर।
चिथेड़ियाँ सिर पर। घुस्से भी ॥6॥
भोजँ शुद्ध मिलता घी का परोसा भात पर।
करते चेष्टाचार। निर-निराले ॥7॥
ज्वार की दलिया मट्ठा भरपेट।
सुख नहीं कुछ भी। हमारे किसानों को ॥8॥
टेककर तकिया के सहारे काम लिखने का।
बोल घमंडी के। भैंस जैसे ॥9॥
जूतियां बिना पाँव चले हल के पीछे दिन-रात।
हाँकते हैं बैलों को। गीतों को गाते-गाते ॥10॥
थाली पिकदानी भरी दोपहर में।
द्विज (ब्राह्मणादि) नींद लेते। बिछौने में ॥11॥
सिर्फ तंबाकू चूने में मलकर खाते।
मीठी-मीठी नींद लेते। कंबलों में ॥12॥
इंद्रिय बुद्धि दोनों को समान।
फिर ब्राह्मण क्यों सुखी। हुआ इतना ॥13॥
सत्ता की मस्ती में उनकी शिक्षा बंद कर दी।
शूद्रों ने स्वीकार कर लिया। हमेशा के लिए ॥14॥
मनु जलकर खाक हो गया जब अंग्रेज आया।
ज्ञान रूपी माँ ने। हमको दूध पिलाया ॥15॥
अब तो तुम भी पीछे न आओ।
भाइयो, पूरी तरह जला के खाक कर दो। मनुवाद को ॥16॥
हम शिक्षा पाते ही पाएँगे वह सुख।
पढ़ लो मेरा लेख। जोती कहे ॥17॥

[ब्राह्मणों की चालाकी और शूद्रों के भोलेपन के संबंध में।]

।। अभंग ।।

रोने लगते पड़ोसियों से । आँसू नहीं आँखें पोंछते ।।1।।
दाम लेते रोने लगते । बहुरूपिया स्वाँग रचाते ।।2।।
सर्वसाक्षी जगत्पत्ति । उसको न चाहिए मध्यस्थी ।।3।।
पाखंडी के सौ नखरे । करते पूजा दाम लेते ।।4।।
अनाड़ियों को बातों में बहकाते ।। पापी जप का स्वाँग रचाते ।।5।।
वकीलों का डर नहीं । कर्ता हमारा सर्वन्यायी ।।6।।
भाता सबको है समान । नहीं किसी को बेईमान ।।7।।
मुट्ठी भर ब्राह्मण शूद्रों के घर में । बहकावे की करते बातें ।।8।।
सुनो ! जोतिबा का सार । डालिए स्वयं (भगवान) पर भार ।।9।।

सत्यशोधक समाज, पूना, की रपट

साधू की जात मत पूछिए, पूछो उनका ग्यान ।।
तलवार की कीमत कीजिए, पड़ा रहन देऊ म्यान ।।

सत्यशोधक समाज

समाज की दो साल की हक़ीक़त

[24 सितंबर, सन् 1873 से 24 सितंबर, सन् 1875 तक]

सत्यशोधक समाज की जिस दिन स्थापना हुई, तब से आज तक जो गतिविधियाँ चलीं, उन सबका विवरण दिया गया है :

1. ब्राह्मण, पंडित, जोशी, उपाध्याय-पुरोहित आदि लोगों की दासता से शूद्र लोगों को मुक्त करने के लिए, जो अपने स्वार्थी (धर्म) ग्रंथों के द्वारा आज हजारों साल से शूद्र लोगों को नीच समझकर गफलत में लूटते आ रहे हैं। इसलिए उपदेश और ज्ञान के द्वारा उनको उनके सही अधिकार समझाने के लिए मतलब, धर्म और व्यवहार से संबंधित ब्राह्मणों के नकली और स्वार्थी ग्रंथों से उनको मुक्ति दिलाने के लिए कुछ जानकार शूद्र लोगों ने इस समाज की स्थापना दि० 24 सितंबर, 1873 को की है। इस समाज में राजनीतिक सवालों पर बोलना सख्त मना है।

2. माननीय कृष्णराव भालेकर और रावजी शिरोड़े आदि भांबुर्डे गाँव के लोगों ने समाज के सत्य और महत्त्वपूर्ण उपदेश सुनकर समाज की सदस्यता स्वीकार की है। इतना ही नहीं, उन्होंने गाँव-भांबुर्डे, तहसील-हवेली, जिला-पूना में समाज की एक शाखा स्थापित की है। फिर उस शाखा के द्वारा उन्होंने लोगों को काव्य, मतलब, अभंग और उत्सव-यात्रा के द्वारा उपदेश करके कई लोगों को समाज का सदस्य बनाया है। आजकल दिन-ब-दिन उनका कार्य अच्छी तरह चल रहा है, लगातार विकास हो रहा है।

3. गाँव हड़पसर में भी समाज के काफी सदस्य हैं। वहाँ मार्गदर्शन का कार्य आम तौर पर अच्छी तरह चल रहा है। उसी प्रकार गाँव पार्वती के पुलिस-पटेल आदि लोग समाज के प्रशंसनीय उद्देश्य को देखकर इस काम में दिलोजान से लगे हुए हैं।

4. माननीय रामय्या व्यंकय्या, अय्यावारू, नरसिंगराव सायबू वडनाला, जाया यल्लाप्पा लिंगू और व्यंकू बालोजी कालेवार आदि लोगों ने बंबई शहर में समाज की स्थापना की है और लोगों को उपदेश करके बहुत बड़ी संख्या में सुधार का कार्य शुरू किया है। इन कल्याणकारी और उदार महानुभावों के बारे में आगे लिखा जाएगा।

5. माननीय गोविंदराव बापूजी भिलारे। गाँव—भिलार, तहसील—जावड़ी, जिला—सतारा। इन्होंने अपने गाँव में समाज की शाखा स्थापित की है। उन्होंने इसके द्वारा गाँव के सभी लोगों को उपदेश देना शुरू किया है। परिणाम-स्वरूप उस गाँव के और पास-पड़ोसी गाँव के लोग समाज के सदस्य हुए। इसके अलावा वे प्रस्तावित दिन को भगवान की प्रार्थना करने का कार्यक्रम करते हैं। उसी प्रकार अन्य कुछ सुधार के कार्य में भी मन से लगे हुए हैं। इन तमाम बातों की चर्चा आगे होगी।[1]

6. समाज ने आज तक जो-जो काम किये हैं, वे इस प्रकार हैं :

विवाह

विवाह के समय ब्राह्मण, पंडित, पुरोहित आदि लोग शूद्र लोगों के विवाह उचित ढंग से नहीं करवाते, बल्कि वे लोग अपने स्वार्थ को ध्यान में रखकर शूद्र लोगों को आम तौर पर झूठे-झूठे अधिकार बताते हैं। वें लोग मंडप खिराज, लज्जा-हवन, साड़ी समारंभ और कंगन छोड़ना आदि के नाम पर गरीब शूद्रों से पैसा लूटते हैं। यदि उनके पास देने के लिए वह सारा कुछ न हो तो वे शादी की विधि पूरी नहीं करते। इस तरह की कई बातें प्रकाश में आई हैं। इसी की वजह से और उचित ढंग से विवाह-विधि होने के लिए, शादी-ब्याह में जो गलत रिवाज हैं, उनको समाप्त करने के लिए और ब्राह्मणों के इस जुल्म से लोगों को मुक्ति मिले, इसलिए ब्राह्मण-पुरोहितों को शादी लगाने के लिए न बुलाने की बात हमने कही है। उसी के अनुसार शादी-ब्याह में जो परंपरागत गलत रिवाज चलते आ रहे

1. माननीय गोविंदराव बापूजी भिलारे। गाँव—भिलार, तहसील—जावड़ी, जिला—सतारा। इनके बारे में उपरोक्त यह लिखा गया है कि विस्तार से विवरण देंगे। वह यह कि यह सज्जन समाज के सदस्य हैं। इन्होंने यहाँ के समाज के सदस्यों की बगैर किसी भी प्रकार की मदद लिए पहले साल में बगैर ब्राह्मण-पुरोहितों की मदद के छः विवाह संपन्न करवाए और दूसरे साल पांच विवाह। उनमें से एक-दो विवाह तो ऐसे भी हैं जिनके लिए इन्हें अपने पास से रुपए खर्च करने पड़े हैं।

थे, उन सभी को समाप्त करके सत्यशोधक समाज के सिद्धांतों के आधार पर जो शादी-ब्याह हुए, वे इस प्रकार हैं :

पहला विवाह

वर—सीताराम जबाजी आल्हाट, मुक़ाम—पूना, पेठ—जूनागंज।

वधू—राधाताई ग्यानोबा निंवणकर, मुक़ाम—सदर।

इन दोनों ने अपना विवाह दि० 25 दिसंबर, 1873 को ब्राह्मण-पुरोहित की किसी भी प्रकार की मदद लिए बग़ैर समाज के सिद्धांतों के अनुसार किया है। इस प्रशंसनीय कार्य के लिए जिन सज्जन और सुजान नारियों ने वर-वधू की गरीबी का खयाल करते हुए उदारता से सहयोग दिया, उनके नाम निम्न प्रकार हैं :

(1) सौ० सावित्रीबाई जोतीराव फुले।

(2) सौ० बजूबाई ग्यानोबा निंबणकर।

इनके अलावा अन्य चार-पाँच सज्जनों ने भी उदार सहायता देकर इस कार्य को सफल बनाया। लेकिन सौ० बजूबाई ग्यानोबा निंबणकर को कुछ स्वार्थी लोगों के बहकावे की वजह से अपने पति के द्वारा आज तक परेशानी बर्दाश्त करनी पड़ रही है।

दूसरा विवाह

वर—ग्यानोबा कृष्णाजी ससाने, मुक़ाम—हड़पसर।

तहसील—हवेली, जिला—पूना।

वधू—काशीबाई, वल्द नारायणराव विठोजी शिंदे।

मुक़ाम—पर्वती, तहसील—हवेली, जिला—पूना।

इस विवाह को सफल बनाने के लिए कुछ सज्जनों ने बड़ा अच्छा सहयोग दिया है। यह विवाह दि० 7 मई, 1874 को संपन्न हुआ है।

यह विवाह सफल न हो, इसलिए भवानी पेठ के एक दुष्ट दलाल ने हड़पसर में जाकर वर लड़के के दोस्तों-रिश्तेदारों को गलत-सलत बातें बताकर उनके मन में इतना जहर घोल दिया कि, अंत में यह विवाह हड़पसर में करने की बजाय पूना में करना पड़ा। ऐसे कसौटी के समय पूना में भी यह विवाह सफल न हो, इसलिए कुछ स्वार्थी लोगों के कहने पर चलने वाले मारुति सटवाजी फुले और तुकाराम खंडोजी फुले—इन दो लोगों ने प्रस्तुत विवाह होने के समय जान-बूझकर कुछ गलतफ़हमी पैदा की। उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि 'हमारे दुर्बल बच्चों के ब्याह इन लोगों के जानते-बूझते हुए हैं। उनमें एक दुलहिन लड़की उम्र में दो साल की है और ब्याह के बाद कुछ ही दिनों में मर गई। इस लापरवाही के लिए तुकाराम सोनाजी भुजबल को करीबन 400 रुपए का नुकसान सहना

पड़ा है।' उन्होंने इस कार्य में जितना संभव हो, उतनी कठिनाइयाँ पैदा करने की पूरी कोशिश की। उनकी उन तमाम बातों का यहाँ जिक्र करना उचित नहीं है। इसलिए उसके बारे में सिलसिलेवार हक़ीक़त यहाँ नहीं दी है। इस कार्यक्रम में काफी परेशानी हुई। इन दोनों स्वार्थी लोगों के कहने पर अन्य अज्ञानी लोगों द्वारा दखल देने से यह विवाह संपन्न होने की संभावना ही नहीं दिखाई दे रही थी; लेकिन इसी मौके पर मा० बाबाजी राणोजी फुले नाम का एक सज्जन करीबन 250 लोगों को अपने साथ ले आया और उपरोक्त दिन और दिनांक को कार्य संपन्न हुआ। इसी तरह व्यवस्था के लिए मा० राजन्ना लिंगू और गंगाराम भाई म्हस्के, इन्होंने अपने प्रयास से पुलिस की सहायता दिलवाई। इस काम के लिए मीठगंज पेठ के मातंग, महार और वहाँ के निवासी मोमीन लोगों ने अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया। जब-जब स्वार्थी लोगों ने इस कार्य के लिए समाज को बदनाम करने तथा इसे तोड़ने के लिए कठिनाई खड़ी की, तब-तब उक्त लोगों ने मदद देने का साहस दिखाया। ये लोग इस समाज के सदस्य नहीं होने के बावजूद केवल समाज का आदेश सुनकर इस काम में दिलोजान से मदद दी है, इसलिए हम उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए भूल नहीं सकते। ये दो विवाह किस प्रकार संपन्न हुए और विवाह के किन बुरे रिवाजों को हमने बंद किया, इसका सारा विवरण समाज की किताब में दिया गया है।

7. मा० ग्यानू मल्हारजी झगड़े। इन्होंने समाज की प्रारंभिक स्थिति को देखकर मिस्तरी के काम पर होने की वजह से इन्होंने करीबन पचास लोगों को समाज का सही उद्देश्य समझाया और उनमें से कई लोग सदस्य भी हुए। इसी की वजह से बड़े ब्राह्मण अधिकारियों ने उनको परेशान करना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अंत में उनको नौकरी छोड़ देनी पड़ी। जो लोग इनके उपदेशों से समाज के सदस्य हुए, उन्होंने और इन्होंने पैसों से बड़ी सहायता की है। इसके अलावा कुछ दिन पहले घोरपड़ी गाँव में उन्होंने बगैर ब्राह्मण-पुरोहित के एक पुनर्विवाह संपन्न करवाया। इस तरह, वे समाज के प्रचार-प्रसार में यथा-संभव प्रयास कर रहे हैं।

8. मा० भिकीबा साड़ी नाम के एक सज्जन ने समाज की लड़कियों में पढ़ने की इच्छा जागे, इस उद्देश्य से उनको प्रेरित करने के लिए अँगिया का कपड़ा भेंट दिया। इसके अलावा इन सज्जन ने कुछ लोगों को सत्य का उपदेश देकर कुमार्ग से मुक्त करके सुमार्ग पर लगाया। लड़कियों में पढ़ने की भावना जाग्रत हो, इसलिए उन्होंने इनाम दिया। उसी प्रकार, अन्य सदस्यों ने भी बच्चों को पतले कपड़े का शर्ट सिलाकर दिया।

9. इस समाज के कुछ सदस्यों ने और उनके परिवार के लोगों ने कुछ मूर्खतापूर्ण धार्मिक रिवाज बंद किए हैं, उनमें से कुछ फालतू धार्मिक रिवाज हैं—

भादों के माह में हरतालिका लेना, उपोषण, भाद्रपद शु० 4 का मतलब गणेश चतुर्थी का उत्साह, ऋषि पंचमी, भाद्रपद वद्य पक्ष में उस बहाने ब्राह्मण को सीधा देकर, उसके पाँवों की पूजा करके उसके अंगूठे का तीर्थ अपने उद्धार के लिए लेना और फाल्गुनी शु० 15 को जिस दिन होलिका दहन होता है, उसका त्यौहार करके शंखनाद करना, आदि हैं।

मा० गणपतिराव राजाराम फुले समाज के सदस्य हैं। इन्होंने अपनी माता के दर्शपिंड में ब्राह्मणों को नहीं बुलाया। इसी प्रकार मा० गणपत तुकाराम आल्हाट भी समाज के सदस्य हैं। इन्होंने अपनी दादी का पिंडदान बगैर ब्राह्मणों के ही किया है। इन सज्जनों ने बड़ी हिम्मत और पूरी समझ के साथ प्रशंसनीय कार्य किया है। ऐसे कार्य को देखकर समाज के कई लोगों ने उनकी प्रशंसा की है। उनका यह कार्य कितना महत्त्वपूर्ण है, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

उसी प्रकार मा० नारायणराव तुकाराम नगरकर, समाज के सचिव हैं। उनके बड़े भाई ने अपनी भाभी का अंतिम संस्कार बगैर ब्राह्मण बुलाए स्वयं किया है। इस शहर में इस सज्जन के बारे में करीबन सभी लोग जानते हैं। यह सज्जन समाज के सदस्य नहीं हैं, इन्होंने यह प्रशंसनीय कार्य अपनी स्वयं की समझ के आधार पर किया है। इसी तरह जो रिवाज मूर्खतापूर्ण हैं, नकली धर्म के पोषक हैं, उन सबको इन्होंने अपने जीवन से हटा दिया है।

10. इस तरह मूर्खतापूर्ण धार्मिक रिवाज बंद होने लगे। तब ब्राह्मण, पंडित, पुरोहित आदि को ऐसे लगा कि 'आज तक जो कुछ हमारी गूढ़ता थी और जो बड़प्पन था और जिसकी वजह से हमारा जीवन-निर्वाह हो रहा है, वह सारा इस समाज की वजह से बंद हो जाएगा और हमारा वर्चस्व भी समाप्त हो जाएगा।' इसी की वजह से उन्होंने यह सोचा कि चाहे कुछ भी करना क्यों न पड़े, लेकिन यह समाज नहीं चलना चाहिए। उसका विनाश हो। इसलिए उन्होंने पूरा प्रयास किया। उन्होंने कई अज्ञानी प्रमुख शूद्र लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनके दिलो-दिमाग इस तरह भ्रष्ट किए कि जो लोग समाज के सदस्य हैं, उनका बहिष्कार कर दिया जाए और दूसरी बात यह कि उनको जितना सताया जा सके, सताया जाना चाहिए। इस तरह का प्रयास किया जा रहा था। उसी दरमियान मा० बापूजी हरि शिंदे, हेड एकाउंटेंट, जिला—बुलढाना, इन्होंने समाज के सही और प्रशंसनीय उद्देश्यों को समझा और वे समाज के सदस्य बन गए। उसी तरह बंबई के कामाठी-पुरा के अट्ठारह सज्जन समाज के सही उद्देश्यों को समझकर सदस्य हुए हैं। इस तरह समाज का प्रसार हो रहा है और दुष्ट लोगों का षड्यंत्र असफल हो रहा है। उक्त सदस्यों में से मा० रामय्या व्यंकय्या अय्यावारू और व्यंकू बालोजी कालेवार— इन दोनों ने समाज का उद्देश्य और गरीब, अज्ञानी शूद्र-लोगों की आपत्तियाँ देखीं। ब्राह्मण-भिक्षुक और सरकारी ब्राह्मण कर्मचारियों द्वारा इन लोगों

को जो कष्ट सहना पड़ता है, ये सारी बातें हमारी दयालु अंग्रेज सरकार को प्रत्यक्ष रूप में बताने के लिए उन्होंने बारह सौ रुपयों का छापाखाना दिया है।

मा० व्यंकू बालोजी कालेवार समाज के सदस्य बनने के पहले भाद्रपद माह में गणेश चतुर्थी के त्यौहार के उपलक्ष्य में हजारों ब्राह्मणों को मीठा भोज और दक्षिणा भी देते थे। उन्होंने जब से समाज की सदस्यता स्वीकार की है, तब से गणपति उत्सव का पैसा देना बंद कर दिया है। उन्होंने सभी जाति के अपाहिज, अंधे, लंगड़े आदि हजारों लोगों को मीठा स्वादिष्ट भोजन खिलाना शुरू किया है। उन्होंने महिलाओं को साड़ी और अंगिया भेंट देकर उनका सम्मान करना शुरू किया है, उन्होंने हर व्यक्ति को धोती, शर्ट और टोपी भेंट देना शुरू किया है। इस काम के लिए उन्होंने काफी रुपया-पैसा खर्च करके बेसहारा लोगों को समाधान देने का कार्य आरंभ किया है, उसी तरह जाया यल्लाप्पा लिंगू नाम के व्यक्ति हर साल दीवाली को ब्राह्मणों को भोजन और दक्षिणा देते थे; लेकिन जब से वे समाज के सदस्य हुए हैं, तब से उन्होंने यह सब बंद कर दिया है और सारे रुपये समाज के कार्यकर्ताओं के बच्चों के लिए—जो मैट्रिक पास होगा, उसको हर साल पचीस रुपये और जो उनमें पहले दर्जे से पास होगा, उसको स्वर्ण-पदक—दे दिए हैं।

बंबई निवासी सदस्यों ने पिछले वर्ष मा० जोतीराव फुले को बंबई में निमंत्रित किया और उनको ले गए। वहाँ उनके 'सत्य' विषय पर कुछ व्याख्यान भी हुए। उस समय मा० व्यंकू बालोजी कालेवार और काराडी लिंगू—दोनों ने समाज के सम्मान में भोजन आदि में बहुत रुपया-पैसा खर्च किया। मा० नरसिंगराव सायबू वड़नाला को इन्होंने पोशाक भेंट की। बंबई के लोगों ने इस प्रशंसनीय कार्य में बड़ी उदारता से सहयोग दिया है। लेकिन ये बातें समाज-विरोधी धूर्त लोगों को मालूम होते ही उन्होंने पुनः समाज के सदस्यों को और उनके परिवारजनों को परेशान करना शुरू किया। वह इस प्रकार कि रात में चोरी करने वाले लोगों की तरह पत्थर फेंककर मारना, गंदे शब्दों का इस्तेमाल करना, आदि। इसके अलावा भी उन्होंने इतनी नीच हरकतें कीं कि उसकी चर्चा इस रपट में करना उचित नहीं है। यह सारा घिनौना कार्य चल ही रहा था कि मा० विश्राम रामजी घोले, असिस्टेंट सर्जन और मा० लक्ष्मणराव हरि शिंदे, चीफ कॉ०—ये दोनों सज्जन समाज के सदस्य हुए। तब इन समाज-विरोधी धूर्त लोगों का घिनौना काम बंद हो गया। इन सज्जनों में से मा० विश्राम रामजी घोले समाज का बहुत ही अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने शूद्र लोगों को समाज का प्रशंसनीय उद्देश्य समझाना शुरू किया कि हम लोगों को इस दुनिया में किस तरह से रहना चाहिए, हम लोगों को भगवान ने किस प्रकार के और कौन-से अधिकार दिए हैं। यह समझाने का कार्य वे बड़ी निष्ठा के साथ कर रहे हैं।

मा० नारायणराव गोविंद कडलक और नारायणराव तुकाराम नगरकर जब से समाज के सदस्य बने हैं, तब से आज तक वे बड़ी निष्ठा के साथ काम कर रहे हैं।

11. 'सत्यदीपिका' नाम के समाचार-पत्र ने इस समाज के सही उद्देश्यों को जानकर—जब से समाज की स्थापना हुई, तब से लेकर आज तक—सत्य की पहरेदारी करने के लिए जो सहयोग आवश्यक था, वह किया। समाज के जिन-जिन सदस्यों ने सत्य को साक्षी रखकर जो-जो अच्छा काम किया, उसको उसने प्रसिद्धि दी। मतलब, इस समाचार-पत्र को सत्य का दीपक ही मानना चाहिए। इसलिए समाज इस समाचार-पत्र के संपादक के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है और प्रार्थना करता है कि वह समाचार-पत्र चिरकाल तक प्रसिद्ध होता रहे और सत्य का प्रकाश सारी दुनिया में फैले। 'सुबोध' पत्रिका, मतलब सत्य का उपदेश देनेवाला पत्र। इसके और समाज के उद्देश्य कई मायनों में समान ही हैं। जिस तरह बड़े भाई अपने छोटे भाई को कक्षा में सहायता करता है, उसी तरह इस अखबार वाले ने की है। इसलिए समाज उसका आभारी है। इसी प्रकार 'प्रमोद सिंधू' और 'इंदु प्रकाश'—इन दो समाचार-पत्रों ने भी समाज के प्रशंसनीय उद्देश्यों को प्रचारित किया है। समाज उनके उपकारो को भी स्वीकार करता है।

12. समाज की स्थापना करने के काम में मा० विनायक बापूजी भांडारकर और विनायक बापूजी डेंगळे तथा सीताराम सखाराम दातार आदि लोगों ने अच्छी तरह सहयोग दिया है। उसी तरह मा० रामशेट बापूशेट उरवणे ने कई शूद्र लोगों को समाज के सही और कल्याणकारी उद्देश्य समझाए और उनको समाज के सदस्य बनाया तथा बाद में स्वयं भी समाज के सदस्य बने। मा० धोंडीराम नामदेव और पढरीनाथ अबाजी चव्हाण, दोनों ने धूर्त लोग अज्ञानी शूद्रों को किस प्रकार से लूटते हैं, इस पर अपने सामर्थ्य के अनुसार उपदेश दिया है। इन दोनों में पहले सज्जन ने काव्य द्वारा और दूसरे सज्जन ने निबंध के द्वारा अज्ञानी जनों को उपदेश देने का कार्य किया है। उसी प्रकार का काम मा० कृष्णराव पांडुरंग भालेकर और नारायण रामजी पांढरे आदि भांबुरडेकर लोग भी कर रहे हैं।

मा० विट्ठल नामदेव गुठाड़। इन्होंने मा० महादेव केशवराव सूर्यवंशी से उपदेश लेने की वजह से अपने गृहप्रवेश के कार्य में ब्राह्मण को नहीं बुलाया। इसी कारण गुठाड़ के हिस्सेदार, ब्राह्मणों के कहने पर, उनको हिस्सेदारी से निकाल दिया। लेकिन वे इतना ही करके शांत नहीं हुए। उन्होंने इनको व्यापार में परेशान किया जिससे उनका नुकसान हो। वे सारे तरीके उन्होंने अख्तियार किए। इसलिए गुठाड़ को कुछ दिनों तक काफी कठिनाइयाँ बर्दाश्त करनी पड़ीं। आखिर में उनको इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा कि अपने बच्चे की पढ़ाई शुरू रखने की सामर्थ्य भी उनमें नहीं रही। यह जानकारी मा० गंगाराम

भाऊ म्हस्के को प्राप्त होते ही इस सज्जन ने उस बच्चे को हर माह तीन रुपये छात्रवृत्ति के रूप में एक साल तक देने का वादा किया। यह छात्रवृत्ति मा० गुठाड़ ने पाँच माह तक ली। आगे उनका व्यापार शुरू होते ही उन्होंने स्वयं सूचित किया कि 'अब सब कुछ ठीक चल रहा है। आपने जो मदद की, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।' इस तरह मा० गंगाराम भाऊ को सूचित करके छात्रवृत्ति लेना बंद कर दिया। यह सज्जन समाज के सदस्य नहीं है, लेकिन ऐसे मौके पर उन्होंने मदद की, इसलिए हम उनके आभारी हैं।

छात्र घनश्याम किराड़ की पढ़ाई मैट्रिक परीक्षा तक हुई है और घर की गरीबी की वजह से उसको अपनी पढ़ाई बंद करने की स्थिति जब आई, तब मा० हरि रावजी चिपलूनकर ने बड़ी मेहरबानी करके उसको हर माह पाँच रुपया स्कॉलरशिप नौ माह तक देना स्वीकार किया है। ऐसी कठिनाइयों में इस समाज के गरीब छात्रों को सही काम के लिए सहायता की, इसलिए समाज उनका बहुत ही आभारी है और हम यह आशा करते हैं कि समाज के किसी भी व्यक्ति को जब इस तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़े, तब वे सज्जन आगे भी इसी तरह की सहायता करने में आगे-पीछे नहीं देखेंगे, इस बात की हमें पूरी उम्मीद है। इनकी उदार सहायता होने की वजह से समाज के लिए इनको भूषण मानना चाहिए।

समाज की ओर से जिन विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप मिलती है, उन विद्यार्थियों की पढ़ाई में कितनी प्रगति हुई है, इसका हिसाब समाज के पास हो, इसलिए उन विद्यार्थियों की परीक्षा लेने का काम मा० पो० राजन्न लिंगू प्लिडर ने बड़ी मेहरबानी करके स्वीकार किया है। इसलिए समाज उनका भी आभारी है।

13. आज की तारीख में इस समाज के 232 सदस्य हुए हैं।

14. जब से समाज की स्थापना हुई है, उस दिन से दि० 23 सितंबर, 1875 तक समाज के द्वारा जो रुपये दानस्वरूप प्राप्त हुए और समाज के कार्यों में खर्च हुए, उनका विवरण इस प्रकार है :

आय-विवरण	रकम रु० आ० पै०
मा० हरि रावजी चिपलूनकर	37—8—0
मा० जोतीराव गोविंदराव फुले	34—6—0
मा० जाया यल्लापा लिंगू	25—0—0
सौ० बजुबाई निंबणकर (विवाह के निमित्त)	20—0—0

सौ० सावित्री बाई फुले (सदर)	15—0—0
मा० गंगाराम भाऊ म्हस्के	15—0—0
मा० ग्यानोबा झगड़े	13—3—0
मा० माधवराव मड़ोर्जी झगड़े (विवाह के निमित्त)	7—0—0
मा० ग्यानू कृष्णाजी ससाणे	5—7—0
मा० दावबा बापू शिंदे (विवाह के निमित्त)	5—0—0
मा० भिकोबा बाळाजी सुकडे साड़ी	4—0—0
मा० ग्यानोबा लोंढे	3—2—0
मा० तुकाराम तात्या मुम्बईकर	2–10—0
सदस्यों की ओर से दो रुपये से कम की सहायता से प्राप्त रकम मिलाकर	34–12—0
कुल जमा	222—0—0

खर्च का विवरण	रकम रु० आ० पै०
स्कॉलरशिप खर्च	42—8—0
विवाह के लिए इनाम द्वारा मदद	47—0—0
साधारण खर्च	41–13—3
छापाखाने का खर्च	41—0—6
समाज की शाखाओं में किताबें इनाम दीं, इसलिए मा० विट्ठल महादेव गुठाड़ को मदद	25—0—0
बच्चों को कपड़े इनाम दिये, इसलिए	4–13—0
आज की तारीख में शेष	0—9—3
	222—0—0

—जोतीराव गोविंदराव फुले
(सत्यशोधक समाज, खजिनदार)

हमें इस अवसर पर यह लिखने में खुशी हो रही है कि हमारी आज की परम दयालु सरकार ने हिंदुस्थान में आकर सभी जाति के लोगों को शिक्षा का समान लाभ मिले, इस उद्देश्य से गांव-गांव में विद्यालयों की स्थापना की है। उसकी निष्पक्ष और जनकल्याणकारी नीति की वजह से सभी जाति के छोटे-बड़े लोगों

को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज जब कि लोगों में अज्ञान होने की वजह से और धर्म की मूर्खतापूर्ण धारणाओं की वजह से शूद्र समाज में शिक्षा का प्रचार उनकी संख्या के हिसाब से बहुत ही कम है, इसलिए अपने लोगों में सुधार लाने के लिए यह दिन बहुत अनुकूल है। अतः इस तरह की उम्मीद की जा सकती है कि हममें से विद्वान, जानकार लोगों को अपने लोगों और देश की जनता की उन्नति के लिए जुट जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें नकली धूर्त लोगों की किसी भी प्रकार की परवाह नहीं करनी चाहिए। यदि डरेंगे तो हमारे शूद्र भाइयों को मानसिक दासता के कैदखाने से कभी भी मुक्ति नहीं मिलेगी। ऐसा न करना उनके पुनः अंधकार के सागर में डूब जाने के समान होगा। इसलिए इन बातों की ओर ध्यान देकर जो करना है, वही करो। इस महान कार्य के लिए हमने शुरुआत कर दी है। हमारा यह कार्य दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है। इस कार्य को और आगे बढ़ाने में भगवान हमें सहायता करे, यही उससे हमारी प्रार्थना है।

समाज के सदस्य—मा० रामशेट बापूशेट उरवणे, मा० विनायक बाबाजी डेंगले, मा० ग्यानु मल्हारजी झगड़े, मा० कृष्णराव पांडुरंग भालेकर, मा० जोतीराव गोविंदराव फुले।

—नारायण तुकाराम नगरकर
(सत्यशोधक समाज, सचिव)

सत्यशोधक समाज के तीसरे वार्षिक समारंभ की रपट

तीसरे वार्षिक समारंभ की रपट

अध्यक्ष

मा० विश्राम रामजी घोले, डाक्टर

उपाध्यक्ष

मा० लक्ष्मणराव हरी शिंदे

सचिव

मा० नारायण तुकाराम नगरकर

खजिनदार

मा० रामशेट बापूशेट उरवणे

संचालक मंडल के लोग

अध्यक्ष

मा० पोलसानी राजन्ना लिंगू, वकील

सदस्य

1. मा० रामचंद्रराव हरी शिंदे
2. अजम इलायजा शालेमन
3. मा० रामसिंग पुरणसिंग
4. मा० विट्ठल तुलसीराम हिरवे
5. मा० बाळाजी खण्डेराव आढाव
6. मा० विनायक बाबाजी ढेंगले
7. मा० गणपत भास्करजी कोटकर
8. मा० नारायण गोविंदराव कडलक
9. मा० दीनानाथ नारायणराव
10. मा० आनंदराव रामचंद्र कोठावले
11. मा० हणमंतराव बापूजी साहाणे
12. मा० जोतीराव गोविंदराव फुले

1. पिछले वर्ष इस समाज की वर्षगाँठ मनाई गई थी। उस समय जो नियम बनाए गए, उनको समाज के सभी सदस्यों ने पसंद किया था। उन नियमों के अनुसार, अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार आचरण करने का प्रयास समाज के सभी

सदस्यों को प्रारंभ करना चाहिए। यह सुझाव डॉक्टर विश्राम रामजी घोले ने प्रस्तुत किया था। इस प्रस्ताव को समाज के सभी सदस्यों ने स्वीकार किया। उसके अनुसार, हर रविवार को शाम के समय ईश्वरोपासना और पंद्रह दिनों के बाद शनिचर को महत्त्वपूर्ण विषय पर भाषण देने की व्यवस्था की गई।

2. दि० 13 नवंबर, 1875 को प्रिंस ऑफ वेल्स इस शहर में आए। उस दिन सभी सदस्यों ने बड़े उत्साह से इकट्ठा होकर उनके आगमन पर भगवान से प्रार्थना की। मा० कृष्णराव ने युवराज के विषय में निबंध पढ़ा। बाद में मा० धोंडीराम नामदेव और कृष्णराव भालेकर—इन दोनों ने युवराज के हिंदुस्थान आगमन पर कुछ काव्य-पंक्तियाँ लिखी थीं, उनका पाठ किया।

3. पिछले सितंबर माह में अहमदाबाद में जल-प्रलय हुआ और हजारों लोगों पर बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ी। उनके मकान, कपड़े, अनाज सब कुछ नष्ट हो गए, ऐसे समय दुखी भाइयों को मदद करने के उद्देश्य से डॉक्टर विश्राम रामजी घोले ने सुझाव रखा कि समाज के सदस्यों और उसके समर्थकों से चंदा इकट्ठा करना चाहिए। उनके इस प्रस्ताव का मा० रामचंद्रराव हरी शिंदे और अन्य सदस्यों ने समर्थन किया। सभी लोगों ने बड़ी खुशी से अपनी सामर्थ्य के अनुसार चंदा दिया। कुल मिलाकर चंदा 195 रु० इकट्ठा हुआ। वह अहमदाबाद के कलेक्टर साहब के द्वारा रिलिफ फंड के अधिकारी को देने के लिए भेज दिया गया। इसी प्रकार, इधर से सूचना भेजे जाने पर बंबई के सत्यशोधक समाज के सदस्य और मित्रों की ओर से 130 रु० चंदा इकट्ठा करके वह सारी रक़म उधर ही उधर से अहमदाबाद भेज दी गई।

4. मा० जोतीराव गोविंदराव फुले द्वारा लिखित 'गुलामगीरी' और 'ब्राह्मणों की चालाकी'—इन किताबों की पचास-पचास प्रतियाँ समाज को भेंट दी गईं। ये क़िताबें और समाज के नियम की कुछ प्रतियाँ अमीर और राजा-रजवाड़ों को भेज दी जाएँ, इस तरह का निर्णय किया गया।

5. मा० राघवेंद्रराव रामचंद्रराव, ट्रांसलेटर हाइकोर्ट, को समाज के अध्यक्ष ने एक पत्र लिखकर यह पूछा कि समाज ने ब्राह्मणों को बुलाए बगैर जो विवाह संपन्न किए हैं, कानूनी हैं या नहीं। तब उन्होंने मेहरबानी करके यह सूचित किया कि इस तरह के विवाह कानूनी हैं। इसके लिए उन्होंने कई कानूनी प्रमाण दिए हैं। समाज इसके लिए उनका बहुत आभारी है।

6. समाज के नियमों की एक हजार प्रतियाँ छपवाकर सभी सदस्यों को और समाज के चाहनेवालों को भेज दी गई हैं।

7. समाज के एक गरीब सदस्य के लड़के की शादी के लिए समाज-फंड से 30 रुपये की सहायता देने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा समाज के सदस्य और दोस्तों की ओर से भी चंदा प्राप्त हुआ है।

8. इंग्लैंड और हिंदुस्थान की खेती में किस तरह का फर्क है, और हिंदुस्थान की खेती को अच्छी स्थिति में लाने के लिए किस-किस प्रकार के उपाय करने चाहिए, इस विषय पर शूद्र लोगों में से जो भी कोई किताब लिखेगा, उसको डॉक्टर विश्राम राव घोले और मा० रामशेट बापूशेट उरवणे ने पच्चीस-पच्चीस रुपये का इनाम देना स्वीकार किया है। इस संबंध में समाचार-पत्र में जल्दी ही विज्ञापन दे दिया जाएगा।

9. जिन लोगों को दिन में अभ्यास करने का समय नहीं मिलता है, ऐसे लोगों के लिए, मा० कृ० पा० भालेकर की सूचना के आधार पर, भांबुर्डे गाँव में नाईट स्कूल यानी रात की पाठशाला कैसे चल रही है, केवल तीन माह तक यह देखने के लिए कृष्णराव को नियुक्त किया गया था, लेकिन बहुत ही जरूरी काम से उनको दूसरे गाँव जाना पड़ गया। अब जब वे गाँव से आएँगे तब स्कूल निरीक्षण करने जाएंगे।

10. शूद्र लोगों में शिक्षा के प्रति प्रेम नहीं है। इसलिए उनके बच्चे रास्ते में तमाशा आदि देखने और खेलने में समय गँवाते हैं। उन लड़कों को इस तरह की आदत न लगे और वे प्रत्येक दिन समय पर स्कूल जाएं, इसके लिए समाज ने एक पट्टेवाला रखा है। समाज उसको हर माह पाँच रुपये देगा। पट्टेवाला दि० 17 जनवरी से 11 मई तक के लिए रखा गया है।

11. लड़के और लड़कियों में अध्ययन करने की जिज्ञासा पैदा हो, इसलिए कपड़ागंज में सरकारी कन्या पाठशाला नं० 6 और वेतालपेठ में कन्या पाठशाला नं० 3—इन दोनों पाठशालाओं में शूद्रों के लड़कों की परीक्षा लेने के लिए पाँच सदस्यों की नियुक्ति की गई थी। वे निम्न प्रकार हैं :

मा० जोतीराव फुले
मा० बालाजी आढाव
मा० गणपत राव कोटकर
मा० विट्ठलराव हिरवे
मा० विनायक राव ढेंगड़े।

इन सभी सदस्यों द्वारा पाठशाला नं० 6 के शूद्रों के लड़कों की परीक्षा लेकर उनकी योग्यता के अनुसार इनाम देने की बात तय की गई। समाज के अध्यक्ष मा० डॉ० वि० रा० घोले ने बड़ी खुशी से लड़कों को मिठाई और इनाम दिए। इनाम देने से पहले मा० जोतीराव गोविंदराव फुले ने लड़कों को प्रेरित करने वाला और पंडित जी को भी लड़कों को ज्यादा-से-ज्यादा पढ़ाने की इच्छा हो, इस तरह का छोटा-सा सारगर्भित भाषण दिया। कन्याओं की पाठशाला में कुछ कारणवश इनाम नहीं दिए गए, वहाँ जल्दी ही दिए जाएंगे।

12. शूद्रों के जो लड़के इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने के लिए जाते हैं, उनमें

गरीबों के लड़कों को मुफ्त में दाखिला मिले, इसके लिए वहाँ के प्रिंसिपल के समक्ष समाज द्वारा निवेदन प्रस्तुत किया गया था। परिणामस्वरूप मेहरबान इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल कूकसाहब ने गरीबों के दो-तीन बच्चों को मुफ्त में दाखिल किया। इसलिए समाज उनका बहुत ही आभारी है।

13. अपने लोग अच्छी तरह भाषण देना सीखें, इसके लिए समाज ने इस साल व्याख्यान-प्रतियोगिता का आयोजन दि० 2 मई, 1876 से किया था और वह दूसरे ही दिन समाप्त हो गया। उस समय बोलने वालों ने हिंदुस्थान की जातिभेद-समस्या से व्यावहारिक लाभ और हानि तथा मूर्ति-पूजा से लाभ और हानि—इन दो विषयों पर भाषण दिए। पहले विषय पर भाषण के लिए मा० द्वारकानाथ त्रिंबक सोनार को समाज के फंड से दस रुपये और मा० गणपत तुकाराम कुंहाडे को डॉक्टर वि० रा० घोले ने पांच रुपये इनाम दिए। दूसरे विषय पर मा० दामोदर बापूजी शिंपी (दर्जी) को समाज फंड से दस रुपये और मा० आनंदराव रणछोड़जी को मा० रामशेट बापूशेट तुरवणे ने पाँच रुपये इनाम में दिए। अंतिम वक्ता मा० गोपाल विश्राम घोले को बढ़ावा देने के लिए मा० जोतीराव गोविंदराव फुले ने स्वयं तीन रुपये इनाम में दिए।

14. शिक्षा का लाभ सभी लोगों को समान रूप में मिलना चाहिए। हमारे गरीब लड़कों के माँ-बाप में फी देने की सामर्थ्य नहीं है, इसलिए वे अपने लड़कों को स्कूल नहीं भेज रहे हैं। इसलिए इस काम में हर माह पाँच रुपये खर्च किए जाने चाहिए, इस तरह का प्रस्ताव समाज में सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया है।

15. मा० निलोबा रामजी कराडे बहुत ही गरीब हैं। उनके बच्चे की पढ़ाई पूरी करने के लिए समाज फंड से हर माह एक रुपया देने का निश्चय किया गया, और अध्यापक द्वारा हर माह उस लड़के के आचरण और अध्ययन का प्रमाण-पत्र दिया जाना चाहिए, यह समाज के संचालक कमेटी ने तय किया है।

16. देहात के लड़कों को शिक्षा का अवसर प्राप्त होना चाहिए, इसलिए हड़पसर गांव में समाज द्वारा एक स्कूल की स्थापना की गई थी। इस स्कूल का खर्च चलाने के लिए समाज फंड से हर माह 4 रुपये और गांव के लोगों द्वारा आपस में चंदा इकट्ठा करके हर माह 6 रुपया इकट्ठा करने की योजना तय की गई थी। इस तरह उन दस रुपये से स्कूल चलाने का निर्णय लिया गया था लेकिन गांव के लोगों की ओर से चंदा इकट्ठा नहीं हो सका। फिलहाल समाज सारा खर्च उठाने के लिए समर्थ नहीं है, इसलिए उस स्कूल को बंद रखना आवश्यक हो गया।

17. अपने गरीबों के बच्चों को सौ में से पांच को मुफ्त में दाखिल करने का आदेश मेहरबान च्यॉट फिल्ड साहब, डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन ने शिक्षा विभाग के सभी अधिकारियों को दिया। सायबू वड़नाला, समाज के सदस्य, की इस सूचना पर समाज उनको बहुत धन्यवाद दे रहा है।

18. आज की तारीख में इस समाज के 316 सदस्य हैं। उनमें 84 नये सदस्य हैं जो इसी वर्ष बने हैं।

19. इस समाज के सही और प्रशंसनीय उद्देश्यों को जानकर सत्यदीपिका, सुबोध पत्रिका और ज्ञान प्रकाश के संपादकों ने समय-समय पर उचित मदद दी है, हर तरह से सहयोग दिया है, इसलिए समाज इन समाचार-पत्रों के संपादकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है और प्रार्थना करता है कि ये समाचार-पत्र चिरकाल तक चलते रहें और सारी दुनिया में सत्य का प्रकाश फैलता रहे।

20. मा० हरी रावजी चिपलूनकर समाज के सदस्य नहीं हैं, फिर भी उन्होंने अनाथ शूद्रों के बच्चों को स्कॉलरशिप देने के लिए एक साल तक 60 रुपये देने की बात बड़े उत्साह से कबूल की है। इसी प्रकार यह सज्जन तुकाराम विठूजी चव्हाण, कुलवाड़ी और पांडुरंग किसन पाड्वे, कुंभार—इन दोनों को हर माह 5 रुपये पिछले जनवरी से समाज के द्वारा दे रहे हैं। पहले से ही यह उदार सज्जन ज्ञानवृद्धि के लिए समाज को मदद देते चले आ रहे हैं। इसलिए इस अवसर पर समाज उनके प्रति अपना आभार प्रदर्शित किए बगैर नहीं रह सकता। इस सज्जन की तरह उदार बुद्धि हमारे शूद्र राजा-रजवाड़ों को और धनवानों को प्राप्त हो।

21. मा० रामचंद्र मनसाराम ढवारे नाईक, प्रसिद्ध कंट्रॉक्टर। इस सज्जन की बेतालपेठ में बड़ी दुमंजिली इमारत है। उस इमारत को दूसरे मारवाड़ी हुंडी वाले लोग सोलह रुपये हर माह के किराये पर माँग रहे हैं। इसी दरमियान समाज के अध्यक्ष विश्राम रामजी घोले डॉक्टर ने बड़ी तेजी से उस सज्जन को एक पत्र लिखकर सूचित किया कि समाज को इस तरह के मकान की आवश्यकता है। तब उस सज्जन ने हमारी आवश्यकता को जानकर अपना हर माह छह रुपये का नुकसान बर्दाश्त करके उस इमारत को समाज के उपयोग के लिए केवल दस रुपये हर माह के किरायेपर समाज को दिया है। इतना करके वे सज्जन शांत नहीं हुए; बल्कि उन्होंने समाज का सदस्य नहीं होने पर भी चालू वर्ष के लिए समाज को बीस रुपये चंदा देकर वे लगातार समाज को प्रोत्साहन दे रहे हैं। इस तरह के लोग जब तक देश से चुने नहीं जाते तब तक इस देश का विकास संभव नहीं है। उसी तरह मा० गंगाराम भाऊ म्हस्के, बाजार मास्टर के पेशकार; इन्होंने इस वर्ष समाज को कई अच्छे कार्यों के लिए 22 रुपये चंदा दिया, इसलिए समाज उनके प्रति अपना आभार व्यक्त कर रहा है।

22. मा० हरी गणेश पटवर्धन उर्फ अण्णासाहब सांगलीकर ब्राह्मणों में से एक अमीर आदमी हैं। वे समाज के सदस्य नहीं हैं; लेकिन समाज के प्रमुख सभानायक से समाज के उद्देश्यों के बारे में सही जानकारी प्राप्त होते ही उनको शूद्र लोगों के प्रति हमदर्दी पैदा हुई और उन्होंने चालू वर्ष के लिए पैंतीस रुपया चंदा दिया, इसलिए समाज उनका आभारी है। इसी को कहते हैं सत्य का अभिमान

और मनुष्यता के प्रति प्रेम।

23. मा० जाया काराडी लिंगू। इन्होंने शूद्रों के अनाथ बच्चों को शिक्षा का लाभ हो, इसलिए 25 रुपये स्कॉलरशिप देना स्वीकार किया है। समाज उनका आभारी है। समाज के सदस्य मा० सखाराम सटवाजी भोंगड़े का कुछ दिन पहले देहांत हो गया और उनके पीछे उनकी पत्नी है जिसको आँखों से बहुत कम दिखाई देता है। उसके दो छोटे बच्चे हैं और वे बहुत गरीब हैं। यह बात समाज के ध्यान में आई। उन बच्चों की पढ़ाई हो, इसलिए (वह स्त्री जब तक अपने बच्चों को स्कूल भेजती रहेगी तब तक और वे बच्चे जब तक ध्यान से पढ़ाई करते रहेंगे तब तक) समाज उस रकम से हर माह दो रुपये दि० 1 मार्च, 1876 से दे रहा है।

24. गरीब शूद्रों के बच्चों को पढ़ना चाहिए, इसके लिए सहायता के रूप में मा० तुकाराम तात्या मुंबईकर से 12 रुपये प्राप्त हुए हैं और समाज के फंड से 4 रुपये। कुल मिलाकर 16 रुपये। समाज ने विद्यार्थी सखाराम मचाले को हर माह 2 रुपये के हिसाब से मई माह से दिसंबर, 1876 की समाप्ति तक देने को कबूल किया है। यह विद्यार्थी आने वाली मैट्रिक की परीक्षा देगा। समाज ने इसके लिए उसको दस रुपये प्रवेश-फीस दी है।

25. मा० स्वर्गीय जाया एल्लापा लिंगू। मैट्रिक की परीक्षा में शूद्रों के जो बच्चे सफल होंगे और उनमें जो अच्छे अंक प्राप्त करेगा, उसको इन्होंने सोने का एक पदक और हर साल पच्चीस रुपये देने की बात स्वीकार की है। एक साल के पैसे उन्होंने दिए हैं। पदक अभी तक किसी को नहीं दिया गया है।

26. मा० स्वर्गीय एल्लापा लिंगू का बहुत ही कम आयु में देहांत हुआ है। वे सत्यशोधक समाज के सदस्य थे। उनके मरने की खबर समाज को प्राप्त होते ही समाज ने उनके छोटे भाई मा० जाया कराडी लिंगू और परिवार के दुःख-शांति के लिए एक पत्र भेजा था। यह सज्जन दयालु था और उसने समाज के विकास के लिए पूरी तरह प्रयास किया था। ऐसे सदाचारी मनुष्य की याद समाज में हमेशा के लिए रहे, इसलिए समाज के व्यवस्थापक मंडल ने यह तय किया है कि चंदे की दो यादी तैयार की जाए और एक को पूना के सदस्य और उनके दोस्तों में घुमाई जाए और दूसरी यादी बंबई में चंदा जमा करने के लिए भेजी जाए, और इससे जो रकम जमा होगी, उसको सरकारी या सावकारी बैंक में रखकर उससे जो ब्याज मिलेगा, उसमें से कुछ समाज के वार्षिक भाषण प्रतियोगिता में इस सज्जन के नाम से एक इनाम अच्छा भाषण देनेवाले को दिया जाए।

27. समाज द्वारा छात्रावास—मतलब, दूसरे गाँव के शूद्र छात्रों के लिए भोजन, निवास तथा अध्ययन की उचित व्यवस्था हो, इस तरह के छात्रावास का निर्माण किया जाए। इस संबंध में समाज को विस्तार से सही रपट प्रस्तुत करने के लिए पाँच सदस्यों की एक सब-कमेटी बनाई गई है :

मा० गंगाराम भाऊ म्हस्के, मा० जोतीराव गोविंदराव फुले, मा० पो० राजन्ना लिंगू वकील, मा० लक्ष्मणराव हरी शिंदे, मा० विनायक भांडारकर।

28. मा० व्यंकू बालोजी कालेवार और रामय्या व्यंकय्या अय्यावारू आदि लोगों ने मेहरबान होकर समाज को छापाखाना दिया है। यह छापाखाना एक साल तक समाज के अधिकार में रहेगा और बंबई के सदस्यों से पत्र-व्यवहार होकर दिया हुआ छापाखाना वे वापस ले जाएँगे।

29. समाज की आमदनी और खर्च का विवरण निम्न प्रकार है :

जमा राशि

	रु० आ० पै०
पिछले साल का बचा हुआ	0— 9—3
पूना के सदस्यों से प्राप्त वार्षिक चंदा	232— 4—0
दूसरे गाँव में रहनेवाले सदस्यों से प्राप्त चंदा	26— 0—0
पूना के समाज के सहानुभूतिदारों से समाज को प्रोत्साहन देने के लिए आर्थिक सहायता	134—14—0
बंबई के सहानुभूतिदारों से प्राप्त सहायता	12— 0—0
पूना के सदस्यों से अहमदाबाद रिलिफ फंड के लिए प्राप्त चंदा	119— 0—0
बंबई के सदस्यों से अहमदाबाद रिलिफ फंड को भेजी गई मदद	68— 0—0
पूना के समाज के सहानुभूतिदारों की ओर से अहमदाबाद रिलिफ फंड के लिए जमा चंदा	66— 0—0
बंबई के समाज के सहानुभूतिदारों से अहमदाबाद रिलिफ फंड को भेजी गई मदद	72— 0—0
पूना के सदस्यों से शूद्रों को भाषण-प्रतियोगिता में प्रोत्साहन देने के लिए चंदा	13— 0—0
पूना के सदस्य और सहानुभूतिदारों की ओर से कुशाबा के लड़के की शादी के लिए दिया गया चंदा	18— 0—0
समाजगृह का कुछ हिस्सा किराये पर दिया गया, उससे प्राप्त किराया	5— 1—6
कुल	766—12—9

खर्च

	रु० आ० पै०
प्रिंस ऑफ वेल्स के सम्मान में	11— 0—3
अहमदाबाद के दुख-पीड़ित लोगों को मदद	325— 0—0
पूना के गरीब शूद्रों के बच्चों को सरकारी स्कूल की फी	7—13—6
पूना के गरीब शूद्रों के बच्चों को स्कॉलरशिप	72— 8—0
शूद्रों को प्रोत्साहित करने के लिए भाषण-प्रतियोगिता सभारंभ	43— 3—6
शूद्रों के श्रीमान और गरीब लोगों को किताबें देने के लिए खरीदी	56— 0—0
सरकारी स्कूल के गरीब शूद्र लोगों के बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए कपड़े और खाने की चीजें	9—11—0
मा० व्यंकू बालोजी कालेवार और रामय्या व्यंकय्या अय्यावारू—इनके छापाखाने के संबंध में खर्च	11— 1—3
चपरासी के लिए	19—12—0
समाज के उपयोग के लिए सामान खरीदा	29— 1—6
समाजगृह के किराये के लिए	36— 0—0
नियम और नोटिस छापने के लिए	20—12—0
प्रार्थना के समय सारमंडल आदि बाजे के लिए खर्च	6—14—6
रोसनाई के लिए खोबरेल और अलसी तेल	5—15—3
सामान्य खर्च	9—14—6
समाज के नौकरों का वेतन	78— 9—0
शेष बाकी	24— 9—0
कुल	766—12—9

—रामचंद्र बापूशेट उरवणे
(सत्यशोधक समाज, खजिनदार)

30. पिछले साल समाज की आम सभा ने जो नियम स्वीकार किये थे, उन नियमों में से 9वें नियम का उपनियम—मतलब, इस उपनियम के अनुसार अपने अधिकांश लोगों द्वारा फिलहाल आचरण करने की संभावना नहीं है, इसलिए वह नियम इस वर्ष निकाल दिया गया है और उसी नियम के चौथे उपनियम

की, 23वें नियम के तीसरे उपनियम से समानता है, इसलिए उसको भी निकाल दिया गया है। और कुछ सदस्यों के अनुभव से दूसरे नियमों में भी कुछ परिवर्तन व्यवस्थापक मंडल ने किया है, और वे नियम अब आमसभा की स्वीकृति के लिए पढ़कर सुनाये जाएँगे।

31. उपरोक्त हकीकत से पता चलता ही होगा कि समाज ने अपनी क्षमता के अनुसार आज तक कितना कार्य किया है। यह समाज टिका रहे और इसका कार्य सही ढंग से चलता रहे तो अपने सभी लोगों को कितना फायदा होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं; किंतु वैसा होने के लिए विद्वान, बुद्धिमान, समझदार, धनवान और लगन से काम करने वाले लोगों की आवश्यकता है। जब तक ऐसे लोगों की संख्या समाज में बढ़ती नहीं या जो लोग समाज के सदस्य हैं, वे लगातार समाज में आते नहीं तब तक इस समाज की जो उम्मीदें हैं, वे पूरी नहीं होंगी, इस बात को सभी सदस्यों को समझ लेनी चाहिए। समाज ने जो बड़े महत्त्वपूर्ण काम अपने हाथ में लिए हैं, सारे काम तुरंत होने की इच्छा हम रखते हैं लेकिन उस तरह होते नहीं। इसलिए अब हमारे विद्वान और समझदार लोगों से यह निवेदन है कि जैसे कहा जाता है कि बीता हुआ कल लौटकर नहीं आता, इस कहावत के अनुसार, अपने लोगों में परिवर्तन लाने का जो अवसर हम लोगों को अंग्रेजी राज में मिला है, इस अवसर को यदि हम व्यर्थ में गँवा देते हैं तो हम लोग अपनी संतानों का बहुत ही नुकसान करने के लिए दोषी माने जाएँगे। इसलिए ऐसा सुनहरा मौका व्यर्थ खर्च करने की बजाय हम सभी लोगों ने समाज को जितनी संभव हो उतनी सहायता दी, तो हम सभी लोगों का उससे कल्याण ही होगा।

—नारायण तुकाराम नगरकर
(सत्यशोधक समाज, सचिव)

पूना सत्यशोधक समाज के सदस्य और सहानुभूतिदारों से प्राप्त वार्षिक चंदा और अच्छे काम के लिए इनाम—दि० 24 सितंबर, 1875 से दि० 24 सितंबर, 1876 तक।

नाम	चंदा और इनाम की रकम	नाम	चंदा और इनाम की रकम
सदस्य	रु० आ० पै०	सदस्य	रु० आ० पै०
अव्वल रोख शेष	0—9—3	मा० रामचंद्र राव रूपराम चौधरी	29—0—0
मा० विश्रामराम जी घोले, डॉक्टर	60—0—0	मा० रामय्या व्यंकया आय्याबारू, बंबई	17—0—0

मा० जोतीराव गोविंदराव फुले 51—0—0

मा० रामशेट बापूशेट
उरवणे, आढ़ती 55—0—0

मा० पो० राजन्ना लिंगू 21—0—0

मा० तुकाराम हणमंतराव
पिंजन 13—8—0

मा० बाळाजी खंडेराव
आहाव 12—0—0

मा० जाया काराडी
लिंगू, बंबई 11—0—0

श्रीमंत जयसिंगराव आंग्रे 10—0—0

मा० ब० बालकृष्णदेवराव,
डेपुटी कलेक्टर 10—0—0

मा० ब० मारुतराव भुजंग-
राव ने० आ० पो० सु० 10—0—0

मा० व्यंकू बालोजी
कालेवार, बंबई 10—0—0

मा० जाया नागू
परभाजी, बंबई 10—0—0

मा० देवजी यल्लाप्पा,
कंट्राक्टर 7—0—0

मा० नारायणराव
तुकाराम नगरकर 6—0—0

मा० हणमंतराव बापूजी
साहाने 5—8—0

मा० जयसिंगराव सायबू
वडनाला, बंबई 5—0—0

मा० बापूजी इरापा
कोरबा, बंबई 5—0—0

मा० राजू बाबाजी वंजारी
बंबई 5—0—0

मा० नागाप्पा
रामास्वामी डाक्टर 15—0—0

मा० रामचंद्र राव
हरि शिंदे 15—0—0

मा० इराप्पा मस्नाजी
पत्ती, बंबई 5—0—0

मा० दीनानाथ जी
नारायण राव 4—8—0

मा० रामसिंग सुर्णसिंग 4—0—0

मा० धरमसेठ विठोबा
हेड रायटर, खड़की 4—0—0

मा० मुरारजी विठोबा
हेड रायटर, बंबई 4—0—0

मा० लक्ष्मण हरी शिंदे
पो० इ० 4—0—0

मा० रामभाऊ देवजी
पोड़े 4—0—0

मा० रामचंद्र विठोबा
धामनसकर, हेडक्लर्क,
सतारा 4—0—0

मि० इलाइजा सालीमन,
रायटर 3—8—0

मा० शिवाप्पा राजन्ना,
डाक्टर 3—0—0

मा० गणपतराव
भास्करजी कोटकर 2—8—0

मा० नारायण गोविंदराव
कडलक 2—8—0

मा० दिनकर राव
मुंहारराव तावरे 2—8—0

मा० ग्यानु मल्हारजी
झगड़े, मिस्तरी 2—8—0

मा० पोचेटी पोचय्या निगाल, बंबई 5—0—0

मा० बाबाजी मानाजी ढेंगले, व्यापारी 2—0—0

मा० यशवंतराव राघोबा कांबले 2—0—0

मा० विगोजी घोटन्ना 2—0—0

मा० रामजति भगवानजति 2—0—0

मा० केदारगीर देवगीर 2—0—0

मा० नरसू नरसाप्पा नेल्ला, बंबई 2—0—0

मा० आलया व्यंकय्या अय्यावारू, पाँचगणी 2—0—0

मा० विट्ठल तुलसीराम हिरवे 1—12—0

मा० सुरतसिंग रामदीन 1—10—0

मा० मोहोनाजी गिरमाजी रागटर 1—10—0

मा० नाना बजाबा कारखाणनवीस 1—8—0

मा० हरिगोविंदराव कडलक 1—8—0

मा० विनायकराव बाबाजी ढेंगले 1—8—0

मा० नारायणराव सजणाजी डाक्टर 2—0—0

मा० सायन्ना अबू ओव्हरसियर

मा० बालकृष्ण नारायण फुटाणे 1—0—0

मा० सीताराम जबाजी आल्हाट 1—0—0

मा० आनंदराव रामचंद्र 1—0—0

मा० धोंडीराम नामदेव कुंभार 1—0—0

मा० दुर्गासिंग सुबेदार 1—0—0

मा० रामजी जाधव पेंशनर 1—0—0

मा० विट्ठलराव महादेव गुठाड़ 1—0—0

मा० कासुला इराप्पा लिंगू 1—0—0

मा० दाजी सभाराम चव्हाण 1—0—0

मा० नारायण हरि माने 0—12—0

मा० विट्ठल हैबतराव टिलेकर 0—8—0

मा० रामजी संताजी शिंदे, नगरकर 0—8—0

मकान किराया जमा 5—1—0

सहानुभूतिदार

मा० हरि रावजी चिपलूनकर 42—8—0

श्रीमंत मा० हरि गणेश पटवर्धन 35—0—0

मा० रामभाऊ मंचाराम ढवारे नईक 20—0—0

मा० सीताराम सखाराम दातार 20—0—0

मा० सुपा नरसाप्पा कंट्रैक्टर	25—0—0
मा० सखाराम बालकृष्ण पेंशनर स्कूल मास्टर	15—0—0
मा० तुकाराम तात्या- व्यापारी, बंबई	12—0—0
मा० नारायणसेठ तात्या- सेठ वाडेकर	10—0—0
मा० नागू सयाजी कंट्रैक्टर, बंबई	10—0—0
मा० धर्माजी नरसू, बंबई	10—0—0
मा० राजन्ना जडू	10—0—0
मा० कृष्णाजी जेथाजी- सेठ मारवाड़ी	5—0—0
मा० शिवराम् सायन्ता ओव्हरसियर	5—0—0
मा० राजन्ना सायबू, बंबई	5—0—0
मा० विनायकराव बापूजी भांडारकर, हे० आ०	5—0—0
मा० बाबाजी नरसू डाक्टर, बंबई	3—0—0
सौ० सावित्री बाई जोतीराव फुले	2—0—0
मा० गंगाराम भाऊ म्हस्के	20—0—0
मा० मौनाजी नरसू, बंबई	2—0—0
मा० ब्यंकू नरसू, बंबई	2—0—0
मा० नागू नरसू, बंबई	2—0—0
मा० लक्षमणराव तुकाराम नगरकर, आढ़ती	1—0—0
मा० लक्ष्मणसेठ गुडवे	1—0—0
मा० तात्या मरमाप्पा	1—0—0
मा० अण्णा मरमाप्पा	1—0—0
मा० दामूचंद पाडलीकर	1—0—0
मा० मोतीराम मुरार, गूजर	1—0—0
मा० सदोबा तोडकरी, ताराड़े	1—0—0
मा० बाबाजी तोडकरी	1—0—0
मा० पुनाल काराडी, बंबई	1—0—0
मा० जिलकर राजन्ना, बंबई	1—0—0
मा० आनंदराव, बंबई	1—0—0
मा० हणमंतराव, ज़गदाड़े	0—6—0
कुल	766—12—9

—रामचंद्र बापूसेठ उरवणे
(सत्यशोधक समाज, खजिनदार)

—वी० आर० घोले
(सत्यशोधक समाज के अध्यक्ष)

सत्यशोधक समाज, पूना, का निबंध और भाषण-प्रतियोगिता समारंभ

निबंध और भाषण-प्रतियोगिता समारंभ

सत्यशोधक समाज की ओर से समाज के सदस्यों को यह सूचित किया जाता है कि हमारे लोगों को निबंध लिखना आए और भाषण समारंभ में सुंदर और सिलसिलेवार भाषण दे सकें, इसलिए उनको प्रोत्साहन देने के लिए हमने निबंध और भाषण-प्रतियोगिता का समारंभ आयोजित किया है। यह समारंभ दि० 7 जून, 1877 से शुरू होगा। इस अवसर पर हमने निबंध और भाषण के लिए दो विषय दिये हैं, वे निम्न प्रकार हैं :

निबंध का विषय[1]

"हिन्दुस्थान की एम्प्रेस महारानी व्हिक्टोरिया साहिबा, आजकल हिंदुस्तान की यात्रा कर रही हैं और गाँव-गाँव के मातंग-मोहल्लों में, महार-मोहल्लों में अचानक अपनी गाड़ी रुकवा करके, गाड़ी से नीचे उतर करके वहाँ की झोंपड़ियों का दृश्य देख रही हैं। उसी समय एक मातंग और दूसरा महार लकड़ियों के दो बंडल सिर पर उठाए वहाँ पहुँचे। उन्होंने अपने सिर से लकड़ी का बंडल नीचे उतारकर रानी साहिबा से कहा कि उन लोगों को हिंदू धर्म में रहने की वजह से पहले के ब्राह्मणी और शूद्र राज में किस-किस प्रकार के जुल्म, कठिनाइयाँ और दुःख सहने पड़े और आज भी सहने पड़ रहे हैं, उसी प्रकार उनको आज भी अंग्रेजी राज में किस प्रकार के दुःख बर्दाश्त करने पड़ रहे हैं और आगे भी उसी धर्म में रहने पर उनको किस प्रकार के दुःख सहने पड़ेंगे, इसके बारे में सामान्य जानकारी।"

---

1. निबंध लिखनेवालों को इस तरह से लिखना चाहिए कि यदि उसको छपवाकर प्रसिद्ध किया गया तो डेमी कागज पर एक ओर से करीब तीस पन्ने से कम नहीं होने चाहिए और सरल भाषा में होना चाहिए।

भाषण-प्रतियोगिता

हिंदुस्थान में बार-बार अकाल पड़ता है जिसमें शूद्र लोग ही सबसे पहले भूखों मरने लगते हैं। इसके कारण क्या हैं ? और वे किन उपायों से दूर किए जा सकते हैं ?

उपर्युक्त विषय के संबंध में सम्मानार्थ बोलने की यदि किसी की इच्छा हो तो भाषण-प्रतियोगिता समारंभ के दो दिन पहले वह समाज के सचिव को सूचित कर दें, तभी उनको बोलने की इजाजत मिलेगी ।

इनाम और अंक

उपर्युक्त दो विषयों में से, किसी भी एक विषय पर जिस सदस्य की निबंध लिखकर पढ़ने की या भाषण करने की इच्छा हो, उन्हें अपना नाम, पद और पता 'सत्यशोधक समाज, सचिव, वेतालपेठ के पते पर दि० 20 मई, 1877 के पहले सूचित कर देना चाहिए। नॉट पेड पत्र स्वीकार नहीं किये जाएँगे।

हर उम्मीदवार को निबंध पढ़ने के लिए या भाषण देने के जिए चौथाई घंटा दिया जाएगा। यदि विषय का प्रतिपादन ठीक हो तो उससे भी ज्यादा समय दिया जा सकता है। उम्मीदवार की उम्र सोलह वर्ष से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। एक ही उम्मीदवार को दो विषयों पर निबंध लिखकर पढ़ने और भाषण देने की इजाजत नहीं है। इन दोनों विषयों पर निबंध लिखनेवालों और भाषण करनेवालों को किसी भी व्यक्ति के प्रति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से न तो बोलना चाहिए और न ही लिखना चाहिए। राजनीति पर जो भी लिखेगा या भाषण देगा, तो उसी समय उसका भाषण रोक दिया जाएगा। निबंध और भाषण के परीक्षण के लिए पंच नियुक्त किए जाएँगे। वे जिनका निबंध या भाषण पसंद करेंगे, उनमें से हर विषय में अच्छा निबंध और अच्छा भाषण देनेवाले को चार इनाम दिए जाएँगे। इनाम का विवरण इस प्रकार है :

निबंध लिखनेवाले को पहला इनाम रु० 25 का, दूसरा रु० 5 का। भाषण करनेवाले को पहला इनाम कैलासवासी जाया यल्लाप्पा लिंगू के नाम का रु० 10 का और दूसरा रु० 5 का। इस प्रकार चार इनाम रखे गए हैं।

पहले दर्जे का मतलब रु० 25 और रु० 10 का इनाम मिलने के लिए 100 अंकों में से 50 अंक और दूसरे दर्जे का 5 और 5 रुपये का इनाम मिलने के लिए करीबन 40 अंक आने चाहिए।

—जोतीराव गोविंदराव फुले
(सत्यशोधक समाज, सचिव)

दि० 20 मार्च, 1877

(ज्ञानोदय, 12 अप्रैल, 1877 से)

अकाल के संबंध में प्रार्थना-पत्र

पूना, बंबई आदि शहरों के मेहरबान सदस्यों से नम्र निवेदन।

समाज के आदेश के अनुसार आप लोगों को नम्रतापूर्वक यह सूचित किया जा रहा है कि समाज के द्वारा 'व्हिक्टोरिया बालाश्रम' की स्थापना की गई है। अकालग्रस्त लोग अपने बाल-बच्चों को घरों पर ही छोड़कर जाने लगे हैं और उसी के परिणामस्वरूप इंदापुर, मिरज और तास गाँव की ओर के ब्राह्मणों को छोड़-कर बाकी सभी जातियों के बेसहारा लोग अपने बाल-बच्चों को लेकर इकट्ठा हुए हैं। उन लोगों को कभी-कभी दो-दो, तीन-तीन दिन तक अनाज का एक दाना भी नसीब नहीं होता है, भूख से तड़फड़ाते रहना पड़ता है, इसलिए अब उनकी केवल हड्डियाँ बची हुई हैं। इसके अलावा कपड़े-लत्तों के बिना वे इतने बेहाल हैं कि उनका यहाँ पूरी तरह से ब्योरेवार जिक्र करने में मुझे बड़ी पीड़ा होती है। इसलिए इस सूचना को देखते हुए आप सभी सदस्यों और अन्य सभी दयालु सज्जनों से निवेदन है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ न कुछ मदद भेजने की जल्दी की तो इसका मतलब यही होगा कि आप लोगों ने इस समय अपना फर्ज अदा करके बड़ी मेहरबानी की है।

आपका नम्र

—जोतीराव गोविंदराव फुले

तारीख 17 मई, सन् 1877 ई०

(सत्यशोधक समाज, सचिव)

(ज्ञान प्रकाश, 24 मई, 1877 में)

हंटर शिक्षा आयोग को दिया गया निवेदन

Memorial Addressed To The Education Commission

A Statement for the information of the Education commission

My experience in educational matters is principally confined to Poona and the surrounding villages. About 25 years ago, the missionaries had established a female school at Poona but no indigenous school for girls existed at the time. I, therefore, was induced, about the year 1854,[1] to establish such a school, and in which I and my wife worked together for many years. After some time I placed this school under the management of a committee of educated natives. Under their auspices two more schools were opened in different parts of the town. A year after the institution of the female schools, I also established an indigeneous mixed school for the lower classes, especially the Mahars and Mangs. Two more schools for these classes were subsequently added. Sir Erskine Perry, the president of the late Educational Board, and Mr. Lumsdain, the then Secretary to Government, visited the female schools and were much pleased with the movement set on foot, and presented me with a pair of shawls. I continued to work in them for nearly 9 to 10 years, but owing to circumstances, which it is needless here to detail, I seceded form the work. These female schools still exist, having been made over by the committee to the Educational Department under the management of Mrs. Mitchell. A school for the lower classes, Mahars and Mangs,

1. यह मुद्रण-दोष होना चाहिए । वास्तव में 1854 की जगह पर 1851 होना चाहिए ।

also exists at the present day, but not in a satisfactory condition. I have also been a teacher for some years in a mission female boarding school. My principal experience was gained in connection with these schools. I devoted some attention also to the primary education available in this Presidency and have had some opportunities of forming an opinion as to the system and *personnel* employed in the lower schools of the Educational Department. I wrote some years ago a Marathi pamphlet exposing the religious practices of the Brahmins and incidentally among other matters, adverted therein to the present system of education, which by providing ampler funds for higher education tended to educate Brahmins and the higher classes only, and to leave the masses wallowing in ignorance and poverty. I summarised the views expressed in the book in an English preface attached thereto, portions of which I reproduce here so far as they relate to the present enquiry :

"Perhaps a part of the blame in bringing matters to this crisis may be justly laid to the credit of the Government. Whatever may have been their motives in providing ampler funds and greater facilities for higher education, and neglecting that of the masses, it will be acknowledged by all that in justice to the letter, this is not as it should be. It is an admitted fact that the greater portion of the revenues of the Indian Empire are derived from the ryot's labour—form the sweat of his brow. The higher and richer classes contribute little or nothing to the state exchequer. A well-informed English writer states that our income is derived, not from surplus profits, but from capital ; not from luxuries, but from the poorest necessaries. It is the product of sin and tears.

"That Government should expend profusely a large portion of revenue thus raised, on the education of the higher classes, for it is these only who take advantage of it, is anything but just or equitable. Their object in patronising this virtual high class education appears to be to prepare scholars who, it is thought would in time vend learning without money and without price. If we can inspire, say they, the love of knowledge in the minds of the superior classes, the result will be a higher standard, of morals in the cases of the individuals, a large

amount of affection for the British Government, and unconquerable desire to spread among their own countrymen the intellectual blessings which they have received.

"Regarding these objects of Government the writer above alluded to, states that we have never heard of philosophy more benevolent and more utopian. It is proposed by men who witness the wondrous changes brought about in the Western world, purely by the agency of popular knowledge, to redress the defects of the two hundred millions of India, by giving superior education to the superior classes and to them only. We ask the friends of Indian Universities to favour us with a single example of the truth of their theory from the instances which have already fallen within the scope of their experience. They have educated many children of wealthy men and have been the means of advancing very materially the worldly prospects of some of their pupils. But what contribution have these made to great work of regenerating their fellowmen? How have they begun to act upon the masses? Have any of them formed classes at their own homes or elsewhere, for the instruction of their less fortunate or less wise countrymen? Or have they kept their knowledge to themselves, as a personal gift, not to be soiled by contact with the ignorant vulgar? Have they in any way shown themselves anxious to advance the general interests and repay the philanthropy with patriotism? Upon what grounds is it asserted that the best way to advance the moral and intellectual welfare of the people is to raise the standard of instruction among the higher classes? A glorious arguments this for aristocracy, were it only tenable. To show the growth of the national happiness, it would only be necessary to refer to the number of pupils at the colleges and the lists of academic degrees. Each wrangler would be accounted a national benefactor; and the existence of Deans and Proctors would be associated, like the game laws and the ten-pound franchise, with the best interests of the constitution.

"One of the most glaring tendencies of Government system of high class education has been the virtual monopoly of all the higher offices under them by Brahmins. If the welfare of the Ryot is at heart, if it is the duty of Government to check

a host of abuses, it behoves them to narrow this monopoly day by day so as to allow a sprinkling of the other castes to get into the public services. Perhaps some might be inclined to say that it is not feasible in the present state of education. Our only reply is that if Government look a little less after higher education which is able to take care of itself and more towards the education of the masses there would be no difficulty in training up a body of men every way qualified and perhaps far better in morals and manners.

"My object in writing the present volume is not only to tell my Shoodra brethren how they have been duped by the Brahmins, but also to open the eyes of Government to that pernicious system of high class education, which has hitherto been so persistently followed, and which statesmen like Sir George Campbell, the present Lieutenant Governor of Bengal, with broad universal sympathies, are finding to be highly mischievous and pernicious to the interests of Government. I sincerely hope that Government will ere long see the error of their ways, trust less to writers or men who look through highclass spectacles, and take the glory into their own hands of emancipating my Shoodra brethren from the trammels of bondage which the Brahmins have woven around them like the coils of a serpent. It is no less the duty of each my Shoodra brethren as have received any education, to place before Government the true state of their fellowmen and endeavour to the best of their power to emancipate themselves from Brahmin thraldom. Let there be schools for the Shoodras in every village; but away with all Brahmin school-masters! The Shoodras are the life and sinews of the country, and it is to them alone, and not to the Brahmins, that Government must ever look to tide over their difficulties, financial as well as political. If the hearts and minds of the Shoodras are made happy and contented, the British Government need have no fear for their loyalty in the future."

PRIMARY EDUCATION

There is little doubt that primary education among the masses in this Presidency has been very much neglected.

Although the number of primary schools now in existence is greater than those existing a few years ago, yet they are not commensurate to the requirements of the community. Government collect a special cess for educational purposes, and it is to be regretted that this fund is not spent for the purposes for which it is collected. Nearly nine-tenths of the villages in this Presidency, or nearly 10 lakhs of children, it is said, are without any provision, whatever, for primary instruction. A good deal of their poverty, their want of self-reliance, their entire dependence upon the learned and intelligent classes, is attributable to this deplorable state of education among the peasantry.

Even *in towns* the Brahmins, the Parbhoos, the hereditary classes, who generally live by the occupation of pen, and the trading classes as a rule, do not generally avail themselves of the same. A few of the latter class are found in primary and secondary schools, but owing to their poverty and other causes they do not continue long at school. As there are no special Inducements for these to continue at school, they naturally eave off as soon as they find any menial or other occupation. In *villages* also most of the cultivating classes hold aloof, owing to extreme poverty, and also because they require their children to tend cattle and look after their fields. Besides an increase in the number of schools, special inducements in the shape of scholarships and half-yearly or annual prizes, to encourage them to send their children to school and thus create in them a taste for learning, is most essential. I think primary education of the masses should be made compulsory up to a certain age, say at least 12 years. Muhammadans also hold aloof from these schools, as they some-how evince no liking for Marathi or English. There are a few Muhammadan primary schools where their own language is taught. The *Mahars*, *Mangs*, and other lower classes are practically excluded from all schools owing to caste prejudices, as they are not allowed to sit by the children of higher castes. Consequently special schools for these have been opened by Government. But these exist only in large town. In the whole of Poona and for a population exceeding over 5,000 people, there is only one school, and in which the attendance is under 30

boys. This state of matters is not at all creditable to the educational authorities. Under the promise of the Queen's Proclamation I beg to urge that Mahars, Mangs, and other lower classes, where their number is large enough, should have separate schools for them, as they are not allowed to attend the other schools owing to caste prejudices.

In the present state of education, payment by results is not at all suitable for the promotion of education amongst a poor and ignorant people, as no taste has yet been created among them for education. I do not think any teacher would undertake to open schools on his own account among these people, as he would not be able to make a living by it. Government schools and special inducements, as noted above, are essential until such a taste is created among them.

With regard to the few Government primary schools that exist in the Presidency, I beg to observe that the primary education imparted in them is not at all placed on a satisfactory or sound basis. The system is imperfect in so far as it does not prove practical and useful in the future career of the pupils. The system is capable of being developed up to the requirement of the community, if improvements that will result in its future usefulness be effected in it. Both the teaching machinery employed and the course in instruction now followed, require a thorough remodelling.

(a) The teachers now employed in the primary schools are almost all Brahmins; a few of them are from the normal training college, the rest being all untrained men. Their salaries are very low, seldom exceeding Rs. 10, and their attainments also very meagre. But as a rule they are all unpractical men, and the boys who learn under them generally imbibe inactive habits and try to obtain service, to the avoidance of their hereditary or other hardy or independent professions. I think teachers for primary schools should be trained, as far as possible, out of the cultivating classes, who will be able to mix freely with them and understand their wants and wishes much better than a Brahmin teacher, who generally holds himself aloof under religious prejudices. These would, moreover, exercise a more beneficial influence over the masses than teachers of other classes, and who will not feel ashamed to

hold the handle of a plough or the carpenter's adze when required, and who will be able to mix themselves readily with the lower orders of society. The course of training for them ought to include, beside the ordinary subjects, an elementary knowledge of agriculture and sanitation. The untrained teachers should, except when thoroughly efficient, be replaced by efficient trained teachers. To secure a better class of teachers and to improve their position, better salaries should be given. Their salaries should not be less than Rs. 12 and in larger villages should be at least Rs. 15 or 20. Associating them in the village polity as auditors of village accounts or registrars of deeds, or village postmasters or stamp vendors, would improve their status, and thus exert a beneficial influence over the people among whom they live. The schoolmasters of village schools who pass a large number of boys should also get some special allowance otheir than their pay, as an encouragement to them.

(b) The course of instruction should consist of reading, writing Modi, and Balbodh and accounts, and a rudimentary knowledge of, general history, general geography, and grammer, also an elementary knowledge of agriculture and a few lessons on morel duties and sanitation. The studies in the village schools might be fewer than those in larger villages and towns, but not the less practical. In connection with lessons in agriculture, a small model farm, where practical instruction to the pupils can be given, would be a decided advantage and, if really efficiently managed, would be productive of the greatest good to the country. The text-book in use, both in the primary and Anglovernacular schools, require revision and recasting as much as they are not practical or progressive in their scope. Lessons on technical education and morality, sanitation and agriculture, and some useful arts, should be interspersed among them in progressive series. The fees in the primary schools should be as 1 to 2 from the children of cess-payers and non-cesspayers.

(c) The supervising agency over these primary schools is also very defective and insufficient. The Deputy Inspector's visit once a year can hardly be of any appreciable benefit. All these schools ought at least to be inspected quarterly if not

oftener. I would also suggest the advisability of visiting these schools at other times and without any intimation being given. No reliance can be placed on the district or village officers owing to the multifarious duties devolving on them, as they seldom find time to visit them, and when they do, their axamination is necessarily very superficial and imperfect. European Inspector's supervision is also occasionally very desirable, as it will tend to exercise a very efficient control over the teachers generally.

(d) The number of primary schools should be increased—

(1) By utilising such of the indigenous schools as shall be or are conducted by trained and certificated teachers, by giving them liberal grants-in-aid.

(2) By making over one half of the local cess fund for primary education alone.

(3) By compelling, under a statutory enactment, municipalities to maintain all the primary schools within their respective limits.

(4) By an adequate grant from the provincial or imperial funds.

Prizes and scholarships to pupils, and capitation or other allowance to the teachers, as an encouragement, will tend to render these schools more efficient.

The Municipalities in large towns should be asked to contribute whole share of the expenses incurred on primary schools within the municipal areas. But in no case ought the management of the same to be entirely made over to them. They should be under the supervision of the Educational Department.

The municipalities should also give grants-in-aid to such secondary and private English schools as shall be conducted according to the rules of the Educational Department, where their funds permit, such grants-in-aid being regulated by the number of boys passed every year. These contribution from municipal funds may be made compulsory by statutory enactment.

The administration of the funds for primary education should ordinarily be in the hands of the Director of Public Instruction.

But if educated and intelligent men are appointed on the local or district committees, these funds may be safely entrusted to them, under the guidance of the Collector, or the Director of Public Instruction. At present, the local boards consist of ignorant and uneducated men, such as Patels, Inamdars, Shoodras, & C. who would not be capable of exercising any intelligent control over the funds.

INDIGENOUS SCHOOLS

Indigenous schools exist a good deal in cities, towns and some large villages, especially where there is a Brahmin population. From the latest reports of Public Instruction in this Presidency, it is found that there are 1,049 indigenous schools with about 27,694 pupils in them. They are conducted on the old village system. The boys are generally taught the multiplication table by heart, a little Modi writing and reading, and to recite a few religious pieces. The teachers, as a rule, are not capable of effecting any improvements, as they are not initiated in the art of teaching. The fees charged in these schools range from 2 to 8 annas. The teachers generally come from the dregs of Brahminical society. Their qualifications hardly go beyond reading and writing Marathi very indifferently, and casting accounts up to the rule of three or so. They set up as teachers as the last resource of getting a livelihood. Their failure or unfitness in other callings a life obliges them to open schools. No arrangements exist in the country to train up teachers for indigenous schools. The indigenous schools could not be turned to any good account, unless the present teachers are replaced by men from the training colleges and by those who pass the 6th standard in the vernaculars. The present teachers will willingly accept State aid but money thus spent will be thrown away. I do not know any instance in which a grant-in-aid is paid to such a school. If it is being paid anywhere, it must be in very rare cases. In my opinion no grants-in-aid should be paid to such schools unless the master is a certificated one. But if certificated or competent teachers be found, grants-in-aid should be given and will be productive of great good.

HIGH EDUCATION

The cry over the whole country has been for some time past that Government have amply provided for higher education, whereas that of the masses has been neglected. To some extent this cry is justified, although the classes directly benefited by the higher education may not readily admit it. But for all this no well-wisher of his country would desire that Government should, at the present time, withdraw its aid from higher education. All that they would, wish is, that as one class of the body politic has been neglected, its advancement should form as anxious a concern as that of the other. Education in India is still in its infancy. Any withdrawal of State aid from higher education cannot but be injurious to the spread of education generally.

A taste for education among the higher and wealthy classes, such as the Brahmins and Purbhoos, especially those classes who live by the pen, has been created, and a gradual withdrawal of State aid may be possible so far as these classes are concerned ; but in the middle and lower classes, among whom higher education has made no perceptible progress, such a withdrawal would be a great hardship. In the event of such withdrawal, boys will be obliged to have recourse to inefficient and sectarian schools, much against their wish, and the cause of education cannot but suffer. Nor could any part of such education be entrusted to private agency. For a long time to come the entire educational machinery, both ministerial and executive, must be in the hands of Government. Both the higher and primary education require all the fostering care and attention which Government can bestow on it.

The withdrawal of Government from schools or colleges would not only tend to check the spread of education, but would seriously endanger that spirit of neutrality which has all along been the aim of Government to foster, owing to the different nationalities and religious creeds prevalent in India. This withdrawal may, to a certain extent, create a spirit of self-reliance for local purposes in the higher and wealthy classes, but the cause of education would be so far injured that the spirit of self-reliance would take years to remedy that evil.

Educated men of ability, who do not succeed in getting into public service, may be induced to open schools for higher education on being assured of liberal grants-in-aid. But no one would be ready to do so on his own account as a means of gaining a livelihood, and it is doubtful whether such private efforts could be permanent or stable, nor would they succeed half so well in their results. Private schools, such as those of Mr. Vishnu Shastree Chiploonkar and Mr. Bhavey, exist in Poona, and with adequate grants-in-aid may be rendered very efficient, but they can never supersede the necessity of the high school.

The missionary schools, although some of them are very efficiently conducted, do not succeed half so well in their results, nor do they attract half the number of students which the high school attract. The superiority of Government schools is mainly owing to the richly paid staff of teachers and professors which it is not possible for a private schools to maintain.

The character of instruction given in the Government higher schools, is not at all practical, or such as is required for the necessities of ordinary life. It is only good to turn out so many clerks and schoolmasters. The Matriculation examination unduly engrosses the attention of the teachers and pupils, and the course of studies prescribed has no practical element in it, so as to fit the pupil for his future career in independent life. Although the number of students presenting for the Entrance examination is not at all large when the diffusion of knowledge in the country is taken into consideration, it looks large when the requirements of Government service are concerned. Were the education universal and within easy reach of all, the number would have been larger still, and it should be so, and I hope it will be so hereafter. The higher education should be so arranged as to be within easy reach of all, and the books on the subjects for the Matriculation examination should be published in the Government Gazette, as is done in Madras and Bengal. Such a course will encourage private studies and secure larger diffusion of knowledge in the country. It is a boon to the people that the Bombay University recognises private studies in the case of those presenting for the entrance examination. I hope, the University authorities will

be pleased to extend the same boon to higher examinations. If private studies were recognised by the University in granting the degrees of B.A., M.A. etc., many young men will devote their time to private studies. Their doing so will still further tend to the diffusion of knowledge. It is found in many instances quite impossible to prosecute studies at the colleges for various reasons. If private studies be recognised by the University, much good will be effected to the country at large, and a good deal of the drain on the public purse on account of higher education will be lessened.

The system of Government scholarships, at present followed in the Government schools, is also defective, as much as it gives undue encouragement to those classes only, who have already acquired a taste for education to the detriment of the other classes. The system might be so arranged that some of. these scholarships should be awarded to such classes amongst whom education has made on progress.

The system of awarding them by competition, although abstractedly equitable, does not tend to the spread of education among other classes.

With regard to the question as to educated natives finding remunerative employments, it will be remembered that the educated natives who mostly belong to the Brahminical and other higher classes are mostely fond of service. But as th public service can afford no field for all the educated natives who come out from schools and colleges, and moreover the course of training they receive being not of a technical or practical nature, they find great difficulty in be taking themselves to other manual or remunerative employments. Hence the cry that the market is overstocked with educated natives who do not find any remunerative employment. It may, to a certain extent, be true that some of the professions are overstocked, but this does not show that there is no other remunerative employment to which they can be take themselves. The present number of educated men is very small in relation to the country at large, and we trust that the day may not be far distant when we shall have the present number multiplied a hundred-fold and all be taking themselves to useful and remunerative occupations and not be looking after service.

In conclusion, I beg to request the Education Commission to be kind enough to sanction measures for the spread of female primary education on a more liberal scale.

Poona,
19th October, 1882

—Joteerao Govindrao Phooley,
Merchant and Cultivator and
Municipal Commissioner,
Peth Joona Ganja

किसान का कोड़ा

प्रास्ताविक

विद्या के न होने से बुद्धि नहीं; बुद्धि के न होने से नैतिकता न रही; नैतिकता के न होने से गतिमानता न आई; गतिमानता के न होने से धन-दौलत न मिली, धन-दौलत न होने से शूद्रों का पतन हुआ। इतना अनर्थ एक अविद्या से हुआ।

इस ग्रंथ को लिखने का उद्देश्य यह है कि शूद्र किसान के आज इस दीन अवस्था में पहुँचने के धार्मिक और राज्य संबंधी कई कारण हैं। उन तमाम कारणों में से कुछ कारणों का विश्लेषण करने के उद्देश्य से ही मैंने इस ग्रंथ को लिखा है। शूद्र किसान—नकली और जुलमी धर्म की मदद से, सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारियों का वर्चस्व होने की वजह से, भट्ट-भिक्षुकों द्वारा (ब्राह्मण-पंडित) और सरकारी यूरोपियन कर्मचारी के ऐशोआरामी होने की वजह से—ब्राह्मण कर्मचारियों द्वारा सताए जाते हैं। इस ग्रंथ के अध्ययन से उनको उस शोषण से अपना बचाव करने की क्षमता प्राप्त हो, यही मेरा उद्देश्य है; इसलिए इस ग्रंथ का नाम भी 'किसान का कोड़ा' (शेतक-याचा आसूड) रखा गया है।

पाठक दोस्तो, आज के किसानों में तीन प्रकार के किसान दिखाई देते हैं—केवल किसान या कुनबी, माली और धनगर। अब यह तीन प्रकार (भेद) होने के कारणों को खोजने से पता चलता है कि प्रारंभ में जो लोग केवल कृषि पर अपना जीविका चलाते रहे थे, वे कुलवाड़ी (कुळवाड़ी) या कुनबी हुए। जो लोग अपना कृषि काम संभाल करके बागबानी करने लगे, वे माली (माळी) हुए और जो लोग दोनों प्रकार के काम करके भेड़-बकरियों के झुंड पालने लगे, वे धनगर (गड़रिया, गड़ेरिया) हो गए। इस तरह अलग-अलग काम के आधार पर यह प्रकार (भेद) हुए होंगे। किंतु अब यह तीन अलग-अलग जाति मानी जाती है। इनमें आज आपस में बेटी[1]-व्यवहार नहीं होता। लेकिन पहले रोटी-व्यवहार आदि होता था। इससे

1 शूद्रों के कुलस्वामी जेजुरी के खंडेराव ने शूद्र (कुनबी) कुल की म्हाळसाई और धनगर कुल की बानाबाई—इन दो जातियों की दो औरतों से ब्याह किया था, इसलिए पहले कुनबी और धनगर, इन दो जातियों में आपस में बेटी-व्यवहार होता था।

यह सिद्ध होता है कि ये (कुनबी, माली और धनगर) पहले एक ही शूद्र किसान जाति के होने चाहिए। अब आगे इन तीनों जातियों के लोग अपना मूल किसानी धंधा मजबूरन छोड़कर पेट के खातिर तरह-तरह के व्यवसाय करने लगे। जिनके पास कुछ समय है, वे अपनी खेती की देखभाल करते हैं और अधिकांश अक्षरहीन, अनपढ़, भोले-भाले, भूखे-कंगाल, नंग-धड़ंग हैं; लेकिन वे आज भी किसान ही हैं। जिनको अब किसी प्रकार का सहारा नहीं, वे किसान क्षेत्र (देश) छोड़कर जहाँ जीविकार्जन हो सके, वहाँ-वहाँ जा रहे हैं। उनमें से कुछ लोग घास बेच रहे हैं। कोई लकड़ियाँ बेच रहा है। कोई कपड़ा बेच रहा है। इसी तरह कुछ लोग ठेकेदारी और कुछ लोग क्लर्क आदि की नौकरियाँ करके अंत में पेंशन लेकर मौज कर रहे हैं। इस तरह धन कमाकर इस्टेट बना करके रख रहे हैं। लेकिन उनके पश्चात् उनके ऐयाशी बच्चे, जिनको ज्ञान-ध्यान से कोई मोहब्बत नहीं, वे कुछ ही दिनों बाद बाबू के भाई दरवेशी होकर बाप के नाम से चिल्लाते हुए पेट के खातिर दर-दर भटकते हैं। कइयों के पूर्वजों ने सिपाहगीरी और चतुराई के बल पर जागिरदारी, इनाम आदि कमाए और कुछ लोग शिंदे-होलकरों की तरह प्रतिराजा हो गए थे। लेकिन आज उनके वंशज अज्ञानी अनपढ़ होने की वजह से अपनी जागिरदारी, इनाम गिरवी रखकर या बेचकर आज कर्जदार हो रहे हैं। कुछ लोग तो अनाज के लिए भी मोहताज हो गए हैं। अधिकांश इनामदारों को, जागिरदारों को यह भी मालूम नहीं है कि उनके पूर्वजों ने किस-किस तरह का पराक्रम किया है, किस-किस प्रकार की मुसीबतों को सहा है। ये बातें उनके ध्यान में भी नहीं आतीं। वे लोग बाप की कमाई पर मौज-मस्ती करके, अनपढ़ होने की वजह से दुष्ट और लुच्चे-लफंगों की संगत में फँसकर रात-दिन ऐशोआराम और नशे में बेहोश रहते हैं। इनमें से जिनकी जागिरदारी गिरवी न पड़ी हो, या जो कर्ज में न डूबा हो, ऐसा शायद ही कोई होगा। आज जो संस्थानिक है, जिसको कर्ज के बोझ ने छुआ नहीं है, फिर भी उसके इर्द-गिर्द के लोग और ब्राह्मण दीवानजी इतने मतलबी, धूर्त, व्यवहारी होते हैं कि वे हमारे राजा-रजवाड़ों को ज्ञान-ध्यान तथा सद्‌गुणों की अभिरुचि ही लगने नहीं देते। इस वजह से अपने सही वैभव के स्वरूप को पहचानते नहीं; बल्कि अपने पूर्वजों ने केवल हमारे मजा-मौज के लिए ही राज्य प्राप्त किया है, ऐसा मानकर धर्म की वजह से अंधे हुए, राजशासन स्वतंत्र रूप से चलाने की सामर्थ्य न होने की वजह से, केवल किस्मत पर बल देकर ब्राह्मण दीवान जी पर सौंप देते हैं और उन्हीं की सलाह को अंतिम मानकर चलते हैं। उन्हीं की सलाह पर दिन में गौदान और रात में प्रजोत्पादन करते हुए स्वस्थ रहते हैं। ऐसे राजा-रजवाड़ाओं के हाथ से अपने शूद्र जाति बंधुओं का कल्याण संभव हो सकता है, लेकिन उनके मन में जो विचार कभी भी आया नहीं और जब तक 'ब्राह्मणों मम दैवतं'—यह पागलपन उनके दिलो-दिमाग से निकलता नहीं, तब तक कितनी भी

माथापच्ची की जाए, वह निरर्थक ही होगी। फिर भी किसी ने उस तरह करने का प्रयास किया तो बचपन से मन पर जो संस्कार मूल पकड़ चुके हैं, उस मतलबी धर्म के विरुद्ध चार बातें सुनकर उस पर विचार करने की बात उनको कैसे जँचेगी? उनके करीब के दीवान पहले ही ऐसे निःस्वार्थ और जनहितकारी को चलने नहीं देंगे। ऐसी स्थिति में हिम्मत करके किसी ने मुझे मौका दिया तो मैं बड़ी खुशी के साथ अपनी क्षमता के अनुसार अपने विचार उनके सामने रखूँगा।

खैर, दुनिया के तमाम देशों का इतिहास एक-दूसरे से तुलना करके देखने पर, यह निश्चित रूप से दिखाई देगा कि हिंदुस्थान के अज्ञानी, अनपढ़, भोले-भाले शूद्र किसानों की स्थिति अन्य देशों के किसानों से बदतर है। पशु से भी बुरी स्थिति में पहुँची है।

यह ग्रंथ कई अंग्रेजी, संस्कृत और प्राकृत ग्रंथ तथा आज के अज्ञानी शूद्रादि-अतिशूद्रों की जो दयनीय माली हालत है, उसके आधार पर लिखा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस तरह की सहायता के बगैर इस ग्रंथ को लिखना संभव नहीं था।

इस ग्रंथ में मैंने जो कुछ अपनी अल्प समझ से खोज करके लिखा है, उसमें हमारे विद्वान और जानकार पाठकों के ध्यान में जो-जो गलतियाँ आएँगी, उसके लिए मुझे क्षमा करेंगे और सामर्थ्याभाव को स्वीकार करना चाहिए, यही मेरी उनसे विनती रहेगी। इसी प्रकार इस किताब को पढ़ते समय उनको कोई भी अंश अयोग्य या असत्य दिखाई दे, या इस ग्रंथ के समर्थन में यदि उनको कुछ (ग्रंथाधार आदि) सुझाना हो, तो इस संबंध में उन्हें हमें अखबार के द्वारा सूचित करना चाहिए। मतलब, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाएगी और दूसरे संस्करण के समय उनकी सूचनाओं पर उचित विचार किया जाएगा।

श्रीमंत सरकार गायकवाड, सेना खास खेल; शमशेर बहादुर सयाजीराव महाराज, इन्होंने जब मैं बड़ौदा गया था, उस समय अपने राजनीतिक कामों के मौलिक समय से कुछ समय निकालकर बड़े उत्साह और स्नेहभाव से मेरे द्वारा पढ़े गए इस ग्रंथ को पूरे ध्यान से सुना और श्रीमंत राजा ने अपनी उदारता से मुझे आर्थिक मदद देकर मेरा उचित आदर-सम्मान किया, इसलिए मैं उनका बहुत ही कृतज्ञ हूँ।

पूना, बंबई, ठाणा, जुन्नर, ओतूर, हाड़पसर, वंगणी, माली का कुरूल आदि गाँव के शूद्र गृहस्थों ने कई बार इस ग्रंथ को मेरे मुँह से सुना और इस ग्रंथ में लिखी हुई हकीकत को सही स्वीकारते हुए इस संबंध में उन्होंने अपने दस्तखत की चिट्ठियाँ मुझे भेजी हैं।

—जोतीराव गोविंदराव फुले

परिच्छेद : एक

सरकारी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारियों का वर्चस्व होने की वजह से उनकी जाति के स्वार्थी भट्ट-ब्राह्मण अपने मतलबी धर्म के नाम पर अज्ञानी किसानों को इतना फाँसते हैं कि उनके पास अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों को स्कूल में दाखिल करने के लिए साधन नहीं बचते। यदि किसी के पास उस तरह के साधन भी हों, तब भी उनकी गलत सलाह के कारण इस तरह की इच्छा नहीं होती।

अब पहले प्रकार के अनपढ़ किसान को भट्ट-ब्राह्मण धर्म के नाम पर इतना फाँसते हैं कि उसके लिए सारी दुनिया में कहीं भी दूसरी कोई मिसाल मिलना मुश्किल है। आदि धूर्त आर्य ब्राह्मण ग्रंथकारों ने अपने मतलबी धर्म की लचांड किसानों के पीछे इतनी सफाई से लगाई है कि किसान पैदा होने के पहले ही, उसकी माँ को जिस समय ऋतु प्राप्त होता है, उस समय उसके गर्भाधानादि संस्कार से लेकर उसके मरने तक कई बातों से लूटा जाता है। इतना ही नहीं, उसके मरने के पश्चात् उसके बच्चों को श्राद्ध के नाम पर धर्म के बोझ को सहना ही पड़ता है; क्योंकि किसानों की औरतों को ऋतु प्राप्त होते ही भट्ट ब्राह्मण जाप-अनुष्ठान और उसके बहाने ब्राह्मण-भोज के नाम पर उनसे धन हड़प लेते हैं और सदर के ब्राह्मण-भोजन लेते समय भट्ट ब्राह्मण अपने रिश्तेदारों तथा दोस्त-मित्रों के साथ घी-रोटियों और दक्षिणा के लिए इतनी धाँधली मचा देते हैं कि बचे-खुचे अनाज में से उस बेचारे अनपढ़ किसान को पेट-भर चटनी-रोटी भी नसीब नहीं होती। ऋतुशांति के बहाने भट्ट ब्राह्मणों की पेट-पूजा हो जाती है। फिर उनके हाथ पर दक्षिणा आते ही वे किसानों को आशीर्वाद देते हैं। फिर वे उनकी औरतों को शनिवार या चतुर्थी के व्रत रखने चाहिए, इस तरह का उपदेश करते हुए घर-घर घूमते हैं। बाद में ब्राह्मण हर शनिवार और चतुर्थी को किसानों की औरतों की ओर से रूई के पत्तों की माला मारुति के गले में पहनवाकर और घास की जूड़ियाँ गणपति के माथे पर लाद करके दान-दक्षिणा खुद ले लेते हैं। बाद में कभी-कभी

संधान प्राप्त हुआ, तो सदर के व्रत पूरे करने का बहाना बनाकर किसानों से छोटे-बड़े ब्राह्मण-भोज ले लेते हैं। इस दरमियान किसानों की औरतें प्रकृति के नियमानुसार गर्भधारिणी हुईं, तो भट्ट ब्राह्मणों ने किसानों की ओर से मूजी ब्राह्मण भगाने के लिए गर्भधारण के पूर्व जो मिन्नत की थी, इसके लिए वे किसानों से बड़ी सहजता से ऐंठ लेते हैं। किसानों की औरतों के प्रसूत होने के पहले ब्राह्मण-पंडित उनके घर में दिन-रात चक्कर काटते रहते हैं और उनसे लाड़ लड़ाकर यजमानपन का रिश्ता स्थापित कर लेते हैं और उनसे उस मिन्नत को पूरा करवा लेते हैं। फिर किसानों की औरतों को पुत्र की प्राप्ति होते ही भट्ट ब्राह्मणों की धनरेखा प्रसन्न होती है। वह इस प्रकार कि सबसे पहले मुखिया उपाध्ये किसानों के घर जाते हैं। वे उनके घर की अनपढ़ स्त्रियों से बच्चों का जन्म-समय पूछते हैं। फिर जिस-जिस राशि को जितने ज्यादा बुरे ग्रह जुड़ते हों, उस तरह की राशियाँ तय करके उनके बच्चों की जन्मपत्रिकाएँ इस तरह बनाते हैं कि अनपढ़ किसान को पुत्र-प्राप्ति की वजह से हुई तमाम खुशियों को मिट्टी में मिला देते हैं और उनको डराकर दूसरे दिन लिंगपिंड के सामने अपने भाई-दादा, रिश्तेदार और मित्रों में से भट्ट ब्राह्मणों को किराये पर जाप-अनुष्ठान के लिए बिठाते हैं और उनमें से किसी को किसानों से उपोषण के बहाने फलाहार के लिए पैसे दिलवाते हैं। यदि गर्मी का मौसम हो तो पंखे दिलवाते हैं। यदि बारिश हो तो छतरियाँ दिलवाते हैं और ठंड का मौसम हो तो सफेद कंबल दिलवाते हैं। इसके अलावा उपाध्ये का बस चला तो पूजा के बहाने किसानों से तेल, चावल, नारियल, खारिक, सुपारी, घी, शक्कर, फल आदि चीजें हड़पने में कोई कसर नहीं रखते। किसानों के दिलो-दिमाग पर मूर्ति-पूजा का आकर्षण ज्यादा बना रहे, इसलिए कुछ भट्ट-ब्राह्मण जाप-अनुष्ठान की समाप्ति तक अपनी दाढ़ी-मूंछें बढ़ाते हैं। कुछ फलाहार पर रहते हैं। इस तरह भट्ट ब्राह्मण कई प्रकार के खट्टी-मीट्टी भोग लगाते हैं और जाप-अनुष्ठान समाप्त होने तक किसानों से काफी चीजें हड़प लेते हैं। अंत में समाप्ति करवाते समय वे अनपढ़ किसानों से ब्राह्मण-भोज के साथ ही उचित दक्षिणा प्राप्त करने के लिए किस प्रकार से धींगामस्ती करते हैं, यह सब तो आपको मालूम ही होगा।

आर्य भट्ट ब्राह्मण अपने संस्कृत स्कूलों में शूद्र[1] किसानों के बच्चों को लेते नहीं; किंतु वे शूद्र किसानों के कुछेक बच्चों को अपने प्राकृत मराठी स्कूलों में लेते हैं और उनसे हर माह के वेतन के अलावा हर अमावस और पूर्णिमा को फीस, कई त्योहारों का सीधा, दक्षिणा और बच्चों के खाने के लिए लाए हुए चबेने

1. Sir William Jones, Vol. IV, Page III

में से चौथाई ले लेते हैं। लेकिन उनको जुड़वाँ अक्षर, अंकगणित, मोटा अक्षरज्ञान, भाकड़ पुराण के बारे में प्राकृत श्लोक, और कुछ कविता पढ़ा देते हैं। उनको कलगी या तूरा-तमाशे की लवनी पढ़ा करके तमाशा में सवाल-जवाब करने तक का ज्ञान पढ़ा देते हैं। उनको अपने घर के हिसाब-किताब, कागजात रखने लायक भी ज्ञान नहीं देते। फिर उनका मामलेदार कचहरियों में प्रवेश पाकर क्लर्की का काम करना भी मुश्किल।

किसानों के बच्चों की शादी का रिश्ता तय करते समय ब्राह्मण-जोशी हाथ में पंचांग लेकर उनके घर जाते हैं। फिर अपने सामने राशिचक्र लगवाकर उनसे लड़के-लड़कियों के नाम पूछते हैं। वे मन में अपने स्वार्थ का संकल्प रचाकर बड़ी चतुराई से अंगूठे के छोर उँगलियों के जोड़ पर नचाकर किसी भी अहित-कर ग्रह को उनकी राशि के साथ जोड़ देते हैं और फिर उस ग्रह की शांति के लिए, जाप-अनुष्ठान की स्थापना के लिए और उसके विसर्जन के लिए कुछ धन किसानों से ऐंठ लेते हैं। बाद में किसान के बच्चे की शादी का मुहूर्त तय करते समय दुल्हन के घर में कपड़े की चौ-परत पर चावल से चौकोना चौक तैयार करके उस पर लड़का और लड़की के पिता को बिठा करके उनके सामने खोबरा, खारिक और हल्दी के छोटे-छोटे टुकड़ों का ढेर लगाते हैं। फिर वे लोग हल्दी-कुंकुम और अक्षत माँगकर लड़का और लड़की की उम्र, रंग, गुण आदि किसी बात की कुछ भी परवाह न करते हुए आवश्यक सुपारी से गणपति को स्थापित करके 'समर्पयामि' की गड़बड़ी में किसानों से ढेर सारा धन ऐंठते हैं और कागज के टुकड़े पर मुहूर्त की तिथि लिख देते हैं और उस पर हलदी-कुंकुम लेप लगाकर उस टुकड़े को दोनों के हाथ में दे देते हैं। बाद में वहाँ के सारे सामान, रुपये-पैसे के साथ चौके के चावल अपने दुपट्टे में बाँध करके, गणपति के रूप में स्थापित सुपारी को भी घर में फोड़ करके खाने के लिए, धोती की मुर्री में बाँधकर निकल जाते हैं। शादी के पहले हनुमान के मंदिर में दुलहन के कपड़े दूल्हे को देते समय भट्ट-ब्राह्मण आना-दो आना मुर्री में दबा करके, पान-बीड़ा पगड़ी में छुपा लेते हैं, फिर दुलहन के मंडप में दूल्हा पहुँचने के बाद विवाह-वेदी के सामने उन दोनों के पाँव के नीचे जरा से गेहूँ डाल करके उन्हें आमने-सामने खड़ा करते हैं। फिर दूल्हा-दुलहन के मामा के हाथ में नंगी तलवार देकर उन्हें उनका संरक्षक बनाते हैं। फिर वहाँ इकट्ठा हुए लोगों में से अनोखे किसी आदमी का दुपट्टा ले लेते हैं और उस पर हल्दी-कुंकुम के आड़े-टेढ़े पट्टे खींच करके, उन दूल्हा-दुलहन के बीच परदा खड़ा करके बारी-बारी से कोई कल्याण राग में और कोई भैरवी राग में श्लोक और आर्या छंद के साथ शुभमंगल कहकर वे अज्ञानी किसानों के बाल-बच्चों के शादी-ब्याह लगाते हैं। कई मालदार माली-कुनबियों की शादी में उनके भाई-बंद, समधी और मेहमानों की बिना परवाह किए नवागत ब्राह्मण दक्षिणा के लिए गोद में शाल

रख करके बड़े नखरे में तकिया से टेककर बैठ जाते हैं और मंडप में इतनी गड़बड़ी मचाते हैं कि दूल्हा-दुलहन के पिता को निमंत्रित करके लाए हुए लोगों का स्वागत कर उनको पान बीड़ा देने के लिए भी फुरसत नहीं मिलती। ऐसे निर्लज्ज़ उपद्रवी भिखारी अन्य किसी देश में या जाति में क्या मिल पाएँगे ? फिर शादी संपन्न करानेवाले भट्टजी (पुरोहित) दूल्हा-दुलहन को नीचे आमने-सामने बिठा करके, उनके आगे तरह-तरह की विधि करते हुए, बार-बार 'दक्षिणा समर्पयामि' कहते-कहते अंत में थोड़ी-सी लकड़ियाँ इकट्ठा करके उनको जला देते हैं और उसमें घी आदि चीजें डाल करके दूल्हा-दुल्हन को लज्जाहोम के बहाने तेज धुआँ देकर उनके अज्ञानी पिता से आखिरी की बहुत बड़ी सीधा और दक्षिणा लेकर घर चले जाते हैं। शादी के बाद चौथे दिन एक-दो हेकड़ किसानों को साथ में लेकर दूल्हा-दुलहन के पिता से मनचाहे पैसा ऐंठ लेते हैं। उसी तरह उनसे मंडप उजाड़ने के भी पैसे वसूल करते हैं। उनमें से कुछ संपन्न किसानों को कर्ण आदि दानी लोगों की उपमा देकर उनके सामने तरह-तरह के मोहित नखरे करके उनको इतना उत्तेजित करते हैं कि शादी के आखिरी में उसके घर में बड़ी-बड़ी सभाएँ भरवाकर उसमें सभी वैदिक, शास्त्री, पुराणिक, कथापाठक और भिक्षुक भट्ट ब्राह्मणों में फर्क किये बगैर ही किसानों से दक्षिणा हड़प करके अपने-अपने घर चले जाते हैं। उनमें से कई गुलहौसी भट्टब्राह्मण इस बात की भी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं कि रात्रि में मंडप में नाच-गाना है या नहीं। फिर सिर पर छोटी-सी पगड़ी और गोद में छोटी-सी शाल लेकर निमंत्रित लोगों के घुटने से घुटना भिड़ाकर, तकिया के सहारे सारी रात नाक के दोनों छेंक में नसवार ठूंसते-ठूंसते आपस में नसवार की धूल उड़ाते हैं और इत्मीनान से नाचने वाली के गीत सुनते रहते हैं।

बाद में उम्र के अनुसार किसान के मरने के बाद उनके बाल-बच्चे अपना संसार करने लगते हैं। उस समय से उनके आखिरी समय तक उनको भट्ट ब्राह्मण धर्म के पाखंड द्वारा किस तरह और कैसे लूटते हैं; इस संबंध में यहाँ थोड़ा-सा खुलासा करना चाहता हूँ।

किसानों के बाल-बच्चों के अपने नये मकान बँधते समय कामगार शूद्र कड़ी धूप की गरमी में सिर से मलबे की टोकरियाँ ढोते हैं। गवंडी और बढ़ई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर वानरों की तरह चढ़ते हैं, दिवालें रचते हैं और लकड़ियों की पाटियाँ जोड़कर मकान बनाते हैं। इसलिए उनपर रहम करते हुए उन बेचारे कामगारों को गृह-प्रवेश के समय घी-रोटी का भोजन खिलाएँगे, इस तरह का आश्वासन घर-मालिक देते हैं। लेकिन उस तरह के भोजन किसान कामगारों को देने से पहले भट्ट ब्राह्मण किसानों के घर पर रात और दिन चक्कर काटते रहते हैं और उनको धर्म के संबंध में थोथी बातें बताते रहते हैं। कई ब्राह्मण अमलदारों की अललटप्पू शिफारिशें करवाते हैं। उनके घर में होमविधि करके घर के चारों ओर जगह-जगह चिथड़ों के

निशान फड़काते हैं, फिर सबसे पहले स्वयं अपने बाल-बच्चों के साथ घी-रोटी का भोजन हजम कर लेते हैं। बचा-खुचा बासी खाना भोले-भाले श्रद्धालु अज्ञानी घर-मालिक को अपने बाल-बच्चों के साथ और कामगारों को चाशनी के साथ खाने के लिए रख देते हैं और पानबीड़ा खाते-खाते ही गन्ने के खेतों में ईमानदारी से भूंकनेवाले प्राणियों की तरह आशीर्वाद देते हैं। फिर किसानों से दक्षिणा हड़प करके भरे पेट पर हाथ घुमाते हुए घर-घर जाते हैं। उनमें से एक-दो मतलबी साधू भट्ट ब्राह्मण कई अनजान अल्हड़ किसानों के यार-दोस्त बन जाते हैं और उनका नाम रौशन करने के झूठे जाल में फँसाकर उनकी ओर से छोटी-मोटी सभाएँ करवाते हैं। उसमें से कुछ भट्ट ब्राह्मणों को शाल भेंट में दिलवाकर शेष सभी को दक्षिणा दिलवाते हैं। किसानों द्वारा नये बनवाए गए खेत-खलिहानों को छोड़कर, नये मंदिर, पार आदि इमारतें बनते ही वहाँ उद्घाटन के बहाने उनसे ब्राह्मण-भोज और दक्षिणा लेते ही हैं।

हर चैत मास में वर्षप्रतिपदा के दिन भट्ट ब्राह्मण किसानों के घर-घर जाकर वर्षफल पढ़कर उनसे दक्षिणा लेते हैं। उसी तरह रामनवमी और हनुमान जयंती के बहाने भट्ट ब्राह्मण अपने इर्द-गिर्द कोई सधन किसान हो तो उससे या गरीब किसान हो तो उनसे बारी-बारी से चंदा जमा करके घी-रोटी के ब्राह्मण-भोज लेते हैं।

जेजुरी की यात्रा में किसान के अपने बाल-बच्चों के साथ तालाब आदि जगह पर नहाते समय भट्ट ब्राह्मण वहाँ संकल्पस्वरूप उन सबसे एक-एक सिक्का (शिवराई) दक्षिणा लेते हैं। इस यात्रा में करीबन पौन लाख से कम लोग नहीं होते। वहाँ कई अल्हड़ सधन किसानों की गोद में खल्लड़ देवदासियाँ (मुरड़ी) बैठती हैं। फिर ये भट्ट ब्राह्मण उनसे भी देव-ब्राह्मण-सुहागिन के बहाने घी-रोटी लायक पैसा ऐंठ लेते हैं। इसके अलावा किसानों के भंडार-भोज को खंडोबा (देवता) के सामने उधेड़ने के लिए, खरीद करते समय भट्ट ब्राह्मण दुकानदार के साथ अंदर से सौदेबाजी करके उनको काफी लूटते हैं।

हर आसाढ़ी के माह में एकादशी को भट्ट ब्राह्मण सीधा देने की सामर्थ्य न रखनेवाले कंगाल किसानों से भी करीबन एक सिक्का (पैसा) दक्षिणा लेते हैं।

पंढरपुर में किसान के अपनी औरतें और बाल-बच्चों के साथ चंद्रभागा नदी में स्नान करते समय भट्ट ब्राह्मण नदी के किनारे पर खड़े होकर, संकल्प के रूप में उन सभी से एक-एक सिक्का (शिवराई) दक्षिणा लेते हैं। इस यात्रा में भी करीबन एक लाख लोग होते हैं। वहाँ उनमें से कुछ किसानों से दस सुहागिन-ब्राह्मणों को और कुछ किसानों से करीबन एक सुहागिन ब्राह्मण को घी-रोटी का भोजन देने लायक रुपया ऐंठ लेते हैं और जहाँ बीच घर में अपने घर के लोग परोसे पर बैठे हुए होते हैं, वहाँ हर किसान हैं।

को अकेले-अकेले ले जात हैं और कहते हैं कि 'यह देखिए आपकी सुहागिन ब्राह्मण भोजन क लिए बैठ रहे हैं। उनको कुछ दक्षिणा देने की इच्छा हो तो दे दीजिए, या उनको दूर से ही नमस्कार करके बाहर जाइए, जिससे कि वे भगवान (विट्ठल) को नैवेद्य भेजकर भोजन के लिए बैठ सकें।'' इस तरह के ईमानदार धंधे करके पंढरपुर के सैकड़ों ब्राह्मण पंडे (भड़वे) श्रीमान हुए हैं।

हर श्रावण मास में नागपंचमी को बिल में घुसनेवाले सच्चे नाग की टोकरियाँ बगल में दबा करके इस-उस बहाने 'नाग को दूध पिलाओ, नाग दक्षिणा समर्पयामि' कहकर किसानों से पैसा इकट्ठा करते हुए घूमने की भट्ट ब्राह्मणों की खानदानी प्रवृत्ति है। वैदू और गड़ेरियों के अपनाने पर भी वे उन पर नुकसान की भरपाई का कोई दावा किये बगैर, केवल पत्थर या कीचड़ के बनाए हुए नागों की पूजा करके अज्ञानी, अनपढ़ किसानों से दक्षिणा हड़पते हैं।

पूर्णिमा को श्रावणी के बहाने महारों के गले के काले धागों की खबर बिना पूछे, कई डाँवाडोल कुनबियों के गले में सफेद धागे के गागाभट्टी[1] जनेऊ पहनाते समय सीधा-दक्षिणा हड़प जाते हैं। उसी तरह सभी किसानों के हाथ में राखी[2] के धागे बाँध करके उनसे एक-एक पैसा दक्षिणा लेते हैं।

वद्य प्रतिपदा को भट्ट ब्राह्मण अधिकांश सधन किसानों को सप्ताह (उत्सव, कथा) की धुन लगाते हैं। उनके गले में वीणा टाँग करके उनके सहयोगियों के हाथ में झांझ दे देते हैं। फिर वे सभी मृदंग के ताल पर बारी-बारी से रात-दिन मिठबोली गाने गाते-गाते नाचते हैं और कूदने-फाँदने लगते हैं, लेकिन स्वयं उनके सामने बड़े ऐंठ में तकिया लगाकर उनकी धींगामस्ती देखते रहते हैं। उनसे हर एक दिन नाश्ते के बहाने पैसे झाँसते रहते हैं, फिर गोकुलाष्टमी की रात में हरिविजय का तीसरा अध्याय पढ़कर सुनाते हैं और यशोदा की प्रसूति के बारे में चूड़ियों का कारण न बतलाते हुए किसानों से दक्षिणा हड़पते हैं। सुबह के समय झूले के बहाने किसानों के खर्च से बनवाया गया घी-रोटी का भोजन खुद पहले ही खा लेते हैं और बचा-खुचा भोजन किसानों के साथ इन ताल पर कूदनेवालों के लिए रखकर अपने घर निकल जाते हैं।

अंत में श्रावण माह के आखिरी सोमवार को भट्ट ब्राह्मण अधिकांश भोले-भाले अज्ञानी किसानों से घी-रोटी का कम-से-कम एक सुहागिन-ब्राह्मण भोजन करवाने के पीछे पड़ जाते हैं। उसके लिए पर्याप्त सीधा-सामग्री ले लेते हैं। पहले

---

1. प्रारंभ में शूद्रों में जनेऊ पहनने का रिवाज नहीं था। गागाभट्ट ने शिवाजी राजा से सुवर्णतुला दान लेकर उनको जनेऊ पहनाया, उस समय से यह रिवाज पड़ा है।
2. यह राखी सूत की होती है और एक पैसे में करीबन 25 मिलती है।

वे अपनी औरतें, बाल-बच्चों के साथ खा-पीकर शांत हो जाने के बाद प्रसाद-स्वरूप एक दो पूरन-पूरी और भात का ढेला किसी के भी पत्तल पर डाल करके, दूर से किसानों को देकर, उनका समाधान करते हैं।

हर भाद्रपद के माह में भट्ट ब्राह्मण हर तालिका के बहाने सभी छोटी-बड़ी किसान औरतों से एक-एक, दो-दो पैसे हथियाते हैं।

गणेश चतुर्थी को किसानों के घर में गणपति के सामने तालियाँ बजाकर आरती गाने के बदले में उनसे कुछ दक्षिणा लेते हैं। ऋषिपंचमी को विधवा किसान औरतों को पानी के गड्ढे में डुबकियाँ मारने के लिए मजबूर करते हैं और भट्ट ब्राह्मण किसानों की जान पर, गणपति के नाम पर दिन में मोदक के साथ घी-रोटी का भोजन पा लेते हैं। फिर ऊपरी तौर पर कीर्तन सुनने का भाव दिखाकर अंदर से रातभर बदनाम नर्तकी की सूरत की ओर सारा ध्यान लगाकर उसके सुरीले गाने सुनने में मशगूल हो जाते हैं। इसलिए किसानों के घर की कँआरी गोरी के चेहरे की ओर नजर उठा करके देखते नहीं।

चतुर्दशी को अनंत के निमित्त किसानों से सीधा-दक्षिणा लेते हैं। पितृपक्ष में भट्ट ब्राह्मण सभी किसानों के घर में भिखारवाड़ा खड़ा कर देते हैं। वे उनके पीछे इतने हाथ धोकर लग जाते हैं कि उनकी मेहनत-मजदूरी करनेवाली दुर्बल, अपाहिज, निराधार विधवा औरतों से गणपति के नाम पर सीधा, दक्षिणा और कुंभड़े की चिरी ले जाते हैं और अपने पाँव पर उनका माथा टिकवाये बगैर उनको मुक्त नहीं करते। फिर वहाँ भोंसले, गायकवाड़, शिंदे और होलकर आदि के बारे में कहना ही क्या ?

उसी दरम्यान कपिलषष्ठी का योग आया तो भट्ट ब्राह्मण कई सधन किसानों को वाई, नासिक आदि तीर्थस्थलों पर ले जाते हैं और उनसे दानधर्म के बहाने काफी पैसा हड़प लेते हैं। फिर शेष सामान्य दुर्बल किसानों द्वारा नदी पर स्नान करते समय कम-से-कम एक-एक पैसा दक्षिणा लेते हैं।

आखिर में अमावस्या के दिन भट्ट ब्राह्मण सीधा-दक्षिणा के लालच से किसानों के बैलों के पाँवों की पूजा करते हैं।

विजयादशमी को घोड़े और कचनार के पेड़ की पूजा के निमित्त किसानों से दक्षिणा माँगते हैं और यदि उनका बस चला तो कोजागर को किसानों के दूध पर झपट जाते हैं।

अमावस्या के दिन लक्ष्मी-पूजा और इस पूजन के लिए किसानों से लाई-बताशा समेत दक्षिणा लेते हैं।

हर कार्तिक माह में बलि-प्रतिपदा को भट्ट ब्राह्मण महार-मातंगों की तरह हाथ में पंजार्ती लेकर किसानों की प्रशंसा करते-करते—'अलाबला जावे और बलि का राज आवे'—यह मूल सही आशीर्वाद देते हैं और किसानों से बख्शीश न

माँगते हुए, हाथ पर शाल रखकर, उनसे यजमान का रिश्ता लगाकर, किसानों के घर-घर दक्षिणा माँगते हुए घूमते हैं।

आलंदी (आड़ंदी) की यात्रा में किसान जब अपने परिवार के साथ स्नान करते रहते हैं तब भट्ट ब्राह्मण उन सभी के सामने संकल्प-रूप में उनसे एक-एक पैसा दक्षिणा लेते हैं। बाद में द्वादश को देव-ब्राह्मण-सुहागन के निमित्त कई भोले-भाले किसानों से घी-रोटी और उनमें से कोई बहुत ही गरीब हो तो उससे सीधा लेकर अपने-अपने परिवार के साथ भोजन करके उन सभी अज्ञानी श्रद्धालुओं को ऊपरी खोखला आशीर्वाद देते हैं।

इसके अलावा भोंवर गाँव के अज्ञानी किसानों को पखवाड़े की सवारी में उलझाकर उन सबसे साल-भर हर द्वादश को बारी-बारी से घी-रोटी का ब्राह्मण-भोज वसूल करते हैं। इतना ही नहीं, कई दूर-दूर के इलाकों में रहनेवाले सधन किसानों को उत्तेजित करके उनसे घी-रोटी के सहस्र भोज करवाते हैं। अंत में परगाँव के किसानों के पंचों द्वारा जबर्दस्ती आरोपी बनाकर भेजे गए किसानों की मुनादी करवाकर उसको दोषमुक्ति के नाम पर क्या कम नंगा कर देते हैं?

वद्य द्वादश को भट्ट ब्राह्मण किसानों के आँगन के तुलसीवृंदावन के सामने धोती का परदा पकड़कर मंगलाष्टकों के अलावा दो-चार श्लोक या आर्या कह-कर, तुलसी का ब्याह रचाकर किसानों से आरती के पैसे और गोद में डाली गई वस्तुओं के अलावा जो चीजें हाथ में लग जाएँ, उन सबको इकट्ठा करके ले जाते हैं।

हर पौष माह में मकर संक्रांति को भट्ट ब्राह्मण किसानों के घर में संक्रांति-फल पढ़कर सुनाते हैं और उनसे दक्षिणा ले लेते हैं। वे कई अनपढ़ भोले-भाले किसानों को बेहिसाब पुण्य-प्राप्ति का लालच दिखाकर बड़े उत्साह से उनके गन्ने के खेत भट्ट ब्राह्मणों से लुटवाते हैं।

हर माघ के महीने में महाशिवरात्रि को भट्ट ब्राह्मण कई किसानों के गली-गली के मंदिरों में शिव-लीलामृत का पाठ करके सूर्योदय से पहले समाप्ति करते समय उनसे ग्रंथ-पाठ के नाम पर सीधा-दक्षिणा ले लेते हैं।

हर फाग के महीने में होली-पूजन के लिए किसानों के पास पैसा नहीं रहता, फिर भी ये भट्ट ब्राह्मण उनसे कुछ दक्षिणा लिए बगैर उनको अपने-अपने बदन पर धूल-मिट्टी डालने की अनुमति नहीं देते।

उक्त सदर हर वर्ष आनेवाले त्यौहारों के अलावा बीच-बीच में चंद्रग्रहण, सूर्य-ग्रहण और ग्रहों के परिवर्तन के संबंध में किसानों से भट्ट ब्राह्मण तरह-तरह के दान लेते हैं और सभी अवसरों का समय-समय पर पूरा लाभ उठाते हैं। कभी उत्पात मचाकर, कभी अधिकार से किसानों के पिछलग्गू बनकर, कभी भीख माँगते हुए घूमते हैं। इसके अलावा किसानों के मन पर हिंदू धर्म के मजबूत बोझ लाद करके,

कफ़ल्लक बनकर उनके पिछलग्गू बनने के लिए भट्ट ब्राह्मण सधन किसानों के घरों में रात के समय कभी-कभी पांडव-प्रताप आदि बेढंग पुराणों का पाठ करते हैं और उनसे पगड़ी-धोती के अलावा रुपया-पैसा भी ऐंठ लेते हैं। कुछ नमकहरामी भट्ट ब्राह्मण अपने किसान यजमानों की बहू-बेटियों को धुन लगाकर उनको कुकड़ूँकू करने के लिए लगाते हैं। उसमें भी बीच-बीच में संधान साध्य हुआ तो भट्ट ब्राह्मण किसानों के घर में सत्यनारायण की पूजा करवाकर पहले किसानों के घगरे में सवा सेर के करीब रवा, कोरा दूध, असली घी और शक्कर डालकर बनवाए गए प्रसाद को हजम कर लेते हैं। बाद में अपने बाल-बच्चों के साथ घी-रोटी का भोजन समाप्त करके उनसे दक्षिणा खींच लेते हैं और किसानों के ही हाथ में कंदील देकर घर-घर जाते हैं।

इतने में किसानों में से कुछ दुर्बल नर-नारी नजरअंदाज से रह गए हों तो भट्ट पुराणिक उन सभी को किसी फालतू देवल में हर दिन रात में इकट्ठा करके उनको राधाकृष्ण की लीला के संबंध में पुराण सुनने की धुन लगाते हैं। समाप्ति के समय उन सभी को आपस में उलझाकर उनके द्वारा थाल में डाली गई महा-दक्षिणा इकट्ठा करने के बाद, फिर उनके अलग चंदे के खर्चे से स्वयं बड़े ठाट-बाट में पालकी में बैठकर सभी सुननेवालों को अपने आगे-पीछे साथ लेकर वाहवाही करवाते हुए जाते हैं।

कई अनपढ़ भट्ट ब्राह्मणों को पंचांग के सहारे पेट पालने की अक़्ल न होने की वजह से वे अपने में से किसी बेवकूफ निकम्मे को फदी बाबा बनाकर उसके पाँव में खड़ाऊँ और गले में वीणा लटकाकर, उस पर किसी शूद्र द्वारा भली लंबी-चौड़ी छतरी पकड़वाकर, फिर सभी लोग उसके पीछे-पीछे झाँज, ढोल पिटते हुए 'जै-जै राम, जै-जै राम' नाम का उद्घोष करते हुए अज्ञानी किसानों के सहयोग से भीख माँगते फिरते हैं।

कई भट्ट ब्राह्मण बड़े-बड़े मंदिरों के विशाल सभामंडप में अपने में से किसी खूबसूरत जवान को चिंदी बाबा बनाकर, उसके हाथ में तंबोरा-ताल देकर, फिर सभी उसके पीछे कतार में तालतंबोरे के ताल पर बड़े प्रेम से 'राधा-कृष्ण-राधा' कहते-कहते, नाचनेवाले लड़के की तरह नखरा करके, दर्शन के लिए आने-जाने वाली सधन विधवाओं को अपनी धुन में लगाकर, अपने पेट पालकर बड़े मौज करते हैं।

कई मतिहीन भट्ट ब्राह्मणों को पुरोहिती धंधा करके ऐयाशी करने की अकल न होने की वजह से वे अपने में से किसी सीधे-सादे कारकुन को देवमहल का रख-वाला बनाकर, सभी ब्राह्मण हर गाँव-गाँव जाकर, अनपढ़ किसानों से मिन्नत कबूल करवाकर, उस बहाने उसके लिए काफी धन इकट्ठा करके लाते हैं।

कई भट्ट ब्राह्मणों को वेदशास्त्रों का अध्ययन करके प्रतिष्ठा से निर्वाह करने

की कूबत न होने की वजह से वे अपने में से किसी अधपगले गँजेड़ी को बागलकोट का स्वामी बनाकर, गाँव-गाँव जाकर लोगों से कहते फिरते हैं कि 'स्वामी सभी के मन की तृष्णा जानते हैं' और उसमें से कुछ पूरी होने के संबंध में अन्य रास्ते से कह सुनाते हैं। इस तरह झूठी बातें कहकर अज्ञानी किसानों को फुसला करके उनको स्वामी के दर्शन के लिए ले जाते हैं और वहाँ उनको लूटते हैं।

उक्त सदर लिखी गई बातों से किसानों की भट्ट ब्राह्मणों के धर्म की चक्की से मस्ती गई नहीं तो, वे उन्हें बदरी केदार आदि तीर्थयात्रा की धुन लगा देते हैं। अंत में उन्हें काशी-प्रयाग ले जाते हैं। वहाँ उनको हजारों रुपया में फाँसते हैं और उनकी दाढ़ी-मूँछें सफाचट करके उनको उनके घर पर लाकर छोड़ देते हैं। अंत में उनसे तीर्थयात्रा के निमित्त बड़े-बड़े ब्राह्मण-भोज करवाते हैं।

अंत में किसान के मरने के बाद भट्ट ब्राह्मण श्मशान में करट (कारटा[1]) का स्वाँग लेकर उनके बच्चों की ओर से प्रत्येक दिन हर प्रकार के कर्मकांड करवाते हैं। उनके घर में प्रत्येक दिन गरूड़ पुराण का पाठ करते हैं। दसवें दिन धनकवड़ी आदि डिपो कें वतनदार काग पंडित को काँव-काँव कहकर पिंड-प्रयोजन का सामान देते हैं, फिर वे उनसे गरूड़-पुराण के मेहनताना के साथ कम-से-कम ताँबा, पीतल, छतरी, लाठी, गादी और जूता दान में, लेते हैं। मृतक के श्राद्धपक्ष को पिंडदान करवाते समय उसकी क्षमता के अनुसार सीधा और दक्षिणा लेने की परंपरा सालों से उन्होंने कायम रखी है। इसके लिए उन्होंने किसान यजमान से दिलजमाई करके किसी को कारोबारी, किसी को चौधरी, किसी को देशमुख, पाटिल आदि मुँहदेखी झूठी उपाधियाँ देकर, उनसे भट्ट ब्राह्मण अपने बाल-बच्चों के शादी-ब्याह के समय केले के पत्तों सहित सब्जी-भाजी फोकट में तोड़ लाते हैं और उन पर अपना प्रभाव कायम रखने के लिए अंत में किसी प्रयोजन में उन सभी को आमंत्रित करके मंडप में लाकर बैठाते हैं। फिर वे लोग सबसे पहले अपने जातिवालों को भोजन खिलाते हैं। उनके भोजन करके उठने के बाद वहाँ के सभी पत्तल की जूठन को ढंग से अलग-अलग रखकर उनको अपने शूद्र नौकरों की पंक्ति में बिठाकर उस सारी जूठन को बड़े चतुराई से कई तरह से मांगल्य का ढोंग रचाकर दूर से ही परोसते हैं। लेकिन सामान्य कालेमहल की किसानों की व्यभिचारी औरतों के मुँह का चुम्मा लेकर उनके मुँह का रसपान करने में रत्ती-भर विधि-निषेध नहीं मानते। वे अपने यजमान किसान को इतना नीच मानते हैं कि, उन्हें अपने आँगन के हौज और कुएँ तक छूने नहीं देते। फिर उनसे रोटी और बेटी-व्यवहार क्या कोई कर सकता है?

उक्त महत्त्वपूर्ण हकीकतों को देखते हुए कुछ लोग ऐसी शंका उपस्थित कर सकते हैं कि किसान लोग आज तक इतने अज्ञानी रहकर कैसे-क्यों भट्ट

1. मृत संस्कार-विधि करवाने वाला ब्राह्मण।

ब्राह्मणों द्वारा लूटे जाते हैं? इसके लिए मेरा उत्तर यह है कि प्राचीन काल में आदि आर्य भट्ट ब्राह्मणों का इस देश में अमल शुरू होते ही उन्होंने पराजित शूद्र किसानों को पढ़ने-लिखने पर पाबंदी लगा दी और उनको हजारों साल तक मन-चाहे परेशान करके, लूट करके खाये, इस संबंध में उनके मनुस्मृति जैसे धूर्त ग्रंथ में लिखा गया है। बाद में कुछ समय बीतने के बाद चार निष्पक्ष पवित्र विद्वानों को इस ब्रह्म-षड्यंत्र के बारे में पता चला तो उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की और आर्य ब्राह्मणों के नकली धर्म की पोल खोलकर रख दी। उन्होंने उत्पीड़ित अज्ञानी शूद्र किसानों को आर्य ब्राह्मणों के जाल से मुक्त करने का अभियान चलाया था। इसी बीच आर्य ब्राह्मणों की अगुआई करने वाले महाधूर्त शंकराचार्य ने बौद्धधर्मी सज्जन लोगों के साथ तरह-तरह के वितंडा खड़े करके उनको हिंदुस्थान में प्रभावहीन करने का गहरा प्रयास किया। फिर भी बौद्ध धर्म की अच्छाई पर उसका कोई असर नहीं हुआ; बल्कि दिन-ब-दिन बौद्ध धर्म का विस्तार ही हो रहा था। तब अंत में शंकराचार्य ने तुर्की लोगों का मराठों से मिलाप करा दिया और उनसे तलवार की नोंक पर यहाँ के बौद्ध लोगों का विनाश किया। फिर आर्य ब्राह्मणों को गोमांस और मद्यपान सेवन पर पाबंदी लगा दी और अज्ञानी किसानों के मन पर वेदमंत्र का जादू तथा भट्ट ब्राह्मणों का वर्चस्व कायम किया।

कुछ समय बीतने के बाद हजरत महमद पैगंबर के जवांमर्द अनुयायी यहाँ आए। वे आर्य ब्राह्मणों के बनावटी धर्म को और सोरटी सोमनाथ जैसे मंदिरों की मूर्ति को तलवार के वार से तोड़ करके शूद्र किसानों को आर्यों के ब्रह्म-दरवाजे से मुक्त करने लगे। इसलिए भट्ट ब्राह्मणों के मुकुंदराज और ज्ञानेश्वर ने भागवत ग्रंथ के कुछ काल्पनिक हिस्से को लेकर उस पर प्राकृत भाषा में विवेकसिंधु और ज्ञानेश्वरी नाम से दाँवपेची (भाष्य) ग्रंथों की रचना की है। उन्होंने उन ग्रंथों के द्वारा किसानों के मन इतने गुमराह कर दिए कि वे कुरान और महमदी लोगों को नीच मानने लगे हैं, उनसे नफरत करने लगे हैं। बाद में कुछ समय बीत जाने के बाद तुकाराम नाम का एक साधु पुरुष किसान के घर में पैदा हुआ। वह किसानों के ही शिवाजी राजा को उपदेश देकर उसके द्वारा भट्ट ब्राह्मणों के बनावटी धर्म का देशनिकाला करके किसानों को उनके जाल से मुक्त कर देगा, इस डर की वजह से भट्ट ब्राह्मणों के अटल वेदांती रामदास स्वामी ने महाधूर्त गागाभट्ट के सहयोग से अनपढ़ शिवाजी को गुमराह करने का निश्चय किया। उन्होंने अज्ञानी शिवाजी और निर्विकारी तुकाराम का स्नेह-संबंध बढ़ने नहीं दिया। फिर शिवाजी राजा के पश्चात् उसके भट्ट पेशवा सेवक ने उनके औरस वारिस को सातारा के किले में कैद करके रखा। पेशवा के आखिरी कार्यकाल में रूखी-सूखी रोटी पर गुजारा करनेवाले फटेहाल किसानों से कर इसलिए वसूल किए गए थे

कि बाँध बाँधा जा सके और खेतों को पानी मिले, लेकिन बाँध बाँधने के काम की ओर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया, एक छदाम भी खर्च नहीं किया। लेकिन पर्वती के वैभव पर बीस-बीस, पचीस-पचीस हजार भट्ट ब्राह्मणों को शाल-धोती आदि दक्षिणा देने के लिए, भंडार-सा खोल दिया था। हमेशा ही पेंढारियों ने लुटकर बेजार हुए किसानोंसे जबरदस्ती वसूल किए जामदारखाने से एक कौड़ी भी अज्ञानी किसानों को कम-से-कम प्राकृत विद्या पढ़ाने के लिए भी, खर्च नहीं की। ब्राह्मणों के स्वार्थी धर्मशास्त्र सीखनेवाले भट्ट ब्राह्मणों को सैकड़ों रुपयों का सालाना अनुदान देने की लूट लगा दी है। पर्वती के वैभवपूर्ण कांजीहौस में बाजीराव पेशवा ने सभी हाथों से रुपयों-पैसों की खिचड़ी बाँटने की धूम मचा दी, इसलिए हमको विशेष आश्चर्य नहीं हो रहा है। चूँकि रावबाजी असल आर्य जाति के ब्राह्मण थे; इसलिए उन जैसे पक्षपाती दानदाता ने पर्वती जैसे किसी संस्थान में किसानों के कुछ अनाथ विधवाओं और निराधार अनाथ लड़के-लड़कियों की व्यवस्था की नहीं। केवल अपनी जाति[1] के भट्ट ब्राह्मण, गायक, पुजारी और चार-पांच हिमायती फिरस्ती भट्ट ब्राह्मणों को हर दिन सुबह के समय स्नान के लिए गरम पानी और दो बार हर रोज बढ़िया से बढ़िया खाना खिलाने की सुविधा करके रख दी गई है। उसी प्रकार हर एक आख्यान पर दूध-पेड़ा आदि नाश्ते की व्यवस्था कर दी गई और उपवास तथा सभी त्यौहारों को उनकी इच्छा के अनुसार पदार्थ बनाये जाते हैं। उन सभी के लिए रात-दिन नाच-गाना सुनने और देखने की व्यवस्था की जाती है, तथा मौज-मस्ती करने की सुविधा दी जाती है।

यही रिवाज हमारी डरपोक अंग्रेज सरकार ने आज तक जस का तस चालू रखा है। मेहनती शूद्रादि-अतिशूद्र किसानों के पसीनों से वसूल किए गए लगान के हजारों रुपये हर साल अन्य मुद्दों पर खर्च किए जाते हैं।

आज कई शूद्रादि-अतिशूद्र किसान ईसाई धर्म को स्वीकार करके मनुष्य-पद को प्राप्त हुए हैं। इसलिए भट्ट ब्राह्मणों का महत्त्व कम हो गया है। आज उनपर मेहनत-मजदूरी के काम करके पेट पालने की नौबत आ गई है। यह देखकर कई धूर्त ब्राह्मण नादान हिंदू धर्म का समर्थन करके कई तरह के नये-नये समाजों की स्थापना करके उनमें अप्रत्यक्ष रूप से महमदी और ईसाई धर्म को बदनाम किया

---

1. A sepoy Revolt by Henry Mead, p. 133.
Having received an English education, he was a frequent visitor at the tables of Europeans of rank and was in the habit of entertaining them in turn at Bhitoor, etc.
The adopted son of the late Bajee Rao, the ex-peishwa of the Maharathas.

जाता है और उनके बारे में किसानों के मन में जहर भर दिया जाता है। खैर, लेकिन सनातन मूर्तिपूजोत्तेजक ब्राह्मणों के चाचा और सार्वजनिक सभा के नेता जोशी महाराज ने हिंदूधर्म के जातिभेद के वृथाभिमान के चश्मे को अपनी आँखों से हटाकर किसानों की वास्तविक परिस्थिति को देखा होता तो उनकी एकपक्षीय धर्म के प्रतिबंध से उत्पीड़ित बेचारे अभागे किसानों को अज्ञानी कहने की हिम्मत ही नहीं होती। यदि वे हमारी अंग्रेज सरकार को किसानों पर धर्म के नाम पर होनेवाले जुल्म की जानकारी करा देते तो शायद उनको दया आती। वे शूद्रों को पढ़ाने-लिखाने के काम में भूदेव ब्राह्मण कर्मचारियों की सलाह न लेते और उनको पढ़ाने-लिखाने के लिए कुछ निराले उपाय खोज लिए होते!

तात्पर्य, वंशपरंपरागत अज्ञानी किसानों के धन और समय का भट्ट ब्राह्मणों द्वारा इतना नुकसान होता है कि उनको अपने छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल में भेजने के लिए शक्ति ही बचती नहीं। इसके अलावा आर्य भट्ट ऋषियों ने बहुत प्राचीन काल से शूद्र किसानों को ज्ञान-ध्यान नहीं करना चाहिए—इस तरह की व्यवस्था बनाई हुई है, इसलिए अज्ञानी किसानों के मन पर आज भी उसका बोझ बँधा हुआ है। उनको अपने बच्चों को स्कूल में भेजने की हिम्मत नहीं होती। आज के हमारे दयालु गव्हर्नर जनरल साहब ने, पाताल के अमेरिकी जनतंत्रात्मक राज्य के महाप्रतापी जॉर्ज वाशिंगटन साहब से प्रेरणा लेकर, यहाँ के 'ब्राह्मण बताए वही धर्म और अंग्रेज करेंगे वही कानून' माननेवाले शूद्रादि-अतिशूद्रों को विद्वान भट्ट ब्राह्मणों की तरह म्युनिसिपालिटी में अपनी ओर से मुखिया चुनकर भेजने का अधिकार दिया है, यह सही है; किंतु इस व्यवहार में भट्ट ब्राह्मण अपने अकल के अहंकार में मांगल्यभाव के नखरे में अज्ञानी शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों से छक्के-पंजे खेलते हुए उनको आगे बेवकूफ बनाने लगें, तो इसका परिणाम हमारे दयालु गव्हर्नर जनरल साहब के माथे पर शायद असफलता का दोष न लगे, लेकिन भट्ट ब्राह्मणों को लाभ ही लाभ है, ऐसा हम समझेंगे।

परिच्छेद : दो

सरकारी गोरे अफसर आम तौर-पर ऐशोआराम में मदहोश रहते हैं, जिसकी वजह से उनको किसानों की वास्तविक स्थिति के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए फुरसत ही नहीं मिलती। उनके इस गाफिल व्यवहार की वजह से सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण कर्मचारियों का वर्चस्व होता है। इन दोनों कारणों से किसान इतने लूट लिए जाते हैं कि उनको पेट-भर की रोटी और बदन पर पूरा कपड़ा भी नहीं मिलता।

पहले के जमाने में सारे हिंदुस्थान में कुछ विदेशी और यवनी बादशाह तथा कई स्वदेशी राजा-महाराजा थे। उन सभी के पास शूद्र किसानों में से लाखों सरदार, मालदार, शिलेदार, बारबर्दार, पायदल, गोलंदाज, माहर, ऊँटवाले और अतिशूद्र किसानों में से मोतद्दार सेवक होने की वजह से लाखों शूद्रादि-अतिशूद्र किसानों के परिवारों को लगान देने की विशेष कठिनाई नहीं होती थी, क्योंकि अधिकांश किसानों के परिवारों में से करीबन एक व्यक्ति को तो छोटी-बड़ी सरकारी नौकरी होती थी, किंतु फिलहाल प्रमुख बादशाह, राजा-महाराजा आदि समाप्त होने की वजह से करीबन पच्चीस लाख से भी ज्यादा शूद्रादि-अतिशूद्र किसानों के बेकार होने की वजह से उन सभी का बोझ खेती करने वालों पर पड़ा है।

हमारी अंग्रेज सरकार के कारनामों से, जहाँ सारे हिंदुस्थान में पहले हमेशा युद्ध-खोरी की वजह से मनुष्य प्राणियों की कतल होती थी, वह होना बंद हुआ। चारों तरफ शांति आयी। किंतु इस देश में आक्रमण, शिकार खेलना आदि बद हो जाने की वजह से सभी लोगो का शौर्य और जवाँमर्दी लुप्त हो गई। राजा-महाराजा 'डरपोक' की तरह दिन में केसरिया वस्त्र पहनकर देवपूजा में व्यस्त रहते थे और रात में निरर्थक प्रजोत्पादन के काम में बेकाबू होने की वजह से यहाँ की जनसंख्या काफी बढ़ गई है; जिसकी वजह से सभी किसानों में भाई-हिस्सा इतना हो गया कि कई लोगों को आठ-आठ, दस-दस हरी की बुआई पर गुजारा करना पड़ता है,

ऐसा वक्त भी बीत चुका है। ऐसे आठ-आठ, दस-दस हरी की बुआई के लिए उनको एक-दो बैल अपने पास रखने की हैसियत न होने की वजह से वे लोग अपने खेतों को अड़ोस-पड़ोस के लोगों को आधी फसल में या ठेके से देते हैं और अपने बाल-बच्चों को साथ में लेकर किसी परगाँव में मेहनत-मजदूरी करके पेट पालने के लिए जाते हैं।

पहले जिन किसानों के पास बहुत-थोड़ी खेती थी और जिनका अपने खेत पर निर्वाह होना असंभव था, वे लोग अपने इर्द-गिर्द के पहाड़ों के जंगलों से उदुंबर, जामुन आदि पेड़ों के फलों को खाकर जीते थे। उसी प्रकार पलाश, मोहा आदि पेड़ों के फूल-पत्ती और जंगल से तोड़ करके लाई हुई लकड़ियाँ बेचकर कपड़े-लत्ते लायक पैसा जमा करते थे। गाँव के चरागाह के भरोसे अपने पास एक-दो गाई और दो-चार बकरियाँ पालकर, नपा-तुला गुजारा करके बड़े आनंद से अपने-अपने गाँव में ही रहते थे; किंतु हमारे माई-बाप सरकार के कारस्तानी यूरोपियन कर्मचारियों ने अपनी विलायती बहुरूपी अकल पूरी तरह खर्च करके, उन्होंने बहुत बड़ा जंगल विभाग नये से शुरू किया है। उसमें सभी पहाड़, पर्वत, टेकरियाँ, घाटी और उसी में खाली जमीन और चरागाह मिला करके फॉरेस्ट विभाग को पहाड़ों तक ले जाने की वजह से दुर्बल-निर्बल किसानों की भेड़-बकरियों के लिए धरती की पीठ पर जंगल की हवा खाने लायक भी जगह नहीं बची है। उन्हें अब कोष्टी, धोबी, नाई, लुहार, बढ़ई आदि मेहनती लोगों के कारखानों में उनके हाथ के नीचे मामूली से काम करके अपना पेट भरना पड़ रहा है। ऊपर से इंग्लैंड के कर्मचारी मनचाहे शराब की बोतलें, पाव, बिस्किट, हलवा, अचार, छोटी-बड़ी सूई, सुआ, चाकू, कैंची, सिलाई यंत्र, भाता, चूल्हा, रंगबिरंगे बिलोरी सामान, धागा, डोरा, कपड़ा, शाल, जुराब, मोजा, टोपी, डंडा, छतरी, पीतल, तांबा, लोहे के पत्रे, ताला, चाबी, डांबरी, कोयला, तरह-तरह की गाड़ियाँ आदि न जाने कितनी प्रकार की चीजें वहाँ यंत्रों द्वारा तैयार की जाती हैं और उन चीजों को यहाँ लाकर सस्ते बेचने लगे। इसलिए यहाँ के सभी माल को खपत नहीं मिली। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ के कोष्टी, धोबी, जुलाहा, मोमीन पूरी तरह कंगाल हो गए। उनमें से कई कोष्टी लोग बेहिसाब मंदी के दिनों में भूखों मरने लगे। इसलिए उनमें से कई लोग अपना निर्वाह दाल के छिलके पर, कई लोग चावल और गेहूँ की भूसी पर और कई लोग आम की गुठली खाकर करते हैं। कई धोबी से जब घर के अंदर दाँत पर दाँत लगाए हुए औरत, बाल-बच्चों की स्थिति देखी नहीं गई तो वे शाम को बेशरम होकर दो-चार पैसों का उधार निरा पीकर घर में आकर मरे मुर्दे की तरह पड़े रहते हैं। कई पद्मसाली गूजर मारवाड़ियों की ओर से मजदूरी पर कपड़ा बुनने के लिए लाया हुआ रेशम और कलाबत्तू जिस कीमत में बिके, उसे बेचकर अपने बाल-बच्चों सहित गूजर मारवाड़ियों को चकमा

देकर रात में ही बाहर गाँव से भाग जाते हैं। फिर ऐसे पेट के पीछे लगे हुए भुखमरे कसबी लोगों को, कंगाल किसानों को किस तरह की और कौन-सी मदद करनी चाहिए ?

दूसरी बात यह कि प्राचीन काल में शूद्रादि-अतिशूद्रों पर ब्राह्मणों के पूर्वजों ने बड़े प्रयास से और धूर्तता से जो वर्चस्व प्राप्त किया था, वह चिरकाल तक बना रहे, इसलिए हर तरह के हथकंडे ब्राह्मणों ने अपना रखा है। किसानों को घोड़ा, बैल आदि जानवरों की तरह मेहनत करके उन्हें सुख देना चाहिए, यही उनका दृष्टिकोण रहता है। उनका यह भी दृष्टिकोण रहता है कि किसानों को बेजान खेत होकर उनके लिए जरूरी और ऐशोआराम की चीजें पैदा करनी चाहिए। इसी इरादे से अटक नदी के उस पार हिंदुओं में से किसी को नहीं जाना चाहिए। जो जाएगा, वह भ्रष्ट हो जाएगा, इस तरह का विधान ब्राह्मणों ने हिंदू धर्म में घुसेड़ दिया है। इससे ब्राह्मण लोगों का सही उद्देश्य सफल हुआ, लेकिन अन्य लोगों की बहुत बड़ी हानि हुई। विदेशी लोगों के चालचलन का पड़ोस प्राप्त न होने की वजह से वे सही में खुद को मानव प्राणी समझने की बजाय केवल जानवर समझने लगे हैं। अन्य देशों के लोगों से व्यापार-धंधा एकदम बंद हो जाने की वजह से वे कंगाल हो गए हैं। इतना ही नहीं, 'अपने देश में सुधार करो, अपने देश में सुधार करो'—इस तरह से जो दुरुस्त हुए ब्राह्मण लोग, कम-से-कम दिखावे के लिए ही सही, चिल्ला रहे हैं, उसका कारण उनकी यह ऊपर बतलाई गई धर्म की बात कारण बन गई होगी, यह निर्विवाद सत्य है। इस बनावटी स्थिति की वजह से ही कोष्ठी, बढ़ई आदि कारीगर जातियों का बहुत ही नुकसान हुआ है और उनको वे लोग आगे कितनी भयंकर स्थिति में लाकर रखेंगे, इस बात का अंदाज सही देशकल्याण की इच्छा करनेवाले व्यक्ति के बगैर किसी को भी नहीं आएगा।

अब कोई इस प्रकार का संदेह प्रकट कर सकते हैं कि जिन किसानों के पास ज्यादा खेत हैं, उनके पास मेहनत-मजदूरी करके गरीब किसानों को अपनी जीविका चलानी चाहिए, लेकिन सभी ओर बाल-बच्चों की संख्या बढ़ जाने की वजह से किसानों के पास इतने ज्यादा खेत नहीं हैं कि कुछ साल बारी-बारी से खेत खाली रख सकें। खेतों को आराम न मिलने की वजह से शेष सारी ज़मीन बंजर हो गई है। उसमें पहले की तरह पैदाइश करने की क्षमता ही शेष नहीं रही है। उनको अपने परिवार का निर्वाह करते-करते ही नाक में दम भर जाता है। ऐसी स्थिति में अपने गरीब किसान भाइयों के लिए कामधंधा देकर उन्हें पालना उनके लिए कैसे संभव हो सकता है? इस तरह चारों ओर से कठिनाइयों से घिरे हुए अधिकांश किसानों को अपने नंगे-भूखे बच्चों को स्कूल में भेजने की इच्छा ही नहीं होती। यह सब हमारे दूरदर्शी सरकारी कर्मचारियों को अच्छी तरह मालूम है। वे सभी अज्ञानी अबोल किसान को ज्ञान देने के बहाने एकदम

लाखों रुपये का लोकल फंड इकट्ठा करते हैं। उसमें से एक-तिहाई रकम, नाममात्र के लिए, शिक्षा विभाग पर खर्च करके कहीं-कहीं नाममात्र के लिए स्कूल खोले गए हैं। उन स्कूलों में कुछ किसान अपने बच्चों को भेजते हैं, किंतु उनके बच्चों को पढ़ानेवाले मास्टर स्वय किसान-घर के न होने की वजह से उनको उन बच्चों के प्रति जो हमदर्दी होनी चाहिए, वह नहीं होती। किसानों को नीच माननेवाले, हमेशा स्नान, पूजा-प्रार्थना करने वाले लोगों से किसानों के बच्चों को उचित समय पर उचित शिक्षा नहीं मिल पाती। वे जैसे के तैसे ही रह जाते हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात ही नहीं है; क्योंकि आज तक किसानों से वसूल किए गए लोकल फंड की तुलना में किसानों में से कितने सरकारी कर्मचारी हुए हैं? जहाँ कहीं ऐसा हुआ है, वहाँ वे किस-किस विभाग में, किस-किस अधिकार पर काम कर रहे हैं, इसके बारे में हमारे कर्तबगार शिक्षा विभाग के डायरेक्टर साहब को नाम-पद के साथ पत्रक तैयार करके सरकारी गजेटियर में छपाकर प्रसिद्ध करना चाहिए। किसान अपने माई-बाप सरकार को जब बड़े उत्साह से दुआ देंगे, तब कहीं जाकर सरकारी गजेटियर माई-बाप की आँखें खुलेंगी; क्योंकि गाँव-खेड़ों में जितने मास्टर होते हैं, वे सभी ब्राह्मण जाति के ही होते हैं। उनका वेतन आठ-बारह रुपये से ज्यादा नहीं होता। जिनकी योग्यता पूना जैसे शहर में चार-छः रुपये से ज्यादा नहीं होती, ऐसे पेटू अविद्वान ब्राह्मण मास्टर अपने स्वार्थी धर्म और बनावटी जाति-अभिमान को बड़ी मजबूती के साथ पकड़ करके रखते हैं। वे किसानों के बच्चों को स्कूल में पढ़ाते समय खुल्लमखुल्ला उपदेश देते हैं कि 'तुम लोगों को पढ़-लिख करके बाबूगीरी का काम नहीं मिला, तो क्या हमारी तरह पंचांग हाथ में लेकर भीख माँगते हुए घूमना है?"

ऐसे अज्ञानी किसानों के खेतों की हर तीन साल बाद पैमाइश करते समय, हमारी धर्मशील सरकार की आँखें मूंद करके प्रशंसा करनेवाले सरकारी कर्मचारी किसानों पर कुछ-न-कुछ लगान का बोझ बढ़ाते ही हैं और अन्त में 'आमेन' की आरती उतारे बगैर उनका पीछा नहीं छोड़ते। किंतु रोज का काम शुरू रहने पर भी शिकार के शौकीन यूरोपियन कर्मचारी के ऐशोआराम और मौजमस्ती में मशगूल रहने की वजह से उनके हाथ के नीचे काम करनेवाले धूर्त ब्राह्मण कर्मचारी अज्ञानी किसानों को कम नहीं सताते लेकिन यूरोपियन कर्मचारी उन पर अपनी पैनी नजर नहीं रखते।

कभी-कभी अज्ञानी और गँवई किसानों में आपस में खेत के बंध के बारे में या सार्वजनिक कुओं पर जल-वितरण के संबंध में थोड़ी-बहुत 'तू-तू, मैं-मैं' भी हो जाती है; कभी-कभी आपस में झगड़ा भी हो जाता है। यह सामान्य बात है; लेकिन उस समय नारद-रूप धरकर भट्ट-कुलकर्णी दोनों ओर के किसानों से अलग-अलग जाकर मिलते हैं और उनको अलग-अलग राय देते हैं। दूसरे दिन उनमें से एक को

अलग मंतर पढ़ाकर उसके नाम की अर्जी तैयार करके उसको मामलेदार की ओर भेज दिया जाता है। बाद में समंस लेकर आए हुए पट्टेवाले के साथ प्रतिवादी और गवाहदार, दोनों अपने-अपने समंस तामील करने के लिए कुलकर्णी के बाड़े में पहुँचते हैं। उन दोनों की एक जैसी तामील करके सिपाही को दरवाजे के बाहर जाने के लिए कहकर दोनों को, यानी वादी और प्रतिवादी को अलग-अलग ले जाकर कहते हैं कि 'तुम अमुक समय और तुम तमुक समय मुझे अकेले में आकर मिलो, जिससे कि मैं कोई न कोई उपाय ढूंढ़ सकूं।'

बाद में वादी और गवाहदार के उसके घर आने पर उसको ऐसा कहते हैं कि 'तुम लोग, बहुत ज्यादा तो नहीं किंतु अमुक रकम तक मन बड़ा कर सको तो मामलेदार साहब के दीवानजी को कहकर तुम्हारे प्रतिवादी को कुछ न कुछ सजा दिलाने की व्यवस्था कर सकता हूं; क्योंकि वह तो दीवानजी के हाथ में है। मैंने जो कहा है, यदि उसके अनुसार कुछ भी न हो सका तो मैं तुम्हारी रकम उससे वापस ले लूंगा और तुमको दे दूंगा। लेकिन मेरी मेहनत के लिए (बहिरोबा) भगवान आपको जो अकल दे, वही दो, या आप कुछ भी नहीं देना चाहें तब भी हमारी कोई शिकायत नहीं। आपको सफलता मिली, इसका मतलब है, हम लोगों ने सब कुछ मिलाया है।"

फिर प्रतिवादी के मुवक्किल की ओर से वादी से भी दुगुना और मेहनताना के रूप में कुछ और मिला करके रुपया लेने के बाद उनसे इस तरह का करार करते हैं कि 'मैं जिस तरह कहता हूँ, उस तरह से आप लोग शिकायत कीजिए। उसके लिए दो-चार नकली गवाह बनाइए। फिर दीवानजी से कहकर आपके बाल को भी बाँका नहीं होने दूंगा; क्योंकि उसका प्रभाव मामलेदार साहब के पास कितना है, यह तो आप जानते ही हैं, और अभी मैंने आपके साथ जो बात की है, उसके अनुसार, आपका काम सफल न हुआ, तो उसी दिन आपकी रक़म उनसे वापस ला करके आपको लौटा दूंगा। लेकिन मेहनताना के रूप में मैंने जो आपसे लिया है, उसमें से एक छदाम भी लौटाऊँगा नहीं, यह मैं अभी से आपको बताए देता हूँ। सच तो यह है कि इस तरह के काम पर मेरा चूल्हा निर्भर नहीं है।

बाद में मामलेदार, कचहरी के ब्राह्मण कर्मचारी, अनपढ़ वादी-प्रतिवादी और उनके गवाहों की गवाही लेते समय, जिस मुवक्किल की ओर से जेब गरम हुई होगी, उनकी गवाही लेते समय, उनको कुछ सूचित सवाल पूछकर अनुकूल गवाह-पत्र तैयार कर देते हैं; किंतु जिस मुवक्किल के द्वारा उनकी जेब ढंग से गरम न हुई हो, तो उनकी गवाही लिखते समय उनके सभी मुद्दे आगे-पीछे करके इस तरह बनाते हैं, जिससे उस गवाही को पढ़ने वाले या सुनने वाले को उस विवाद का सही स्वरूप ही समझ में नहीं आए; बल्कि उससे गलत समझ बनने में ही मदद मिले।

कई ब्राह्मण कर्मचारी अनपढ़ किसानों की जबानी लिखते समय उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण बातें छोड़ देते हैं। कुछ ब्राह्मण कर्मचारी किसानों के गवाहपत्र अपने घर ले जाते हैं और रात में दूसरे गवाहपत्र तैयार करके सरकारी दफ्तर में लाकर रख देते हैं। इसकी वजह से कोई सही अमलदार होने पर भी उसके हाथ से अन्याय होने की संभावना रहती है। इसके बाद जेब चूसनेवाले ढोंगबाज वकीलों के फँसाने की वजह से यूरोपियन कलेक्टर की ओर अपील करने पर कलेक्टर के सरिस्तेदारों की जेब जिन मुवक्किल की ओर से गरम होगी, उन्हीं को न्याय मिलेगा। ये सरिस्तेदार उनकी अर्जी की जबानी की सुनवाई कलेक्टर के सामने पेश करते हैं। उस समय वहाँ के अधिकांश हानिकारक मुद्दों को पढ़ते-पढ़ते टाल देते हैं और कलेक्टर के मुँह से शब्द निकलते हैं कि 'तुम्हारी शिकायत सही नहीं है।' जब अपने पक्ष में कर लेने का दांव सफल न हुआ तो सरिस्तेदार उनके प्रतिवाद पर अपनी इच्छा के अनुसार टूटी-फूटी मराठी में कुछ लिख देते हैं। फिर शाम को जब साहब बहादुर अपनी मैडम के साथ बाहर हवा खाने के लिए जाने की हड़बड़ी में रहते हैं, उस समय या मराठी जाननेवाले कोई सख्त साहब हों और वह एक दिन पहले कहीं से मेहमानबाजी करके रातभर जागे होने की वजह से दूसरे दिन जब सुस्त और नींद के नशे में हों; या उस समय जब वह शिकार के लिए जाने की हड़बड़ी में हों, वहाँ जाकर पहले जिस प्रकार अभिमत दिए गये होंगे, उसके अनुसार जस के तस पढ़कर सुनाते हैं और उनकी दस्तखत उस प्रतिवाद पर बड़े आसानी से ले लेते हैं।

कई हेकड़ कलेक्टरों के आगे धूर्त सरिस्तेदारों की एक भी नहीं चलती। फिर वे कुछ अड़ियल किसानों की फ़रियाद मुख्य सदर कचहरी में तैयार करने की बजाय उसको कलेक्टर के पीछे-पीछे पाँव में पलाश के पत्ते बाँधकर और बासी रोटियाँ खाते-खाते गाँव-गाँव घूमने के लिए मजबूर करते हैं। उसकी हड्डी खोखली करके हौसलापस्त कर देते हैं। कुछ लोग तो अज्ञानी किसानों की अर्जी-फाइल को एक-दो दिन की भी देर नहीं लगाते, उनके प्रतिवादी की ओर से कुछ रिश्वत मिली कि उसको तुरंत रद्द कर देते हैं। अंत में दोनों में से जो ज्यादा पैसा खर्च करेगा, उसकी विजय होती है।

इस तरह गाँव के लोगों में आपस में नफरत की भावना पैदा होती है और गाँव के लोग दो टुकड़ों में बँट जाते हैं। बाद में पोले के दिन बैलों की दायीं बाजू और होली को आधी रोटी किसे देनी चाहिए, इस बात पर दोनों टुकड़ों में भयंकर संघर्ष छिड़ जाता है। कइयों की सिर-फुटव्वल हो जाती है। (सभी फौजदारी, दीवानी आदि झगड़े अज्ञानी किसानों में उत्पन्न होने के कारणों में, उनके मूल में यदि ये नारद लोग नहीं हैं, तो फिर ऐसे झगड़े बहुत कम होंगे।)

भट्ट-कुलकर्णी दोनों टुकड़ों के लोगों की प्रशंसा करते हैं और अंदर-ही-अंदर

डरपोक पुलिस पटेल को साथ में लेकर ताल्लुका के मुख्य पुलिस अफसर को प्रसन्न करते हैं। तब वहाँ से, वर्दी पहनकर, काले-नीले पतलून और बूट, डगला और पगड़ी से सुसज्जित होकर, हाथ में रंग-बिरंगे डंडे लिए हुए भुखमरे सिपाहियों के पीछे दौड़ते-दौड़ते एक-दो मुरझे हुए अड़ियल हवालदार और जमादार बगल में जंग लगी तलवारें लेकर गाँव में आते हैं। सबसे पहले वहाँ के महार और पुलिस पटेल को मदद के लिए साथ में लेते हैं और गाँव के दोनों ग्रुपों के लोगों को पकड़-कर लाते हैं और चौपाल में बंदी बना करके रखते हैं। उनकी देखरेख के लिए एक पहरेदार रख देते हैं। फिर सभी सिपाही और अमलदार अज्ञानी पुलिस पटेल की मदद से मारवाड़ी की दुकान से मनचाहे दाम पर और माप से सीधा-सामान ले लेते हैं और चौपाल पर लौटते-लौटते शराब की दुकान पर, किसी ने दावत दी, तो शराब के नशे में खाना खाकर औंधे हो जाते हैं। फिर टालमटूल, पूछपाछ करके उन सभी कैदियों को मुख्य थाने में लाकर फौजदार के सामने खड़े करके उनके आदेश के अनुसार उनकी पूरी जाँच-पड़ताल होने तक उनको अस्थायी जेल में रखते हैं। फिर कैदी किसानों के घर के लोग अपने औरतों-बच्चों के गहने बेच करके पैसा इकट्ठा करते हैं और उन रुपयों-पैसों को फौजदार कचहरी के कर्मचारियों को समझाने-बुझाने के लिए किस तरह खर्च करते हैं, उनके कुछ उदाहरण मैं यहाँ दे रहा हूँ :

यदि किसी एक पक्ष के लोगों को ज्यादा मार पड़ी है तो धूर्त कर्मचारी कुलकर्णी दूसरे पक्ष के लोगों से पैसा लेकर, उनके घाव सूखकर निशान मिटने तक, केस तैयार करके मजिस्ट्रेट साहब की ओर भेजने में देर लगाते हैं। कभी-कभी धूर्त कर्मचारियों की जेब गरम हो जाने पर, दूसरे पक्ष के प्रमुख गवाह उनके केस में गवाही नहीं दें, इसलिए वे साहूकार से नजदीकी संबंध साधने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी मुद्दे के गवाहों को अपने सामने पेश करने से पहले उनको कुलकर्णियों के द्वारा तरह-तरह की धमकियाँ दिलवाते हैं और उसको किसी दूर अपरिचित गांव भगाकर ले जाते हैं। उनमें से कुछ नासमझ अज्ञानी किसानों के ब्राह्मण कर्मचारियों के सुझावों को नजरअंदाज करके अपनी-अपनी गवाही देने के लिए कचहरी में आने पर—एक तो उनके अनपढ़ होने की वजह से उनकी याद-दाश्त ठीक नहीं होती और दूसरी बात उनको आगे-पीछे के सवालों का संदर्भ लगाकर जवाब देने में झिझक होती है, इसकी वजह से उनकी गवाही के समय जब धूर्त कर्मचारी उनको डराते हैं—तो उसे आसमान दिखाई देने लगता है। वे कभी-कभी अज्ञानी किसानों की गवाही लेते समय उनसे तरह-तरह के सवाल करके उनको इतना डराते हैं कि उन्हें सचमुच में अपनी आँखों से जो कुछ दिखाई दिया होता है और कानों से जो सुनाई दिया होता है, वे सब कुछ भूल जाते हैं। इसके अलावा कई निडर कर्मचारियों के हाथ पर भरपेट दक्षिणा आ गई, तो फिर वे

कुलकर्णी की मदद से कानून के अनुसार कई तरह के नकली प्रमाण और गवाह-दार तैयार करवाकर मनचाहे अज्ञानी किसानों को जुरमाना या सजा करवा देते हैं। उस समय उनके पास जुरमाना भरने के लिए पैसे नहीं होने की वजह से वे अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से उधार पैसा लेकर जुरमाना भरते हैं, फिर घर लौटकर आने के बाद जिनसे उधार पैसे लिए थे, उनको लौटा देते हैं और अन्य सजा हुए लोगों को जेल से छुड़ाने के लिए, अपील करने के लिए साहूकार से कर्ज माँगने पर, हमारी सरकार के किसान-विरोधी कानूनों की वजह से, उनको कोई भी इज्जतदार साहूकार अपने दरवाजे पर खड़े भी नहीं होने देते, क्योंकि अपने पास के पैसे किसानों को कर्ज में देकर, उसके बाद फैसला होते समय जेब तलाशने-वाले निडर शूद्र बेलिफों की खुशामद करके सामानों के साथ लाए हुए अज्ञानी किसान के सामने भरे कोर्ट में साहूकार को फजीहत झेलनी पड़ती है। कई युवा लोगों ने तरह-तरह के कानून की किताबें तोते की तरह रट लेने की वजह से उनकी परीक्षा समाप्त होते ही हमारी भोली सरकार उनको बड़े-बड़े जजों के स्थान पर नियुक्त कर देती है; किंतु ये लोग अपने सार्वजनिक मूल महत्त्व के भाईचारे के संबंध तोड़कर यहाँ के भूदेव-ब्राह्मणों के वारिसपुत्र बन जाते हैं और कोर्ट में सभी अन्य जाति के बुजुर्ग, बड़े दुर्बल सज्जनों को तुच्छ मानकर उनको अपमानित करते हैं। पहले ये सरकारी रिवाज के अनुसार सभी गवाहों को दस बजे कोर्ट में उपस्थित रहने के लिए कहते हैं और खुद बारह बजे कोर्ट में आते हैं। फिर वहाँ के किसी कमरे में घंटा-आधा घंटा पड़े रहते हैं। फिर आँखें मलते हुए बाहर चौखट पर कुर्सी पर के आसन पर आकर बैठ जाते हैं फिर जेब का पान-बीड़ा मुँह में डालकर बंदर की तरह बिचकाकर खाते हुए, पाँव पर पाँव रखकर, पॉकेट का डिब्बा बाहर निकालकर, नसवार फूँक नाक में ठूँसते-ठूँसते नीचे बैठे हुए लोगों की ओर जरा-सी नजर टेढ़ी करके देख लेते हैं और आँखें बंद कर लेते हैं। इसी दरम्यान लाल पगड़ी, काला कोट, पतलून, जूते में सजकर आए हुए वकील उनके सामने खड़े रहकर मूँछ पर ताव देते हुए 'युवर ऑनर' कहने की पहलदारो ललकारी ठोंकते हैं तो ये भूदेव (ब्राह्मण) जज साहब अपने पेट पर हाथ घुमाते हुए अपने जातिभाई वकील से पूछते हैं कि 'तुम्हारा क्या कहना है?' इस पर वकील साहब अपनी जेब में हाथ डालते हुए कहते हैं कि 'आज एक खूनी केस के संबंध में हमें सेशन में उपस्थित होना है। इसलिए आप मेहरबान होकर हमारी ओर के यहाँ के सभी केसेस रोक दीजिए।' जज साहब के गरदन हिलाकर अनु-मोदन देते ही वकील साहब गाड़ी-घोड़ों पर सवार होकर अपना रास्ता पकड़ लेते हैं। फिर जज साहब अपने काम की शुरुआत कर देते हैं। इस संबंध में यहाँ कुछ नमूने दे रहा हूँ।

कई भूदेव (ब्राह्मण) जज अपनी ऊँची जाति के नखरे में या कल के ताजे

अमल के झोंके में न्याय करते समय, शेष सभी जाति के अधिकांश लोगों के साथ 'अरे, क्या रे' के बगैर बोलते ही नहीं। कई अकड़बाज़ गृहस्थों ने कोर्ट में आते ही इन खूबसूरत भूदेवों को उछलकर अभिवादन नहीं किया तो उनकी जबानी लेते समय उनका परेशान करते हैं। इसी दरम्यान ब्राह्मणी धर्म के विरुद्ध किसी महान गृहस्थ को कोर्ट में उपस्थित होने में देर हुई तो उसका बदला (यहाँ सुधार करनेवाले लोगों को सरकार के नाम से क्या धूल उड़ानी चाहिए?) लेने के लिए उनकी अमीरी की परवाह न करते हुए उन्हें भरे कोर्ट में जबानी लेते समय रेवड़ी-रेवड़ी बना देते हैं। फिर ये भूदेव बौद्धधर्मी मारवाड़ियों को किस-किस तरह से बेहाल करते हैं यह बात तो सभी को मालूम है। कभी-कभी इन छली भूदेवों के दिमाग में वादी-प्रतिवादियों के बोलने का सारांश समझ में नहीं आया तो ये सुधबुधवादी ब्राह्मण कुत्तों की तरह भौंककर उनके जिगर को कड़े शब्दों से काटते हैं। वह इस प्रकार से कि 'तू बेवकूफ है, तुमको बीस डंडे मारकर एक गिनना चाहिए। तू लाल मुँह वाले का भाई तीन चोटी वाला बड़ा लुच्चा है।' इस पर उन्होंने कुछ कहने की हिम्मत की तो उन गरीबों का मुकदमा खारिज़ कर दिया जाता है। इतना ही नहीं, इन खुनसी जजों की तबियत यदि ठीक नहीं रही तो उनके सभी जबानी कागजात घर ले जाते हैं। वहाँ की कुछ बुनियादी बातें नष्ट कर देते हैं और उनकी बजाय दूसरे कागजात तैयार करवाकर उनके आधार पर मनचाहे फैसले देते नहीं होंगे, यह किस आधार पर माना जा सकता है? चूँकि फिलहाल किसी जबानी पत्र पर, जबानी दिखवा देनेवाले की दस्तखत या निशान कर लेने का रिवाज ही निकाल दिया गया है। तात्पर्य, अधिकांश भूदेव जज मनचाहे घासीराम कुतवाल की तरह फैसले देने लगे, इसलिए कई खानदानी चालीस सभ्य साहूकार ने अपना देने-लेने का व्यवहार बंद कर दिया है। फिर भी अधिकांश ब्राह्मण और मारवाड़ी साहूकार सदर अपमान का विधि-निषेध मन में न लाते हुए कई अनपढ़ किसानों से लेन-देन करते हैं। वह इस तरह कि वे मुसीबत में पड़े किसानों को कहते हैं कि 'सरकारी कानून की वजह से हम तुम्हें गिरवी पर कर्ज के रूप में रुपया-पैसा दे नहीं सकते। इसलिए तुम यदि अपने खेत हमको बेच देते हो तो हम तुमको कर्ज देंगे और जब तुम हमारे पैसे लौटा दोगे तब हम तुम्हारे खेत बेच करके तुम्हारे कब्जे में दे देंगे।' इसके लिए वे कसम खाकर बोली बोलते हैं। लेकिन पाक और अहिंसक साहूकारों से परिवार-प्रेमी, अज्ञानी, भोलेभाले किसानों के खेत शायद ही वापस मिलते हैं। इसके अलावा ये धर्म कर्मवादी साहूकार अनपढ़ किसानों को कर्ज देते समय उनका और भी कई तरह से नुकसान करते हैं। ये साहूकार अनपढ़ किसानों पर कई तरह के नकली जमा-खर्च की किताबों के साथ ही करारनामा के प्रमाण देकर फरियादी को जब ब्राह्मण मुंसिफ के कोर्ट में लाया जाता है, तब अनपढ़ किसान सही न्याय मिलने की भावना से अपने घर के गहने बेचकर, पर्याप्त रुपये-पैसे झगड़े पर खर्च

करते हैं लेकिन वहाँ उनकी जाति के विद्वान सिफारिशदार और सही सलाह देनेवाले जानकार वकील नहीं होने की वजह से उन्हीं को मुसीबत में फँसना पड़ता है। तब वे मूर्ख, चार स्वार्थी बाबू ढोंगी वकीलों के फुसलाने पर अपने को सही न्याय मिलेगा, इस आशा से ऊपरी कोर्ट में अपील करते हैं; लेकिन ऊपरी कोर्ट के अधिकांश यूरोपियन कर्मचारी ऐशो-आराम में मशगूल होने की वजह से अज्ञानी किसानों को सरकारी विभाग के ब्राह्मण कर्मचारियों की दया पर छोड़ देते हैं। ब्राह्मण दया तो क्या करेंगे बल्कि वे किसानों को कितना परेशान करते हैं, इसके संबंध में कुछ महत्त्वपूर्ण उदाहरण दे रहा हूँ।

पहले धूर्त वकील अज्ञानी किसानों से स्टंप पेपर पर वकालतनामा और भेंट-स्वरूप कर्ज के नाम पर करारनामा लिखवा लेते हैं और उससे अटर्नी तथा मूल फरियादी के लिए स्टंप आदि सामान्य खर्चे के लिए पेशगी रुपया लेते हैं। बाद में कई धूर्त वकील सिरिस्तेदारों की रखैलों के घर में सिरिस्तेदार साहब के सामने नाच-गाने करवाते हैं और किसानों से उनको रुपये-पैसे दिलवाते हैं।

जो अनपढ़ किसानों से धोखेबाजी करके रिश्वत खाता है, ऐसे सरकारी कर्मचारी को और लाचार होने की वजह से रिश्वत देनेवाले किसान को कानूनी सजा मिलती है। हथियारबंद पुलिसों की छाती पर मूंग दलनेवाले ब्राह्मण फड़के (बलवंत) रामोशी को, लाचार होने की वजह से, फड़के के साथ उसके पत्तीदार भाई को बासी रोटी के टुकड़े देनेवाले डरपोक, लाचार, कंगाल किसानों के सिर पर जिस प्रकार कानूनी तौर पर पुलिस-खर्च की रकम लाद दी जाती है और किसानों के घर में चोरी करनेवाले सभी जाति के चोरों को जिस प्रकार कानूनी सजा मिलती है, उसी प्रकार जो किसान अपनी पहली नींद में होते हैं, तब उनके मकानों में चोरों के चोरी करने पर उस किसान को भी कानूनी सज़ा क्यों नहीं होनी चाहिए ?

कई ब्राह्मण कर्मचारी अपनी जाति के पुराणिक को (पुराण पढ़कर सुनानेवाला) और कथा पढ़नेवाले को कई अनपढ़ सधन किसानों से दान दिलवा देते हैं। कई चालाक, धूर्त, अज्ञानी, भोले-भाले सधन किसानों के पास जाकर, उनसे गाँव-गाँव में राधाकृष्ण के नये मंदिर बनवाकर, कुछ पुराने मंदिरों का सुधार करवाकर और उनकी ओर से तैयारी के बहाने बड़े-बड़े ब्राह्मण-भोजन ले लेते हैं। कई धूर्त कर्मचारी यूरोपियन कामगारों की नजरें बचाकर अज्ञानी किसानों को हर तरह से परेशान करते हैं। इसलिए किसान लोग उनके प्रति मन-ही-मन में अपना गुस्सा व्यक्त करते हैं। फिर भी उन्होंने (कर्मचारियों ने) रात-दिन यूरोपियन कामगारों के आगे-आगे दुम हिलायी तो वे सरकार में उनकी सिफारिश करके उनकी तरक्की करवा देते हैं। उनमें से अधिकांश यूरोपियन कर्मचारियों को दस-बीस मिनट तक धाराप्रवाह मराठी बोलने में बड़ी कठिनाई होती है। ऐसे

टूम-अम करनेवाले यूरोपियन कर्मचारी छत्रपति महाराज, हिम्मत बहादुर, सर लश्कर, निंबालकर, घाटगे, मोहिते, दाभाडे, घोरपड़े आदि किसान[1] जवाँमर्दों की खास समझ, उनके भाषणों की शिकायत पूरी तरह समझ करके उनका हल वे कैसे कर सकते होंगे, यह तो वे ही जानें ! कई धूर्त ब्राह्मण कर्मचारी अपने दस्तूर के अनुसार हमेशा-हमेशा चलते रहेंगे, इस इरादे से वे जिले के कई बोदा लेकिन बकवादी भट्ट ब्राह्मणों को आगे करके उनके द्वारा जगह-जगह पर बड़ी-बड़ी समाज-सभाएँ करवाते हैं और अंदर से स्वयं दूसरे तरीके से शूद्रों में से किसान, घसियारे, बढ़ई, ठेकेदार, पेंशनर्स, और धनवान लोगों के पास अपना प्रभाव और दबाव डालकर अपने मनपसंद व्यक्ति को समाज का सदस्य बनवाते हैं। ब्राह्मण सिरिस्तेदार यूरोपियन कर्मचारियों के महत्त्वपूर्ण घरेलू काम करने में मददगार हुए तो यूरोपियन कर्मचारी उनके बारे में सरकार की तरफ सिफारिश करते हैं और उनको राव साहब की उपाधि दिलवाते हैं।

जब यूरोपियन कर्मचारियों के तबादले दूसरे जिलों में होते हैं, तब ये दो कौड़ी के राव साहब अपने मनचाहे मानपत्र तैयार करवाते हैं और उस पर शहर के चार थोथे प्रतिष्ठित अज्ञानी, सधन कुनबी-मालियों और तेली-तंबोलियों की आड़ी-टेढ़ी दस्तखत करवा लेते हैं। फिर किसी फालतू अनपढ़ शूद्र ठेकेदार के आलीशान दीवानखाने में बड़ी-बड़ी सभाएँ करवाकर उसमें उनको ये सम्मानपत्र देते हैं। तात्पर्य, आसमानी सुलतानी से जो अकाल पड़ता है, उससे उसी प्रकार टिड्डी के आक्रमण से हुए नुकसान कभी भरकर निकाले जा सकते हैं; लेकिन सभी छोटे-बड़े सरकारी विभागों में अधिकांश यूरोपियन कर्मचारी ऐशोआराम में व्यस्त होने की वजह से उन सभी विभागों में भट्ट ब्राह्मणों का बोलबाला है। वे कोंकण के ब्राह्मण खोतों की तरह यहाँ के अनपढ़ किसानों का जो नुकसान करते हैं, उसकी कभी कोई भरपाई होने की उम्मीद नहीं रहती। इन सभी के बारे में कच्ची हकीकतें लिखी जाएँ तो उनकी 'मिस्तरिज ऑफ दि कोर्ट ऑफ लंडन' जैसी किताबें होंगी। लेकिन अज्ञानी किसानों की यह स्थिति जब ख्रिस्ति लोगों से देखी नहीं गई, तब उन्होंने युनाइटेड ग्रेट ब्रिटेन में यहाँ के शिक्षा विभाग के नाम से शोर

---

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, page 217
इन लोगों की वजाय, सरकार पर अपने निर्वाह का बोझ किसी भी तरह न डालते हुए, स्वतंत्र रूप से कामकाज करके कई अवसरों पर अपना कीमती समय खर्च करके जनकल्याण के काम जिम्मेदारी से करनेवाले लोगों को सरकार द्वारा विशेष सम्मान दिया जाना उचित है। लेकिन अपने यहाँ एक प्रसिद्ध कहावत है न कि 'मेहनत करनेवाला दिलगीर और चोर को हलुवा !' और इसी के अनुसार न्याय होता है।

मचाना शुरू किया। इसके कारण वहाँ के कुछ सभ्य लोगों ने और कईबड़े लोगों ने हिंदुस्थान के शिक्षा-विभाग के मुख्य अधिकारियों की कुछ नुक्ताचीनी करना शुरू की तो कृपानिधान गव्हर्नर जनरल साहब ने वहाँ के शिक्षा-विभाग के बारे में जाँच-पड़ताल करने के लिए चार-पाँच बड़े-बड़े विद्वानों की कमेटी बना करके उसमें मे हंटर साहब को इसका प्रधान बनाया। उन्होंने अपने साथियों के साथ 'निमरॉड' शिकारियों की तरह तीनों इलाकों (प्रेसिडेंसी) में रेलगाड़ी से चप्पा-चप्पा घूमा। यहाँ के सभी शूद्रादि-अतिशूद्र किसान अनपढ़ होने की वजह से वे किस-किस प्रकार की आपत्तियों से घिरे हुए हैं और किस-किस प्रकार की कठिनाइयों को भोग रहे हैं, इसके बारे में गहरी खोज करने के लिए किसानों की गंदी झोंपड़ियों में स्वयं जाकर, वहाँ अपनी नाक को रूमाल लगाकर वहाँ की उनकी वास्तविक जिंदगी को अपनी अच्छी आँखों से देखना चाहिए था लेकिन उन्होंने यहाँ के किसी अनपढ़, दरिद्री किसान की सुधि लेने की बजाय हिंदू, पारसी, ईसाई धर्म के अधिकांश पढ़े-लिखे ब्राह्मणों से पूछताछ की। इसके लिए उन्होंने जगह-जगह घूमने का बहाना बनाकर, जगह-जगह से सम्मानपत्र बगल में दबाकर अंत में उनके पाँव कलकत्ता की ओर बढ़ गए, यह बात सही है; लेकिन उनकी रिपोर्ट से अज्ञानी किसानों को उचित लाभ होगा, इस तरह का निष्कर्ष निकालना कठिन होगा! तात्पर्य, मे० हंटर साहब ने हमारे महाप्रतापी गव्हर्नर जनरल साहब से बिना संकोच किए मे० टक्कर (साल्वेशन आर्मी के) साहब जैसे धूर्त लोगों से मुकाबला करने के लिए अपने काम से इस्तीफा देकर, स्वयं गरीब-अनपढ़ किसानों की झुग्गियों में जाकर, समय-समय पर उनको अज्ञान के अँधेरे से मुक्त करने का मौका प्राप्त नहीं किया, इसलिए उनपर उनकी (हंटर साहब की) आपत्ति का ढिंढोरा बजेगा और उसकी आवाज पृथ्वी के प्रजातांत्रिक राजा के प्रतिनिधियों के कानों में पड़ते ही उनकी आँखें खुलेंगी और उनके मन में हमारे गरीब काले लोगों के प्रति, 'रेड इंडियंस' के बारे में जो संवेदनहीनता है, वह समाप्त होगी।

इस परिच्छेद में सभी सरकारी ब्राह्मण कर्मचारियों के बारे में जो हकीकत लिखी गई है, उसके बारे में यदि प्रमाण चाहते हैं, तो जगह-जगह आज तक लाँच लेने के लिए या झूठी बातें लिखने के लिए और इस तरह के अपराध की सजा हुई है तो उसके लिए कोर्ट-कचहरियाँ भी हुई हैं, उनको देखने से सारी बातें आसानी से समझ में आ जाएँगी।

परिच्छेद : तीन

आर्य ब्राह्मण इरान से कैसे आए और शूद्र किसानों की हक़ीकत तथा हमारी वर्तमान सरकार, अपने सभी कर्मचारियों को मनचाहे जैसी तनखाह और पेंशंस देने के इरादे से कई तरह के नये कर रोज किसानों पर बोझ की तरह लाद देती है। सरकार उनसे कर बड़ी तरकीब से वसूल कर रही है जिसकी वजह से किसान बहुत ही कर्जदार बन गए हैं।

इस गहन, अगह, अतर्क्य आकाशमय विशाल मंडल में जिस प्रकार विभिन्न प्रकार के तत्त्वों के संयोग-वियोग से अनगिनत सूर्यमंडल अपने उपग्रह के साथ उत्पन्न होते हैं और विनाश को प्राप्त हो जाते हैं, उसी तरह हर एक उपग्रह अपने प्रमुख सूर्य के अनुरोध से भ्रमण करते समय, एक-दूसरे के सहयोग-संयोग के अनुरूप, इस भूग्रह के एक ही माता-पिता से एक लड़का मूर्ख और दूसरा लड़का होशियार—ऐसे विरोधी स्वभाव के पैदा होते हैं। इसका मतलब यह है कि मूर्खता और होशियारी खानदानी है, ऐसा तर्क नहीं निकाला जा सकता। इसी तरह स्त्री-पुरुषों का संयोग होने के समय उन दोनों के कफवातादि दोषात्मक प्रकृति के अनुसार और उस समय उनके मन पर सत्त्वरजादि तीन गुणों में से जिस गुण की प्रधानता होती है, उन गुणों के महत्त्व प्रमाण से गर्भपिंड की धारणा होती है। इसीलिए एक बाप-माँ के पेट से कई बच्चे अलग-अलग स्वभाव के और अलग-अलग प्रकृति के पैदा होते हैं। ऐसा यदि न कहें तो इंग्लैंड के प्रसिद्ध व्यक्तियों में टामस पेन और अमेरिकी किसानों में जॉर्ज वॉशिंगटन—इन दोनों की होशियारी और शौर्य—ये गुण खानदानी हैं—ऐसा कहने वाले, खयाली पुलाव पकानेवाले राजे-रजवाड़ों को अपने कर्तृत्व से शर्मिंदा होना पड़ता कि नहीं ? इसके अलावा कई अज्ञानी काले फौजी केवल पेट के लिए कोर्ट मार्शल के डर से काबुल और इजिप्त के जवांमर्दों से सामना करके लड़ने की मर्दानगी दिखाते हैं; उसी प्रकार कई अमेरिकी समझदार विद्वानों में से पारकर और मेरियन जैसे कई लोगों ने जन्म से केवल किसान होने पर भी अपने देश के लिए विदेशी दुश्मनों से बड़ी दिलेरी से

लड़ने का शौर्य दिखाया है, इसके कई उदाहरण आपके सामने हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि, जवाँमर्दी और नामर्दी खानदानी नहीं है, बल्कि उसके स्वभाव से संबंधित है और सांसर्गिक गुणों-अवगुणों पर निर्भर होती है, क्योंकि यदि इस सिद्धांत को असत्य कहा जाए तो इस भूमंडल पर जितने राजे-रजवाड़ों को और बादशाहों को देखते हैं, तो पता चलता है कि, किसी के वंशज शिकारी, किसी के गड़रिये, किसी के किसान, किसी के मुलाँ, किसी के खिदमतगार, किसी के कारकुन, किसी के विद्रोही, किसी के लुटेरे, और किसी के वंशज देशनिकाला किये हुए राम्युलस और रीमस थे। इनमें से किसी के भी वंशज खानदानी बादशाह या राजा नहीं थे। अब डारविन के अनुसार सारे सूर्यमंडल के ग्रह-भ्रमण क्रम के अनुसार बंदर पशुजाति से उत्क्रांत होकर उससे नूतन और विजाति मानवप्राणी हुए होंगे, ऐसा यदि कहें तो ब्रह्मा के इंद्रियों से उत्पन्न हुए सृष्टिक्रम के सिद्धांत का खंडन हो जाता है। इसीलिए अब हम बौद्ध या जैन के सिद्धांत के अनुसार जुंग या डारविन के अनुसार बंदर से मानव नर-नारी पैदा हुए या ईसाई मत के अनुसार ईश्वर ने मृत्तिका से[1] मानव नर-नारी पैदा किए, या आर्य ब्राह्मणों के अनुसार ब्राह्मणों के इंद्रियों से चार[2] जाति के मानवी पुरुष पैदा हुए होंगे, इस प्रकार के सभी अलग-अलग सिद्धांतों का अध्ययन और परीक्षण करने पर कुछ सत्य सामने आता है। उनमें से किसी एक सिद्धांत के अनुसार मानवी नर-नारी जाति का जोड़ा या जोड़े पैदा हुए होंगे, इस तरह की कल्पना करके आगे गए तो सचाई सामने आएगी। पहले जब नर और नारी पैदा हुए होंगे तब उनको बड़े-बड़े पेड़ों, खोड़ और उनके खोडरों[3] में या पहाड़ों की गुफाओं में रात में आराम करके पास-पड़ोस के जंगलों में कंदमूल और फल खाकर अपना निर्वाह करना पड़ा होगा। फिर वे जब ऐन दुपहर में किसी पेड़ की छाया के नीचे सूर्य की तेज किरणों से अपना बचाव करने के लिए पलभर का आराम करते होंगे, तो उस समय चारों ओर ऊँचे-ऊँचे टूटे हुए पहाड़ और पर्वतों की कतारें आसमान में जैसे सफेद कुहरे की टोपियाँ पहनकर खड़े हैं, उनकी आँखों को दिखाई देते होंगे। उसी तरह उनके नीचे की ओर छोटी-बड़ी दराज के इर्दगिर्द विशाल मैदान में पुराने बड़े-बड़े बड़ के पेड़, पीपल और फलों के बोझ से नम्र हुए कटुमरू, आम, नारियल, अंजीर, पिस्ता, बादाम आदि पेड़ों की भीड़ हुई होगी। उन पर तरह-तरह के अंगूर आदि बेलियों की कमानें और जालियाँ बनी होंगी। जगह-जगह पर

1. बाइबल, उत्पत्ति, अ० 1, ओ० 20 व अ० 2, ओ० 7
2. मनुसंहिता अ० 1, श्लोक 31
3. Captain James Cook's Voyages Round the world, Chapter-V. p. 262

पके हुए केले की जूड़ी और कमल आदि विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे फूल झूलते होंगे। उनके इर्द-गिर्द जमीन पर विभिन्न प्रकार के फूल-पत्तों का कचरा पड़ा होगा—और उन सबका बड़ा भारी विचित्र केवल एक गलीचा ही बना होगा। उस पर जगह-जगह तरह-तरह के फूल-पत्तों से हरे-भरे पेड़ जैसे अभी लगाये गए तो नहीं हैं, ऐसी शंका आई होगी। इसी तरह एक ओर सभी छोटे-बड़े झंकड़; खोंडर, नदी और नालों के इर्द-गिर्द बालू पर खरबूजा, तरबूजा, फल्ली, ककड़ियाँ, खीरी आदि चारों ओर फैले होंगे, उधर साफ निर्मल पानी के झरने अखंडित रूप में मधुर आवाज करते हुए बहते होंगे। इर्दगिर्द के छोटे-बड़े तालाबों में विभिन्न प्रकार के रंगबिरंगे कमलों के ऊपर भौंरों के झुंड के झुंड गुंजार करते होंगे। जगह-जगह पर तालाब की मछलियाँ तैरते हुए किनारे के पास आती होंगी तब उनको पकड़कर अपने मुँह में डालने के लिए अगले एक पाँव पर ध्यान लगाकर बगुले खड़े होंगे। करीब के जंगल में जिधर देखिए, उधर जमीन पर बिचारे गरीब हिरन, भेड़ आदि प्राणी—कुत्तों, के झुंड के झुंड, सियाल, बाघ आदि दुष्ट हिंसक पशुओं से अपनी जान बचाने के लिए लंबी-लंबी टाँगें फेंकते हुए भाग रहे होंगे। पेड़ों पर विभिन्न प्रकार का सुस्वर गान करके तानसेन को भी शर्मिंदा करनेवाले कई पंछी अपने-अपने मधुर, कोमल स्वर से गाने में मशगूल होंगे और आकाश में गिद्ध आदि खतरनाक पंछी उनकी जान लेने के लिए ऊपर मँडरा करके पल में उन पर झपटने की योजना बनाते होंगे। इतने में पश्चिम की ओर की शांत और शीतल हवा कभी-कभी अपने वायुलहरों के साथ विभिन्न प्रकार के फूलों की सुगंध की बहार चारों ओर छोड़ते होंगे, और यह देखकर अपने बुद्ध, ईसाई, मुसलिम, महार, ब्राह्मण आदि कहलाने वाले मानव बंधुओं के मूल पूर्वजों को कितना आनंद होता होगा ! खैर, किंतु उनको अस्त्र-शस्त्र, कपड़ा-लत्ता बनाने की कला ज्ञात नहीं होने की वजह से उनके सिर-दाढ़ी के बालों की जटाएँ बन जाती होंगी, हाथ-पाँव के लंबे-लंबे नाखून बढ़ जाते होंगे और केवल नग्न[1] रहते होंगे कि नहीं ? उनको माटी के या धातु के बर्तन बनाने की कला ज्ञात नहीं होने की वजह से घुटनों के बल झुक करके पानी की धार को जानवरों की तरह मुँह लगाकर या हाथ की अंजलि से पीकर अपनी प्यास बुझानी पड़ती होगी कि नहीं ? उनको तवा और पाटा बनाने की कला ज्ञात नहीं थी, ऐसी स्थिति में रोटी का जुगाड़ कहाँ से होगा ! उनको भेड़-बकरी और पशुओं का चमड़ा निकालने की कला ज्ञात नहीं थी, या उस तरह की सुविधा नहीं थी, इसलिए बगैर जूते-चप्पल पहने

---

1. बाइबल, उत्पत्ति, अ० 2, ओ० 25
   Captain James Cook's Voyages Round the world, chapter–V. p. 257, 278 and 279

चलना पड़ता होगा कि नहीं ? उनका जब बगैर भूले सौ अंक गिनने का ज्ञान नहीं था, तो सोमरस[1] के नशे में यज्ञ के बहाने गाय-बैल आदि पशु भूनकर खाने[2] की जानकारी कहाँ होगी ? निष्कर्ष, उस समय वे इतने अज्ञानी होंगे कि यदि उनके सामने भांडों ने ताड़पत्र पर लिखे वेदों[3] की तरह कोई किताब लाकर रखी होगी तो उन्होंने उसको हाथ में लेकर देखते ही उसमें कुछ सुवास और कोई रस नहीं समझकर, उसकी क्या गत की होगी, उसके बारे में तर्क करना भी फिजूल है; क्योंकि उनके फलाहारी होने की वजह से इन निशाचरों द्वारा लिखे गए वेद के अनुसार, सोमरस के नशे में या पक्षश्राद्ध के बहाने दूसरों की गौ चोरी करके मारना और खाना उनसे संभव कैसे हुआ होगा ? और वैसा करने की उन्हें आवश्यकता भी क्यों होगी ? क्योंकि वे इतने पवित्र होंगे कि उनको इन सभी धूर्त-स्वार्थी ग्रंथकारों को अपना वंशज कहना क्या अच्छा लगा होता ? उनको 'तू बुद्ध', 'तू ईसाई', 'तू मुसलिम', 'तू महार इसलिए नीच' और 'हम ब्राह्मण इसलिए ऊँच' कहने की

1. By F. Max Muller, M. A., Lecture-III, P. 137
2. John Wi'son's India : Three Thousand years Ago, Pages. 62 and 63.
3. Works by the Horace Hayman Wilson, M. A., Professor of Sanskrit, P 6. Brihaspati has the following texts to this effect (Quoted in the Sarva Darsana, calcutta edition, Pages. 3 and 6 and with a V. I. Prabodech, ed. Brockhaus, P. 30) :

अग्निहोत्रं त्रयोवेदास्त्रि दंडं भस्मगुंठनम् ।।
बुद्धिपौरुषहीतानां जीविकेति बृहस्पतिः ।।

"The Agnihotra, the Three Vedas, the Tridanda, the smearing of Ashes, are only the livelihood of those who have neither intellect nor spirit." After ridiculing, he says :

ततश्च जीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ।।
मृतानां प्रेतकार्याणि न त्वन्यद्विद्यते क्वचित् ।।

Hence it is evident that it was a mere contrivance of Brahamans to gain a livelihood, to ordain such ceremonies for the dead and no other reason can be given for them. Of the vedas, he says, त्रयो वेदस्य कर्तारो भंड धूर्त निशाचराः ।। The three authors of the vedas were Buffoons, Rogues and fiends and cites texts in proof of this assertion.

क्या हिम्मत भी हुई होगी ?

खैर, आगे कुछ समय बीतने के बाद अपने मूल वंशजों की संतान जब ज्यादा बढ़ी, उस समय उन्होंने अपनी संतान को रहने के लिए पेड़ों की डालियों की आड़ खड़ी करके; उस पर नारियल के फाँकों की टाटिका बनाकर अलग-अलग परिवार के लिए झोंपड़ियाँ तैयार करके, उनके चारों ओर चौतरफा बबूल या टीट की लकड़ियों का घेरा और अंदर जाने के रास्ते पर एक झोंपा या केवल पत्थरों की दीवार बनाकर उसमें एक ही दरवाजा रखते थे, ताकि रात में जंगल के जानवर अंदर न आने पाएं। रखवाली के लिए पहरेदारों की नियुक्ति करने की वजह से जंगलों के अंदर बसनेवाले सभी लोग अपने-अपने बाल-बच्चों के साथ सुख में आराम कर रहे होंगे। इसी की वजह से हम सभी गांववासी आज तक अपने-अपने गाँव के पहरेदार को मेहनताना के रूप में हर दिन सुबह और शाम आधी रोटी का टुकड़ा देते हैं। आज भी उसी तरह हम सभी गाँववासी लोग पुलिस विभाग के सिपाहियों और बड़े-बड़े कर्मचारियों को रोटी के टुकड़े की बजाय पुलिसफंड देते हैं कि नहीं ? इन दोनों में क्या फर्क है ? महारों के हाथ में डंडा-रस्सी और पुलिसों के हाथ में चमड़े का चाबुक। खैर, फिर सदर गाँव के बच्चों के मामूली अपराध से उनमें आपस में झगड़े होने पर गाँव के सभी छोटे-बड़े बुजुर्ग लोग किसी ऊँचे स्थान पर पेड़ की छाया में बैठकर न्याय करते होंगे और दोषी को दंड देते होंगे; क्योंकि उस समय आज की तरह बड़े-बड़े नगर-सभागृह या चोपाल बांधने का ज्ञान उनको कहाँ रहा होगा ! किंतु बाद में कुछ समय बीतने के बाद उन सभी के परिवार जैसे-जैसे बढ़ने लगे होंगे, वैसे-वैसे उनमें सुंदर औरतों और जगल के उपभोग के संबंध में तरह-तरह के झगड़े बार-बार उपस्थित होते होंगे और वे झगड़े जब आपस में प्यार-मोहब्बत से मिटते नहीं होंगे तब उनमें से अधिकांश पीड़ित लोगों ने अपने-अपने सामान और नन्हे-मुन्ने बच्चों को पाटी में डाल करके अपनी टोली के सभी लोगों को साथ में लेकर दूर-दराज में अलग-अलग दूरी पर गए होंगे और जहाँ-तहाँ गाँव बसाए होंगे। वहाँ वे बड़े सुख और शांति से रहने लगे होंगे। पहले जिन-जिन लोगों ने हिया करके अपनी-अपनी पाटी भरके दूर-दूर प्रदेशों में जाकर गाँव बसाए, उन-उन गृहस्थों को गाँव के शेष लोग पाटिल (मुखिया) या देशमुख (मुखिया) कहकर उनकी आज्ञा में रहने लगे होंगे।

आज के अज्ञानी पाटिल-देशमुख भट्ट-कुलकर्णियों की सलाह पर चलकर गांववासियों में आपस में मुर्गे लड़ाते हैं। सभी गाँववासी लोग उन्हीं की सलाह से चलते हैं। दूसरी बात यह है कि जब शादी-ब्याह करने का मौका आता है तब हम लोगों में एक-दूसरे से पूछताछ करने का रिवाज है।

वह यह कि 'आपके गाँव का नाम क्या है और आपका कुल-नाम क्या है ?'

'हमारा गाँव पूना है और हमारा कुल-नाम जगताप।'

'तो फिर सासवड के जगताप आपके कौन हैं ?'

'सासवड के जगताप और हम एक ही हैं। करीब सात पीढ़ियाँ गुजर चुकी हैं। शेरा के काल में हमारी मूल पाटी सासवड से पूना में आयी। आज हम लोग अपने बच्चों के जावर सासवड में जाकर निकलवाते हैं, क्योंकि उनकी और हमारी सठवाई (देवी का नाम) एक ही है और उनके और हमारे देवी-देवता भी एक ही हैं।'

'तो फिर आपका और हमारा रिश्ता बड़ी आसानी से होगा; क्योंकि सासवड के जगताप से हमारे भी ब्याही-संबंध हैं। आप उधर की बात पक्की कर दीजिए, बस, हो गया। फिर आपकी-हमारी बातचीत एक क्षण में हो जाएगी और शादी का चिट्ठा भी तुरंत निकाल दिया जाएगा।'

इस तरह यह सही हकीकत है। इस पर कोई सवाल पूछेगा कि आप यह जो कह रहे हैं, उसको किस शास्त्र का आधार है? उसको मेरा यह जवाब है कि सोने के लोभ में इरान के आर्य लोगों ने इस देश के सभी मूल निवासी—आस्तिक, राक्षस आदि—लोगों का विनाश किया। उनमें से शेष मुकुटमणि दस्यु लोगों पर लगातार कई हमले करके अंत में उनको अपना दास बना करके विभिन्न तरह से परेशान करना शुरू किया। उस समय विजयी हुए आर्य लोग अपने शास्त्रों में पराजित हुए शूद्रों की प्रारंभिक सही स्थिति के बारे में कैसे लिख सकते हैं। फिर काफी समय गुजर जाने के बाद जब उन सभी गाँव के जंगलों के फलों पर निर्वाह होना असंभव हो गया तब वे मांस, पशु और पंछियों के शिकार पर अपना पेट पालने लगे होंगे। लेकिन जब उस पर भी उनका निर्वाह होना असंभव हो गया, तब उन्होंने खेती करने का उद्योग शुरू किया होगा। इसकी वजह से उनको कांफी लागत लगी होगी। आगे कुछ समय के बाद जब उन्हें औजार, हल, बडी आदि नयी चीजें बनाने की जैसे-जैसे तरकीब सूझने लगी, वैसे-वैसे उन्होंने प्रदेशों के प्रदेश उपजाऊ बनाए होंगे। फिर उसी के साथ जनसंख्या भी बढ़ने लगी होगी, जिससे सभी प्रदेशों के जंगल-चराई और सरहद आदि के संबंध में उनमें लड़ाई-झगड़े हुए होंगे। उनमें बड़े-बड़े आपसी संघर्ष और खूनखराबा हुआ होगा। उन सभी का बंदोबस्त करने के लिए सभी प्रांतों के लोगों के एक जगह पर इकट्ठा होने से सबकी सलाह से उन सभी कामों का निर्णय करने में काफी मुश्किलें हुई होंगी। इसलिए सभी के सलाहानुसार ऐसा विकल्प निकाला गया होगा कि सभी प्रदेशों के, हर गाँव के लोगों को अपने-अपने गाँव का एक-एक समझदार आदमी चुनना चाहिए। फिर उन चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा एक जगह पर इकट्ठे होकर, बहुमत से सारे कामों का फैसला देने-करने की प्रक्रिया शुरू हुई होगी। उसी के अनुसार आज हमारे सभी लोगों में चुने गए पंचों के द्वारा बड़े-बड़े झगड़ों के फैसले करने का रिवाज है। आगे कुछ समय के बाद जब अटक नदी के उस पार जाकर कई किसानों ने

वहाँ खेती करना शुरू किया और गाँव बसाया तो उस मात्रा में चारों ओर जन-संख्या भी काफी बढ़ी। तब सूखे-अकाल से कई जगह फसलों को बड़ी हानि हुई। सभी नदी, नाला, तालाब सूख गए, जिसकी वजह से जंगल के सभी जानवर, पंछी जहाँ पानी मिल सके, उस ओर चले गए। जिधर देखिए, उधर भुखमरी के कारण लोगों की लाशें ही लाशें। यह देखकर कई देशों के साहसी हमलावरों ने अधिकांश भूखे-कंगाल लोगों को अपनी सेवा में रखकर, उनको अपने साथ लेकर, प्रारंभ में उन्होंने इर्द-गिर्द के आबाद प्रदेशों पर कई बड़े-बड़े डाके डाले। इसका पराजित लोगों पर इतना भय बैठ गया कि उन्होंने उन लोगों के शासक-राजा होने का निश्चय किया। (इस संबंध में यदि खोज शुरू की जाए तो उनमें से अधिकांश खानदानी राजाओं के राजघराने के मूल पुरुष इसी मालिका के शिरोमणि निकलेंगे।) इस उद्देश्य के तहत उन्होंने सारे देश के गाँववासियों के द्वारा होशियार प्रतिनिधियों का चुनाव करके उनकी सहायता से सारे देश के संरक्षण करने योग्य फौज तैयार की। उसका खर्च चलाने के लिए लगान वसूल किया जाता था और उसकी जमाबंदी के लिए तहसीलदार, चपरासी आदि की नियुक्ति की गयी। इसकी वजह से सारे देश के लोगों को आराम हुआ होगा। फिर कुछ काल के बाद चारों ओर संपन्नता छा गई होगी और चारों ओर सोने की धूल बहने लगी होगी। इसी की वजह से बलि का स्थान मतलब बलूचिस्थान के बाहर के कई असंयमी लोभी प्रतिनिधियों की, सदर चोर लोगों का वैभव देखकर कि वे अपने-अपने देश के राजा बन गए हैं, उन्हें लूटने की इच्छा जागी।

पहले के जनतंत्रात्मक राज्य लुप्त होने की वजह से इरान के मौजूदा छप्पन देशों में छप्पन प्रतिनिधियों ने अपना अलग-अलग राज्य स्थापित किया। उन सभी ने एक-दूसरे के सहयोग से अपना-अपना शासन अबाधित रूप से चलाया, जिसकी वजह से उनके वैभव को सैकड़ों साल तक कोई बाधा नहीं आयी।

उधर दस्यू, आस्तिक, अहीर, असुर, उग्र पिशाच, मातंग[1] आदि लोगों के राज्यों में सारी प्रजा सुखी थी। इतना ही नहीं, इन सभी में दस्यू लोग महाबलवान होने की वजह से उनका यवन लोगों पर इतना प्रभाव था कि वे दस्यू लोगों के साथ स्नेहभाव तथा सीधे मन से व्यवहार करते थे। इसकी वजह से दस्यू लोग हर तरह से उनकी मदद ही नहीं करते थे, बल्कि समय-समय पर उन्हें सलाह भी देते रहते थे। इसी की वजह से यवन लोगों में दस्यू लोगों को दोस्त कहने का

1. गोडबोले के महाराष्ट्र देश के इतिहास के प्रोफेसर भण्डारकर की सूचना, पृ० 1, क्र० 2
John Wi son's India : Three Thousand Years Ago, P. 28

प्रचलन हुआ होगा। किंतु जब कुछ यवन आर्यादि लोग दस्यू लोगों के साथ ऊपरी तौर पर दोस्ती का व्यवहार करते थे और परोक्ष होते ही उनसे खुलेआम नफरत करते थे तब दस्यू लोग उनकी हर चाल को नाकाम कर देते थे और उनको ठिकाने लगा देते थे। इसीलिए कुछ यवन और आर्य लोगों में दस्यू लोगों की दुष्टभावना के कारण दुश्मन व दुष्ट कहने का रिवाज पड़ा होगा; क्योंकि दोस्त, दुश्मन और दुष्ट इन शब्दों के अक्षरों और भावार्थ का मेल दस्यू शब्द से मिलता है।

उधर इरानी (आर्य), तुर्क आदि यवन लोगों को दस्यू लोगों का वर्चस्व बर्दाश्त नहीं हो रहा था, तब उनमें से अठारह वर्णों के अठारह तरह की पगड़ियाँ पहननेवाले अठारह प्रकार की जाति के लोगों ने सोना लूटने की इच्छा से दस्यू लोगों के इलाकों पर बार-बार हमला करना प्रारंभ कर दिया; लेकिन बलि के दरबार के कालभैरव और खंडेराव जैसे महावीरों ने उनकी एक भी चलने नहीं दी।

इसी दरम्यान इरान के आर्य[1] लोगों के द्वारा तीर-कमान जैसा दूर से ही वार करनेवाला हथियार बनाए जाने के बाद वहाँ के इरानी क्षत्रियों में से वराह जैसा साहस रखनेवाले दंगलखोरों द्वारा छप्पन देशों के छोटे-बड़े धनवान राजा-रजवाड़ों को नष्ट[2] करने के बाद, नरसिंह आर्य क्षत्रिय ने दस्यू लोगों के जवान राजपुत्र प्रह्लाद के अनजान मन को धर्मभ्रष्ट कर दिया। फिर उसकी मदद से उसके पिता की क्रूर हत्या की। फिर वामन आर्य क्षत्रिय ने यहाँ के महाप्रताप दस्यू राजा बलि राजा की युद्धभूमि पर हत्या की और उसके तीसरे दिन बलि की राजधानी की सभी औरतों के बदन के सोने के गहनों को लूट लिया। इसलिए दस्यू लोगों ने आर्य ब्राह्मण लोगों को अपने देश से भगाने के लिए कई जंग छेड़े।

---

1. John Wilson's India : Three Thousand Years Ago, p. 17 and 18
2. John Wilosn's India : Three Thousand Years Ago, P. 20 and 21
   Among Peoples hostile to the Aryas, we also find noticed the Ajasas, Yakshas, Shigrivas, Kikatas and others, the enemies of the Aryas : "He (Indra) punished for men those wanting religious rites tore off their skin. The Pishachas are said to have been tawny coloured."

लेकिन अंत में परशुराम[1] आर्य क्षत्रिय ने यहाँ के सभी क्षेत्रवासी दस्यू लोगों पर लगातार इक्कीस बार हमले किए और उनकी इतनी बुरी हालत बनाई कि उनमें से कई महावीरों को अपने परिवार के साथ (वर्तमान चीन देश में एक पैदल मार्ग[2] था जिस पर बाद में समुद्र फैल गया और जिसको आज बेहरिंग की खाड़ी कहा जाता है) चीन के मार्ग से पाताल में अमेरिका के जंगलों में भाग जाना पड़ा; क्योंकि वहाँ के कई पुराने लोगों और यहाँ के दस्यू (शूद्र) लोगों का भोलापन, रिवाज, क्रिया आदि सभी कुछ एक-दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं। मूल के अमेरिकी लोगों में यहाँ की तरह सूर्यवंशी, राक्षस और आस्तिक कुल मिलते हैं। वहाँ के प्रमुख 'काशिक' नाम का यहाँ के 'काशीकर' से मेल होता है। 'कोरीकांच' शब्द 'कांचन' शब्द से मेल खाता है। वे भी यहाँ की तरह शकुन-अपशकुन मानते हैं। उन लोगों में यहाँ के शूद्रों की तरह मरे हुए आदमी को कपड़ा पहनाकर, मुर्दे के साथ सोना गाड़ने का रिवाज मिलता है। आज सभी शूद्र निर्धन हो गए फिर भी उन शूद्रों की तरह (अमेरिकी) मुर्दे के साथ नमक डालने की बजाय कीमती मसाला डालकर दफनाते है। उनमें[3] यहाँ की तरह 'टोपाजी, माणकू, अतिल यल्लप्पा और अतिल बालप्पा' जैसे नाम आज भी मिलते हैं। वहाँ 'कॅनडा' नाम का प्रदेश है। कुछ काल के बाद चीनी या आर्य लोगों ने वहाँ के लोगों पर हमले किए होंगे और वहाँ के प्रदेशों को जीत लिया होगा; क्योंकि उन्होंने हिंदुस्थान के आर्य लोगों की तरह, अमेरिका के आदिम लोगों पर भी पढ़ने-लिखने पर पाबंदी लगा दी। उनके सभी मानवी अधिकार छीन लिए गए और उन्हें बहुत ही नीच

---

1. John Wilson's India : Three Thousand Years Ago, P. 49
   Dr. John Muir, in this 'Original Sanskrit Texts', Pages. 44-56, has given a series of Passages sufficient to prove that according to the traditions received by the compilers of the ancient legendary history of India (traditions so general and undisputed as to Prevail over even their strong hierarchical prepossessions), Brahmanas and Kshatriyas were at least in many cases, Originally descended from one and the same stock. Some of the cases referred to by Dr. Muir are the same as those of the parties mentioned in the first paragraph of this note.
2. W. H. Prescott's History of Peru and Brazil, Vo-I, P. 66
3. W. H. Prescott's History of Peru Brazil Volume-III, Appendix No. 1, Pages 156, 157 and 159

समझा गया। इसी तरह वे वहाँ उनके 'भूदेव' होकर, आकाश के ग्रहों और पाँच तत्त्वों की पूजा करते थे, ऐसा लगता है। खैर।

लेकिन यहाँ आर्य नाना[1] पेशवा के जातिभाई परशुराम के हमलों में, युद्ध-भूमि पर मारे गये प्रमुख महाअरियों की सभी निराधार विधवा औरतों से पैदा हुए मासूम बच्चों की उसने (परशुराम ने) सरेआम एक के बाद एक की हत्या की और उसने दस्यू लोगों के कई कुलों के छक्के छुड़ाए। बाकी बचे हुए सभी क्षेत्र-वासी दस्यू लोगों के शूद्र (दास) और अतिशूद्र (अनुदास)—ऐसे दो वर्ग बनाकर आर्य ब्राह्मणों ने उनको हर तरह से परेशान करने के लिए कई नकली और जुल्मी कानून[2] बनवाए। उसके कुछ-कुछ लिखे हुए मुद्दे मनु जैसे दुष्ट और पक्ष-पाती के मनुस्मृति ग्रंथ में मिलते हैं। वह यह कि "जहाँ शूद्र लोग शासन करते होंगे, उस शहर में आर्य ब्राह्मणों को बिलकुल नहीं रहना चाहिए। ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों को किसी भी तरह का ज्ञान नहीं दिया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, उन्हें अपना वेदघोष शूद्रों के कानों तक नहीं जाने देना चाहिए। आर्यों को शूद्रों के साथ रात-बेरात सफर नहीं करना चाहिए। शूद्रों को मुर्दा केवल दक्षिण दिशा के दरवाजे से ही ले जाने की अनुमति थी। आर्य ब्राह्मणों के जनाजे को छूने की शूद्रों को मनाही थी। राजा भले ही भूख से मर जाए, फिर भी उसे ब्राह्मणों से कर या लगान नहीं लेना चाहिए। लेकिन राजा को विद्वान ब्राह्मणों को वर्षासन करके देना चाहिए। यदि विद्वान ब्राह्मण को खजाना मिले तो उसे अकेले में उसका उपभोग करना चाहिए। क्योंकि ब्राह्मण सबका मालिक है। लेकिन राजा को खजाना मिले तो उसे उसका आधा हिस्सा ब्राह्मण को देना चाहिए। ब्राह्मणों ने यदि किसी प्रकार का गुनाह किया है, तब भी उसका बाल बांका न होकर हद पार कर लेना चाहिए, बस। ब्राह्मणों को शूद्रों से अपनी सेवा करवानी चाहिए, क्योंकि ईश्वर ने शूद्रों को ब्राह्मणों की सेवा करने के लिए पैदा किया है। यदि किसी ब्राह्मण ने किसी शूद्र को अपने किसी अतिमहत्त्व के काम में मदद करने की वजह से अपनी दासता से मुक्त किया हो तो कोई अन्य भट्ट ब्राह्मण उसे पकड़कर अपनी सेवा में लगा सकता है; क्योंकि ईश्वर ने उसको उसी के लिए पैदा किया है। यदि ब्राह्मण भूखा मरने लगे तो उसे अपने शूद्र दास के पास जो कुछ भी हो, उन सबका उपयोग करना चाहिए। बेवारिस ब्राह्मणों की दौलत राजा को कभी नहीं लेनी चाहिए। इस तरह का सनातन कानून है। लेकिन राजा को सभी जाति के लोगों की बेवारिस धन-

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, Pages. 135, 136 and 137
2. The Laws of Manu, Son of Brahma, by Sir William Jomes, Volume-VII, Pages. 211, 214, 217, 224, 260, 262, 335, 392 and 397

दौलत यदि चाहिए तो ले लेनी चाहिए। ब्राह्मण गृहस्थों ने जानबूझकर गुनाह किया, फिर भी उसको उसके बाल-बच्चों के साथ उसकी जिंदगी बहाल करते हुए केवल हद पार करवा देना चाहिए। लेकिन वही गुनाह अन्य जाति के लोगों द्वारा हुआ हो तो उनको उनके गुनाह के अनुसार दंड मिलना चाहिए। ब्राह्मणों के घर में शूद्र को काम न मिला और उसके बाल-बच्चे भूखे मरने लगे तो उसे मेहनत-मजदूरी करके अपनी जीविका चलानी चाहिए। बुद्धिमान शूद्र को कभी भी ज्यादा धन-दौलत इकट्ठा नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उसको घमंड हो सकता है और वह ब्राह्मणों का निषेध कर सकता है। ब्राह्मणों को शूद्र से कभी भी भिक्षा नहीं माँगनी चाहिए; क्योंकि उस भिक्षा के पैसे से उसने होम-यज्ञ किया तो वह ब्राह्मण अगले जन्म में चंडाल होगा। किसी ब्राह्मण ने कुत्ता, बिल्ली, उल्लू या कौवा को मारा है तो इसके लिए 'शूद्र को मारा है' समझकर उसने यदि चांद्रायन प्रायश्चित किया, तभी वह दोषमुक्त हो पाएगा। ब्राह्मणों ने वगैर हड्डियों के ढेर सारे जानवर मारे और हड्डियों के एक हजार जानवरों की हत्या की तो उसको चांद्रायन प्रायश्चित ले लेना चाहिए। बस, दोष-मुक्त हो गया। यदि शूद्रों ने आर्य ब्राह्मणों को घास की लकड़ी से मारा या उसका गला धोती से बाँध दिया, या उसके बोलते समय उसे टोका या उसका निषेध करते हुए बोला हो तो उसे ब्राह्मणों के सामने आड़े गिर जाना चाहिए और उससे क्षमा माँगनी चाहिए।"[1]

इसके अलावा इससे भी खतरनाक कई तरह की जुल्मी बातें आर्य ब्राह्मणों की किताबों में मिलती हैं। बहुत सारी बातें यहाँ लिखने में हमको शर्म आती है। खैर।

उसके बाद आर्य लोगों ने हमारे लोगों से जमीनें हड़प ली थीं—बोने के उद्देश्य से। लेकिन दस्यू लोगों में से प्रह्लाद जैसे कई डरपोक और कायर लोगों ने स्वदेश बंधुओं का पक्ष लेकर आर्य ब्राह्मणों से दुश्मनी करके उसके अनुरूप प्रारंभ से अंत तक कोई हलचल नहीं की। इसलिए ब्राह्मणों ने उनको गाँव-गाँव में कुलकर्णी के काम के लिए मुकर्रर करके अपने धर्म में ले लिया। इसी की वजह से उनको देशस्थ ब्राह्मण कहने का रिवाज चला है; क्योंकि देशस्थ ब्राह्मणों का यहाँ के मूल निवासी शूद्र लोगों के रंग-रूप से, चाल-चलन से और घर के कुल देवताओं से बहुत मेल खाता है और दूसरी बात यह कि देशस्थ और कोंकणस्थ ब्राह्मणों का उस समय तक एक-दूसरों के साथ रोटी-व्यवहार और बेटी-व्यवहार बिलकुल ही

1. The Laws of Manu, Son of Brahma, by Sir William Jomes, Vol-VII, P. 398 and Vol-VIII, Pages. 33, 42 73, 79, 85 105, 106 and 118

होता नहीं था। लेकिन आजकल की पेशवा सरकार ने देशस्थ ब्राह्मणों के साथ रोटी-व्यवहार करने का रिवाज शुरू किया है। सदर व्यवस्था अमल में लाकर आर्य ब्राह्मण लोग यहाँ के भूपति हो गए, जिसकी वजह से उनका अन्य सभी वर्णों के लोगों पर प्रभाव पड़ा और उनको अठारह वर्ण के ब्राह्मण गुरु[1] कहने लगे। उनके स्वयं 'आकाश-पाताल एक कर देने के बाद' अब उनके लिए कुछ करना बाकी रहा ही नहीं, इस अकल से ताड़पत्र पहनकर, छाती को पीली माटी से मालिश करके, बाँहें ठोकने का काम भूलकर अब उसकी जगह स्नान-पूजा करके, बदन पर चंदन छापे लगाकर, कपाल पर केशर-कस्तूरी के टीके लगाकर, शांत बैठकर मौज करने का काम शुरू किया है। उनमें से कुछ लाग भंग के नशे में तरह-तरह के स्वार्थी ग्रंथ लिखने में व्यस्त हो गए तो कुछ लोग योग-मार्ग खोजने के झंझट में व्यस्त हो गए। बाकी सभी लोगों ने आपस में एक-दूसरे को 'अठारह वर्णों में ब्राह्मण गुरु श्रेष्ठ' कहने का प्रचार शुरू किया। उसी दरमियान यहाँ के जंगल (ज्यू) फिरस्ते बकालों को उनका धर्म स्वीकार करना चाहिए, इसलिए आर्य ब्राह्मणों ने उनका पीछा किया। इससे उनको बड़ा गुस्सा आया होगा और आर्य धर्म की पोल खोलने के लिए उनके विरोध में कई तरह के ग्रंथ लिखकर, अपने-अपने पास के आत्मलिंगों की पूजा करने की वजह से लिंगायतों का एक नया धर्म बन गया होगा। बाद में आर्य-ब्राह्मणों के स्वाधीन हुए यहाँ के सभी क्षुद्र किसान दासों का उन्होंने पूरी तरह से निषेध करना शुरू किया। उन्होंने उनको पढ़ने-लिखने से पूरी तरह रोक लगा दी और उनकी स्थिति जानवरों से भी बदतर हो गई। फिर उनके अक्षर के दुश्मन मतलब ज्ञानहीन होने की वजह से ही आज तक आर्य ब्राह्मणों ने राज्य और धर्म के नाम पर उन्हें इतना नंगा कर दिया कि उनकी तुलना में अमेरिका के गौर वर्ण के लोगों के जुल्म के शिकार हब्शी (काले लोग) गुलामों की स्थिति भी काफी अच्छी थी, ऐसा कहा जा सकता है। अभी कुछ शदियों पहले मुहम्मदी सरकार को उन पर दया आयी। उन्होंने इस देश के लाखों शूद्रादि-अतिशूद्रों को जबर्दस्ती से मुसलमान बनाया और उनको आर्यधर्म के चट्टान के बोझ से मुक्त किया। उन्होंने उनको अपने बराबरी के मुसलमान बनाए और सुख की जिंदगी बहाल की; क्योंकि उनमें से कई अनपढ़ मुसलमान मुल्ला और बागवान के शादी-ब्याह में यहाँ के शूद्रादि-अतिशूद्रों जैसे ही संस्कार मिलते हैं, इसी तरह का उनमें रिवाज दिखाई देता है। उसी प्रकार पोर्तुगीज सरकार ने इस देश के हजारों शूद्रादि-अतिशूद्रों और ब्राह्मणों को रोमन कॅथालिफ ईसाई बना करके उनको आर्यों के बनावटी धर्म से मुक्त करके सुखी किया। क्योंकि उनमें कई ब्राह्मण, शूद्रों की तरह गोखले, भोंसले, पवार आदि सरनेम के कुल

1. जड़ या श्रेष्ठ।

मिलते हैं। लेकिन अब अमेरिकी आदि लोगों की सहायता से इस देश के हजारों पीड़ित शूद्रादि-अतिशूद्रों ने, ब्राह्मण धर्म का निषेध करके जानबूझकर ईसाई धर्म स्वीकार कर तहलका मचा दिया है, यह हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। शायद सदर शूद्रादि-अतिशूद्रों की पीड़ा के बारे में आपको विश्वास न हो तो आप आजकल के दास किसानों में से ही सतारकर शिवाजी महाराज, बड़ोदा के दमाजीराव गायकवाड, ग्वालियर के शिंदे, इंदौर के लाख्या बारगीर, यशवंतराव और बिठोजीराव होलकर जैसे बड़े-बड़े रणशूर राजा-रजवाड़ों के बारे में थोड़ा-सा सोच करके देखें तो आपको समझ में आ जाएगा कि उनके अनपढ़ होने की वजह से उन पर और उनके घरानों पर किस-किस प्रकार की विपत्तियाँ आयी हैं; लेकिन इनके बारे में फिलहाल इतना काफी है।

खैर; यहाँ के छप्पन देश के राजाओं ने सदर जनतंत्रात्मक शासनप्रणाली को त्याग दिया, इसलिए आर्य ब्राह्मणों ने दस्यू आदि लोगों को बर्बाद कर दिया और आज तक उनका इस तरह से उत्पीड़न कर रहे हैं कि कुछ बयान नहीं किया जा सकता। लेकिन अब उनकी नीति के अनुसार उनको उचित शिक्षा मिली है, इसमें कोई संदेह नहीं। फिर भी इरान के उस पार के ग्रीशियन लोगों ने पहले से ही जनतंत्रात्मक राज्यों को अपने दिल के टुकड़े की तरह सँभाल करके रखा है। बाद में जब इरान के मुख्य शेखी बघारनेवाले 'झरक्सिस' ने ग्रीक देश को बर्बाद करने के लिए बड़े घमंड से अपने साथ लाखों फौज लेकर ग्रीस देश के सीमा पर पहुँचकर छावनियाँ खड़ी कर दीं, तब स्पार्टा शहर के तीन-चार सौ देशप्रिय सिपाहियों ने रात को अचानक थरमॉपली के दर्रे से आकर उनकी छावनी पर छापा मारा और उनके सभी इरानी फौजों में हड़कंप मचा दिया। उनको वापस इरान में भगा दिया। इस घटना से इटली देश के रोमनों ने कुछ शिक्षा ली, तब वे लोग जनतंत्रात्मक राज्य के संबंध में सारे यूरोप, एशिया और अफ्रीका खंड के देशों में विद्या, ज्ञान और धन के क्षेत्र में इतनी ऊँचाई पर पहुँचे कि उनमें बड़े-बड़े ख्यातिप्राप्त वक्ता और सिपियो जैसे स्वदेशप्रिय योद्धा पैदा हुए। उन्होंने अफ्रीका के हनीबॉल जैसे योद्धा का नाश करके वहाँ के सभी लोगों को स्थिर शासन दिया। बाद में उनको पश्चिम सागर में स्थित ग्रेट ब्रिटेन भूप्रदेश के बदन पर काली-पीली माटी का रंग लेकर चमड़ा पहननेवाले जंगली अंग्रेज आदि लोगों को वस्त्र-बर्तन आदि का उपयोग करने की जानकारी दी और चार-पाँच सौ साल तक अपने हाथ में कोड़ा लेकर उन लोगों को जनतंत्रात्मक शासन-प्रणाली का पाठ पढ़ाकर अनुकूल बनाते रहे थे। लेकिन दूसरी तरफ रोमन सरदारों में से एक महापराक्रमी ज्युलियस सीझर ने अपने सारे कार्यकाल में छह लाख रोमन सिपाहियों को बलि चढ़ा दिया और कई देशों के खानदानी राजा-रजवाड़ों पर अपना वर्चस्व कायम किया, जिसकी वजह से उसकी आँखों पर विलासिता का इतना नशा चढ़ गया कि

उसने अपने मूल जनतंत्रात्मक राज्यस्वरूप माता की ओर आँखें मूंद लीं। उसके सभी प्रिय बच्चों को अपने दासों के दास बनवाए और उन सभी का राजा बनने की इच्छा उसके मन में जाग उठी। उस समय वहाँ के महापवित्र स्वदेशप्रिय जो लोग थे, उनको ऐसा लगा कि इस राजसत्तात्मकता से आगे हमारा जो अपमान होगा, वह हमसे बर्दाश्त नहीं होगा। उन्हीं में से ब्रूट्स नाम का एक व्यक्ति था, उसने अपने हाथ में खुला खंजर लिया और जब ज्युलियस साझर जनतंत्रात्मक राजभवन की ओर राज-आसन पर विराजमान होने के लिए जा रहा था, तब उसने उसको रास्ते में ही रोका और खड़ा रहा। बाद में ज्युलियस सीझर ने अपने रास्ते में आड़े आए ब्रूट्स की आँखों से आँखें भिड़ाते ही मन में लज्जित हुआ। उसने अपने जामा के एक किनारे से अपना मुँह झांक लिया। इतने में ब्रूट्स ने अपने स्वदेश भाइयों को भावी राजसत्तात्मक जंजीरों से आजाद करने के लिए आपस की दोस्ती की परवाह न करते हुए खंजर उसके (ज्यूलियस सीझर के) पेट में डाल दिया और उसका मुर्दा जमीन पर सुला दिया। लेकिन ज्यूलियस सीझर ने पहले सरकारी खजाने का पैसा बेहिसाब खर्च करके सभी लोगों को बड़ी-बड़ी दावतें दे चुका था; इसलिए वहाँ के अधिकांश ऐशोआरामी सरदार उसके गुलाम बन चुके थे। इसका परिणाम यह हुआ कि चारों ओर खूनखराबा हुआ। वहाँ के जनतंत्रात्मक राज का भवन टूट चुका था। बारहवें सीझर के कार्यकाल के अंत में रोमन लोगों के वैभव का पतन होने की स्थिति आ चुकी थी। ऐसी स्थिति में रोमी लोग अंग्रेज लोगों को वहीं के वहीं छोड़कर, अपने इटली देश में लौट आए। लेकिन उसी समय अंग्रेज लोगों के इर्द-गिर्द स्कॉच, स्याक्सन आदि जैसे मंजे हुए उपद्रवी लोग होने की वजह से उन्होंने जैसे किसी असल सोने में तांबे-पीतल की मिलावट कर देने की तरह इस जनतंत्रात्मक राजप्रणाली में खानदानी बड़े लोगों और राजाओं की मिलावट करके उन सभी का एक मजेदार रिश्ता स्थापित किया, और सभी को समझ दी। उस देश में जहाँ-तहाँ पहाड़-ही-पहाड़ होने की वजह से वहाँ अनाज की पैदावार करके सभी का निर्वाह हो, इतनी भूमि नहीं थी और जाड़ा काफी होता था। इसलिए वहाँ के लोग तरह-तरह की योग्यताएं और व्यापार-व्यवसाय के पीछे पड़ गये। इसका परिणाम यह हुआ कि वे इस धरती के सभी भूभागों में विद्या, ज्ञान और धन कमाने में सबसे आगे चल रहे हैं। इसी दरमियान अरबस्थान के हजरत मुहम्मद पैगंबर के अनुयायी लोगों ने इरान के मूल आर्य लोगों के राजवैभव के साथ उनकी पूरी तबाही कर दी। फिर इन ब्राह्मणों ने चूस-चूसकर खोखला बनाए अज्ञानी हिंदुस्थान पर हमले पर हमले करके इस देश को अपने कब्जे में ले लिया। फिर मुसलिम बादशाह दिन में नाच-गाना-बजाना सुनकर रात में अपने जनानखाने में मशगूल रहते थे। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों ने मुसलिमों के ताज पर वार करके इस देश को बड़ी आसानी से अपने

कब्जे में लिया। इसमें उन्होंने कोई बहादुरी की, ऐसा मैं नहीं मानता; क्योंकि यहाँ की सारी प्रजा के एक दशांश ब्राह्मणों ने अपने बनावटी धर्म के नाम पर, कलम के बल पर धर्म और राजनीति में शेष नौ दशांश लोगों को विद्या, ज्ञान, बल, चतुराई, हिम्मत से अपाहिज बना करके रखा था। लेकिन इसके बाद जब अंग्रेज लोगों को यहाँ के नौ दशांश शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों का स्वभाव सभी कामों में जंगली और बेहिसाबी दिखाई दिया और वे सभी पूरी तरह ब्राह्मणों की नीति से चलने वाले हैं, ऐसा जब उन्हें अनुभव हुआ, तब उन्होंने महाधूर्त ब्राह्मणों को हर तरह का लालच दिखाकर अपना सारा काम-काज उन्हीं को सौंप दिया और वे अपना सारा समय कपड़ा, बर्तन, घोड़े-गाड़ी और खाने-पीने में मशगूल होकर गुजारते रहे। उस पर वे मनचाहे पैसा खर्च करते थे। फिर सभी यूरोपियन और ब्राह्मण कर्मचारियों को बड़ी-बड़ी तनखाह की नौकरियाँ और पेंशन देने लायक सरकारी खजाना हो, इस उद्देश्य से रूखी-सूखी रोटी खानेवाले और रात-दिन खेत में जुतनेवाले मेहनती किसानों के खेत पर हर तीन साल के बाद मनचाहे लगान लगाते थे। उनके अनपढ़ बाल-बच्चों को पढ़ाने का बहाना बनाकर उन सभी के सिर पर लोकलफंड नाम से और भी कर का बोझ चढ़ा दिया, और वे (किसान) अपने बाल-बच्चों के साथ रात-दिन खेत जोतकर, अनाज, कपास, अफीम, जौ आदि चीजें बड़ी मेहनत से कमाने के बाद जब लगान और लोकलफंड का हफ्ता अदा करने के लिए उन सभी चीजों को बाजार में ले जाते हैं, उस समय बाजार के रास्ते पर हर छह मील पर जगह-जगह चुंगी लगाकर उनसे लाखों रुपया इकट्ठा करने लगे। जो लोग अपनी मुसीबत में आस-पास के जंगलों में जाकर वहाँ से घास-फूस, लकड़ा-फाँटा और फूल-पत्तियाँ लाकर अपने पशुओं और अपना पेट पालते थे, वे सारे जंगल सरकार ने अपने अधिकार में ले लिए। उनकी रूखी-सूखी रोटी के साथ खाए जानेवाले नमक पर भी बहुत ज्यादा चुंगी-कर लगाया गया। उसी तरह किसानों के खेतों में पर्याप्त पानी होने की वजह से उनकी मेहनत बचे और उनको पेटभर रोटी तथा तन-भर कपड़ा मिले, इस तरह का दिखावा करके अंदर-ही-अंदर से अपने यूरोपियन देशवासी इंजीनियर कर्मचारियों को बड़ी-बड़ी तनखाह देने के इरादे से, यूरोपियन साहूकारों को ज्यादा से ज्यादा ब्याज देने के इरादे से, उनका कर्ज हिंदुस्थान की छाती पर बढ़ा देते हैं और उस कर्ज से लाखों रुपया खर्च करके जगह-जगह पर नहर बनवायी गयी है, फिर उस नहर के पानी का दाम अज्ञानी किसानों से मनचाहे वसूल करते हैं। लेकिन उनके खेतों को समय-समय पर पानी देने के लिए सरकारी कर्मचारियों की ओर से क्या सही इंतजाम किया जाता है? नहीं। क्योंकि इस जलसिंचन विभाग के बेपरवाह यूरोपियन इंजीनियर अपने सभी काम ब्राह्मण कर्मचारियों पर छोड़ देते हैं और खुद बंगले में परदे के अंदर बेगम साहिबा की तरह ऐशोआराम में अपनी

मर्जी से काम करते हैं। इधर धूर्त ब्राह्मण कर्मचारी अपनी होशियारी दिखाने के लिए इंजीनियर साहब के कामों में मंतर देकर उनसे, जब चाहिए तब, जो चाहिए वह, जुल्मी प्रस्ताव सरकार से मंजूर करवा लेते हैं। उदाहरण के लिए उनमें से एक यहाँ दे रहा हूँ, वह यह है कि हमेशा बहनेवाली नहर का पानी समाप्त होने से किसानों के खेतों की फसल सूख गई, तब भी उसकी जिम्मेदारी जलसिंचन विभाग पर नहीं। अरे, जहाँ हजारों रुपया हर माह वेतन खानेवाले गोरे और काले इंजीनियर कर्मचारियों को इसका भी अंदाज नहीं होना कि बाँध में फिलहाल कितना गैलन पानी है, इसकी गिनती करके वह पानी आगे अंत तक जितने खेतों को पर्याप्त होगा, उतने ही खेतों के मालिक को पानी का परवाना देना चाहिए कि नहीं? अरे, इस विभाग के कई नहर छोड़नेवाले कर्मचारियों को पानी के लिए अर्ज करते-करते किसानों की नाक में दम भर जाता है। अंत में जब किसानों को पानी मिलने की कोई उम्मीद नहीं होती, तब किसान उनसे बड़े अफसरों के पास अपनी फरियाद लेकर जाते हैं, तब पानी की बजाय किसानों पर मगरूर-भरे भाषणों का हमला[1] निश्चित रूप से होता है। ऐसे न्याय का दिखावा करने वाले इन सरकारी कर्मचारियों को, कर्जदार-दुर्बल किसानों से पानी का बेहिसाब दाम लेकर, उनके पैसे के मूल्य का पर्याप्त पानी का वितरण करने की बजाय अपनी ऊँची जाति के घमंड में किसानों से मगरूर-भरे शब्दों का इस्तमाल करना कहाँ तक उचित है? सारांश, हमारी न्यायप्रिय सरकार अपने अधिकार में काम करनेवाले ऐगोआरामी और अन्य धूर्त कर्मचारियों पर पूरी तरह निर्भर रहने के कारण किसानों के खेतों को समय पर पानी देने की बजाय, पानी पर लगाया गया कर बढा देती है। इसलिए आज किसानों का दीवाला निकल गया है, और सरकार को उनके घर-बार की नीलामी करके, वह सारा रुपया इन निर्दय कर्मचारियों के पेट पालने के लिए देना पड़ता है। इसलिए हमारी दयालु सरकार को चाहिए कि हर एक किनान के खेत के पानी के अंदाज से हर एक को एक-एक टोटी करके देनी चाहिए, जिससे किसानों के गरज से ज्यादा पानी लेना संभव नहीं होगा। यदि ऐसा किया गया तो नहर छोड़नेवाले कर्मचारियों की सरकार को गरज ही नहीं होगी, उनके खर्च के पैसे की जो बचत होगी, वह पानी लेनेवाले किसानों को पानी लेने का भाव कम करने में अच्छी उपयोगी होगी। फिलहाल हमारी समझदार सरकार ने पानी का भाव कम करने का जो प्रस्ताव किया है, वह जलसिंचन विभाग को दूर रखने की नौबत से बचाया जा सकता

1. यह आरोप हमारे जनप्रिय निष्पक्ष विश्वनाथ दाजी जैसे जो लोग होंगे, उन पर लागू नहीं होता। लेकिन ऐसे निर्मल मन के लोग सरकारी ब्राह्मण कर्मचारियों में बहुत ही कम संख्या में होंगे।

है। उसी प्रकार अज्ञानी किसानों के पीछे अब लोकलफंड की तरह एक नया म्युनिसिपालिटि का जबरदस्त बोझ खोज निकाला गया है। वह यह कि किसानों द्वारा खेतों में उगाई गई सब्जी-भाजी को शहर में लाते समय उस सारे माल पर म्युनिसिपालिटी चुंगी-कर लेकर किसानों का शोषन करती है। कभी-कभी किसान द्वारा बंडी भरकर सब्जी-भाजी शहर में बेचने के लिए लाए जाने पर सारे माल की कीमत बाजार में कम-ज्यादा तोल-माप से लेने-देनेवाले दगाबाज दलालों और म्युनिसिपालिटी की चुंगी के पेट में डाल करके बंडी-किराया खुद के पास से दे करके खाली हाथ घर लौटकर उसे बाल-बच्चों के सामने चीखना पड़ता है। अरे, अकेले पूना शहर की म्युनिसिपालिटी की आज सालाना आमदनी सांगली संस्थान के सालाना आय की बराबरी करने लगी है। उसी तरह बंबई के विशाल म्युनिसिपालिटी की आमदनी इतनी है कि पंत-सचिव जैसे दस-बारह संस्थानों द्वारा इकट्ठा किये जाने पर भी उसकी बराबरी नहीं हो सकती। इससे 'ऊपर की तो खूब बनी और अंदर की तो राम जाने' वाली कहावत चरितार्थ होती है। जिधर देखिए, उधर दोनों ओर चिरावंद नालियाँ बनवाए हुए बड़े-बड़े रास्ते, चारों ओर विलायती खंबों पर कंदीलों का प्रकाश, जगह-जगह पर विलायती खपड़ी और लोहे के नलों को पानी की टोटियाँ, पेशाबघर, कचरा उठाने की गाड़ियाँ आदि सामानों की कोई कमी नहीं है। लेकिन पहले के राजा-रजवाड़े मूर्ति-पूजक थे और अंग्रेजों की तरह विद्वान नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपने रैयत की सुख-सुविधा और सुरक्षा के लिए बड़े-बड़े राजमार्ग बनवाए थे और उसके दोनों ओर पेड़, जगह-पर दीवारें, पुल, कई जगहों पर जमीन के अंदर तलघर, किले, कई जगहों पर बाँध, नहर, कुएँ, तालाब खुदवाए। उसी तरह अहमदनगर, औरंगाबाद, बीजापुर, दिल्ली, पूना आदि शहरों में पानी के लिए मजबूत नल, हौद, मंदिर, मसजिद और धर्मशाला, पेशाबघर, पानपोई आदि सरकारी खजाने को खर्च करवाकर बनवाए थे। आज की हमारी महातत्त्वज्ञानी सही, एक ईश्वर को माननेवाली अंग्रेज सरकार बहादुर जब से म्युनिसिपालिटी के द्वारा कई तरीकों से रैयत का पैसा लूट करके, उन पैसों से कुछ काम पूरे करने लगी तब से, भीतर से रैयत को दिन-ब-दिन प्रामाणिकता से चरितार्थ चलाने का सामर्थ्य कम-कम होते जाने से उनको बुरे गुणों को अपनाने का एक तरह से प्रशिक्षण ही दे रही है। उसी में फिलहाल ऐसे भरे-पूरे काल में चार[1] करोड़ रैयत को दिन में दो बार पेटभर खाना नसीब नहीं होता और जिनको भूख की पीड़ा का अनुभव लिए बगैर एक दिन भी खाली नहीं जाता, ऐसा अनुभव हुआ है। इसीलिए हमारी न्यायप्रिय सरकार ने अनपढ़ किसानों के खेत पर उचित लगान लगाकर उनको जगाकर खेती के बारे में जान-कारी दी तो वे पेशवा[2], टोपे, खाजगीवाले पटवर्धन, फड़के आदि नमकहरामी

1. Journal of the East India Association, No. 3, Vol-VII, P. 124
2. A sepoy Revolt by Henry Mead, Pages. 133 and 134

उपद्रवी ब्राह्मणों के पिछलग्गू बनकर अपनी जान कुर्बान नहीं करेंगे। इसी प्रकार इस देश में जब से अंग्रेजों का राज हुआ, तब से इंग्लैंड के विद्वान कसबी लोग अपनी अकल के बल पर यंत्र द्वारा वहाँ तैयार किया हुआ माल यहाँ के सभी अनपढ़ ढोर मातंगों से लेकर लुहार और बुनकरों के पेट पर पाँव देकर, उनसे सस्ते दाम पर बेच रहे हैं, इसलिए यहाँ के चावल, कपास, अलसी, चमड़ा आदि माल इधर न बिकने की वजह से उस माल को इंग्लैंड के व्यापारी मनचाहे भाव से सस्ते दाम पर खरीदते हैं और वहाँ के कसबी लोगों को बेचकर उनके मुनाफे पर करोड़पति हो गए हैं। सारांश, इन सभी कारणों से किसानों ने खेत पर जो खर्च किया, उतना निकलना भी दरकिनार। तब वे मारवाड़ियों से कर्ज लेकर सरकारी कर चुकता कर देते हैं, फिर इसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए नियुक्त किये गए ऐशोआराम में पड़े रहनेवाले और स्नान-पूजा में व्यस्त रहने वाले ब्राह्मण सरकारी कर्मचारी को कहाँ से फुर्सत मिल सकती है? इनमें से यहाँ के कई बड़े कुलनामों की सभा के सरकारी कंजूस निवासी सेवकों ने यह गलत प्रचार किया कि 'किसान लोग शादी-ब्याह के समय बहुत रुपया-पैसा खर्च करते हैं, इसलिए वे कर्जदार हुए हैं।' इसलिए महासागर के उस पार के हमारे महाज्ञानी, चार-चार घोड़ों की गाड़ी में बैठकर घूमनेवाले गड़रिये स्टेट सेक्रेटरी को जब किसानों का खोखला ऐश्वर्य देखा नहीं गया तब उन्होंने वहाँ के कसबी लोगों द्वारा बनाई गई विदेशी चीजों पर चुंगी कर पूरी तरह से समाप्त कर दिया। यहाँ उन्होंने अपनी बुद्धिमानी की तो कमाल ही कर दी। उन्होंने अपने बड़े-बड़े साहूकारों को साल-हर साल करीबन पाँच करोड़ रुपया ब्याज देने के लिए मन में किसी भी प्रकार का विधिनिषेध उत्पन्न नहीं होने दिया। उन्होंने यहाँ के विधिपरिषद के द्वारा जिन लोगों को गरीबी क्या होती है, इसका कुछ भी अता-पता नहीं, ऐसे ऐशोआरामी यूरोपियन और माँगलिक स्थानिक (ब्राह्मण) जजों की ओर से गरीब बिचारे छोटे साहूकारों का ब्याज पूरी तरह रोकने का ढोंग रचाया गया है। अरे, सरकार के मन में यदि हम कंगाल किसानों के बारे में वास्तव में प्रेम है, तो वह अपने विलायती साहूकारों के एक अरब रकम का ब्याज पूरी तरह से समाप्त क्यों नहीं करती? और यदि वैसा किया गया तो किसानों की इस दुःख से मुक्ति हुए बिना नहीं रहेगी। किंतु हमारी सरकार ने बीच में ही एक कोई नई मुहिम विदेश में शुरू करके वहाँ यह बचाई गई रकम खर्च नहीं की तो उसकी न्यायप्रियता की चारों ओर तारीफ होगी और मे० वेडरबर्न साहब जैसे सज्जन, उदार लोगों को सबसे पहले अपनी विलायती सरकारों का ब्याज पूरी तरह से कम करने के बारे में सरकार की अच्छी तरह से आलोचना करने की बजाय, ऐसे नये बैंक खोलते रहने के पीछे लगकर, किसानों के माथे पर अपनी असफलता नहीं थोपनी चाहिए, क्योंकि उससे किसी का भी कल्याण होना नहीं

है। इतना ही नहीं, हमारे गव्हर्नर जनरल साहब द्वारा सभी फौजी, न्याय, जंगल, पुलिस, शिक्षा आदि छोटे-बड़े सरकारी विभागों के सौ रुपया वेतन पानेवाले कर्मचारियों के वेतन और पेंशन कम करने के बारे में अपनी मुख्य विलायती सरकार को सिफारिश करके, उसके बारे में पूरा बंदोबस्त किये बगैर, किसानों को पेटभर अनाज और तनभर कपड़ा न तो मिलेगा और न तो उनके माथे पर लगा हुआ कर्ज का चिट्ठा मिटेगा। किसानों को अपने बीवी-बच्चों के साथ रात और दिन खेत में जुतना, फिर भी उनको लगान और लोकलफंड देने के बाद उनके परिवार के हर व्यक्ति को हर माह तीन-तीन रुपया भी बचता नहीं। लेकिन सामान्य यूरोपियन और यहाँ के सरकारी कर्मचारियों को हर माह पंद्रह रुपया केवल सामान्य खर्च और शराब-पानी के लिए पर्याप्त नहीं है। फिर कलेक्टर आदि कर्मचारियों जैसे नवाबों के यहाँ के बेहिसाब खर्च के बारे में कहा जाए तो यहाँ हमारी बात को कौन सुनेगा? इसलिए हमारे यहाँ एक आठ बैलों का कुनबा चलानेवाला शूद्र किसान है और उसके चार-पाँच जवान लड़के हैं और जिसके परिवार की बहू-बेटियाँ एक से बढ़कर एक, जिद से, घर हो या खेत, रात और दिन मेहनत करने वाले हैं और जो ब्राह्मण, गूजर या मारवाड़ी साहूकारों की फूटी कौड़ी के कर्जदार नहीं हैं, ऐसे लोगों की स्थिति यहाँ के एक यूरोपियन फौज के सामान्य गोरे सिपाही की स्थिति से गहराई से तुलना करके देखें तो उनमें काशी-रामेश्वर से भी ज्यादा दूरी दिखाई देगी। इधर शूद्र किसान लंगोट पहनकर करधनी को चूना-तंबाखू की खोंची गई बटवी, सिर पर चिंधियों का दुपट्टा, नंग-धड़ंग काया, जूतियाँ पाँव में नहीं, हाथ में हल की कील पकड़े हुए कड़ी धूप में दिनभर नुकीले पत्थरों की तरह मिट्टी के ढेलों के बीच में से आठ बैलों को हाँकते-हाँकते गाना गाकर हल चला रहा है। उधर गोरा सिपाही पाँव में पतलून, बदन पर पाँव को छूने तक लाल रंग का कोट, सिर पर हाथ के कलाकारी से बनी हुई नखरेदार टोपी, पाँव में सूती जुराब पर विलायती ढंग के मजबूत मुलायम चमड़े का जूता, कमर पर चमड़े का पट्टा और कंधे पर घोड़ेवाली बंदूक लेकर हर दिन सुबह और शाम को खुले मैदान पर घंटा-आधा घंटा परेड की कसरत कर रहा है। इधर शूद्र किसानों का खानदानी दरबारी पेहराव है, मोटी खादी की दोहरी जंघिया, कुडली, पिछौरा, खाकी पगड़ी, और रस्सी से कसा हुआ देहाती जूता, जिनका नाश्ता और दोपहर-शाम का भोजन ज्वार की रोटी, महुआ या चोकर की रोटी, या गाजर-कंदों का साग, सालन खटाई या सूखी मच्छी के टुकड़े और यदि वह भी न हो तो चटनी का लौंदा। इसके अलावा और कुछ नहीं मिलता है। चटनी-रोटी क्यों न हो, लेकिन उसको वह भी समय-समय पर और पेटभर क्या मिलती है? उसके रहने का ठिकाना बैलों के गोठ के पास होता है, और उसके इर्द-गिर्द बछड़े सोए रहते हैं। भैंस के कटरे या गौ के बछड़े बांधे हुए होने

की वजह में घर में चारों ओर पेशाबखाने की सड़ी हुई दुर्गंध आती है। फटा पल्ला और मैले-कुचैले कथरी का बिछौना और ओढ़ना। सारे गाँव की भैंसे पानी में बैठ-बैठकर गंदे हुए कुंड के नीचे की ओर खुदे हुए गड्ढे का पानी पीने का गाँव का खंडहर और वहीं उनका पाखाना। ऐसी परिस्थिति में जुल्लाब लगी और उसको बुखार आया तो अच्छी दवाई मिलना मुश्किल हो जाती है और उनको जानकार डॉक्टर के नाम से घबराहट। इसके अलावा सरकारी लगान आदि फंड और टैक्स की नंगी तलवार हमेशा उनके सिर पर टंगी रहती है। फिर ऐसे अभागे किसानों की अकल सन्न नहीं होगी, यह बात कोई समझदार या जानकार गोरा या काला डॉक्टर अपनी छाती पर हाथ रखकर कह सकता है? उधर सरकार गोरे सिपाहियों की वर्दी के लिए ऊँचे कपड़े, बनात, रूमाल, जुराब, जूता खरीद करके लाती है, सरकार उनके खाने-पीने के लिए अच्छा गेहूँ, चावल, दाल, अच्छी गी, भेड़-बकरियों का मांस, विलायती पोर्टर आदि नशीली शराब, अच्छा तेल, घी, दूध, शक्कर, चाय, नमक, मिर्च, गरम मसाला, छुरी-काँटा आदि सामान यहाँ खरीद करके, ईसाई बटलर के द्वारा तीन बार पकवाकर उनको समय-समय पर खिलाती है। उनको रहने के लिए लाखों रुपया खर्च करके सरकार ने दो मंजिलवाली बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई हैं। उसमें लोहे की खटिया, बिछौने पर तकिया, कंबल, मसहरी की भी सुविधा की गई है और ऊपर रोशनी के लिए हंडी टंगी हुई है। बैरकों के आँगन में नहाने के लिए स्नानगृह बनवाए हैं और उसमें 'फिल्टर' किए हुए पानी का नल लगाया हुआ है। उसी प्रकार साफ सुविधा के पाखाने बनाए गए हैं। ऐसे माहौल में अपच से मामूली खाँसी या बुखार आया तो उसकी जान के लिए अस्पताल बनाया गया है। उसमें सैकड़ों रुपये कीमत की दवाइयाँ, शस्त्र आदि खरीदकर रखे गए हैं और उनपर हजारों रुपये हर माह वेतन पर डॉक्टर की नियुक्ति की जाती है और उनके लिए चंडोल, हमाल दिए गए हैं। इसके अलावा उसको देने-लेने की कोई फिक्र नहीं। उसको मकान, पाखाना, झाड़ू, पानी, रास्ता, खेत और लोकलफंड टैक्स आदि देने की कोई आवश्यकता नहीं होती। उन्हें किसी भी बात की कोई कमी नहीं रहती और इसी की वजह से हम माँगल्य में रहनेवाले यहाँ के कर्मचारियों को घृणा से कहते हैं कि देखिए यह नेटिव्ह कर्मचारी, ऐशोआरामी यूरोपियन कर्मचारियों के आगे-आगे दुम दबाकर घूमता है। लेकिन अज्ञानी किसानों से रिश्वत लेकर किस तरह से गोरे सैनिक की तरह लाल गाजर बन गया है! देखो, यह कितना उड़ाऊपन है! इसको क्या कहा जाए? इसलिए हमारी आँखों पर पट्टी बाँधकर निराकार परमात्मा की प्रार्थना करनेवाले, अंग्रेज सरकार को यहाँ के धूर्त ब्राह्मणों द्वारा स्थापित समाजों के और अखबारों की गुदगुदानेवाली कलम पर बिलकुल विश्वास नहीं रखना चाहिए। सरकार को चाहिए कि अपने सभी सरकारी विभागों के

गोरे और काले कर्मचारियों के लिए आवश्यकता से ज्यादा दिए हुए वेतन एकदम कम कर दे और अज्ञान की वजह से उत्पीड़ित, दुर्बल शूद्र किसानों को विद्यादान[1] देना चाहिए। उनके सिर पर लादा गया लगान, कर, चुंगी, आदि सभी कम न हुआ तो निकट भविष्य में इस जुल्म का अंजाम अच्छा नहीं होगा, इस तरह का इशारा हम अपनी ऐशोआरामी उड़ाऊ सरकार को दे रहे हैं। यहाँ इतना ही पर्याप्त है।

1 A Sepoy Revolt by Henry Mead, Pages 280, 281, 282, 283, 285 and 286.

परिच्छेद : चार

इस परिच्छेद के आरंभ में रात और दिन खेतों में खटनेवाले मेहनती, अज्ञानी किसानों की कंगाल और फटेहाल स्थिति के बारे में तुरंत चर्चा करने की बजाय मैं उनकी सामाजिक वास्तविकता के बारे में आप लोगों को बताना उचित समझता हूँ। जिनकी मां के दादा की मौसी या पिता के दादा के पिता की लड़की शिंदे या गायकवाड़ों के घराने के खास या खर्चीले लड़के को ब्याही गयी थी, इस छोटे-से कारण की वजह से माली, कुनबी, धनगर आदि किसानों में मराठा होने का अहंकार आ गया। ऐसे शेखी मारनेवाले कर्जदार, अज्ञानी कुनबियों की ताजा स्थिति को समझ लेना बहुत जरूरी है। एक कुलकर्णी एक दिन नदी के किनारे के पास के हवादार घनी अंबराई के कलेक्टर साहब के कचहरी की तंबू की ओर से बड़े गुस्से में हाथ-पाँव झटकते हुए, दाँत-होंठ चबाते हुए अपने गांव की ओर जा रहा था। उसकी उम्र करीब-करीब चालीस के आसपास होगी और वह शरीर से कुछ कमजोर दिखाई दे रहा था। उसके सिर पर ऐंठदार पेच की सफेद पगड़ी थी और उस पर फटे दुपट्टे से कनपटी बँधी हुई थी। बदन पर खादी की दोहरी फतूही और चोला था। इसके अलावा पाँव में सतारी नकटा पुराना जूता था। कंधे पर दुपट्टी, उस पर एक खारुआ बटुआ रखा हुआ था और सभी कपड़ों पर होली के रंग के पीले कथिया धब्बे पड़े हुए थे। पांव की एड़ी मोटी और मजबूत तो थी, लेकिन कुछ-कुछ जगह सिकुड़कर चीड़े पड़ गए थे जिसकी वजह से मामूली लंगड़ाते हुए चल रहा था। हाथ की कांप चौड़ी थी और छाती फैली हुई थी। चोटी के अलावा बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछें बढ़ाने की वजह से ऊपर के दो-दो फाल दांतों का नुक्स ढक गया था। आंखें और माथा विशाल था। अंदर की पुतली काले-पीले रंग की थी। शरीर का रंग गोरा था और सारा चेहरा ठीक-ठाक था; किंतु मामूली गोल था। करीब एक-दो बजने के बाद घर में पहुँचने पर खाना खाने के बाद मामूली आराम करने के उद्देश्य से घर के अंदर के कमरे में जाकर, वहां झुलनी पर रखी हुई बोरी उठाकर उसको उसने जमीन पर बिछाया और

उस पर कंबल का सिरहाना बनाकर पहने धोती का एक छोर मुँह पर रखकर सो गया।

दरअसल सुबह उठकर वह कलेक्टर साहब से मिलने गया था। उस समय वह नाश्ता कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उसकी पूरी दास्तान नहीं सुनी। परिणाम यह हुआ कि किश्त आगे देने के बारे में उसे मदद नहीं मिली। इसी चिंता में उसको नींद नहीं आ रही थी। तब वह सीधा लेट गया और अपने दोनों हाथ छाती पर रखकर मन-ही-मन में बेचैनी से बोल रहा था :

"अन्य गाँववासियों की तरह मैंने पैमाइश करनेवाले भट्ट कामगारों की जेब गरम नहीं की इसलिए उन्होंने अंग्रेज कर्मचारी से कहकर मुझ पर लगान को दुगुने से भी ज्यादा बढ़वा दिया। इस साल बारिश कम होने की वजह से मेरे सभी खेतों और बगिया की फसल का नुकसान हो गया। इसी दरमियान पिता का देहांत हो गया और उनकी तेरहवीं पर काफी खर्च हुआ। इसी की वजह से पहले साल लगान देने के लिए बगीचेवाला खेत ब्राह्मण साहूकार के पास गिरवी रखकर उससे कर्जा लिया है। बाद में उसने मूल कर्ज पर मनचाहा सूद-दर-सूद लगाकर मेरे बगीचेवाले खेत को हड़प लिया है। उस साहूकार की माँ का भाई रेव्हेन्यू साहब का दफ्तरदार था, चाचा कलेक्टर साहब का मुंशी था, बड़ी बहन का शौहर मुनीम था और उसकी औरत का पिता इस ताल्लुका का फौजदार था, इसके अलावा सभी सरकारी कचहरियों में उसकी जाति के ब्राह्मण कर्मचारी थे। फिर ऐसे साहूकार से मैंने झगड़ा मोल लिया होता तो उसके सभी ब्राह्मण रिश्तेदार हाथों ही हाथों में मुझको बर्बाद कर दिया होता। फिर दूसरे साल घर के बीवी-बच्चों के गहने लगान के लिए बेच दिए। बाद में हर साल का लगान अदा करने के लिए गाँव के गूजर-मारवाड़ी साहूकारों से सूद पर रुपये लिए हैं। उनमें से कुछ लोगों ने मुझपर मुकदमा भी कर दिया है और वे झगड़े कोर्ट में चल रहे हैं। इसके लिए मुझे कभी-कभी कर्मचारी और वकीलों के दरवाजे पर जाकर पानी की तरह पैसा भी बहाना पड़ा है। मुंशी, चपरासी, अर्जनवीस और गवाह-दारों को रिश्वत देते-देते मेरी नाक में दम भर गया है। उसमें रिश्वत न लेनेवाले सरकारी कर्मचारी कहीं-कहीं मिलेंगे; किंतु रिश्वत खानेवाले कर्मचारियों की अपेक्षा रिश्वत न लेनेवाले कर्मचारी बहुत ही निकम्मे होते हैं। क्योंकि उनके लापरवाह होने की वजह से उनके पास गरीब किसानों की कुछ नहीं चलती—और उनके आगे-आगे करके अपनापन दिखानेवाले होशियार मतलबी वकील उनके नाम से हम दुर्बल किसानों को कुत्ते की तरह नोंच-खसोट करके खाते हैं। यदि उनके अनुसार न करें तो जैसा साहूकार बतलाएंगे उस तरह अपने सिर पर उनके हुक्मनामे लाद लो। इसी की वजह से आज कोई साहूकार मुझे अपने दरवाजे पर खड़ा नहीं होने देता। पिछले साल मैंने अपनी ब्याही बड़ी लड़की के

सभी गहने और पीतांबर मारवाड़ी के घर में गिरवी रखकर टैक्स की किस्त चुकाई है। इसी कारण उसका ससुर उस बेचारी को अपने घर नहीं ले जा रहा है। अरे, मैं अभागा दुष्ट आदमी अपने ऊपर आए हुए संकट को टालने के लिए अपने ही लोगों का गला घोंटकर उसको जिंदगी से बेदखल कर दिया है। अब मैं साल-भर का लगान कहाँ से दूँगा ? बाग में नयी मोट खरीदने के लिए मेरे पास रुपया नहीं है। जो पुरानी थी, वह पूरी तरह छलनी हो गई है। उसी के कारण गन्ना भी गया और बाकी फसल भी गयी। मक्की भी बगैर खुरपनी के सूख गई। जानवरों को पेट-भर घास नहीं मिलने की वजह से कई बड़े-बड़े बैल दुबले हो गए हैं। बहू-बेटियों के पहनने के कपड़े फट गए हैं, इसलिए शादी के समय के खरीदे गए कीमती कपड़े पहनकर दिन गुजार रहे हैं। खेतों में काम करनेवाले बच्चे बगैर कपड़ों के इतने नंग-धड़ंग हैं कि उन्हें लोगों के सामने आने में शर्म आती है। घर का अनाज भी समाप्त हो रहा है, इसलिए हमें आलू और कंदों पर अपना गुजारा करना पड़ रहा है। घर में जन्म देनेवाली माँ के अंतिम समय उसको अच्छा कपड़ा, अच्छा खाना खिलाने के लिए मेरे पास पैसा नहीं है। इसके लिए मेरे पास क्या उपाय है ? बैल बेचकर यदि लगान भरता हूँ, तो फिर आगे खेती किसके भरोसे पर की जाएगी ? व्यापार-धंधा किया जाए तो मुझे लिखना-पढ़ना नहीं आता। अपने देश को छोड़कर परदेश (दूसरा प्रांत) जाऊँ, तो मुझे पेट भरने के लिए कुछ हुनर मालूम नहीं। यदि मैंने कनेर की जड़ों को पीस करके पी लिया तो मेरे जवान बच्चे अपना पेट किसी-न-किसी तरह पाल लेंगे, लेकिन मुझे जन्म देनेवाली मेरी माँ और मेरी बीवी तथा मेरे मासूम बच्चों को ऐसे समय क सँभालेगा ? वे किसके दरवाजे पर जाएँगे ? वे किसके सामने अपना मुँह खोलेंगे ?" इस तरह सोचते-सोचते अंत में बड़ी साँस लेकर रोते-रोते सो गया।

बाद में मैं आँखें पोंछते हुए घर के बाहर आकर देखता हूँ तो उसका मकान एक मंजिल और कवेलूवाला है। घर के सामने घर से लगकर बाँसबल्ली लगाकर बैलों को बाँधने के लिए छप्पर का घर बनाया हुआ है। वहाँ दो-तीन थके हुए बैल पगुराते हुए बैठे हैं और एक ओर खंडी-सवा खंडी की दो-तीन खाली ढेरियाँ कोने में रखी हुई हैं। बाहर आँगन में दाईं ओर एक आठ बैलों वाली पुरानी बंडी खड़ी करके रख दी गई है। उस पर टूटी हुई टुराटियों की टाटी पड़ी हुई है। बाईं ओर एक बड़ा चौकोना ओटा बना करके उसपर एक तुलसी वृंदावन बनाया गया है और उसके करीब खपरी रांजन के प्याऊ का चबूतरा बनाया गया है। उस पर पानी से भरे हुए दो-तीन मिट्टी के ढेरे और घगरियाँ रखी गई हैं। प्याऊ के नजदीक तीनों ओर छोटी-छोटी दीवारें खड़ी करके उनके भीतर टूटी-फूटी फर्शियाँ लगाकर एक छोटी-सी मुतारी बनाई गई है। उस नाली का पानी बाहर की ओर जो एक छोटा-सा गड्ढा है, उसमें भर गया है। उसमें मच्छर और छोटे-छोटे जंतु पैदा हो

गए हैं और उसमें बलबला रहे हैं। उसके उस पार सफेद चंपा के नीचे नंगधड़ंग, सारे बदन पर गंदे पानी के दाग आए हुए, खुजली, सिर में घमौरियाँ, नाक से गंदगी बहते हुए बदबूदार पसीने से तर-ब-तर ऐसे बच्चों का जमखट लगा हुआ है। उनमें से कुछ बच्चे अपनी हथेली पर कीचड़ के गोले लेकर दूसरे हाथ से छाती को थपथपाकर 'हाय-हाय' शब्दों का घोष करते हुए नाच रहे हैं। कोई खेल में मजाक से शराब की दुकान लगाकर, कलारिन होकर, पाँव में बबूल की फली के गहने पहनकर दुकानदार होकर बैठा है। उसको कई लड़के इमली के पैसे देकर, बारी-बारी से पानी की शराब पीने के बाद नशा का स्वाँग रचाकर एक-दूसरे के ऊपर जा गिरते हैं।

घर के पिछवाड़े घर से लगकर बाँसवल्ली से कोठा तैयार किया गया है। उसमें सुबह जनी हुई भैंस, दो-तीन बछड़े और एक नाल लगी हुई घोड़ी बँधी हुई है। दीवार पर जहाँ-तहाँ, कोने-कोने में घगरे, लाल मक्खियाँ चिपकी हुई हैं। सिर के बाल को कंघी करते समय जो बालों के गुच्छे निकलते हैं, वे जगह-जगह खोंस दिए गए हैं। बाहर पड़धी में एक ओर मुर्गियों के लिए खूटी बनायी गयी है। उसी से लगकर एक-दो कैकाड़ी डेरे लगाए हुए हैं और दूसरी ओर हाथ-पाँव और जठे बर्तन धोने के लिए आड़ा-तिरछा पत्थर लगाकर एक खुली मुतारी बनायी गयी हैं। उसके खुले दरवाजों से जगह-जगह जूठन इकट्ठा होती है और उस पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। उस पार एक ओर गोबर के लिए गड्ढा बनाया गया है। उसमें बच्चों के हगने की वजह से चारों ओर हरे रंग की मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। बाजू में, उस पार एक कोने में हरी-भरी घास और कटिया की ढेरी खलाश होने की वजह से उसकी जगह पर उस घास की छोटी-बड़ी ढेरी लगी हुई है। दूसरे कोने में गोबर का ढेर लगा हुआ है। उसके नजदीक, बबूल के पेड़ के नीचे टूटे-फूटे ढेर सारे हल एक पर एक रखे हुए हैं। उसके नीचे विलायती घास पैदा हुई है। उसमें अभी-अभी जनी हुई झिपरी कुतिया आने-जाने पर गुर्र-गुर्र करते हुए पड़ी है। बगल में जानवरों के चुगने के लिए घास का ढेर पड़ा हुआ है और एक ओर एक जवान महिला घर की ओर पीठ करके पाँवों से गोबर सान रही है। उसके दोनों पाँव गोबर तोड़ते-गोड़ते घुटने तक मैले हो गए हैं।

सारे घर में, बीच में ऊँची-नीची जमीन है और वहाँ से पीछे देखें तो दलने-कूटने की भूसी पड़ी हुई है और आगे देखें तो छिली हुई सब्जी-भाजियों के छिलके पड़े हुए हैं। यहाँ खाए हुए जंगली फलों के बीज गिरे हुए हैं, वहाँ सड़े हुए प्याज का ढेर पड़ा हुआ है, और उससे एक तरह से बदबू आ रही है। घर के बीच में खुली जमीन पर एक बेजान बूढ़ी औरत पसरी हुई है। नीचे-ऊपर पहरेदारी करने के कारण उसका दम फूला था। उसके सिरहाने धान की लाई और तश्तरी के नीचे

कटोरी में दाल के पानी में ज्वार की रोटी के बारीक-बारीक टुकड़े भिगो करके रख दी गयी थी और पानी का लोटा भी था। नजदीक ही झूले में नन्हा बच्चा बड़े जोर-जोर से रो रहा है। इसके अलावा कहीं बच्चे का पेशाब बह रहा है। कहीं बच्चे की टट्टी के दाग लगे हुए हैं, उस पर कहीं राख के धब्बे पड़े हुए हैं। घर के कई कोने चूना-तंबाकू खाने वालों ने थूक-थूक करके लाल कर दिए हैं। एक कोने में तीन-चार औरतों के लायक पाटा लगाया हुआ है। दूसरे कोने में ओखली के पास मूसली खड़ी करके रखी हुई है और दरवाजें के पास कोने में झाड़ू के नीचे बुहार करके इकट्ठा किए हुए कचरे का ढेर रखा हुआ है, जिस पर बच्चों के नीकर पड़े हुए हैं। इधर चूल्हे के ऊपर की पट्टी पर जूठन लगा हुआ तवा खड़ा करके रखा हुआ है। आवे पर दूध की भरी हाँडी खुली पड़ी हुई है। नीचे चूल्हे के भीतर एक ओर राख का ढेर जमा हुआ है। उसमें बिल्ली के मल-मूत्र भी पूरी तरह मिल गए हैं। चारों ओर दीवार पर खटमल मारने के लाल रंग के दाग दिखाई दे रहे हैं। उसी में बीच-बीच में और भी कई तरह की गंदगियों के दाग पड़े हुए हैं।

एक देहरी में भीतर की ओर खाने के तेल की बरनी, खोबरेल तेल की मिट्टी की बटलोई, दातौन की लकड़ी, सींगटे की कंघी, तकलीवाला ऐना, काजल की डिब्बी और कुंकुम की करंडी एक ओर रखी हुई है और बाहर की ओर देहरी के किनारे पर रात में दीया रखने के लिए एक-पर-एक तीन-चार पत्थर रखकर जीना बनाया गया है। उसमें से जो तेल चूता था, उसका जमीन तक फैलाव हो गया है। उन सभी का साल में एक बार अषाढ़ वद्य अमावस को किट्ट निकलता था। दूसरी देहरी में आटे की टोकनी के पास नीचे दाल का चूरा और बासी रोटी के टुकड़े पड़े हुए हैं। तीसरी देहरी में रोटी की टोकरी के पास कुछ हरी मिर्च, लहसुन, धनिया, दूध की सीप और आम के छिलके पड़े हुए हैं, जिन पर मक्खियाँ और मच्छर बैठे हुए हैं। वे खाते भी हैं और दूसरी ओर से उस पर मल-विसर्जन भी करते हैं और चौथी देहरी में पुराने सुधारे हुए जूते-चप्पल रखे हुए हैं। करीब में ही चकमक की कपास और करवा के टुकड़े पड़े हुए हैं। एक मेख पर बिछाने के पुराने मैले-कुचैले कंबल और अंगोछे रखे हुए हैं। दूसरी मेख पर ओढ़ने की कथरी और चद्दर रखे हुए हैं और तीसरी मेख पर फटी जंघिया और कुरती रखी हुई है।

फिर घर के भीतर जाकर देखता हूँ तो जगह-जगह पर बीच की दीवार पर छोटी-बड़ी ताक हैं। उनमें से केवल एक ताक को देहाती ताला लगा हुआ था। यहाँ भी जगह-जगह मेख पर ओढ़ने की कथरी और बहू-बेटियों के बटुए टँगे हुए हैं। एक मेख पर घोड़ी का लगाम, खुगीर, खुगीर की गद्दी और खाली तेल की कुप्पी टँगी हुई है। दूसरी पर तेल का चोंगा रखा हुआ है। अंत में एक ओर दीवार से लगकर गगरे पर गगरा और मटका रचा हुआ है। इस तरह पाँच मटके

एक कतार में रखे हुए हैं। क़रीब में बल्ले से दो सींकें बाँधे हुए हैं। उस पर दही और घी के मटके झाँक रहे हैं। अभी-अभी बहुत बड़ा एक कच्ची इँटों का देवहरा बनाया गया है। उसके नीचे के ताक में कुल्हाड़ी, हँसिया और पँहसुल रखी हुई है। ऊपर छोटा-सा खद्दर का कपड़ा बिछाकर उसपर सोने के कुलस्वामी के ठप्पे एक कतार से रखे हुए हैं। उनकी एक ओर छोटी मशाल और कुप्पी रखी हुई है। मुकुट के ऊपर धूप की थैली टँगी हुई है। नीचे बोरी पर किसान गहरी नींद में सोया हुआ है और खर्राटा मार रहा है। एक कोने में पुरानी बंदूक की नली और फटे-पुराने खुगीर के साथ गद्दा का बिछौना खड़ा करके रख दिया गया है। दूसरे कोने मे हल, फाल़, हेंगे का फंदा, हेंगे का मूसल, तुरही की ढोली और उलटी करके खड़ी की हुई छाछ मथने की अरई और तीसरे कोने में छोटी लाठियों का ढेर है। करीबन दो-तीन कमरों में छड़ी और माप के सीधे अच्छे बाँसों की कंड़ी लगाकर, उस पर आड़ी-तिरछी इमली की टहनियों की छत पर कीचड़-मिट्टी के लौंदे डालकर मजबूत ढाबा बनाया गया है, जिस पर चीना, कलगा, कुलथी, मटर, भटमास, तिल, चौलाई आदि कई सब्जी-भाजियों के बीज जगह-जगह पर गगरे और मटके में भरे पड़े हैं। ऊपर छड़ से बीज के लिए मकई के भुट्टों की माला लटक रही है और एक जगह पर चार-पाँच सूखी तुरई टँगी हुई है। दूसरी जगह लौकी टँगी हुई है और तीसरी जगह छीके पर काशीफल, कद्दू रखे हुए हैं। चौथी जगह बीज बोने का औजार रखा हुआ है। कई जगह चिथड़ियों की गठरियाँ भरी पड़ी हैं। बीच में एक छड़ से मुकुट बाँधे हुए हैं। ऊपर देखें तो खप्पड़ों को ठीक करने के लिए तीन-चार साल से फुरसत नहीं मिली है और उसके नीचे की टुराटी-की छत जगह-जगह से सड़ जाने की वजह से पिछले साल सठेरे से ठीक किया गया था, इसलिएं चूहों ने बिल बना ली थी। कुल मिलाकर सारे मकान में साफ हवा आने के लिए खिड़की या झरोखा कहीं भी नहीं है। कड़ी, छड़, टीप आदि पर धुएँ का काला रंग चढ़ा हुआ है; लेकिन जहाँ जगह खाली है, वहाँ मकड़ियों द्वारा बहुत ही चतुराई से, बहुत ही नाजुक धागों से बुनी हुई मच्छरदानी अर्थात् जाली फैली हुई है और उस पर मकड़ियों के सैकड़ों बच्चे कसरत कर रहे हैं। कड़ी, छड़ और टीप पर इधर-उधर मरे हुए मकड़ियों और झींगुरों के सूखे हुए शरीर चिपके हुए हैं। वहाँ बल्ले आदि लकड़ियों के ढेर पर कई जगह चूहे और झींगुरों की जहरीली लेंड़ियों से मिली हुई धूल के छोटे-छोटे ढेर बने हैं; लेकिन फुरसत नहीं होने की वजह से वहाँ पिछले चार-पाँच साल से एक बार भी झाड़ू या बुहारी नहीं लगी है।

इसी बीच गर्मी के मौसम होने की वजह से, पूरबी बारिश आने से पहले तूफान का ऐसा झोंका आया कि सारे घर में धूल-ही-धूल हो गई। तब मुँह खोल कर खर्राटा लगा रहे कुनबी के नाक-मुँह में जहरीली धूल जाते ही उसको सुरसुरी

लगी और वह एकदम चौंककर जाग उठा। फिर उस भयंकर खाँसी की सुरसुरी ने उसको इतना बेजार किया कि जरा-सा बेहोश होकर फिर वह जोर-जोर से कराहने लगा। उसके इस कष्ट को देखकर उसकी बूढ़ी माँ घर के भीतर से छटपटाती हुई आकर उसके सिरहाने के नीचे खुगीर की टिकिया डाल दी, फिर उसके ढोढ़ी को हाथ लगाकर मुँह को निहारते हुए रोते-रोते कहने लगी, "अरे, बेटे, मेरी ओर आँखें खोलकर देख। रामभट्ट के कहने पर तेरे को साढ़ेसाती के शनि से कष्ट नहीं हो, इसके लिए मैंने तेरे पीछे खत्ते से कितना अनाज नकटे गूजर को बेचकर कई बार हनुमान के सामने ब्राह्मण को जप करने के लिए लगाया है, और सुहागिन ब्राह्मण औरतों को खाना खिलाया है। कई बार बेटे, तेरे पीछे बाहर ही बाहर गणभट्ट के घर में सत्यनारायण को प्रसन्न करने के लिए ब्राह्मणों के चोंचले पूरे करने के लिए रुपया-पैसा खर्च किया है और उस मुर्दे सत्यनारायण के जनाजे पर फूंक दिया है। उसने आज सुबह कलेक्टर साहब के मुँह में बसकर तेरे को उससे सुविधा-सुविधा से टुकड़ा देने के बारे में मुद्दत क्यों नहीं दिलवाई? अरे दुष्ट धाखेबाज ब्राह्मणो, तुम्हारा ताजिया ठंडा हो गया न! तुम लोगों ने मुझसे हमेशा ही शनि और सत्यनारायण का गप्प मार करके, मेरे से घी-रोटी के भोजन और ऊपर से दक्षिणा भी हड़पा है। अरे, तुम लोगों ने मुझे मेरे एकमात्र बेटे के जन्म से लेकर आज तक नौ ग्रहों का डर दिखाकर सैकड़ों रुपया हड़प करके खा लिया है। अब तुम्हारा वह सारा पुण्य कहाँ गया? अरे, तुम लोगों ने मुझे धर्म के नाम पर इतना छला है कि उतने पैसों में मैं ऐसे समय पर सारे संकटों को पार करके, अपने बेटे के सारे शनि ग्रहों को नष्ट करके सुखी बना दिया होता। अरे, तुममें से ही एक राघोबा दादा ने (पेशवा) सबसे पहले अंग्रेजों को रुपया-पैसा देकर तलेगाँव को लाया है। तुम लोगों ने ही इन गोरे गैर जानकार साहब लोगों को झूठमूठ की बातें बताकर हम माली-कुनबियों को भिखारी बना दिया है और अभी तुम लोग ही एकता का स्वाँग रचाकर अंग्रेजों के नाम से उँगलियाँ तोड़ रहे हो। इतना ही नहीं, फिलहाल माली-कुनबी लोग जैसे-जैसे भिखारी होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे तुमको उन्हें देखने का बहाना किये बगैर खाना असंभव है, इसलिए तुम ब्राह्मण लोग अंग्रेजों को भ्रष्ट करके, पाँव में जूता-पतलून और सिर पर मुतक की तरह सफेद रुमाल बाँधकर, महारों में से जो लोग ईसाई हुए, उनकी सुंदर जवान लड़कियों से ब्याह करके, ऐन चौपाल के सामने खड़े होकर माली-कुनबियों को कहते फिरते हो कि 'हमारे ब्राह्मण पूर्वजों ने जितने ग्रंथ लिखे हैं, वे सारे के सारे स्वार्थी और नकली हैं। उसी में उन्होंने धातु और पत्थर की जो मूर्तियाँ बनाई हैं, उसमें भी कोई मतलब नहीं है। यह सारा पाखंड उन्होंने अपने पेट के लिए खड़ा किया है। उन्होंने अभी-अभी फौज के विदेशी लोगों में सत्यनारायण का ढोंग खड़ा किया है और अब इधर तुम सभी अज्ञानी भोले-भोले श्रद्धालु माली-कुनबियों में

उसको फैला रहे हैं। उनका यह ढोंगधतूरा तुमको कैसे समझ में आएगा ? इसलिए तुम लोग इन गफलती ब्राह्मणों के बहकावे में आकर धातु या पत्थर के भगवानों की पूजा करने के चक्कर में न आओ। तुम लोग न तो सत्यनारायण करो और न तो कर्जदार होकर किसी ब्राह्मण के बहकावे में आओ। तुम लोग निराकार परमात्मा की खोज करो, जिससे तुम्हारा कल्याण होगा।'

खैर, लेकिन तुम लोग हम जैसे डरपोक माली-कुनबियों को उपदेश करने की बजाय सबसे पहले अपने जाति-भाइयों के मोहल्लों में जाकर उनको बताना चाहिए कि 'तुम लोग अपनी सभी नकली पोथियों को जलाकर खाक कर दो। माली, कुनबी, धनगर आदि किसानों को झूठे उपदेश देकर अपना पेट पालने का नीच काम न करो।' इस तरह का उनको बार-बार उपदेश करके यदि उनकी ओर से उस तरह का व्यवहार हुआ तो किसानों का उनपर भरोसा हो जाएगा। दूसरा बात यह कि हमने यदि तुम जैसे कायर ब्राह्मणों की बातें सुनकर आचरण करने लगें तो तुम्हारी ही जाति के सरकारी कर्मचारी यहाँ के गोरे कर्मचारियों की आँखों में धूल झोंककर गलत-सलत कारण बताकर हम किसानों के बाल-बच्चों को बेहाल करके छोड़ेंगे।"

इसी दरमियान किसान के होश में आते ही वह अपनी माँ के गले लगा।

अब बाकी सभी कंगाल, दुर्बल, रात और दिन खेत में मेहनत करनेवाले, सिर्फ अज्ञानी, माली, कुनबी, धनगर आदि किसानों की मौजूदा स्थिति के बारे में कुछ कह रहा हूँ। यदि सभी लोगों ने इधर ध्यान दिया तो उनपर बड़ा एहसान होगा।

भाइयो, तुम लोगों ने स्वयं खोज करके देखने का प्रयास किया तो तुम लोगों को आसानी से यह यकीन आ जाएगा कि सभी छोटे-बड़े गाँव-खेड़ों में किसानों के बड़े मकान भी दो-तीन या चार कमरे खपड़े की छपरी के होते थे। हर घर में चूल्हे के कोने में लोहे के करोने, लकड़ी की बेंत और फुँकनी, चबूतरे पर तवा, दूध का कुंडा और नीचे ओली में पकाने की हाँडी, बगलवाले कोने में कोई एक ताँबे-पीतल का हाँडा, थाल, काँसे की थाली, परात, बटलोई या कटोरी न हो तो पुराने फूटे हुए लोटे के पास माटी का कसोरा, परात और दुधहंडी होती थी। उसके पास चार-पाँच, गगरे-मटकों का थापा जिसमें छिपाने के लिए मामूली-मामूली खुखंड, कुलथी, दलहन या मठ, अरहर का आटा, सिमई, मूँगफली, भूना हुआ होला, गेहूँ की बाली, सत की बड़ी, भिलावाँ, नमक, हल्दी की गाँठ, धनिया, काली मिर्च, जीरा, अजवाइन, हरी मिर्च, प्याज, इमली के गोले, लहसुन, कोयमीर होता था। उसी के पास नीचे जमीन पर कल शाम को गोडबोले भट्ट पेंशनर साहूकार की ओर से डेढ़ी से लाई हुई पुरानी ज्वार, अरहर के डंठल से बनी टोकरियाँ दीवार से लगाकर एक पर एक रखी हुई होती थीं। एक ओर

ओलती पर गुदड़ी, कंबल के टुकड़े और फटी-पुरानी साड़ियों के टुकड़े आड़-तिरछ फाड़ करके और उनको जोड़कर सिली हुई साड़ियाँ, दीवार पर लकड़ी की कील ठोंककर उस पर टाँगकर रखी गई चिंधियों की पोटली पर भूसी और गोहरा उठाने का टोकरा, दीये के ताक पर तेल की हंडी के पास कंघी और कुंकुम की डिब्बी, ऊपर गोहरा और तीनधारी थूहर की लकड़ियों के मचान के पास घास-चारा अच्छी तरह सँवारकर रखा हुआ होता था। नीचे जमीन पर कोने-कोने में कुदाली, कुल्हाड़ी, खुरपा, हेंगे की फाल, हल की डंडी, चक्की, ओखली, मूसल और झाड़ू के पास थूकने की हंडी रहती थी। दरवाजे के बाहर बाईं ओर खप्पर-हंडों के प्याऊ पर पानी लाने के लिए गगरे और मटके थे और उस पार बड़े पत्थरों का खुला स्नानघर होता था। दाईं ओर बैल आदि जानवरों को बाँधने के लिए बाँस-बल्ली बाँधकर छपरी, गायगोठ होता था। घर के सारे काम-काज का बोझ ढो करके पुरुषों का अनुकरण करते हुए दिनभर खेती का काम करनेवाली औरतों के बदन पर सूती मोटी साड़ी और अंगिया, हाथ में धातु का पोला कंगन और यदि वह भी न मिला तो कथीर का कंगन और गले में रत्ती-सव्वा रत्ती सोने का मंगलसूत्र, पाँव की उगलियों में चटाक-फटाक बजनेवाली काँसे के रिंग, मुँह में मंजन, आँखों में काजल और माथे पर कुंकुम। इसके अलावा अन्य श्रृंगार के साधनों की तो पहचान ही नहीं। उनमें दिनभर धूप में नंगे पाँव जानवरों के पीछे-पीछे घूमते रहनेवाले बच्चों के एक हाथ में धातु की एक कड़ी देने की भी कूवत नहीं है, इसलिए उसकी जगह उनके दोनों हाथ में कथीर की कड़ी और दायें कान में पीतल के तार का घेरा। इसके अलावा बदन पर कोई गहना नहीं। सर्द-हवा और धूप-गर्मी में रात और दिन खेतों में जुतनेवाले किसानों के बदन पर तन छिपाने के लिए चिंधी नहीं। किसान की कमर को लुगड़ी के चीथड़ों का करधनी नहीं, खद्दर की लंगोट नहीं। उसके सिर पर फटी-पुरानी टोपी या दुपट्टी, बदन पर कपड़े का कोई टुकड़ा न मिला तो कंबल लपेटना, पाँव में थिगली या रस्सी से गूँथी हुई जूतियों के अलावा और कुछ नहीं। बाकी सारा बदन नंग-धड़ंग होने की वजह से उससे गहरी सर्दी या गर्मी के दिनों में मौसमी खेती, मेहनत करने की हिम्मत नहीं होती।

उस पर अनपढ़ होने की वजह से उसमें सही विचार करने की शक्ति नहीं है, इसलिए वह धूर्त ब्राह्मणों के बहकावे में आकर हरिविजय आदि फालतू ग्रंथों पर भरोसा रखकर पंढरपुर आदि की यात्राओं को जाता है, कृष्ण और रामजन्म तथा सत्यनारायण करके अंत में मनोरंजन के लिए होली में रात और दिन, मरते-मरते थिरकनेवालों के तमाशे सुनने में वह अपना समय यूँ ही खर्च करता है। उसको मूल से ही पढ़ना-लिखना सीखने की इच्छा नहीं और वह केवल अज्ञानी होने

की वजह से उसको यह भी मालूम नहीं है कि पढ़ना-लिखना[1] सीखने से क्या-क्या फायदे होते हैं। लेकिन यह बात किसानों के ध्यान में लाने की बजाय किसानों को हमेशा गुलामों की तरह उनके वर्चस्व में रहना चाहिए, इसी उद्देश्य से किसानों को पढ़ना-लिखना सीखने की मनाही की गई थी। अब जब कि उस तरह की दुष्ट भावना हमारी आज की सरकार नहीं दिखा रही है, फिर भी उसके बाहर के तमाम व्यवहारों से पता चलता है कि किसानों को जानकार-समझदार बनाने के लिए शिक्षा विभाग के सरकारी कर्मचारियों के मन से उस तरह की अपनेपन की भावना व्यक्त नहीं हो रही है; क्योंकि आज तक ज्ञान देने के उद्देश्य से सरकार ने लोकलफंड के मातहत किसानों के लाखों रुपये अपने पेट में उँडेल लिए हैं। जितना पैसा आज तक खर्च हुआ, उसके हिसाब से किसानों में से एक को भी कलेक्टर का पद सँभालने योग्य ज्ञान नहीं दिया गया; क्योंकि गाँव-खेड़ों के सभी स्कूलों में भट्ट ब्राह्मण[2] अध्यापकों का ही वर्चस्व था, जिनकी योग्यता कीचड़-मिट्टी का धंधा करनेवाले बेलदार कुंभारों से भी कम थी; जिनको यह मालूम नहीं कि किसानों के हल को किधर से पकड़ना पड़ता है। जो लोग केवल बकवास करने वाले मुफ्तखोर, किसानों की कमाई पर मौज-मस्ती करने वाले हैं, 'फिर भी हम ही सभी मानव प्राणियों में श्रेष्ठ हैं' कहनेवाले शेखीबाज मगरूर अध्यापकों की ओर से उनके पूर्वजों ने किसानों के बच्चों को पूरी तरह से नीच अवस्था को पहुँचा दिया है। फिर वे इन बच्चों को नियमित रूप से और अच्छी शिक्षा कहाँ से देंगे? जब कभी उनको शहर में नौकरी मिलनी मुश्किल होती है, तब वे शिक्षा विभाग के ब्राह्मण कर्मचारियों के पास अर्जी करके गाँव-देहातों में अध्यापकी (पंतोजी) करके किसी-न-किसी तरह से अपना पेट पालते हैं। लेकिन कई किसानों का गाँव-देहातों में खेती पर गुजारा नहीं होता, तब वे वहाँ भूखे मरने की बजाय गाँव छोड़-कर बड़े-बड़े शहरों में मजदूरी करके अपना पेट पालते हैं। उनमें से बहुत ही थोड़े किसानों के बच्चे, नाममात्र के लिए ही क्यों न हों, पढ़े-लिखे हुए हैं, फिर भी सभी सरकारी विभागों में ब्राह्मण पढ़े-लिखे लोगों का यूरोपियन गोरे कर्मचारियों पर प्रभाव-दबाव होने की वजह से ये किसानों के साढ़ेसात अधूरे पढ़े-लिखे बच्चे, उनके अन्य अनपढ़ किसान जाति बंधुओं का सत्यानाश ये सरकारी ब्राह्मण कर्मचारी किस तरह से करते हैं, इस षड्यंत्र को बाहर लोगों की नजरों में लाकर इस बात से सरकार को अवगत कराने का प्रयास करने की बजाय ये लड़के ब्राह्मणों के ही प्यारे स्कूल साथी बनकर उनके द्वारा आयोजित की जा रही सभाओं में उन्हीं के साथ मिलकर सरकार के नाम से बेफिजूल चिल्लाने लगते हैं। यदि इन्होंने

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 293
2. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P.288

ब्राह्मणों के साथ इस तरह का स्वांग न रचा, तो वे लोग अपनी किताबों के अलावा अखबारों में इनके बारे में गलत-सलत झूठी खबरें छपवाकर, इन पर किस समय और कहाँ क्या दोष लगाएँगे, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। इसके अलावा मामलेदार, सिरस्तेदार, मजिस्ट्रेट, इंजीनियर, डॉक्टर आदि सभी ब्राह्मण कर्मचारी हैं और अंत में सरकारी रिपोर्टर धर्म से ईसाई होने के बावजूद वह खून से ब्राह्मण है। इन तमाम ब्राह्मण कर्मचारियों का सरकारी विभागों में जमाव होने की वजह से वे लोग इन अधूरे विपत्तिग्रस्त लोगों को अपनी-अपनी कचहरियों के सामने किसी न किसी कारण से खड़ा नहीं करते; बल्कि उनके हाथ मौका लग जाए तो वे उनके पेट पर भी लात मारने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे। इसी डर की वजह से ये लोग ब्राह्मण कर्मचारियों का नाम सुनते ही घबरा जाते हैं। इतना ही नहीं, कई पढ़े-लिखे भट्ट ब्राह्मण पाक-नापाक का, किसी भी प्रकार का विधि-निषेध करने की बजाय, इन विपत्तिग्रस्त चुगलखोर शूद्र विद्वान के पेट पर लात मारकर इंग्लैंड से लौटकर आने के बाद पुनः इनके सामने अपनी जाति में शामिल होकर घूम रहे हैं। फिर भी ये आपाद्ग्रस्त भेड़ियों के गले के लोलक, अपने अनपढ़ रिश्तेदार किसानों के सामने निर्लज्ज होकर भट्ट ब्राह्मणों को अपने घर बुलाते हैं, उनके हाथों से ही हर प्रकार के धार्मिक पूजा-पाठ करवाते हैं और उनके पाँव का तीर्थ भी पी लेते हैं। फिर ऐसे बेशर्मी को क्या कहा जाए? शायद सरकारी ब्राह्मण कर्मचारियों के सहारे के बगैर इनका पेट नहीं भरता, कहा जाए तो क्या गाँव में अन्य लोग पेट नहीं भरते ? खैर !

फिलहाल किसानों को बासी टुकड़ों पर लाल चटनी का गोला, दोपहर में ताजी रोटी के साथ आम की खटाई या गेहूँ के सत की बड़ी, रात में केवल दाल के पानी में ज्वार या मकई की दलिया और बीच-बीच में कभी गाजर या कंद पक गए तो उन्हें खाकर गुजर-बसर करना पड़ता है। फिर भी उनको समय-समय पर रोटी मिलना मुश्किल है। इसीलिए बीच में भूख लगते ही हल खड़ा करके हरे कच्चे आम निसोथ, गूलर के फल, पकी हुई इमली आदि खेत के इर्द-गिर्द खाने के लिए जो भी चीज या फल मिल जाए, उसको खा लेते हैं और उसपर भरपेट पानी पीकर पुनः अपने हल को चलाने लगते हैं। जिस-जिस समय उनको पेटभर रोटी मिलती है, उस समय वे असमाधानी की तरह खाते-खाते कभी बीच में पानी भी नहीं पीते, इसलिए उनको दिन भर खट्टी डकारें आती हैं और दस्त के विकार से उनको कई प्रकार के रोग लग जाते हैं, और उस विकार से मुक्त होने के लिए एक पैसे का अजवायन या सोंठ-शक्कर मिलना भी मुश्किल है। इसका परिणाम यह होता है कि उनको सर्दी-बुखार से अंत में मौत को स्वीकार करना पड़ता है।

त्योहारों को कई लोगों के घर में अच्छे पकवान का मतलब है—भेलीपाक के

साथ मीठी रोटी, मुँह के स्वाद के लिए तेल में तले हुए नमकीन, पपड़ी और सालन, फिर सूप के साथ चावल होता है। अधिकांश मकानों में दाल-रोटी और स्वाद के लिए बड़ी की सब्जी होती है। बाकी कंगाल किसान को गूजर-मारवाड़ियों ने उधारी में सामान न दिया, तो वे कुलथी या ज्वार की रोटी पर अपना समय काट लेते हैं; इसलिए अधिकांश किसानों को कर्ज लिए बगैर कर देना मुश्किल है और ऐसे लाचार किसानों को अपनी लड़की के लिए करीबन पाँच-पचीस रुपये लिए बगैर उनका ब्याह कर देना संभव नहीं। उनमें से जो किसान गहरे कर्ज में डूबे हुए हैं, उनको ब्राह्मण या मारवाड़ी साहूकारों ने उनके बच्चों के ब्याह के लिए कर्ज नहीं दिया तो कई बच्चे भरी जवानी में गलत रास्ते से उर्जा शांत करने का प्रयास करने की वजह से, उनको तपेदिक का रोग हो जाता है, और इस तरह उनका जीवन तबाह हो जाता है। मैं इसके संबंध में प्रसिद्ध विद्वान डॉक्टरों के प्रमाणों के साथ आगे कोड़े के परिशिष्ट के रूप में 'किसानों पर तमाचा' के नाम से एक स्वतंत्र निबंध लिखकर आप लोगों के सामने रखूँगा। कई युवा निस्संकोच होकर चोरी-चोरी काडीमहल में व्यभिचार करने के लिए जाते हैं, उसी में मशगूल रहते हैं। इसलिए कुछ ही दिनों में वे श्मशान-भूमि के रास्ते पर चलने लगते हैं। लेकिन जो कुछ इनमें से भी बच निकलते हैं, वे चोर, डकैतों, आतंकवादियों के पीछे लगकर अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं[1], और जिनका, दुलहन के पिता को देने लायक कर्ज ले करके ब्याह रचाया जाता है, उसमें किसान के पास पर्याप्त रुपये-पैसे नहीं होने की वजह से माली, कुनबी और धनगरों में से कुछ युवा लोग दिन में खेती का काम करते हैं और रात-भर चक्की पर बैठकर एक-दूसरे के आसन से आसन भिड़ाकर हिजड़ों की तरह औरतों के गाने[2] गाकर गेहूँ, ज्वार को पिसते रहते हैं और सभी छोटे-मोटे काम भी करते रहते हैं। उसी तरह गाँव की जवान औरतें दूल्हे की माँ के साथ प्याज काटकर, हल्दी की गाँठ कूटकर, भूँजी हुई बाजरी को साँवाँ में मिला करके, हल्दी बड़ी महीन दलती हैं। सदरखाने की चीजों की गंध और रात-दिन काम करनेवाली दूल्हे की माँ की हरे रंग की साड़ी की गंध पूरी तरह मिल जाने से उसके बदन से इतनी सड़ी हुई गंध आती है कि उससे नजदीक के आदमी को बहुत परेशानी होती है।

उसके घर के सामने आँगन में छोटा-सा शामियाना, वह भी सेमल की

---

1. भूदेव (ब्राह्मण) वासुदेव बलवंत फड़के के पिछलग्गू बनकर कुछ अज्ञानी शूद्र, रामोशी लोग कालेपानी की सजा भोग रहे हैं और कुछ फाँसी पर लटक गए हैं।
2. ब्राह्मण के बच्चे, कहाँ जा रहे हैं गाँठने।
हाथ में कागज और कलम, घूमते हैं कुनबी को लूटने।।

बल्लियाँ गाड़कर उस पर आड़ी खड़ी टहनियों पर आम की डालियाँ डालकर नाम मात्र के लिए छाँव बनायी जाती है। इसमें ढोलकी या डफली को बदसुर आवाज में बजानेवाले महार-मातंगों को गहरा मजा आता है। दूल्हे की शादी की दावत कहो कि थाली भर चावल में थोड़ी-सी भेली और मामूली घी डाल देने के बाद, दूल्हा-दुलहन के साथ रहनेवाले लड़के भेड़िया की तरह निवाले के बाद निवाला खाकर एक मिनट में पूरी थाली को चाट-पोंछ करके सफाचट कर देते हैं। शादी के भोजन समारंभ में हमेशा ही रास्ते के दोनों तरफ बगैर कुछ बिछाये भोजन करने-वालों की पंक्ति बैठती थी। देवपूजा के दिन सभी लोगों को अपने-अपने घर से थालियाँ लेकर आना पड़ता था। उसमें ज्वार की रोटी, दलिया या उबले हुए बाजरे के साथ छागल का शोरबा। उसमें एक बार में चार या पाँच मांस के टुकड़े मिल गए तो भोजन पानेवाले का भाग्य समझ लेना चाहिए, क्योंकि बकरे के आगे-पीछे के पुट्ठों का मांस बाद में दो-दो, तीन-तीन दिन तक घर के मेहमानों के साथ बच्चों को भी खिलाने के लिए घर में ही एक ओर टाँग करके रख दिया जाता है। गाँव-भोजन में सूखी फटी-फूटी पत्तल पर थोड़े-से भात में पत्ते के दोने में रखे सूप और तेल में तली हुई तेलिया मिलाकर खाते हैं, और गाजर या आलू की सब्जी का ऊपर से थोड़ा-सा स्वाद लेकर अंत में चटनी के साथ भात का आखिर कौर खा लेते हैं और ऊपर से लोटा भरके पानी पी लेने के बाद जोर से डकार दी कि बस, हो गया किसानों का भोजन! उस सारे भोजन में हजार लोगों के पीछे कौड़ी का भी घी नहीं मिलाया जाता। किसानों के घरों में ऐसे रंग-ढंग के शादी-ब्याह होते हैं। लेकिन यहाँ के कुछ नादान मूर्ख ब्राह्मणों में से कुछ विद्वान, अपनी सभाओं में झूठी-मूठी बातें फैलाकर अधिकारियों को बताते रहते हैं कि किसान अपने बाल-बच्चों के शादी-ब्याह में बेहिसाब पैसा खर्च करते हैं, इसीलिए वे लोग कर्जदार हुए हैं। वाह! ये लोग थोथे ऐसे सार्वजनिक[1] समाज में एक भी बार मातंग-महार किसानों को उस समाज का सदस्य बनवाकर उनको अपने पास लेकर कभी बैठे हैं? या जो लोग गाँव-गाँव में घूमकर वेदों पर भाषणबाजी करते रहते हैं, उनमें से किसी साधु या महंत या स्वामी को खुलेआम जाति-भेद की छाती पर लात मारकर शूद्रों की पंक्ति में बैठकर वहाँ छागल का एक भी कौर खाकर किसान खर्चीले हैं, कहना चाहिए था। ये लोग नाटक में लाडली का स्वाँग लेकर तंबूरा के ताल पर किसानों की चक्की पर गाये जानेवाले गाने गा सकते हैं, मजा ले सकते हैं; लेकिन उनको अपने बाल-बच्चों के शादी-ब्याह में ढेर सारे ज्वार, गेहूँ पीसते हुए किसी ने देखा हो, तो उसे यहाँ खड़े होकर सभी को बताना चाहिए, मैं उसका शुक्रिया अदा करूँगा, धन्यवाद दूंगा। ये लोग कभी भी खेती के काम

---

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, Pages 234, 270 and 271.

अपने हाथों से नहीं करते। क्या उनको खेती का अ-आ भी मालूम है? खैर, छोड़िए इन बातों को। उनकी घर की औरतें भी क्या किसानों की औरतों की तरह अपने घर के जानवरों के गायगोठ की सफाई करती हैं? अपने पति के पीछे-पीछे खेत पर जाकर तुवरी चुनकर खेत गोड़ने लगती हैं? खलिहान में भुट्टे तोड़कर खंभे के आसपास ढेरी करके, दँवरी होते ही अनाज की टोकरी छाती से लगाकर उठा सकेंगी? फिर सिर पर राख, गोबर, गले-सड़े कूड़े की टोकरी और चुभनेवाली घास आदि के बोझ ढो सकती हैं? गर्मी के दिनों में खेत का काम कम होता है, इसलिए अपना और अपने परिवार का गुजारा करना हो तो सड़क पर पत्थर फोड़ने का काम करके दिन भर मेहनत-मजदूरी कर सकती हैं? नहीं, वह अपने भट्टभिक्षुक पति को इस तरह से मदद नहीं कर सकतीं; बल्कि सुबह सोकर उठते ही कंघी करके, घर की साफ-सफाई, गोबर-पानी से छिड़काव, रसोई और धोना-नहाना पूरा करके सारा दिन पोथी-पुराण सुनती रहती हैं। शादी-ब्याह के समय चक्की की मेख को बिना हाथ लगाए बदन पर कीमती साड़ियाँ पहनती हैं और बाद में किसानों के बीवी-बच्चे के सिर पर मिठाइयों की उथली चंगेरी रखकर जुलूस निकालती हैं, और शूद्रों के हाथ में पकड़े हुए छत्र के नीचे मशाल की रोशनी में, पाँव में जूतियाँ पहनकर श्रृंगार के नखरे में बड़े ऐंठ में चलती हैं। लेकिन किसान ब्राह्मणों की तरह अपने बाल-बच्चों के शादी-ब्याह में शामियाने में बिजली की रोशनी करके, अपने जाति-बंधुओं के लिए बड़ी-बड़ी रकम खर्च करके, घी-रोटी और लड्डू-जलेबी के भोजन खिलवाकर, केवल भट्ट ब्राह्मणों की सभाएँ आयोजित करके, उनको सैकड़ों रुपया दक्षिणा देकर अपने खानदान की कुलीन बहू-बेटियों की परवाह न करते हुए उनके सामने निर्लज्ज होकर गाँव की ही नाचनेवाली वेश्याओं के नाच-गाने की महफिलें आयोजित करके, उनके आड़े-टेढ़े गाने सुनने के बाद उनको मनचाहे उस प्रकार से चढ़ावा नहीं देते। ये लोग किसानों पर बहुत सारे झूठे और मनगढ़ंत आरोप लगाते हैं। किसान, त्यौहार ही क्यों न हो, अपने इस जन्म में एक बार भी अपने घर में मालपुआ, चूरमा, जलेबी, रबड़ी, श्रीखंड या बूंदी के लड्डू अपने परिवार के बाल-बच्चों को खिला सकें, क्या इतनी संपन्नता उनके पास इन्होंने या गोरे कर्मचारियों ने रखी है? बकवादियों के मुँह कौन लगे? अरे, इनके छली पूर्वजों ने गलिच्छ ग्रंथों में जाति-भेद का जो पाखंड रचा है, इसके चलते यदि अंग्रेजों को किसानों को नीच मानने के लिए प्रभावित नहीं किया गया होता, तो आज उन्होंने सभी के सामने एक चमत्कार करके दिखाया होता। वह यह कि गव्हर्नर साहब की औरतें मखमल के फूलों की तरह नाजुक होने की वजह से उनकी इस काम में तसदीक लेने की बजाय, पाँच-दस यूरोपियन कलेक्टर साहब की औरतों को उनके बाल-बच्चों के साथ किसानों के घर के शादी-ब्याह में निमंत्रित करके बुलाया जाए और उनसे किसानों की औरतों

के साथ शादी-ब्याह के सारे काम करवाए जाएं। सारा काम उनको सौंप दिया जाए। तब वे वहाँ की सारी दुर्गंध, खाने-पीने का ठाठ, बिछौने की गंध, और शाक-सब्जी, मोटी पिसान और यहाँ की सारी किलकिलाहट आदि अव्यवस्था देखकर दूसरे दिन बड़ी सुबह अपने बाल-बच्चों[1] को वहीं छोड़कर वहाँ से भाग गई होतीं, तो बात दूसरी। मेरा इन धूर्त लोगों से यही कहना है कि मेरी बात झूठ साबित हो तो वे मेरा नाम बदल सकते हैं, इस तरह की प्रतिज्ञा मैं इस भरी सभा में गोलाकार पगड़ी पहनकर, हाथ में बाँस की पीली छड़ी लेकर घूमनेवाले बावले शूद्र चुगलखोर चोबदार के सामने मूँछ पर ताव देकर, छाती पर हाथ रखकर कर रहा हूँ। इन दोनों काले और गोरे कर्मचारियों ने रात और दिन मजा लूटने के लिए अंग्रेज सरकार की नजरें चुकाकर अनपढ़ किसानों पर तरह-तरह से गलत-सलत हरजाना लगाकर उनको इतना नंगा कर दिया है कि गव्हर्नर साहब को अपने दरबार में चाय-पान के लिए उन्हें निमंत्रण देकर बुलाने में शर्म आती है। अरे, जिनकी मेहनत[2] पर सरकारी फौजी लवाजमा, बारूद-गोला, गोरे कर्मचारियों की हद से ज्यादा ऐयाशी और काले कर्मचारियों का हद से ज्यादा वेतन, पेंशन, और दान-दक्षिणा मिलता है, उन किसानों को क्या पान-बीड़ी का भी सम्मान नहीं मिलना चाहिए? भैया, जो सभी देशवासियों के सुख का आधार हैं, उनके इतने बुरे हाल हैं, जिनको समय-समय पर पेट-भर रोटी और तन-भर कपड़ा भी नहीं मिलता। जिसकी गरदनों पर सरकारी लगान देने की तलवार टँगी है, जिनकी दुर्गति को साहब लोगों का शिकारी कुत्ता भी सूँघता नहीं, इसको क्या कहा जाना चाहिए? जिनको अक्षर भी पढ़ना नहीं आता, वे खेती के बारे में अन्य भाषाओं के ग्रंथ पढ़कर खेती में सुधार किस तरह कर सकते हैं? जिनको हमेशा ही भूखा सोना पड़ता है, उनको अपने बच्चों को बड़े-बड़े शहरों के कृषि-स्कूलों में पढ़ने के लिए किसके बल पर और किसके सहारे भेजना चाहिए?

अब हम किसानों की खेती की आज की स्थिति के बारे में विचार करेंगे। जब से हमारी महादयालु अंग्रेज सरकार की सत्ता इस पवित्र देश में कायम हुई, उस दिन से उन्होंने यहाँ की तंदुरुस्त गऊओं को, उनके छोटे-छोटे बछड़ों को और भारवाहकोपयोगी बैलों को मारना-काटना शुरू किया, और वे मुसलिम, मातंग, महार आदि खानसामा को साथ में लेकर खाने लगे, जैसा पहले यज्ञ में ब्राह्मण पंडा-पुरोहित करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि किसानों के पास काम के उपयोग में आने वाले मजबूत तंदुरुस्त बैलों का भण्डार कम होता गया। फिर बारिश का कम होना, बारिश न होना, इससे अकाल की स्थिति

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 44
2. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 198

पैदा हो जाती थी और घास के अभाव में लाखों बैलों को बेच दिया जाता था। इसका असर निश्चित रूप से किसानों पर पड़ा। दूसरी बात यह कि किसानों के पास जो बूढ़े, कमजोर बैल बच जाते थे, उनको जंगल विभाग द्वारा चरागाह समाप्त कर दिए जाने की वजह से पेट भर घास भी नहीं मिलती थी। इससे उनकी (जानवरों की) संतान दिन-ब-दिन दुर्बल होने लगी। उनमें हमेशा महामारी आती थी, और उस रोग से हर साल किसानों के हजारों बैल मरने लगे, जिससे कई किसानों के गोठ के खूँटे उखड़ गए। फिर किसानों के पास पहले जैसे मनपसंद जानवर नहीं होने की वजह से उनके बगियन की हमेशा-हमेशा हानि होने लगी, उनको पेट भर खाना नसीब होना भी मुश्किल हो गया। जमीन का सत्त्व कम हो गया इसलिए जमीन का उगलना भी बहुत कम हो गया। फिर भी हमारी सरकार धूर्त ब्राह्मण कर्मचारियों को साथ में लेकर, उनके सहयोग से हर तीस साल के बाद अज्ञानी डरपोक किसानों के खेत की पैमाइश करके उनपर मनचाहे लगान बढ़ाने की वजह से किसानों के हौसले पस्त हो गए। उनसे ही उनके खेत की हिफाजत नहीं हो रही, इसलिए करोड़ों किसानों को पेट-भर रोटी और तन-भर कपड़ा मिलना मुश्किल हो गया। इसी की वजह से किसान जैसे-जैसे शक्तिहीन होते गए, वैसे-वैसे उनमें हैजे के रोग का प्रकोप बढ़ा और हर साल हजारों किसान मरघट पहुँचने लगे। फिर अकाल के दिनों में अनाज का दाना भी न मिलने की वजह से लाखों किसान मर गए। कई किसानों के दरवाजे शांत थे, फिर भी उनकी पहले की अपेक्षा अब परिवार की संख्या ज्यादा बढ़ जाने की वजह से और उस परिमाण में अनाज की पैदाइश न होने की वजह से मुसीबतें बढ़ती ही गयीं और पुनः-पुनः उसी जमीन को बोना पड़ता था, इसलिए जमीन को आराम भी नहीं मिला। फिर बरसात के पानी से फसल देनेवाले खेत एक के बाद एक फसल देकर थक गए। इसके अलावा हर साल हजारों खंडी[1] अनाज, कपास, चमड़ा और ऊन विदेश में भेज दिया जाता है और बंबई जैसे हर तरह के लोगों की बस्तीवाले म्युनिसिपालिटी के गोरे इंजीनियर और डॉक्टर कर्मचारियों की गलत जानकारी की वजह से, या उनके गैरजिम्मेदाराना व्यवहार की वजह से लाखों खंडी खाद का सत्त्व सागर में नष्ट हो रहा है और खेत का सत्त्व समाप्त होकर अब सारी उपजाऊ भूमि बंजर बनती जा रही है। भैया, ये अंग्रेज गोरे इंजीनियर गोरे डॉक्टरों के मेलमिलाप से, उनके देश की उत्पादित वस्तुओं की यहाँ बिक्री होनी चाहिए, इस उद्देश्य से अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कई तरकीबें सोच लेते हैं और

1. खंडी—एक परंपरागत माप। महाराष्ट्र में अनाज को मापने के लिए इस माप का इस्तेमाल किया जाता है। खंडी का मतलब है बीस कुड़वा की तौल। सात क्विंटल और तैंतालीस किलो। 120 बाघा। बीस की संख्या।

उनको अमल में लाकर नासमझ रैयत को बेलगाम चूसते रहते हैं और यहाँ के कई अपने हाथ के नीचे काम करनेवाले कर्मचारियों के द्वारा फलाँ-फलाँ इमारत को अपना नाम देकर दूर हो जाते हैं। फिर कल उस इमारत का और रैयत का कुछ भी क्यों न हो, उनकी जेब भर गयी, उनका नाम बढ़ गया, मतलब कल्याण हो गया!

किसी साल में बारिश न होने की वजह से खेतों में बिलकुल फसल नहीं होती। कभी-कभी बैलों का साथ सही न मिलने की वजह से कई किसानों का बीज बोना पूरा न हुआ तो नुकसान होता है। इस विभिन्न तरह के प्राकृतिक और राजकीय आपत्ति की वजह से खेतों से अनाज पैदा न हुआ तो, किसानों में से कोई किसान यदि ब्राह्मण सरकारी कर्मचारियों के घर में अकेले में उसको खेती की आम हालत बताने के लिए गया तो देखा कि कोई कर्मचारी थोड़ी देर पहले स्नान करके बदन पर भभूत लगाकर आगे पाट पर शालिग्राम रखकर अगरबत्ती की सुगंध में मशगूल होकर उसकी पूजा करने में लगा हुआ है। कोई ऐरी-गैरी किसी मैली पोथी को हाथ में लेकर पढ़ते बैठा है तो कोई नाममात्र के लिए गोमुखी में हाथ डालकर आँखें बंद करके जप के बहाने कसबीखाने की ओर ध्यान लगाए है। जब बाहर बरामदे में किसान के पाँव की आवाज उसके कान में पड़ी तो आँखें खोलने की बजाय शुद्ध कर्मचारी उससे पूछता है कि "तू कौन है?" तब किसान कहता है कि "रावसाहब, मैं किसान हूँ।" फिर वह पूछता है कि "यहाँ देवपूजा में तेरा क्या काम है? यदि कुछ सब्जी-भाजी लाया हो तो घर में बाल-बच्चों को बगैर स्पर्श किए मालकिन को दे दे और चला जा। दोपहर को कचहरी में आना और अपने नाम से अर्जी कर देना। मतलब, तुम्हारा जो कहना है, वह सब कुछ साहब के सामने जाकर कहूँगा। अब ऐसे ही चला जा।"

बेचारा किसान उल्टे पाँव लौट जाता है और बाग में जहाँ कलेक्टर साहब का तंबू है, उस तंबू के पास जाकर बुटलेर, पट्टेवाले (चपरासी) और जमादार (पुलिस) साहब को सलाम करके तंबू के दरवाजे के सामने खड़ा रहकर देखता है। अंदर कोई साहब है और उसके पाँव के नीचे जमीन पर कश्मीरी कालीन बिछी हुई है। उसके बदन पर सालारजंग अर्थात् सेनापति की तरह शाही पहनावा है और कुर्सी पर बैठकर खाने-पीने में व्यस्त है। कोई पलंग पर लेटा हुआ है और किताबों के रंगीले वर्णन पढ़ने में व्यस्त है। इसलिए वहाँ का चपरासी उसे (किसान को) वहाँ से भगा देता है और किसान अपनी बात बगैर बताए ही चुपचाप अपने घर लौट आता है।

इससे इस बात का पता चलता है कि गोरे कर्मचारियों का रिवाज, मिजाज और तालीम तथा काले कर्मचारियों की दौलत, ज्ञान, अधिकार, ऊँचे वर्ण की शेखी और शुद्धता की मस्ती में रहनेवाले काले और गोरे कर्मचारियों के घर के बेपरवाह बीवी-बच्चों के साथ अज्ञानी दुर्बल किसानों के बीवी-बच्चों का कोई

मेलमिलाप नहीं है। इसलिए किसानों को अपनी कठिनाइयाँ गोरे और काले सरकारी कर्मचारियों को बतलाने का कोई रास्ता ही नहीं है; क्योंकि इन दोनों सरकारी कर्मचारियों का सब कुछ अलग[1] है, और ऐसे विदेशी कर्मचारी शूद्र किसानों के खेत की जाँच-पड़ताल करके उनको सहूलियत देंगे, इस बात का कोई भरोसा नहीं। जाँच-पड़ताल करते समय कभी-कभी गोरे कर्मचारी शिकार करके थकने की वजह से तंबू में जाकर बड़ी निश्चितता से सोए पड़े रहते हैं, और ब्राह्मण कर्मचारी उस गाँव के निर्दय कुलकर्णी और अनपढ़ डरपोक मुखिया (पाटिल, चौधरी) की मदद से, गाँव के दो-चार शराबी, बदमाशों को साथ लेकर जाँच-पड़ताल करेंगे और उससे संबंधित सभी कागजात देखकर सहूलियत देनेवाले हैं समुन्दर पार के ये गोरे कर्मचारी! लेकिन इतना सारा प्रयास करने के बावजूद किसानों को समय-समय पर सहूलियत नहीं मिलती थी और उनको मारवाड़ियों से कर्ज लेकर लगान[2] भरना ही पड़ता था। इसके अलावा उनके पास और कोई चारा नहीं था।

खैर, जब अनपढ़ किसान कर्ज-वर्ज लेकर टैक्स (कर) भरने के लिए जाते हैं तब उनके सामने रास्ते में कई अनपढ़-नासमझ लोग ब्राह्मण के अवतार में खड़े होकर कहते हैं कि "यजमान, तुम्हारा कल्याण हो!" और उनसे कुछ न कुछ पैसे ऐंठते रहते हैं। खुदा न खास्ता समय-समय पर बारिश हुई, फसल अच्छी होने के लक्षण दिखाई देने लगे तो हमारी दयालु सरकार के भगोड़े गोरे कर्मचारी अज्ञानी, भोले-भाले किसानों से उनकी बंदूकें-बरछियाँ छीन लेते हैं, समझ लीजिए। फिर रात में उनके खेतों में सूअर आते हैं और उनकी फसल को नष्ट कर जाते हैं। इसके बावजूद यदि थोड़ा-बहुत फसल बच जाए, तो उस फसल पर ब्राह्मण, मारवाड़ी और साहूकार, लिंगायती और गुजराती दलाल और अन्य जातियों के दलाल टेढ़ी नजरों से देखते रहते हैं और उसको नोंच-नोंच करके खाते हैं। इतना ही नहीं, इन दलालों के रसोइया गुजराती ब्राह्मण भी किसानों से हर पल्ले[3] के पीछे सेर-आधा सेर[4] मलाई हड़प लेते हैं। खैर, अंत में अकेला-दुकेला किसान के बाजार से लौटते वक्त गाँव के मुखिया के साथ एक-दो बदमाश, शराबी उसको घेर लेते हैं और फिर उन कमीनों को थोड़ी-थोड़ी शराब पिलानी ही पड़ती है। यदि वैसा नहीं किया गया तो थोड़े ही दिनों में चौपाल पर उसकी पिटाई होगी, यह समझ

1. यह सब यहाँ के लाल या हरे बाग के उपदेश देनेवाले शूद्र भोजनभट्ट को क्यों मालूम नहीं? वह हमेशा पागलपन का स्वाँग क्यों लेता है?
2. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 29
3. पल्ला—तीन मन का बोझ, एक माप।
4. सेर—सोलह छटाँक की एक तौल।

लीजिए।

कैसा है यह आज का ज्ञानसंपन्न धर्मराज्य ! किंतु इस धर्मराज्य में कर्मनिष्ठ ब्राह्मण कर्मचारियों के करतब से लाठी को सोना बाँधकर रामेश्वर से अटक तक घूमने में कोई दिक्कत नहीं थी; परंतु आजकल दौलत और बुद्धि को नंगधड़ंग किसानों के घर में पेटभर रोटी और तन के लिए मामूली कपड़ा भी दरकिनार, इसलिए परेशान होकर दोनों दिनदहाड़े अपने सागर पिता के घर चली गईं और सागर-पार उनके अंग्रेज प्रिय भाइयो ने उनकी इच्छा के अनुरूप मन के आलस को त्याग करके उद्योग-व्यवसाय का पीछा किया। उन्होंने अपने घर के सभी जवान-बुजुर्ग और महिलाओं को बराबरी का सम्मान दिया। उनकी देखभाल उचित ढंग से होने की वजह से दौलत उनकी गुलाम, रखैल हो गई। वे अपने अधीन हुए शूद्र किसानों से मनचाहा पैसा वसूल करते थे और उनके साथ मुँहदेखी. मीठी बातें करते थे। लेकिन वे लोग उनको दिल से पढ़ाने के लिए टालमटोल करते हैं। इसका मूल कारण यह है कि यदि किसान विद्वान, समझदार हो गए, तो वे अपने कंधों से कोड़ा तज देंगे और दौलत कमाने के तरीके खोजने के प्रयास में लगेंगे। इसलिए इस डर की वजह से वे किसानों को पढ़ना-लिखना नहीं सिखा रहे हैं; क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो उन सभी को भाग-भागकर अमेरिका में जाकर वहाँ रात और दिन मेहनत-मजदूरी करके अपना पेट भरना पड़ेगा। यदि किसानों की इतनी गरीबी की हालत न होती तो भट्ट-ब्राह्मणों ने इतना आडंबर मचाया होता कि उन्होंने अपने जन्मदाता माता-पिता को भी नापाक कहकर दूर रखा होता और कहा होता कि 'नापाक, दूर हो जा ! हमने अभी ही पीतांबर पहना है, हमको छुओ मत। तुम्हारी छाँह भी हमपर न गिरने पाए।' और कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी होती। तब ये भूदेव-ब्राह्मण अनपढ़ शूद्र किसानों की हालत कितनी खस्ता कर देते, इसका कोई अंदाज ही नहीं किया जा सकता। लेकिन मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि इन्होंने तब मातंग-महारों को जिंदा हालत में नई इमारत की नींव में अपने पाँवों से चूना-पत्थरों के साथ गाड़ दिया होता। अब मातंग-महारों ने ईसाई होकर अपना सुधार करके मनुष्यत्व को पाने की हलचल शुरू की है, तो यहाँ के कई काले ब्राह्मण ईसाई विद्वान इन लोगों के बारे में ईसाई मिशनरियों को गलत-सलत जानकारी देते हैं और इनके मुक्ति के रास्ते में खतरे पैदा करते रहते हैं; क्योंकि यहाँ भी ऊँची जाति के जो लोग ईसाई हुए हैं, वे कई तरह का भेदभाव यहाँ से वहाँ अपने साथ ले गए हैं, यह अनुभव है। इतना ही नहीं, अभी-अभी जो कुछ विद्वान ब्राह्मण[1] अपने बगल में शुद्ध बरतनों की पोटली दबा करके भारत से इंग्लैंड गए हैं, वहाँ जाकर ये भगोड़े ब्राह्मण किसानों के घर

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 286

की दौलत के भरोसे पर दीवाने होकर, हमेशा विजयी दौलत की चाह में होने की वजह से किसी की भी परवाह न करनेवाले अंग्रेज लोगों को गरीब, मूक शूद्र तथा अतिशूद्रों के बारे में न जाने किस-किस प्रकार की छल-कपट की बातें कहेंगे, और उनके दिमाग में न जाने किस-किस प्रकार का भेद पैदा करेंगे और फिर उन्हीं के सरकारी कर्मचारियों की ओर से किस-किस तरह से किसानों का सत्यानाश करवाएँगे, इसके बारे में हमारे आज के बेचारे गव्हर्नर जनरल साहब को तर्क के द्वारा जानना आसान नहीं है; क्योंकि हमारे चालाक खटपटी भूतपूर्व गव्हर्नर टेंपल साहब के कार्यकाल में, पिछले अकाल में, तालाब-कॅनॉल आदि जगहों पर, पेट को काँटा लगाकर मेहनत करनेवाले किसानों पर, देखरेख करने के लिए भट्ट-ब्राह्मण मुंशी होने की वजह से, उन्होंने किसानों का इतना दमन किया था कि उसकी तुलना और किसी से भी नहीं हो सकती। काले हब्शी लोगों के बाल-बच्चों को चुरा करके अमेरिका में बेचने के लिए ले जाते समय उनकी जो स्थिति थी, वह यहाँ से ज्यादा बेहतर थी, इस बात का विश्वास दिलाने के लिए यहाँ यदि तमाम बातें लिखी जाएँ तो 'कोड़े' से भी ज्यादे पृष्ठों की एक स्वतंत्र पुस्तक तैयार हो जाएगी। इसके बारे में फिर कभी सोचा जाएगा।

फिलहाल हिंदुस्थान के बारे में रात-दिन इंग्लैंड में बकबक करने की बजाय फासेट साहब ग्लॅडस्टन साहब जैसे जानकार व्यक्ति को भी किसी-न-किसी हालत में अपने साथ यहाँ ले आए। उन दोनों ने लगातार एक-दो सप्ताह तक महार-मातंगों के मोहल्लों में जाकर और उनके साथ उनकी झोंपड़ियों में रहकर उनकी माली हालत अपनी आँखों से देखी। वे पुन: बकवास करने के लिए लंदन नहीं गए या उधर से उधर अमेरिका को भी भागकर नहीं जाएँगे। फिर भट्ट ब्राह्मणों के इन नादान बच्चों ने मेरे इस विधान पर मनचाहे शब्दच्छल करके अपने अखबारों और मासिक पत्रिकाओं में छपाकर चाहे कितना भी कुछ न लिखा हो, वे अपना पेट आराम से पालते रहे। तात्पर्य, सभी माली, कुनबी, धनगर आदि किसानों के पास एक ऐसा ग्रंथ नहीं है जिसके बारे में यह कहा जा सके कि यह ईश्वर के पास से आया हुआ ग्रंथ है, जैसाकि कुरान और बाइबल के बारे में कहा जाता है। इसी की वजह से इनके ही महाप्रतापी भोंसले, शिंदे, होलकर, गायकवाड़ आदि राजे-रजवाड़े पहले तो किसान की संतान हैं, और इनको आर्यब्राह्मणों की रुकावट की वजह से ही संस्कृत अंकलिपि को ठीक से पढ़ना नहीं आता। हम भी इंसान हैं और हमारे वास्तव में अधिकार क्या-क्या हैं, इसके बारे में हमारे किसानों को बिलकुल भी ज्ञान नहीं रहा है। यदि ऐसा न कहें तो पंडित-पुरोहितों के गंदे पाँवों का तीर्थ शूद्र-अतिशूद्र जाति के लोगों द्वारा प्राशन करने का रिवाज क्या अब तक कायम रखा होता? ब्राह्मणों के कहने पर ही किसानों के पूर्वजों ने बनाई हुई पत्थर, धातु की मूर्तियाँ, गाय, सर्प और तुलसी के पेड़ों की पूजा करके उनको भगवान

की तरह समझा होगा ? आर्य ब्राह्मणों ने अपने मतलब के लिए उनको पूरी तरह से ज्ञानहीन रखा। उनमें तर्क और बुद्धि के सहारे सत्य-असत्य की पहचान करने की क्षमता नहीं होने की वजह से, वे लोग भूत-पिशाच पर भरोसा करते हैं। वे लोग मनचाहे उस भगवान को अपने अंग में लाते हैं। न जाने ये लोग कितने भगवानों की पूजा करते हैं और नासमझ बच्चों के साथ अपने बदन से उतार-उतारकर उस पर काफी पैसा खर्च करते हैं। उनका दवा, चिकित्सा पर भरोसा नहीं होने की वजह से वे बदमाश देव-सतों-महंतों और संन्यासियों के पीछे लगकर अपनी जान जोखिम में डालते हैं। कभी-कभी जान से भी हाथ धो बैठते हैं। खैर, इसके बारे में फिर कभी विस्तार से लिखा जाएगा।

इस तरह चारों ओर से पूरी तरह सताए गए हमारे किसान सत्त्वहीन हो गए और उनमें बचपन में शादी-ब्याह करने का रिवाज होने की वजह से उनका काफी पतन हुआ है। पहली बात तो यह कि किसानों में अपक्व वीर्य होने की वजह से उनकी औलाद दिन-ब-दिन वीर्यहीन हो रही है। पहले किसानों के ढेलबाँस के ढेलों की मार से अकेला लुटेरा व्यक्ति टिक नहीं सकता था; लेकिन आज के अंग्रेजी राज में उनकी औलाद इतनी डरपोक, कायर बन गई है कि उनको गाँव की रंडी भी पूछती नहीं, और दूसरी बात यह कि उनमें बचपन में ही शादी-ब्याह हो जाने की वजह से, शादी के बाद उनके बच्चे होश में आते ही उनको जब एक-दूसरे का रंग-रूप, आचार-व्यवहार, प्रकृति-प्रवृत्ति, स्वभाव आदि गुण-दोष पसन्द न आने पर आपस में टकराव आ जाता है। किसानों के कई नादान बच्चों द्वारा अपनी निर्दोष औरतों का त्याग[1] कर देने की वजह से उन बेचारियों को अपने माँ-बाप के घर में अपनी उम्र के बाकी दिन गुजारने पड़ रहे हैं और बाकी बेसहारा औरतों को हाँक-पुकार करके अपना गुजारा करते-करते एक दिन मौत को गले लगा लेना पड़ता है। किसानों के माँ-बाप उनकी अनुमति के बगैर उनका बचपन में शादी-ब्याह कर देते हैं। उनको शादी की औरत पसंद न आने पर दूसरा विवाह करके न्यायदृष्टि से

1. मैंने इस चौथे परिच्छेद को पिछले साल 1883 के अप्रैल माह में बंबई में पढ़ा था कि शूद्रों में अलग-अलग विद्वानों ने अपनी-अपनी युवावस्था में शादी की कुलीन तथा शीलवान औरतों को केवल गोरी, सुंदरी नहीं होने की वजह से त्याग दिया था। उस दिन से वे लोग मुझसे घृणा करने लगे हैं। अपनी-अपनी अनाथ औरतों को अपने मन की लज्जा के खातिर क्षमा माँग करके उनको सम्मान के साथ अपने-अपने घर वापस लाने की बजाए वे लोग मुझे ही गालियाँ दे रहे हैं और अखबारों में मेरी निंदा कर रहे हैं। ऐसे लोगों के मुँह को कौन रोक सकता है !

उन्होंने कोई अपराध किया है, यह कहने की मेरी हिम्मत नहीं है; लेकिन एक के बाद एक, दो, तीन, चार औरतों से शादी करना—इन अमानवी कृत्यों के बारे में क्या कहा जाए ? मेरी दृष्टि से तो फिर उन्हें पाँचवी औरत भी करनी चाहिए, ताकि जनाजे के समय हंडी पकड़ने के झंझट से उनके बच्चे मुक्त हो सकें। इसमें भी कुनबियों में से कई किसान जिनको ट, फ करके व्यंकटेश-स्तोत्र, तुलसी आख्यान और रुक्मिणी स्वयंवर आदि पढ़ना आ गया, तो समझ लीजिए, वे अब दो-दो, तीन-तीन पुनर्विवाह करके ही दम लेंगे। फिर वे मुखियागीरी करते-करते गाँव के धूर्त ब्राह्मणों के पिछलग्गू बन जाते हैं। फिर आज इनके झूठे दस्तावेज पर गवाही देते हैं, कल उनकी झूठी पावती पर गवाही देते हैं और एक तरह से गाँव के सभी गरीब लोगों को सताते रहते हैं; उनको मनचाहे फँसा करके उनसे पैसे लूटते हैं।

मालियों के किसानों को ट, फ भी पढ़ना-लिखना नहीं आता। वे अक्षर के दुश्मन हैं। लेकिन यदि उनको भराड[1], नाच-गाना[2], चित्रकथा[3], और कीर्तन सुनते-सुनते कुछ अभंग, चुटकुले और दोहे याद हो गए तो समझ लीजिए वे हरफनमौला बन गए। मतलब, उनके सामने विद्वान पंडित और घोड़े पर बैठकर निशानाबाजी करने वालों का क्या मूल्य है ! उन्होंने किसी अभंग या दोहे की दो-चार पंक्तियाँ सुनाईं कि उनके मन में बड़े-बड़े विद्वानों से मुकाबला करने का घमंड पैदा हो जाता है और ऐसे लोगों का कमाल यह होता है कि शादी की औरत होते हुए भी और एक-दो औरतों को उन्होंने अपने घर में लाकर रख लिया, समझ लीजिए।

उनके बारी-बारी के काम के भरोसे हाथ की उँगलियों में छोटी-बड़ी चाँदी की अंगूठियाँ, दाएँ कान में मोतियों की बाली, सिक़लात लाल टोपी, बैठने के लिए नीचे छोटे-छोटे टाट के टुकड़े, उसपर छोटी-सी पीतल की मैली थूकदान और वहाँ उनके आग्रह पर पान खाकर थूकते ही जी मिचलाने लगती है। करीब ही टाट पर ऐसे भी लोग आकर बैठ जाते हैं जो एक-दो गाँजा मलनेवालों के साथ सिमटकर बैठ जाते हैं और गंजेड़ी दोस्त-मित्रों के साथ मनचाही बातें उगलते रहते हैं। कभी-कभी राजा विक्रम की काल्पनिक कहानियाँ सुनाते-सुनाते वे स्वयं को ही टोपाजी मोरे के बेटे हणगोजीराव कहलवानेवाले मुनीमजी बन जाते हैं। जिनकी औरतों पर यह बारी आई हो कि उनको बार-बार भोजन खिलाना पड़े, वे

---

1. भराड—डमरू बजाकर और नाच करके भगवान की मूर्ति के सामने गाए जानेवाले भजन। कुनबी लोगों में मिन्नत के बाद बकरा काट करके पकाया गया भोजन।
2. गोंधड़ देवी के लिए गोंधड़ी लोगों द्वारा किया जानेवाला कीर्तन, गाना, नाच आदि।
3. पौराणिक चित्र दिखाकर मनोरंजन करनेवाला।

अपनी कड़ी मेहनत से प्राप्त मेहनताने से इस गंजेड़ी पति के पान, तंबाकू के सारे शौक़ तो संभालती ही हैं, बराबर समय-समय पर खाना भी खिलाती हैं।

फिर दोपहर में जमकर नींद लेने के बाद घर के बाहर जाने के लिए निकलते हैं। फिर ये दोनों टाँग फैलाकर सुनार की तरह सामने सीना तानकर तलवे के सहारे चलते हैं और दोनों ओर झुलते हुए पोपले मुँह की भूरी मूँछों पर ताव देने-वाले लोग, जिनकी दो-दो औरतें हैं, मालियों के पीछे-पीछे घूमते हैं और वहाँ के एक-दो टुकड़खोरों को साथ में लेकर गाँव की भोली-भाली जवान औरतों की बदनामी करते फिरते हैं और जाति के अंदर झगड़े पैदा करते हैं। फिर उनमें कई गुट बन जाते हैं और उनकी समाज-पंचायत इतनी बार बैठती है कि कई लोगों के सगे-संबंधियों में दुश्मनी पैदा हो जाती है। कई लोगों की चुगली खाकर, कई लोगों को बहू-बेटियों को ससुराल-मायका त्यागने के लिए मजबूर कर देते हैं। अंत में ये चतुर मुखिया लोग गरीबों को धमकियाँ देते हैं, डराते हैं और उनसे शराब के लिए पैसा वसूल करते हैं, फिर शाम को घर जाकर औरत के पकाए हुए खाने को टटोलते हैं। टोकरी में रखे हुए बचे खुचे फलों को खा लेते हैं और खाना पकने तक वहीं उनके साथ लफ्फाजी करके, इधर-उधर की बातें करते हुए बैठे रहते हैं। ये आवारा लोग गाँव के शादी-ब्याह में, दूसरों के भरोसे गाँव में दिन के चिकने खाने पर, झड़प डालने के लिए अंत्येष्टि को जाते हैं। इस तरह के अनपढ़, अक्षर के दुश्मन, मुंहजोर, अधम मुखिया लोग यदि किसानों के नेता हों तो उन अज्ञानी किसानों का और उनके खेतों का विकास कब और कैसे होगा ? खैर !

आज तक मैंने जो जानकारी इकट्ठी की है, उनमें से कुछ नमूने के रूप में, यहाँ कुछ हकीकतें आप लोगों के सामने लाया हूँ। यदि उस पर आप लोगों ने स्वयं कुछ सोचा तो आपको यकीन हो जाएगा कि शूद्र किसानों पर फिलहाल बहुत बड़ा खुदाई अन्याय हुआ है। वैसे तो यह मालूमात बहुत कम हैं, फिर भी हमारी सजग सरकार ने अपने गोरे गॅझेटियर की ओर से काले ब्राह्मण मामलेदार के द्वारा आज तक किसानों के बारे में जो कुछ जानकारियाँ प्राप्त की हैं, उनसे इनका कुछ मेल होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता; क्योंकि तमाम सरकारी विभागों में एक भी विभाग ऐसा नहीं है जिसमें ब्राह्मणों की भरमार न हो। इन सभी बेकाबू उत्पीड़न का आधार, आज तक हजारों साल से ब्राह्मणों ने शूद्र किसानों को पढ़ाई-लिखाई से दूर रहने दिया, यही है। किसानों को पढ़ना-लिखना नहीं सीखना चाहिए, इसलिए पुराणिक और कथापाठ करनेवाले ब्राह्मणों ने उनके दिलोदिमाग पर, मन पर इनकी ऐसी छाप छोड़ी है कि किसानों को अपने बाल-बच्चों को विद्वान बनाना बड़ा पाप लगता है। उसमें भी आजकल उनकी स्थिति बड़ी लाचारी की होने की वजह से वे अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा नहीं सकते, इसका अनुभव सभी को है। इसलिए हमारी बहुआयामी धार्मिक सरकार जिस औसत में किसानों

से तरह-तरह के कर, भाड़ा, लोकलफंड आदि वसूल करती हैं, उसी तरह उसे सबसे पहले सभी गाँव-खेड़ों की सरकारी मराठी और अंग्रेजी भाषा के स्कूल बंद करवाकर किसानों पर ईमानदारी के साथ थोड़ी-सी कृपादृष्टि रखनी चाहिए और किसानों के बच्चों को ही शिक्षक का प्रशिक्षण देना चाहिए। इसके लिए हरएक तहसील के लोकलफंड से कुछ रुपये खर्च करके किसानों के बच्चों को खाना, कपड़ा-लत्ता, किताबें आदि मुफ्त में देकर उनके लिए स्कूल-छात्रावास शुरू करने चाहिए और उन स्कूलों में किसानों के प्रशिक्षित लड़के को ही स्कूल-प्रमुख बनाया जाना चाहिए। इसके बाद केवल उन्हीं के स्कूलों में शूद्र किसानों के बच्चों को एक खास उम्र होने तक अध्ययन करने के लिए भेजना चाहिए। इस तरह का कानून बनवाए बगैर किसानों के बच्चों को थोड़ा भी क्यों न हो, लेकिन सही ज्ञान के बिना उनके मन पर बनावटी ब्राह्मण धर्म का प्रभाव, जो ब्राह्मणों ने गधे पर बोझ लादने की तरह लाद रखा है, कम नहीं होगा और इस तरह किए बगैर किसान लोग होश में भी नहीं आएंगे। किंतु हमारी इधर-उधर टटोलनेवाली सरकार ने ब्राह्मण कर्मचारियों में से पायली के पचास लोगों को प्रोफेसर और डाइरेक्टर बनाकर शिक्षा विभाग में निकम्मे लोगों की नियुक्तियाँ की हैं और सारा लोकलफंड बर्बाद किया है, क्योंकि उनसे किसानों के बच्चों को सही ज्ञान मिलनेवाला नहीं है; जिस तरह किसानों के खेतों का महारों द्वारा बनाया हुआ घेरा हवा से उड़ जाता है, उसी तरह कितना भी हो, लेकिन ये सब हैं भाड़े के टट्टू। शाम हुई कि ये लोग धर्मशाला के सामने खामोश होकर खड़े रहते हैं। यही बातें हमें सरकार को कहनी थी। अब आज यहाँ इस मौके पर इतना ही पर्याप्त है।

परिच्छेद : पाँच

शूद्र किसानों के बारे में आर्यभट्ट ब्राह्मणों को सूचना और वर्तमान सरकार को कौन-कौन से उपाय करने चाहिए, इसके संबंध में कुछ बातें यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यह अंतिम पाँचवाँ परिच्छेद शुरू करने से पहले हर मामले में ब्राह्मणों को दखल नहीं देना चाहिए, इस उद्देश्य से इस देश के महाधूर्त आर्य भट्ट ब्राह्मणों को इस मौके पर कुछ सूचनाएँ देना चाहता हूँ। इसकी वजह से हमारी विदेशी विद्वान सरकार और अपने स्वदेशी अज्ञानी 'दस्यू' शूद्र भाइयों की आँखें खुल जानी चाहिए और उनको होश में आना चाहिए, यही मेरी भगवान से प्रार्थना है। क्योंकि ब्राह्मणों सभी लोगों की खुशहाली को चरचर गला काटनेवाली धर्मशास्त्र-रूपी-तलवार को अपने बिछाने के नीचे छुपा करके रखा और अपने आपको देश-भक्त सिद्ध करने के लिए स्वदेशाभिमान का स्वाँग रचाया, लेकिन उनकी नजरें कभी भी मातंग-महारों की ओर नहीं गई। 'शूद्र, पारसी, मुसलिम लोगों में से नादान, होनहार बाल-बच्चों को अपने साहित्य से, अखबारों से, सभाओं में और अन्य सभी साधनों से, अपने देश के ऊँच-नीच भेदभाव के बारे में आपस में किसी भी प्रकार की शिकायत हो तो उसे दूर रख देना चाहिए, क्योंकि सभी लोगों के एक दिल होकर दिलोजान से अपने सभी लोगों में एकता किए बगैर अपने इस अभागे देश का उत्थान होना संभव नहीं', इस तरह का उपदेश करते हैं। यह सुनकर अनपढ़ किसानों को कुछ प्रतिकूल आचरण नहीं करना चाहिए, इसलिए यहाँ कुछ मामूली प्रयास करके देख रहा हूँ। आगे फिर उनका अपना नसीब है।

प्राचीन काल में धूर्त भट्ट ब्राह्मणों के पूर्वजों ने अपनी धनुर्विद्या के बल पर शूद्रों पर (दस्यू) प्रभुसत्ता कायम की। उनपर अपना अधिकार कायम करने के दिन से आज हजारों साल तक गुलाम रहे शूद्र (दस्यू) रैयत का नेतृत्व वे ही लोग कर रहे हैं। उन्होंने आज तक अपने गुलाम शूद्रों को अपने निश्चित स्वार्थ

के लिए अज्ञानी रखा है। इसलिए शूद्र किसानों को अपने मूल नैसर्गिक मानवी अधिकारों का होश ही नहीं आया है। उन्होंने भट्ट ब्राह्मणों द्वारा लिखे गए ग्रंथों के विचारों को बौद्ध, महम्मदी और ईसाई ग्रंथों के सार्वजनिक मानव धर्म की तरह पवित्र मानकर पूरी तरह भरोसा करना शुरू किया, इसलिए सभी अज्ञानी शूद्र लोग ब्राह्मणों के सेवक बन गए और वे दूसरे लोगों का, मानव-समाजों का, अधिकार के अनुसार सत्य मानवधर्म का द्वेष करके उनसे नफरत-निंदा करने में ही पुण्य मानने लगे। इसी की वजह से वे इनसे किसी भी तरह से दगलबाजी करने लगे, क्योंकि इस तरह से शूद्र लोगों पर आचरण करना उनका अधिकार है, ऐसा मानने लगे। और ब्राह्मणों के दगलबाजी के बारे में शूद्रों को मामूली शंका भी नहीं करना चाहिए क्योंकि यही शूद्रों का धर्म है। इस तरह से जो प्रचार किया गया, वह आज तक चल रहा है। इसके सही-दोषों के बारे में विदेशी अंग्रेज सरकार और उनके ऐशोआरामी गोरे कर्मचारियों को कुछ भी जानकारी नहीं होने की वजह से वे लोग इनका होश सही ढंग से ठिकाने नहीं लगा सकते, इसलिए सभी शूद्र किसानों की स्थिति इतने बुरे मुकाम पर आ पहुँची है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन इसके बावजूद वे (ब्राह्मण)अपने-आपको पूरी तरह से अलिप्त रखकर बाहर ही बाहर किसानों से बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण काम करवा लेने के उद्देश्य से अपनी सभाओं के द्वारा, अपने साहित्य के द्वारा और अपने अखबारों के द्वारा उसको अपना पिछलग्गू बनाने के लिए हमेशा यह उपदेश करते हैं कि 'शूद्र किसानों को ब्राह्मणों के साथ एकनिष्ठा से रहना चाहिए क्योंकि उनसे मेल किए बगैर इस अभागे देश का विकास संभव नहीं है।'

अब उनके इस थोथे उपदेश से यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि वे अज्ञानी शूद्र किसानों को विकास के नाम पर, केवल अपने ब्रह्मजाल में फँसा रहे हैं, क्योंकि ब्राह्मणों के पूर्वज भी अपने सत्ता और अधिकार की मस्ती में अपने-आपको भूदेव घोषित करके, निर्बल शूद्र किसानों से गुलामों के समान व्यवहार करते थे, और इन्होंने आज भी इस नीच गुलामी परंपरा को किसी न किसी तरह से कायम रखा है। ऐसी स्थिति में किसानों के साथ ऐसे विदेशी आक्रमक ब्राह्मणों की दोस्ती कैसे हो सकती है? महाप्रतापी 'डॉक्टर फ्रंकलिन', 'टॉमस पेन' आदि महान लोगों ने ज्ञान के प्रभाव से रात और दिन लगातार मेहनत करके यह सिद्ध किया है कि व्यापार-उद्योग करनेवाले अमेरिकन कसबी लोग अपने कलाकारी के बल पर यूरोपखंड के सभी राष्ट्रों के मेहनतकश लोगों को पीछे ढकेलकर वहाँ के करोड़ों रुपये हर साल लेकर जाते हैं। उसी ज्ञान को ब्राह्मणों के पूर्वजों ने अपनी प्रभुसत्ता की मस्ती में अपने तक ही सीमित रखा है। शूद्र किसानों को यह ज्ञान नहीं देना चाहिए, इसलिए अपने मतलबी ग्रंथों में पूरी सावधानी के साथ दबोच करके रखा है। इसी की वजह से इस देश की सही फौजी शिक्षा और धनुर्विद्या

का विकास होने की बजाय पतन ही हुआ है। यदि ऐसा न कहा जाए, तो हम अपनी आँखों से देखते हैं कि शिंदे, होलकर आदि राजा-रजवाड़ों के घराने के कई युवा अच्छी तरह घोड़े पर बैठकर भाला-बरछियों की काफी टर-टर करते हैं; लेकिन उन बदनसीबियों को यह भी मालूम नहीं कि किस तरह से दूरबीन लगाकर किस जगह पर मोर्चाबंदी करके तोप के गोले कैसे दागने पड़ते हैं। वे इस मामले में पूरी तरह काली कपिला गौ के बाप हैं। वे अपनी पगड़ी को तानकर पिता की इज्जत को खराब करके, शूद्र किसानों की छाती पर बैठकर धरती का बोझ बन गए हैं। इसी वजह से कई बार 'फ्रेंच', 'पोर्तुगीज' और 'मुसलमान' आदि लोभी-आक्रमक बादशाह इस देश पर हमले करके यहाँ की दौलत को अपने देश लेकर चले गए। उनमें से कुछ लोगों ने ब्राह्मणों के मतलबी धर्म की विडंबना की। आखिर में कई खुदापरस्त मुसलमान सरदारों ने हजारों भट्ट-ब्राह्मणों के कान को पकड़कर अपने धर्म में परिवर्तित किया, उनके जनेऊ और चोटी को काटा लेकिन फिर भी उन्होंने आज तक अपने संस्कृत गुरुकुलों में शूद्र किसानों के बच्चों को पढ़ाई-लिखाई के लिए बंदी कायम रखी है। इसी बात से आप सोच सकते हैं कि किसानों के साथ ऐसे ब्राह्मणों की दोस्ती, मेलमिलाप कैसे हो सकता है?

अब प्रकृति के स्वभाव को देखते हुए यह कहा जाता है कि ज्ञान ही एक ऐसी चीज है जो मनुष्य और पशु में फर्क करता है। इसके अलावा मनुष्य और पशु में अन्य स्वभाव, गुण सभी समान हैं, यह अनुभव है। पशु भोजन, निद्रा, मैथुन, अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण करना, शत्रुओं से अपना संरक्षण करना और पेट भरने के बाद गुर्राहट करके धमाका करने के अलावा और कुछ समझता ही नहीं। किंतु मानव प्राणियों में मूलरूप से एक चमत्कारिक असाधारण बुद्धि है। उसी की वजह से मानव-प्राणी सभी जलप्राणी, पशु, पंछी, कीट-पतंग आदि जीव प्राणियों में महत्त्व प्राप्त कर चुका है और उसी बुद्धि के बल पर उसने अपने विचार, अनुभव कागज पर लिखकर रखने की तरकीब खोज निकाली है। इसी प्रकार चारों महाद्वीपों के लोगों को आज तक जो अच्छा-बुरा अनुभव आया है, सिलसिलेवार विवरण लिखे जाने की वजह से। आज दुनिया में अनुभविक ज्ञान-भंडारों का इतना बड़ा संग्रह हुआ है और उस अनुभविक ज्ञान की सहायता से, बुद्धि की मदद से यूरोपियन लोग अपने महत्त्वपूर्ण विचार तार-यंत्रों द्वारा हजारों मील की दूरी तक एक-दूसरे को पहुँचाते हैं। इसी तरह अकाल में अग्निबोट और आगगाड़ी से लाखों खंडी अनाज एक-दूसरे के पास भेजकर एक-दूसरे का बचाव करते हैं। और ऐसे बुद्धिमान मानवजाति में से ही शूद्र शिवाजी किसान ने एक भगवान को मानने-वाले मुसलिम बादशाह को जर्जर करके गौ-ब्राह्मणों का और उनके मतलबी धर्म का रक्षण किया। इस बात को ही ध्यान में रखकर अनपढ़ शूद्र शिवाजा के नमक-हराम पेशवा सेवक ने शिवाजी के अज्ञानी औलाद को सत्तार के किल पर बंदी

बना करके रखा और उस पर निगरानी रखने का काम महाक्रूर निर्दयी त्रिंबकजी डेंगले पर सौंप दिया गया था और पूना शहर में अपनी जाति के आर्य भट्ट ब्राह्मणों को भोग-विलास के लिए चाँदी की मोहरें दक्षिणा के रूप में बाँट दीं। ब्राह्मण लोग तर्पण करके रात और दिन काली कृष्णलीला का मनचाहे उपभोग लेने लगे। शूद्र किसानों और दर्जी आदि शूद्र जाति के लोगों ने जब ब्राह्मणों की तरह धोती पहनना शुरू किया तो ये लोग उनको सजा देने लगे। इतना ही नहीं, आज-कल के भट्ट ब्राह्मण किसानों का पाखाना खानेवाली गौ के मूत्र को पवित्र तीर्थ मानकर उसको पीने से शुद्ध होते हैं और वही भट्ट ब्राह्मण अपने मतलबी धर्म[1] के हिमायत से शूद्र किसानों को नीच मानते हैं। इसी की वजह से किसानों के साथ ऐसे ब्राह्मणों की दोस्ती, मेल कैसे हो सकता है ?

आर्य ब्राह्मणों में से कई लोग झूठे दस्तावेज, नकली नोट और रिश्वत खाने के आरोप में सजा भोग रहे हैं और कुछ लोग प्रलोभन से अशुद्ध मातंगी के साथ मद्य-मांस आदि निंद्य पदार्थ खाते-पीते हैं, फिर भी वे भोंसले, शिंदे, होलकर आदि शूद्र राजा-रजवाड़ों को नीच मानकर उनके साथ किसी भी प्रकार से रोटी-व्यवहार नहीं करते। अधिकांश भट्ट ब्राह्मण गाँव की अपवित्र वेश्याओं के घर में जाकर हर तरह का नीच व्यवहार करते हैं, फिर भी ये आर्य भट्ट ब्राह्मण सभ्य शूद्र किसानों के साथ बेटी-व्यवहार करना पाप मानते हैं। फिर 'ढ' के सामनेवाले 'ह' के कहने के अनुसार किसानों के साथ ब्राह्मणों का दोस्ती-मेल कैसे हो सकता है ?

सभी भट्ट ब्राह्मण अपने मंदिरों के पत्थर, धातु की मूर्तियों को शूद्र किसानों को छूने भी नहीं देते। वे लोग दूर से ही नहीं, बल्कि उनको अपने साथ पंक्ति में भी नहीं बिठाते, और उनको पता न चल पाए, इस तरह से अपने पात्र का बचा-खुचा जूठा घी उनको खिलाते हैं, उनकी अलग पंक्तियाँ बिठाते हैं। फिर इस तरह के व्यवहार से किसानों के साथ ऐसे ब्राह्मणों का मेल कैसे हो सकता है ?

---

1. Sir William Jones, Vol-II, P. 224
It is, indeed, a system of despotism and priestcraft, both Limited by law, but artfully conspiring to give mutual support, though with mutual checks, it is filled with strange conceits in metaphysicks and natural philosophy, with idle superstitious and with a scheme of theology most obscurely figurative and consequently liable to dangerous misconception; it abounds with minute and childish for malities with ceremonies generally absured and often ridiculous.

हजरत महम्मद पैगंबर के निष्प्रेही शिष्यों ने जब इस देश में अपना कदम रखा तब वे अपने पवित्र एक ईश्वरवादी धर्म के प्रभाव से आर्यभट्टों के मतलबी धर्म का धुआँ उड़ाने लगे। इसी की वजह से कुछ-कुछ शूद्र लोग बड़े उत्साह के साथ महम्मदी धर्म को स्वीकार करने लगे। उस समय जो शूद्र इसलाम धर्म को नहीं अपना सके, ऐसे अनपढ़ शूद्रों को अपना पिछलग्गू करने के लिए महाधूर्त मुकुंदराज ब्राह्मण ने मूल संस्कृत के परिच्छेदों पर कुछ नास्तिक मतों का मुलम्मा चढ़ाकर अपना विवेकसिंधु नाम का एक प्राकृत ग्रंथ लिखा और उनके सामने रखा और आगे अंग्रेज बहादुरों की सत्ता कायम होने तक आर्य ब्राह्मणों ने अपने पाखंडी ग्रंथ महाभारत-रामायण की कथाओं को किसानों को सुनाना शुरू कर दिया बल्कि इन्होंने उनको मुसलिमों के विरोध में लड़ने के लिए प्रेरित भी किया। लेकिन अनपढ़ किसानों को मुसलिमों की संगत से अपने बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने की बात सूझने नहीं दी। इसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ अंग्रेजों की सत्ता कायम होने के बाद स्वाभाविक रूप से सभी सरकारी विभागों के बड़े-बड़े पद आर्य ब्राह्मणों को ही मिल गए और वे पूरी तरह से किसानों को लूटकर[1] खाने लगे। आर्य ब्राह्मण अंग्रेज आदि सभी यूरोपियन लोगों को मातंग-महारों की तरह नीच मानते हैं, तब भी उनके महाधूर्त पूर्वजों ने जिन वेदों को महापवित्र माना है, जिनकी पूंछ भी किसानों को देखने के लिए नहीं मिलती, उन गुदड़ी के वेदों को बगल में दबाकर आज के बड़े-बड़े विद्वान ब्राह्मण गोरे म्लेच्छ लोगों के दरवाजे-दरवाजे पर जाकर उनको पढ़ा रहे हैं। लेकिन ये भट्ट ब्राह्मण गाँव-देहातों के सरकारी स्कूलों में शूद्र किसानों के अनपढ़ बच्चों को मामूली लिख-पढ़ना पढ़ाते समय थोड़ी आनाकानी क्यों करते हैं? इसी की वजह से किसानों का ऐसे ब्राह्मणों के साथ दोस्ती-मेल कैसे हो सकता है?

सभी धार्मिक मिशनरी आदि यूरोपियन लोगों की वजह से अस्त-व्यस्त हुए किसानों के कुछ बच्चों को बड़े-बड़े शहरों में, मामूली पढ़ाई-लिखाई आने के बाद, गोरे कर्मचारियों के दयालुपन के कारण उनको सरकारी कार्यालयों में जाने-अनजाने नौकरी दी गई है, लेकिन सभी कार्यालयों के ब्राह्मण कर्मचारी उनके बारे में गोरे कर्मचारियो के पास दुनिया-भर की बुराई करते रहते हैं और अंत में उनको काम से भगा देते हैं। कई ब्राह्मण कर्मचारी अपने ऊपर वाले सरकारी गोरे कर्मचारियों की मेहरबानी पाने के लिए अज्ञानी किसानों की फसल के बारे में गलत-सलत झूठी बातें बताते रहते हैं और किसानों की उचित फरियाद सुनकर न्याय न मिले, इसलिए जगह-जगह बाधा खड़ी करके उनकी अर्जी को रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं। इससे किसानों के साथ ऐसे ब्राह्मणों की दोस्ती-मेल कैसे हो सकता है?

आर्य ब्राह्मणों में से सभी वैदिक, शास्त्री, कथावाचक, पुराणिक आदि भट्ट भिक्षुक हर तरह की तरकीब लड़ाकर अज्ञानी शूद्र किसानों में से भोंसले, शिंदे,

होलकर आदि राजे-रजवाड़ों को खोखले धर्म के बहुरंगी झाँसे देते रहते हैं। उनको यजमान कहते-कहते उनसे सैकड़ों ब्राह्मण-भोज, हर दिन गोदान और दान-धर्म हड़पते रहते हैं। भट्ट ब्राह्मणों की जाति के पंत प्रतिनिधि, सचिव, सांगलीकर आदि ब्राह्मण संस्थानिक अकाल में भी अपने यजमान शूद्र किसानों की संस्थाओं को मामूली क्यों न हो, भोजन देकर उनका सम्मान करके आशीर्वाद भी नहीं लेते और उनमें से अधिकांश विद्वान ब्राह्मण लोग गायकवाड़ आदि शूद्र संस्थानों की ओर से आजकल हजारों रुपयों का सालाना अनुदान और हमेशा उनकी खिचड़ी पर पलते रहते हैं, इसलिए इस बात का एहसान मन में रखकर ब्राह्मण संस्थानकों में से किसी ने भी किसी किसान के एक भी बच्चे को कपड़ा-लत्ता, खाना-पीना देकर उसको विद्वान नहीं बनाया है। फिर किसानों के साथ आर्य ब्राह्मणों की दोस्ती-मेल कैसे हो सकता है?

सभी अमीर भट्ट ब्राह्मणों के घर में, हर दिन भीख देते समय पसंद-नासंद देखी जाती है। वे लोग ब्राह्मण भिखारी को चावल और शूद्र, मुसलिम आदि भिखारियों को चंगुल-चंगुल ज्वार दिया सो दिया, नहीं तो आगे जाने के लिए कहते हैं। इससे आर्य भट्ट ब्राह्मणों की तुलना में विदेशी टक्कर जज साहब जैसे परधर्मी यूरोपीय खास म्लेच्छ लोगों को लाख गुणा दयालु, सज्जन कहना चाहिए कि नहीं? क्योंकि उन्होंने अपनी निजी कमाई से ब्राह्मणों, शूद्रों के कई अनाथ बच्चों को खिला-पिलाकर उनको अंग्रेजी की शिक्षा दिलवाई है। इसकी वजह से ये लोग अब गोरे कर्मचारियों के कदम-से-कदम मिलाकर उनके साथ सरकारी पदों पर दहाड़ दे रहे हैं।

अरे, इसी का नाम समझदारी है! इसी का नाम दया है! इसी का नाम एहसान है! और इसी का नाम उत्थान है! लेकिन ये आर्य भट्ट ब्राह्मण तो मतलब के लिए एकता और मतलब की बात करते हैं। मतलब निकल जाने के बाद ये पहचानते भी नहीं। तुम उधर, हम इधर। क्योंकि 'तेरा माल सो मेरा माल और मेरा माल सो अ-हा-हा !!!'— इस जगविख्यात कहावत के अनुसार भट्ट ब्राह्मणों का लंबा-चौड़ा कल्याण होनेवाला है। किंतु ब्राह्मण विद्वानों को यदि सचमुच में इस देश के सभी लोगों में एकता करके इस देश का उत्थान करना है तो सबसे पहले उन्हें विजयी और पराजितों में जो दुष्ट धर्म[1] चलता आ रहा है, उसे जल-समाधि दे देनी चाहिए। उस जुल्मी धर्म ने जिन लोगों को नीच बनाया, उन शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों के सामने खुले रूप से अपने वेदों के विचारों के अनुसार जाति-भेद को समाप्त करके किसी के भी साथ भेदभाव नहीं रखना चाहिए। उनसे दिखावा करने की बजाय निर्मल और सबके प्रति समानता की दृष्टि रखकर

1. A Sepoy Revolt by Henry Mead, P. 227

व्यवहार करना चाहिए, तब कहीं जाकर सबकी सही एकता होगी। इसके बगैर इस देश का उत्थान संभव नहीं है।

शायद आर्य ब्राह्मणों ने अपने खानदानी पेशे दगाबाजी से शूद्रों के सौ-पचास अधकचरे विद्वानों को साथ में लेकर, इस देश के सभी लोगों में थोड़े समय के लिए एकता करके, देश का क्षणिक उत्थान करने से, उनका वह उत्थान बहुत दिनों तक चलनेवाला नहीं है। यह ऐसा ही होगा, जैसे शूद्रों के पेटभरू बाबू, 'येस-फेस' करनेवाले चाटुकार साढ़ेसाती को सम्मिलित करके ये भट्ट ब्राह्मण लोग हरे-भरे बाग में बनछोड़[1] आम की अंबिया तोड़कर वहाँ पाल लगाएंगे। बाद में कीमती आम और सूखी घास को नष्ट कर देंगे और सभी करतबगार किसानों को अपना सिर नीचा करने के लिए लगाएँगे।

मेरा यह अंदाजा उन्हें अपने देवहरे में, गौमुख में सँभाल करके रखना चाहिए, यही मेरी उनको सलाह है।

अब मैं अपने परम दयालु गव्हर्नर साहब, जो शीतल वातानुकूल गुलजार शिमला पर्वत पर जाकर आराम फरमा रहे हैं, उन्हें सात समुंदर पार सरकार के नाम से पुकारता हूँ और उनको शूद्र किसानों का उत्थान करने के लिए कुछ सुझाव दे रहा हूँ :

अब हमारी नीतिमान सदाचारी धार्मिक सरकार ने केवल द्रव्यलोभ अलग रखकर किसानों के वर्ताव पर नजर रखने के लिए डिटेक्टिव डॉक्टरों की नियुक्तियाँ की हैं। किसानों ने अपने गैर-जिम्मेदाराना बर्ताव से अपनी तबियत को बिगाड़ दिया और चोरी, छिनाली आदि नीच तरह का बर्ताव किया तो उनको उचित सजा मिलनी चाहिए, इसलिए अच्छा नियंत्रण किये बगैर वे नीतिमान, सदाचारी होनेवाले नहीं। शूद्र किसानों को एक से ज्यादा औरतें नहीं करनी चाहिए। उन्हें अपने बच्चों का शादी-ब्याह बचपन में नहीं करना चाहिए, इसलिए कानून बनाए बगैर उनकी औलाद तंदुरुस्त नहीं होगी।

सरकारी गोरे कर्मचारियों को इस संबंध में गलत जानकारी होने की वजह से इसका लाभ ब्राह्मणों को ही हो रहा है। भट्ट ब्राह्मणों की संख्या से भी ज्यादा नियुक्तियाँ हो रही हैं। उनको खेत में जुतकर, गाँव में मिट्टी-गोड़े के काम करके उनकी औरतों को भरे बाजार में चक्कर काटकर पेट भरने का मौका आता ही नहीं; बल्कि किसान के अज्ञानी होने की वजह से भट्ट ब्राह्मणों को ही जातिभेद का सबसे ज्यादा फायदा होता है। इसीलिए सरकारी ब्राह्मण कर्मचारी, पुराणिक, कथावाचक, स्कूल के अध्यापक आदि सभी ब्राह्मण यह प्रयास करते रहते हैं कि जातिभेद टूटना नहीं चाहिए। वे अपनी सारी अक्ल, होशियारी, छल-कपटवाली

1. बनछोड़, बंदघोड़—आम की एक जाति।

नीति खर्च करके, रात और दिन इसी उद्देश्य में लगे हुए हैं । इसलिए शूद्र किसानों के बच्चे जब तक सरकारी पद सँभालने के लायक नहीं बनते, तब तक ब्राह्मणों को उनकी जाति के अनुपात से ज्यादा सरकारी पद नहीं देना चाहिए; बल्कि बाकी सरकारी पदों को मुसलिम या ऐंग्लो इंडियन लोगों को देने से ही वे (ब्राह्मण) शूद्र किसानों की पढ़ाई-लिखाई में बाधाएँ पैदा करना छोड़ देंगे।

ब्राह्मणों द्वारा जो बाधाएँ पैदा की जाती हैं, उनके बारे में विदेशी गोरे कर्मचारियों को कुछ भी मालूम नहीं रहता, क्योंकि सभी सरकारी दफ्तरों में इन्हीं की संख्या ज्यादा रहती है । इसी की वजह से ब्राह्मणों की जाति के लोग विद्वान और अमीर हो गए हैं, लेकिन शूद्र किसान लोग अनाज और कपड़े के लिए मोहताज हैं, और कभी-कभी ब्राह्मणों के दास होकर, उनके विद्रोह में सम्मिलित होकर अपनी जान भी गँवा देते हैं ।

दूसरी बात यह कि भट्ट ब्राह्मणों ने अपने जाली-नकली धर्म की शूद्र किसानों के दिलो-दिमाग पर इतनी पकड़ मजबूत की है कि ब्राह्मणों के कहने पर उन्होंने खून-खराबा भी शुरू कर दिया है और गुनाह का फैसला जब होता है, तब वे ब्राह्मणों को आगे करने की बजाय सारा दोष अपने सिर ले लेते हैं और सजा पाने में ही पुण्य का कार्य मानते हैं । इसी की वजह से पुलिस और न्यायालयों की मेहनत बेकार जाती है। इसीलिए शूद्र किसानों के बच्चों को विद्वान करने के लिए उनकी जाति के ही शिक्षक, जो स्वयं खेत में बीज बोने का औजार, घास निकालने के औजार और हल चलाकर दिखा सकें, तैयार करके उनके स्कूलों में ही किसानों को अपने बच्चे पढ़ने के लिए भेजना चाहिए, इस तरह का कानून बनाया जाना चाहिए और प्रारंभ में कुछ साल तक उनकी परीक्षाएँ लेने के लिए साधारण योग्यता के आधार पर उनको ब्राह्मणों के बच्चों की तरह उपाधियाँ देने का लालच दिखाना चाहिए ।

इसी प्रकार उनके लड़के-लड़कियों के शादी-ब्याह में, शादी का दस्तूर करने के संबंध में दूसरी जाति के लोगों द्वारा जबर्दस्ती न हो, इसकी पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। इसके बगैर किसानों में पढ़ने-पढ़ाने की अभिरुचि पैदा नहीं होगी । फिर शूद्र गाँववासियों के बच्चे, जो मराठी छठवीं कक्षा के साथ खेती का काम करने की परीक्षा देकर सद्गुणी होंगे, उन लोगों को निश्चित रूप से मुखिया (चौधरी, ठाकुर, पाटिल, देशमुख) बनाया जाना चाहिए। यदि इस तरह का कानून हमारी दयालु सरकार ने बनाया तो हजारों किसान मुखिया-पद पाने के उद्देश्य से अपने बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने के लिए स्कूल में भेजेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

इस तरह के पढ़े-लिखे सदाचारी लोग गाँव-गाँव में मुखिया होने से सभी गाँव-खेड़ों के धूर्त कुलकर्णियों को यह मौका ही नहीं मिलेगा कि वे अज्ञानी किसानों में आपस में झगड़ा लगा सकें। इससे हमारी सरकार को ही नहीं, बल्कि हमारे

किसानों को भी बहुत बड़ा फायदा होगा।

फिलहाल शूद्र किसानों को ज्यादा-से-ज्यादा लगान भरने की ताकीद देकर यहाँ का पुलिस विभाग और न्यायविभाग बेवजह गब्बर हुआ है, उनके सम्मान को आसानी से कम किया जा सकता है। इसके अलावा हमारी सरकार को पूरी तरह यह मान लेना चाहिए कि हिंदुस्थान में ब्राह्मण सरकारी काम करने लायक बिलकुल हैं ही नहीं, बल्कि शूद्र किसान सरकारी स्कूलों में पढ़कर जैसे-जैसे लायक होंगे, वैसे-वैसे उनको तहसीलदार आदि पदों पर सरकारी कचहरियों में छोटी-बड़ी नौकरियाँ देकर उनको उस काम को करने के लिए प्रशिक्षित किए बगैर किसानों के कदम जमीन पर रुकनेवाले नहीं और सरकार की वसूली भी बढ़नेवाली नहीं। फिलहाल हमारी सरकार ने गूजर-मारवाड़ियों—लेन-देन के दगाबाजों पर नजर रखी है। वास्तव में उनकी दुकान की सड़ी-गली चीजें और झूठे माप पर कड़ी नजर रखनी चाहिए। उसी तरह शराबी मुखिया (चौधरी, ठाकुर, पटेल, पाटिल) पर भी नजर रखनी चाहिए।

खैर, अब मैं अपनी सरकार को अनपढ़, अज्ञानी शूद्र किसानों के एक तरह से बंजर हुए खेतों का सुधार करने के संबंध में कुछ सुझाव दे रहा हूँ :

हमारी दयालु सरकार को सभी किसानों को यूरोपियन किसानों की तरह ज्ञानी बनाना चाहिए। उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना चाहिए। इनको जब तक यूरोपियन किसानों की तरह यंत्रों द्वारा खेती के काम करने लायक समझ नहीं आती, तब तक सभी गोरे लोगों को, मुसलिमों को और अन्य लोगों को हिंदुस्थान के पशुधन को, जो खेती के लिए उपयोगी हैं, ऐसे गौ-बैल और उनके बछड़ों को काट करके नहीं खाना चाहिए; बल्कि उन्हें उनकी जगह पर यहाँ की भेड़-बकरियों को मार करके खाना चाहिए या विदेशों से गौ-बैल आदि खरीद करके यहाँ लाकर उनको मार करके खाना चाहिए। इसके लिए कानून बनाकर अमल में ला करके ही यहाँ के शूद्र किसानों के पास बैलों का आवश्यकता के अनुरूप संचय होगा। इसके बिना उनको अपने खेतों का कस बढ़ाने के लिए खेतों में कड़ी मेहनत करना संभव नहीं होगा। इसी प्रकार उनके पास गोबर-खाद का भी संचय नहीं होगा और इससे न उनको और न सरकार को ही फायदा होगा।

इसी प्रकार पहाड़ों के ऊपर की घास, पेड़ों के फूल-पत्ते और मरे हुए जंतु, जानवर आदि के मांस-हड्डियों के सड़े हुए सत्त्व गड़गड़ाती बारिश से सीझकर पानी की बाढ़ के साथ बहकर नदी-नालों में व्यर्थ न जाए, इसलिए हमारी उद्योगी सरकार को चाहिए कि सुभीता-सुभीता से काली-गोरी फौजों और विश्वस्त सिपाहियों के सहयोग से जगह-जगह पर तालाब या बाँध इस तरह बाँधे कि बारिश का पानी पहले खेतों में जाकर वहाँ भिद करके ही बाद में नदी-नालों में बहे। ऐसा करने से खेत अच्छी तरह उपजाऊ हो जाएँगे और सभी फौजियों को खुली

हवा में उद्योग करने की आदत लग जाने से उनको किसी भी प्रकार के विकार-रोग नहीं होंगे, बल्कि वे तंदुरुस्त होंगे। उन्होंने हर दिन एक आना मूल्य का भी यदि ईमानदारी के साथ काम किया तो साल-हर साल पच्चीस लाख के ऊपर सरकार की भू-संपत्ति बढ़ेगी, क्योंकि फिलहाल हमारी खबरदार सरकार के पास पुलिस विभाग को मिलाकर फौजों की संख्या करीब-करीब दो लाख है।

इसी प्रकार हमारी दयालु सरकार को चाहिए कि सभी पहाड़ों-टेकड़ियों के घाटियों को तालाब या बाँध में परिवर्तित कर दे और जितना हो सके, उतने सुभीता-सुभीता से बांध बँधवा देना चाहिए। मतलब उनके निचले भू-प्रदेश में जितनी तलैया, नाले, नदियाँ होंगी, उनमें ऐन गर्मी के दिनों में भी पानी रहता है, इसलिए जगह-जगह पर छोटे-बड़े बाँध बाँध करके सभी कुओं को पानी की पूर्ति होगी, जिससे सभी जगह फलों, गन्ने आदि की खेती होने से किसानों और सरकार को फायदा होनेवाला है।

सरकार को यह देखना चाहिए कि सभी खेत जलकर न हो जाएँ। उनमें गड्ढे न बन पाएँ। इसलिए किसानों के द्वारा पानी की निकासी के लिए खेतों में मेड़ का पुश्ता मजबूत रखना चाहिए। हमारी दयालु सरकार को चाहिए कि अपने राज्य के सभी खेतों की जाँच-पड़ताल जल-अनुमानक से करवाए फिर जहाँ-जहाँ दाने के आकार की किश्ती के ऊपर पानी के झरने मिलने की संभावना हो तो उन सभी स्थलों के निशान उस-उस गाँव के नक्शे में दर्ज किए जाने चाहिए। सरकार की सहायता के बगैर पानी का मार्ग दिखानेवाले जल-अनुमानक की सलाह पर कुएँ खोदकर बाँधने वाले शूद्र किसानों को सरकार की ओर से छोटे-बड़े इनाम देने की परंपरा डालनी चाहिए। सभी नदी-नाले और तालाब में ज़मा हुआ कीचड़ किसानों को पहले की तरह ही मुफ्त में ले जाने की अनुमति मिलनी चाहिए। जिस-जिस गाँव की भूमि हमारी सरकार ने अपने 'जंगल' में मिला ली है, वह भूमि उन-उन गाँव को लौटा देनी चाहिए और केवल सरकारी सीमा के भीतर की और खेतों को पहरा कम करके बेचने के लिए इमारती लकड़ियाँ कोई न तोड़े या काटे, इसके लिए सख्त कानून बनाना चाहिए। लेकिन जुल्म करनेवाले जंगल-विभाग का निषेध करना चाहिए।

खुद हमारी खास सरकार को बड़ी मेहनत से अपने खजाने से कुछ रुपये-पैसे खर्च करके अन्य प्रान्तों (देश) से विभिन्न प्रकार की अच्छी-अच्छी भेड़-बकरियों की बीज खरीद करके इस देश में लाना चाहिए और उनकी यहाँ अच्छी औलाद पैदा होते ही, यहाँ के सभी खेतों में उनके मलमूत्र से जो खाद बनेगा, उससे खेत भी उपजाऊ होंगे। उनकी ऊन से शूद्र किसानों को फायदा होगा। हमारे सरकारी जंगलों के जंगली जानवरों से शूद्र किसानों के खेतों की हिफाजत करने के लिए देहाती पलीते की ही सही, लेकिन पुरानी डैमिस बंदूकें शूद्र किसानों को देने की

यदि हमारी सरकार की हिम्मत नहीं है तो सरकार उस काम को अपने निर्मल काले पुलिस विभाग के हाथ में सौंप दे। उसके बाद भी यदि किसानों के खेतों को जंगली सूअरों आदि जानवरों ने खाकर नुकसान किया तो उसका सारा मुआवजा पुलिस विभाग के बड़े अधिकारियों के वेतन से वसूल करना चाहिए, या सरकारी खजाने से मुआवजा देने का कानून बनाए बगैर किसानों को रात में भरपूर नींद नहीं आएगी और इस तरह दिन में उसको अपने खेतों पर काम करने में सुस्ती आएगी। इसी का नाम है—'अपना करना नहीं और दूसरों को सहना नहीं।'

यदि हमारी दयालु सरकार सच्चे मन से अज्ञानी शूद्र किसानों का भला करके कृषि-उत्पादन को बढ़ाना चाहती है, तो उसे साल-हर साल श्रावण माह में किसानों का सम्मेलन करवाकर आश्विन माह में खेत के फसलों और हल जोतने की परीक्षाएँ लेकर, अच्छे किसानों को इनाम-इकराम देने की परंपरा शुरू करनी चाहिए। हर तीन साल के अंतर पर अच्छे-अच्छे किसानों को उपाधियाँ देनी चाहिए।

इसी तरह किसानों के पढ़े-लिखे बच्चों को अपनी खेती को अच्छी तरह सँवारना चाहिए और इसके अलावा यदि उन्होंने अपना कुछ समय बचाकर लुहार और बढ़ई का काम सीखा और परीक्षाएँ दीं, और सरकार ने उनको अपने खर्च से इंग्लैंड के कृषि स्कूलों में पढ़ने के लिए भेजने की व्यवस्था की तो यहाँ के किसान तुरंत अपने खेतों का सुधार करके सुखी होंगे। हमारी नीतिमान सरकार को जोगिन[1], पुजारिन, मूरडी, कोल्हारिन, कसबिन आदि वेश्याओं का धंधा करने-वाली औरतों पर कड़ी नजर रखनी चाहिए। उनके लिए हर तहसील में बंद अस्पताल खोलने चाहिए। इसी प्रकार मुरडी, कोल्हारिन, कसबिन, तमाश-गीर, नाटककार, कथावाचक आदि को गंदे गाने नहीं गाना चाहिए, इसलिए उन पर सख्त नजर रखनी चाहिए और ऐसी कुनीति का प्रचार करनेवाले लोगों को बार-बार सजा दिलवा करके ही अज्ञानी शूद्र किसानों की नीति-आचार में और शरीर-प्रकृति में सुधार किया जा सकता है।

सभी इलाकों के फौजी और पुलिस विभाग में शूद्रादि-अतिशूद्र किसानों की सबसे ज्यादा संख्या होने की वजह से वे 'इजिप्त' और 'काबुल' के अधकचरे लोगों के साथ मुकाबला करते समय गोरे फौजियों से किसी भी रूप में पीछे नहीं रहते, पूरा मुकाबला करते हैं। सभी शूद्रादि-अतिशूद्र किसान अपने बाल-बच्चों के साथ

---

1. जोगिन—यल्लम्मा देवी के नाम पर भिक्षा माँगनेवाली स्त्री। यह परंपरा पश्चिम महाराष्ट्र के सोलापुर, कोल्हापुर आदि जिलों में और कर्नाटक के बेलगाँव, हुबली आदि इलाकों में प्रचलित है। इसी को देवदासी-प्रथा कहते हैं। यह प्रथा हिंदू-समाज में है।

रात और दिन बदन थक जाने तक मेहनत करके, सरकार को हर साल कर, भाड़ा, फंड आदि चुंगी के द्वारा करोड़ों रुपया दे रहे हैं, फिर भी शूद्र किसानों के बच्चों को खेती के संबंध में किताबें या स्थानिक अखबारों में खेती के संबंध में सूचना पढ़ने लायक ज्ञान देना भी हमारी दयालु सरकार से नहीं हो पा रहा है। किसानों के ही लाखों परिवारों को ठीक समय पर पेट-भर रोटी और तन-भर कपड़ा भी नहीं मिल रहा है; लेकिन उनके सुख-संरक्षण के बहाने हमारी न्याय-शील सरकार ने फौज, पुलिस, न्याय, जमाबंदी आदि विभागों में जो कर्मचारी नियुक्त किये हैं, उनको बड़े-बड़े वेतन और पेंशन देकर बेहिसाब धन खर्च कर रही है, इसको क्या कहा जाए !!! कई लोग हमारी सरकार की नाक के बाल हैं और ऐसे काले-गोरे सरकारी कर्मचारियों ने हर माह की हजारों रुपये की तनख्वाह खाकर तीस-पैंतीस साल तक सरकारी पदों पर अपना कब्जा करके रखा है और ऐसे लोगों को हमारी सरकार हर माह सैकड़ों रुपया पेंशन देती है। अधिकांश काले सरकारी कर्मचारी कचहरियों में काम करने की वजह से अंधे, अशक्त बनने का कारण दिखाकर अच्छे-अच्छे यूरोपियन डॉक्टरों की आँखों में धूल झोंकते हैं और अच्छी-खासी पेंशन लूटते हैं। गोरे पेंशन इंग्लैंड को चले जाते हैं और काले पेंशनरों में से कुछ लोग, जैसे कि अभी हो येशू ख्रिस्त को योगी पुरुष ने कब्र से जगा दिया हो, उसी तरह युवा शिष्य बनकर, मूँछ पर काली मेहँदी पोतकर, म्युनिसिपल और व्यापारियों की दुकानों में बड़ी-बड़ी तनख्वाह की नौकरियाँ पाकर हजारों रुपया कमाते हैं और अपनी थैलियाँ भर रहे हैं। हमारी खबरदार सरकार को चाहिए कि सभी सरकारी विभाग के काले-गोरे सिपाहियों और फौजी पालकीवाले, निर्माण विभाग के लुहार, बढ़ई, बेगार आदि कम तनख्वाह पाने वाले नौकरों की तनख्वाह में कुछ भी बदल किये बगैर सभी बड़े-बड़े काले-गोरे कर्मचारियों के आवश्यकता से ज्यादा बढ़ाए हुए वेतन और पेंशन देना वह धीरे-धीरे कम कर दे। यहाँ लिखी गई तमाम बातों पर सोचे बगैर न तो हमारी सरकार की सत्ता की बुनियाद इस देश में मजबूत होगी और न ही अनपढ़ किसानों के माथे की शिकन और उनकी भूख-प्यास कम होगी।

तात्पर्य, इस कोड़े के सभी परिच्छेदों में शूद्रों में से बड़े-बड़े राजे-रजवाड़े और छोटे-छोटे अज्ञानी शूद्र संस्थानिकों और अतिशूद्रों (अछूतों) की शर्मनाक स्थिति के बारे में बिल्कुल कोई बात ब्यौरेवार नहीं कही है। इसका कारण, पहले अपने खोखले वैभव की वजह से और दूसरे, अपनी बदनसीबी की वजह से वे शूद्र किसानों से अलग किए गए हैं। इसलिए यहाँ सिर्फ बीच के और निचले स्तर के शूद्र किसानों की बुरी हालत के बारे में मोटी-मोटी बातों का खुरदरा ब्योरा दिया है और यहाँ के गव्हर्नर साहब और उनके कचहरियों के अलावा सात समुंदर पार खास अंग्रेज सरकार को भी सूचित किया है। इतना होने के बावजूद भी हमारी

सरकार की यही इच्छा हो कि ब्राह्मणों के बच्चों को आखिरी पानी पिला करके मुक्त कर देना चाहिए, तो उसे शूद्र किसानों की हड्डियाँ ऐंठ करके, उन्हें इकट्ठा करते हुए जो रॉयलफंड आया हुआ है, उसमें से साल-हर साल बड़ी-बड़ी रकमें ब्राह्मणों के बच्चों पर खर्च करने और उनको पढ़ाने-लिखाने की परंपरा कायम रखनी चाहिए। फिलहाल उसके बारे में[1] मुझे कुछ भी कहना नहीं है।

किसानों के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने का गप मारना ठीक नहीं है। सरकार जितना लोकलफंड इकट्ठा कर रही है, उतना भी यदि किसानों के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर ईमानदारी के साथ खर्च करे तो मैं यही कहूँगा कि मेरे इतने दिनों की मेहनत को फल मिला है और मुझे बड़ी खुशी होगी। लेकिन यदि सरकार ने ऐसा नहीं किया तो इसके लिए वही जिम्मेदार होगी।

अब सबसे पहले मैं उनके प्रति अपना धन्यवाद व्यक्त करता हूँ, जब मैं छोटा था और मेरे इर्द-गिर्द के मेरे पड़ोसी मुसलमान साथी थे, उनकी मेल-जोल से मैंने मतलबी हिंदू धर्म के बारे में और उसके जातिभेद आदि की कई झूठी मान्यताओं के बारे में जो कुछ सीखा, जाना है और सत्य विचार आने शुरू हुए हैं, वह सब उन्हीं की वजह से। मैं उनके उपकारों का स्मरण करता हूँ। फिर पूना के स्कॉच मिशन और सरकारी संस्थान का, जिनकी वजह से मुझे कुछ ज्ञान-बोध हुआ है और मैंने यह जान लिया है कि मानव-प्राणी के अधिकार क्या हैं। और जिन-जिन यूरोपियन धार्मिक लोगों ने रुपये-पैसे से मदद की है, उनका भी मैं आभारी हूँ। इसी प्रकार जिस अंग्रेज सरकार की स्वतंत्र शासन-प्रणाली की वजह से ये विचार मैं निर्भय होकर बोल रहा हूँ, उस सरकार के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। इन सभी के बाल-बच्चों को ज्यादा उम्र देने के लिए अपने दयालु सृष्टिचालक शक्ति की प्रार्थना करता हूँ और वह शक्ति मेरे इन अज्ञानी, अभागे शूद्र किसानों की आँखें खोलकर होश में आने के लिए उनके मन में प्रेरणा जगाएगी, इसी उम्मीद से धीरज रखकर, फिलहाल मेरे इस कोड़े की मार लगने से पीछे मुड़कर कौन-कौन देख रहे हैं, यह देखते हुए स्वस्थ बैठ रहा हूँ।

तारीख : 18 जुलाई, बुधवार
ई० सं० 1883
पूना, पेठ जूनागंज

—जोतीराव गोविंदराव फुले
(सदस्य, सत्यशोधक समाज)

---

1. A sepoy Revolt by Henry Mead, Pages 69 and 235

परिशिष्ट

इस 'कोड़े' को लिखतें समय मेरी कई लोगों के साथ इस संबंध में चर्चा हुई है। उनमें से प्रातिनिधिक रूप में दो नमूने यहाँ दे रहा हूँ :

एक : ख़ास मराठा कहलानेवाला

'कोड़े' का दूसरा भाग समाप्त करके दूसरा काम हाथ में ले ही रहा था कि एक चक्राकार पगड़ी पहना हुआ ब्राह्मण व्यक्ति मेरे सामने तकिया से टेककर बैठने के बाद, वहाँ की हर चीज की ओर निरखकर देख रहा है। उस समय मेरे मन में आया कि यदि इस व्यक्ति को मारवाड़ी कहा जाए तो उसकी पगड़ी के नीचे तीन चुटियाँ नहीं लटक रही थीं। यदि उसको दर्जी कहा जाए तो पगड़ी पर जगह-जगह सूई गड़ाई हुई नहीं थी। यदि उसको सुनार कहा जाए तो उसकी बाँहों के ऊपर छाती निकली हुई नहीं थी और उसको ब्राह्मण कहा जाए तो उसको दो-चार शब्द ढंग से भी बोलते हुए नहीं सुना था। इसलिए वह किस वर्ग से है, इसका मैं अनुमान लगा रहा हूँ। लेकिन उसी दरमियान उसने अपना मुखड़ा मेरी ओर घुमाया और अपने-आप ही मुझसे सवाल पूछता है कि "क्या आपने मुझे पहचाना नहीं ?"

मैंने कहा, "नहीं, मैं आपको पहचान नहीं सका, माफ कीजिए।"

वह व्यक्ति कहने लगा, "मी मराठी कुल का मराठी हूँ।"

मैंने कहा, "तुम मराठे हो सकते हो, लेकिन आपकी जाति क्या है ?"

वह व्यक्ति बोला, "मेरी जाति मराठे है।"

मैंने कहा, "महाराष्ट्र में महारों से लेकर मराठा तक जितने लोग रहते हैं, उन सभी को ही मराठे कहा जाता है। इसलिए तुम फलाना जाति के हो, इसका स्पष्टीकरण इस बात से नहीं होता।"

फ़िर वह व्यक्ति बोला, "तो फिर मैं कुनबी हूँ, ऐसा समझ लीजिए।"

मैंने पूछा, "ठीक है। तुम कौन-सा काम करते हो ?"

वह व्यक्ति बोला, "सतार के अप्पा साहेब राजे साहेब को नीम के पास की भागूबाई तारकशणी का शौक लगने के पहले हमारे खानदान के लोग उससे बड़ी आसानी से एक-दो लाख रुपये कमाकर ले आए थे। उन पैसों से हम लोग आज तक हरि-हरि करके आराम से खाते आ रहे हैं। तुम्हारे दयाराम-आत्माराम एक ओर और हम दूसरी ओर हैं।"

फिर मैंने कहा, "ठीक है, तुम्हारे पाँव इधर कैसे झुक गए ?"

वह व्यक्ति बोला, "मुझे आपसे कुछ भी माँगना नहीं है, लेकिन मैंने ऐसा सुना है कि आप ब्राह्मणों के बारे में गलत प्रचार करते हैं। ब्राह्मणों के बारे में आपका कहना है कि सरकारी विभाग में ब्राह्मण कर्मचारी होने की वजह से वे किसानों को बहुत चूसते हैं। इसलिए यदि वहाँ किसान कर्मचारी आ गए तो वे लोग उस तरह की बदमाशी नहीं करेंगे।"

मैंने कहा, "हाँ, बात सही है। मेरी दृष्टि से सभी सरकारी विभागों में किसानों में से उनकी संख्या के अनुपात में कर्मचारी हुए तो वे अपने जाति-बंधुओं से अन्य कर्मचारियों की तरह बदमाशी नहीं करेंगे।"

फिर वह व्यक्ति बोला, "वह कैसे क्या ? इसके बारे में आप मुझे समझाकर बताइए।"

मैंने पूछा, "तुम ऐसी कल्पना करो कि यदि कलेक्टर साहब ने फौजदारी के काम के लिए तुम्हारी नियुक्ति की और तुम्हारे दादाभाई और पास-पड़ोस के लोग और अपनी जातिवाले किसानों की आपस में लड़ाई हो रही है, वे लोग तुम्हारे पास आएँ। तब तुम उनका फैसला करते समय उनको 'अरे, क्यों रे' कहोगे ?"

वह व्यक्ति बोला, "नहीं।"

मैंने कहा, "क्यों ?"

वह व्यक्ति बोला, "वे मेरे भाई होंगे या मेरी जाति के लोग होंगे, और मैं जिनमें छोटे से बड़ा हुआ, उनको 'अरे, क्यों रे' कहने में मेरी जबान कैसे चलेगी ?"

मैंने पूछा, "तुमसे अपनी जातिवालों में से किसी से भी रिश्वत लेकर उसके लिए दूसरे को गुनहगार करार देकर उसको सजा या दोष देना संभव होगा ?"

वह व्यक्ति बोला, "नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकूंगा।"

मैंने पूछा, "क्यों ?"

वह व्यक्ति बोला, "क्योंकि फौजदारी की नौकरी आज है और कल नहीं, उसका क्या भरोसा ? किसी चुगलखोर नौकर ने कलेक्टर के पास जाकर कुछ उल्टी-सीधी बातें कह दीं तो फौजदारी की नौकरी चली जाएगी; फिर जिनसे मेरा रोटी-व्यवहार है, जिनसे मेरा बेटी-व्यवहार है, उनसे दुश्मनी मोल लेकर क्या मैं अपने लड़के-लड़कियों को देवता के नाम (मुरड़ी-वाध्या)[1] समर्पित कर दूं ? मेरे बाल-

---

1. मुरड़ी-वाध्या— खंडोबा देवता का उपासक। देवता को समर्पित बच्चे, जिनका शादी-ब्याह केवल खंडोबा से होता है।

बच्चों को भी उन्हीं के साथ सारी जिंदगी पार करनी है। उनकी छप्पर मेरे आरे से लगी हुई है। उनके-मेरे बच्चों के खेलने की जगह भी एक ही है। उनका-मेरा कुआँ एक ही है। उनका-मेरा बाँध-खेत एक ही है। उनके-मेरे जानवरों को चराने की भूमि एक ही है। हम अपनी गरज के समय एक-दूसरे के यहां से हँसिया, फाल, फासा, कुदाल, फावड़ा, हल और रस्सी-डोर का इस्तेमाल करते हैं। हम लोग अपनी सुविधा के लिए एक-दूसरे से बैल, भैंसा, हेरफेर से देते-लेते हैं। रात-बेरात हमारी और उनकी औरतें एक-दूसरे को तेल, नमक, दाना-पानी उधार देती-लेती रहती हैं। हम एक-दूसरे की औरत के प्रसूत के समय उनके नन्हे बच्चे के लिए नहलानी बनवाते हैं और प्रसूता के लिए तुरंत बाजा लाकर देते हैं। उनके-हमारे रिवाज और त्यौहार एक हैं। उनका-हमारा खाना-पीना और पहरावा एक है। उनके-हमारे देवी-देवता एक हैं। हमारे-उनके कुलस्वामी एक है। हम लोग एक-दूसरे के घर को लगी हुई आग को बुझाते हैं। हमारी-उनकी मृत[1]-क्रिया एक है। हम लोग ही एक-दूसरे के दफन में मदद करते हैं। एक-दूसरे के बच्चों का समाधान करने के लिए अपने-अपने घर की रोटियाँ और सब्जी ले जा करके उनके घर में जाकर उनको अपने साथ थाली पर बिठाकर मृतक-भोज करते हैं। ऐसी स्थिति में अपने जाति-बंधुओं से रिश्वत लेने से उनके-मेरे खानदान में झगड़ा मोल लेना क्या उचित है ?"

मैंने कहा, "इससे आप ही सही सोच करके देखिए कि ब्राह्मण कर्मचारी किसानों की जाति के नहीं होने की वजह से वे लोग हर तरह की बदमाशी करके अनपढ़, अज्ञानी, बेसहारा किसानों को अपनी जाति के लोगों से ज्यादा लूटते होंगे कि नहीं ?"

वह व्यक्ति बोला, "अब इसके बारे में मैं कुछ बोलने में असमर्थ हूँ। लेकिन फिलहाल किसानों में कुछ विद्वान पैदा हुए हैं। वे तो किसानों की आपत्तियाँ दूर करने के लिए किसी-न-किसी जगह इकट्ठा होकर सिर्फ खुलेरूप में चर्चा भी नहीं करते। हाँ, जी, ये डरपोक हर घर में हैं। औरत के शौक में हों तो ये लोग ब्राह्मण कर्मचारियों को दोष देते हैं; लेकिन दिखावे में ब्राह्मण कर्मचारियों के चुगलखोर, खिदमतगार बनकर चारों ओर खुशामदी करते हुए घूमते हैं।"

मैंने कहा, "जी हाँ। जहाँ शिक्षा-विभाग के कर्मचारी शिक्षा सचालक के सामने अपनी एकता से गवाह देते समय किसानों की शिक्षा के बारे में विशेष बात-चीत करने की बजाए शिक्षा संचालक की आँखों मे धूल झोंकते हैं, हमारी दयालु

1 पहले यह क्रिया-कर्म केवल किसानों तक ही था, लेकिन अब तीस-चालीस साल हो गए, इस क्रिया में ब्राह्मण आने लगे और उन्हीं के हाथ से यह क्रिया होती है।

गव्हर्नर जनरल साहब को फँसाना चाहते हैं, वहाँ इन डरपोक शूद्र विद्वानों का क्या उपयोग है ? ब्राह्मण कर्मचारियों की गलतियाँ निकालना तो दूर, साधारण एजेंट की हैसियत रखने वाले मामूली ब्राह्मण कर्मचारी को भी यदि उसने झुककर सलाम नहीं किया तो उसको सालियाना दरबार में किसी कोने में रेलपेल का स्थान मिल जाता है और आखिर में उसके गले में बासी सूखे हुए हरदासी फूलों की मालाएँ पड़ती हैं, गुलाबदानी के जल के साथ सड़े हुए तेल का कलाई पर माखना और बगैर चूने के एक-दो पान हाथ पर मिल जाते हैं। क्यों, मैं जो कुछ बोल रहा हूँ वह सही है कि नहीं ? अब जवाब क्यों नहीं दे रहे हो ? खैर, मर्जी आपकी। इसके बाद इस संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त करके पुनः यहाँ मेरे साथ सभी ब्राह्मण कर्मचारियों के बारे में बहस करने के लिए जरूर आइएगा।"

वह व्यक्ति बोला, "अब मेरा पूरा विश्वास हो गया है कि सभी सरकारी विभागों में भट्ट ब्राह्मण कर्मचारियों की संख्या ज्यादा होने से अनपढ़ किसानों और उन्हीं के साथ इस समझदार सरकार की भी सबसे ज्यादा हानि हो रही है; लेकिन यह बात इस सरकारी विभाग के 'डायरेक्टर' साहब को क्यों समझ में नहीं आ रही है ?"

मैंने कहा, "जी हाँ, बाबा, 'डायरेक्टर' साहब यदि निगरानी रखते हुए घूमते रहें, तो उनका ऐशोआराम कौन भोगेगा ?"

तब वह व्यक्ति बोला, "कहिए, साहब, ऐसे प्रगतिशील अंग्रेजी राज में इतना अंधेर है तो फिर पेशवाई[1] में अनपढ़ किसानों पर कितनी जुल्म-ज्यादतियाँ हुई होंगी, इसकी कल्पना भी करना संभव नहीं है। अब मैं चलता हूँ, मोहब्बत रहने दीजिए।"

इतनी गुफ़्तगू होने के बाद वह व्यक्ति चला गया।

तारीख : 2 नवंबर
सन् 1882 ई०
पूना

—जोतीराव गोविंदराव फुले
(सदस्य, सत्यशोधक समाज)

1. मराठों के प्रधानमंत्री की उपाधि। मराठों के प्रधानमंत्री पेशवा ब्राह्मण थे। शिवाजी महाराज ने अपने राज्यतिलक के बदले में ब्राह्मणों को पेशवा अर्थात प्रधानमंत्री-पद जाति और वंश के आधार पर दिया था। पेशवा ब्राह्मण ही हो सकते थे।

दो : कबीरपंथी शूद्र साधू

'कोड़े' का तीसरा भाग लिखकर पूरा करने के बाद दूसरे दिन तीसरे पहर में एक साधू मेरे घर में आया। उसके बदन पर भगवे कपड़े, गले में तुलसी की माला पहना हुआ, बंबई का रहनेवाला एक शूद्र जाति का कबीरपंथी बातूनी, पंढरपुर[1] को बार-बार आने-जानेवाला साधू मेरे घर के आँगन में आकर बेंच पर बैठ गया। जैसे ही यह बात मेरे घर के व्यक्ति ने मुझे घर में आकर बताई, वैसे ही मैं घर से बाहर आया—और मैंने उससे पूछा कि "कहिए महाराज, आपका इधर आगमन कैसे हुआ और आपकी इच्छा क्या है ? यदि यह सब मालूम हो जाए तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

महाराज बोला, "क्या आपको ही जोतीराव फुले कहा जाता है ?"

मैंने कहा, "हाँ जी, इसी काया को जोतीराव फुले कहते हैं।"

महाराज बोला, "ठीक है, आप हिंदू होकर कुछ अंग्रेजी ज्ञान पाने के बाद आपने हिंदू धर्म का निषेध करना शुरू कर दिया है। इसलिए हिंदू धर्म के मुख्य चार वेद ईश्वरीय देन हैं या नहीं, इसके बारे में अपने मन का समाधान करने के लिए मैं यहाँ आया हूं।"

मैंने कहा, "हिंदू धर्म के जो चार वेद बताए जाते हैं, उनको आपने कभी अपनी आँखों से कहीं देखा है या नहीं ?"

महाराज बोला, "हाँ, वे चार वेद एक ब्राह्मण के घर में मैंने स्पष्ट रूप में अपनी आँखों से देखा है।"

मैंने कहा, "वे ग्रंथ स्वयं ईश्वर ने लिखा है, इसके बारे में आप कुछ विश्वसनीय प्रमाण दे सकेंगे ?"

वह महाराज बोला, "उसके बारे में सिवाय ब्राह्मणों के बकवास के दूसरा विश्वसनीय प्रमाण नहीं है।"

---

1. पंढरी—पंढरपुर। भगवान विट्ठल का तीर्थ-क्षेत्र। यहाँ हर एकादशी को और खास तौर पर आषाढ़ और कार्तिक के शुक्ल पक्ष को मेला लगता है। यहाँ आनेवाले भाविक अधिकतर शूद्र किसान है और यहाँ के मंदिरों के पुजारी, पंडे ब्राह्मण-जाति के होते हैं। पंढरपुर के विट्ठल के पुजारियों को बडवा (पंडा) कहा जाता है।

मैंने कहा, "खैर, पहले यह बताइए कि ईश्वर का आकार है या नहीं ?"

फिर महाराज बोला, "ईश्वर को कहाँ से आकार होगा ? वह तो निराकार परमात्मा है।"

मैंने कहा, "तो फिर निराकार परमात्मा ने चार वेद कैसे तैयार किये होंगे ?"

महाराज बोला, "उसके बारे में ब्राह्मण लोग ही आपको जवाब दे सकेंगे। यह उनसे ही पूछें तो अच्छा होगा।"

मैंने कहा, "दूसरी बात यह कि ईश्वर ने सभी मानव-प्राणियों का उद्धार करने के लिए चार वेद तैयार किये हैं या और किसी के लिए ?"

महाराज बोला, "हाँ, ईश्वर ने सभी मानव-प्राणियों का उद्धार करने के लिए चार वेदों की रचना की है।"

फिर मैंने कहा, "तीसरी बात यह कि ईश्वर ने किस भाषा में चार वेदों की रचना की है ?"

महाराज बोला, "ईश्वर ने चार वेदों की रचना संस्कृत भाषा में की है।"

मैंने कहा, "चौथी बात यह कि आज इस पृथ्वी पर चार महाद्वीप हैं और इन चारों भूभागों पर रहनेवाले लोगों को संस्कृत भाषा आती है या नहीं ?"

महाराज बोला, "आज इस भूमि के बहुत ही कम, उंगलियों पर भी नहीं गिने जा सकते, कुछ खास भूप्रदेश के लोगों को ही संस्कृत भाषा का अर्थ समझ में आता है।"

मैंने कहा, "इससे तो यही सिद्ध होता है कि सभी मानव-प्राणियों के उद्धार के लिए ईश्वर ने चार वेदों की रचना नहीं की है; क्योंकि इस भूमंडल में सैकड़ों प्रकार की भाषा बोलनेवाले लोग हैं। उनमें अधिकांश देश के लोगों को संस्कृत भाषा का तो बिल्कुल ही ज्ञान नहीं है। फिर इन चार वेदों से अपना उद्धार कर लेना चाहिए, इसके बारे में आपका क्या कहना है ?"

महाराज बोला, "जिस समय ईश्वर ने चार वेदों की रचना की, उस समय सारे भूमंडल के लोग संस्कृत भाषा बोलते होंगे, इसीलिए ईश्वर ने चार वेदों की रचना संस्कृत भाषा में की होगी; लेकिन कुछ काल बीत जाने के बाद इस तरह कई भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषाएँ पैदा हुई होंगी; इस तरह का अनुमान किया जा सकता है।"

मैंने कहा, "इस तरह की (अलग-अलग) भाषाएँ आगे पैदा होंगी, यह बात ईश्वर को वेदों की रचना करते समय पहले क्यों नहीं समझ मे आई ? इससे ईश्वर के त्रिकाल ज्ञानी होने और सब कुछ देखनेवाला होने में रुकावट है कि नहीं ? इसके अलावा 'जर्मन, स्कॉच, इंग्लिश' लोगों में प्रसिद्ध 'मॅक्समूलर' जैसे विद्वान को

चार वेदों का अच्छा ज्ञान हुआ है। उसने अपने ईसाई धर्म का निषेध[1] करके वद-धर्म स्वीकार क्यों नहीं किया है, इसका मुझे बड़ा आश्चर्य होता है।"

वह महाराज बोला, "मॅक्समूलर साहब ने शायद ब्राह्मणों की तरह गले में सफेद रस्सा पहनकर, यूरोप जैसे सर्दी के देश में तीन बार नहाना-वहाना करते रहने के डर से वैसा किया होगा, ऐसा मुझे लगता है; लेकिन उसमें सचाई क्या है, इस बात को वही जानता है। मैं उसके बारे में क्या कहूँ ?"

मैंने कहा, "यदि ईश्वर ने सभी मानव-प्राणियों के उद्धार के लिए चार वेदों की रचना की होती तो भट्ट ब्राह्मणों ने हिंदुओं में शूद्रादि-अतिशूद्रों को चार वेदों का अध्ययन करने पर रोक न लगाई होती। फिर जब उन्होंने ईश्वर की आज्ञा को भंग किया है इसलिए वेदकर्ता यूँ ही क्यों एक ओर छुपकर बैठा है और इससे शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों का क्या कम नुकसान हो रहा है ? इसलिए, वेदकर्ता ईश्वर और उसके द्वारा रचे गये चार वेदों पर भरोसा रखकर अपने-आपको हिंदू क्यों कहना चाहिए ?"

वह महाराज बोला, "भट्ट ब्राह्मणों ने शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों को चार वेद पढ़ने के लिए कभी भी रोका नहीं है। कई भट्ट ब्राह्मण लोग अपने पेट के लिए ईसाई पादरियों के घर जाकर उनको वेद पढ़ाते हैं; लेकिन तुम्हारे शूद्रादि-अतिशूद्र लोगों को दरिद्र होने की वजह से उन वेदों का अध्ययन करने के लिए फुरसत ही कहाँ है ? उसके लिए ब्राह्मण क्या कर सकते हैं ? यही अधिकांश ब्राह्मणों का कहना है।"

मैंने कहा, "इससे यह दिखाई देता है कि तुमको ब्राह्मणों का षडयंत्र कुछ भी मालूम नहीं। खैर, ठीक है, कुछ भी क्यों न हो, धर्म के नाम पर निर्वाह करनेवाले पादरी लोग वेद पढ़ने के लिए इसलिए पैसे खर्च कर रहे हैं कि वे अमीर हैं और शूद्रों में भोंसले, शिंदे, होलकर, गायकवाड़ आदि राजे-रजवाड़े लोग वेद पढ़ने के लिए, ब्राह्मणों को पैसे देने के लिए क्या गरीब हैं ? क्या इनमें से किसी में भी अपने बच्चों को चार वेद पढ़ाने की आर्थिक क्षमता नहीं है ? क्या ये सभी लोग अंग्रेज पादरियों की तुलना में भिखारी हैं, ऐसा आपको लगता है ? साधू महाराज ! इन सभी शूद्र राजे-रजवाड़ों के दरबार में वैदिक, शास्त्री, जोशी और कथावाचक—इनके बार-बार के उपदेशों से इन अज्ञानी शूद्र राजाओं की ऊपर इतनी श्रद्धा-

1. पंडिता रमा ने आर्यधर्म का त्याग करके ईसाई धर्म को स्वीकार किया, इसलिए ब्राह्मणों में से एक गुमनाम डरपोक विद्वान मुँह में उँगली चबाकर 'बाप रे बाप' कहकर गुजारा कर रहा है।

भक्ति हो जाती है कि कोई राजा-रजवाड़ा ब्राह्मण रामदास[1] के खानदान को जागीरदार बना देता है, तो हिंदुस्तान का कोई क्षेत्रपाल इन भट्ट ब्राह्मणों को लगातार एक माह तक मीठा भोजन खिलाता है। कोई पूना के ब्राह्मणों को सोने के सिक्के बाँटता है। इससे सभी शूद्र गरीब हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। उनमें से किसी-न-किसी भट्ट ब्राह्मण को अपनी प्रतिष्ठा दाँव पर लगाकर, इन राजा-रजवाड़ों में से एक यजमान के द्वारा ही क्यों न हो, अपने राज्य के शूद्र किसानों के बच्चों के लिए गाँव-गाँव में स्कूल शुरू करवाना चाहिए था और उनमें से कम-से-कम एक-दो को तो विद्वान करना ही चाहिए था। अरे, इनसे तो वे विदेशी ईसाई पादरी हजार गुना अच्छे हैं, कहना चाहिए कि नहीं? क्योंकि शूद्रादि-अतिशूद्र लोग आज हजारों साल से इन ब्राह्मण लोगों के जाल में फँसे हुए हैं और दिन गुजार रहे हैं। उनको इस ब्रह्मजाल से मुक्त करने के लिए उन्होंने अपने मुल्क में ईसाई लोगों से भीख माँगकर उन पैसों से यहाँ शिंदे, होलकर, गायकवाड़ आदि शूद्र राजा-रजवाड़ों के जाति-भाइयों को सरकारी स्कूलों के ब्राह्मण छात्रों की बराबरी के विद्वान किये हैं और वे ब्राह्मण कर्मचारियों की बराबरी में बड़े गर्व से वकीली और सरकारी पदों पर काम कर रहे हैं। इससे उनको अब अपनी मूल अवस्था कैसे थी और आज अपनी स्थिति कैसे सुधर रही है, यह नहीं समझ रहा होगा? लेकिन शूद्र लोग कितने अभागे और कितने नासमझ हैं कि उनको इस काम में इतनी बड़ी अंग्रेज सरकार की सहायता मिलने पर भी, वे इस ब्रह्मजाल से मुक्त होने की इच्छा नहीं रख रहे हैं, बल्कि आज जो स्थिति उनको मिली है, वह भी शायद हाथ से न चली जाए, इस डर से वे ब्राह्मण कर्मचारियों के आगे हाँजी-हाँजी करके, इतने में ही समाधान मानकर, अपने-अपने ताल में खुश हैं।"

फिर महाराज बोला, "यदि ऐसा ही है तो हम लोग अपने शूद्र राजा-रजवाड़ों के पास जाकर उनसे यह प्रार्थना क्यों नहीं करते कि उन्हें अपने शूद्र भाइयों के बच्चों के लिए गाँव-गाँव में स्कूल खोलकर उनके पढ़ने की व्यवस्था करनी चाहिए?"

मैंने कहा, "अहो, साधू बाबा, उनके दरबार में ब्राह्मण प्रधानों का इतना प्राबल्य बढ़ा है कि वे लोग वहाँ मेरे जैसे गरीब की फरियाद कैसे लगने देंगे?"

वह महाराज बोला, "ऐसा क्यों कहते हैं? अहो, जहाँ आपके पूना के तमाशे में नाचनेवाले लड़के के पीछे इकतारा की धुन पर झाँझ पकड़कर गाना गानेवाले

1. रामदास—महाराष्ट्र के मराठी ब्राह्मण संत समर्थ रामदास। उन्होंने रामदासी पंथ की स्थापना की थी। वह ब्राह्मणवाद, जातिवाद के समर्थक थे।

कुशा धोंगडे बड़ोदा से हजारों रुपया कमाकर लाए हैं और उस तरह के स्थान पर सिर्फ उनको, उनके जाति-भाइयों के हितों की दो बातें बताने के लिए उनके पास आपकी फरियाद बिल्कुल सुनी नहीं जाएगी, ऐसा क्यों समझते हैं ?"

मैंने कहा, "राजा साहब तमाशबीन बनें, यही उनके ब्राह्मण प्रधानों का मूल उद्देश्य होता है। उनके शौक में पड़ जाने से उनको उनके राजकाज में हाथ डालकर अपना भला करने का मौका मिल जाता है। इस तरह बाहर ही बाहर राजा साहब की ओर से 'यूरोपियन' कर्मचारियों को बड़ी-बड़ी मेहमानी दिलवाते हैं; लेकिन हमारे जैसे लोगों की सलाह से ब्राह्मण प्रधानों का नुकसान है, क्योंकि राजा साहब ने यदि शूद्र किसानों के बच्चों को भी विद्वान बनाया तो वे आगे बड़े-बड़े पदों पर काम करने लगेंगे और ब्राह्मण प्रधानों के जाति-भाइयों के बच्चों को हल जोतकर खेती का धंधा करना पड़ेगा और कीचड़-मिट्टी के काम करने पड़ेंगे कि नहीं ?"

वह महाराज बोला, "इस तरह का छल-कपट ब्राह्मण लोगों में नहीं होगा, यही मुझे आज तक लग रहा था; लेकिन आज मैं पूरी तरह समझ गया हूँ। इसीलिए बाबा ! ये धूर्त ब्राह्मण प्रधान अंग्रेज सरकार को यह लिखने में भी कोई कसर बाकी नहीं रखते कि शूद्र राजा-रजवाड़ों के बच्चे उम्र में आने के बाद उनको राजकाज चलाने का ज्ञान नहीं, इसलिए फिलहाल उनको राजकाज न दिया जाए, क्योंकि वैसा करने से सरकार को अपनी होशियारी और राजपुत्रों की बेपरवाही समझ में आएगी और हम वहाँ के प्रधान बन जाएँगे। फिर दिन-दहाड़े वहाँ के राजपुत्रों के गले में बंदर की तरह रस्सी बाँधकर, साहब लोगों के बंगले-बंगले पर उसको घुमाया जा सकता है। फिर रात में उनको तमाशबीन बनाकर उनकी दौलत को हड़पते होंगे कि नहीं ?"

मैंने कहा, "साधू महाराज, जब तक हमारे शूद्र राजा-रजवाड़े होश में नहीं आते और अपने-अपने बाल-बच्चों के साथ अपने दरबार के शूद्र सलाहकारों को विद्वान नहीं करेंगे, तब तक ब्राह्मण प्रधान ऐसे ही करते रहेंगे। शूद्र अपने कर्म के अनुसार फल भोग रहे हैं, उसी प्रकार ब्राह्मण प्रधान भी अपने-अपने कर्मों का फल कभी न कभी पाएँगे ही। इसके परिणाम उन्हें भोगने होंगे।"

फिर साधु महाराज बोले, "अच्छा, ठीक है, अब मैं चलता हूँ।"

मैंने कहा, "जैसी आपकी मर्जी, नमस्ते।"

तारीख : 6 अप्रैल
सन् 1883 ईसवी
पूना

—जोतीराव गोविंदराव फुले
(सदस्य, सत्यशोधक समाज)

●●●



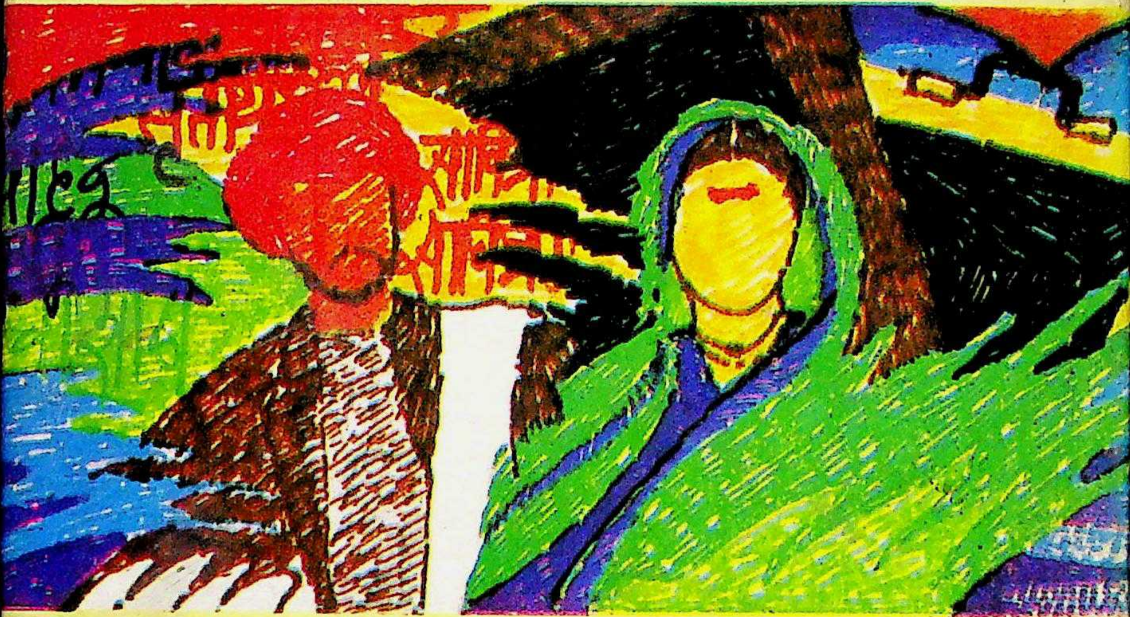
एल. जी. मेश्राम 'विमलकीर्ति'

महाराष्ट्र के भंडारा जिले के देवरीदेव नामक गाँव में 5 फरवरी, 1949 को जन्म।

नागपुर विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा। अब उसी विश्वविद्यालय में पालि और प्राकृत स्नातकोत्तर विभाग में अधिव्याख्याता के रूप में कार्यरत।

अपने महाविद्यालयीन जीवन से ही महात्मा जोतिबा फुले और डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के सिद्धान्तों को लेकर सामाजिक क्रांति के आन्दोलनों में सक्रिय रूप से जुड़ाव। भदन्त आनन्द कौसल्यायन के सम्पर्क में बौद्ध भिक्षु रहे।

मराठी और हिन्दी में कुछ किताबें तथा कई लेख प्रकाशित। मराठी की कुछ बहुचर्चित तथा विवादास्पद किताबों का हिन्दी में अनुवाद।



राधाकृष्ण